1. Hazrat Mohammad Sallahu Alaih Wasallam Aur Bhartiy Dharm Granth
2. Kalki Awtar Aur Mohammad Sahab ﷺ
3. Muhammad ﷺ in Parsi, Hindu & Buddhist Scriptures
4. Narashans Aur Antim Rishi
5. Pavitra Ved aur Islam Dharm
6. The Prophet Muhammad ﷺ In Hindu Scriptures

हज़रत (सल्ल०) मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रन्थ



डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)

और

भारतीय धर्मग्रन्थ

लेखक

डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव

मधुर सन्देश संगम

नई दिल्ली-110025

Hazrat Muhammad (S.A.W.) aur Bhartiye Dharmgranth (HINDI)

संदेश सीरीज़

मधुर सन्देश संगम (रजि॰ ट्रस्ट) प्रकाशन नं॰ H-75

नाम पुस्तक : हज़रत मुहम्मद(सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रन्थ

लेखक : डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव

प्रकाशक : **मधुर सन्देश संगम**
E-20, अबुल फ़ज़्ल इंक्लेव,
जामिआ नगर, नई दिल्ली-110025
फ़ोन : 011-26953327, 09212356332
Email : madhursandeshsangam@yahoo.co.in

मिलने का अन्य पता : **एम॰ एम॰ आई॰ पब्लिशर्स**
D-307, अबुल फ़ज़्ल इंक्लेव,
जामिआ नगर, नई दिल्ली-110025

संशोधित संस्करण : 2013 ई॰

पृष्ठ : 40

मूल्य : 18.00 ₹

मुद्रक : मुद्रक हाईटेक ग्राफिक्स, नई दिल्ली–110020

अनुक्रम

आमुख

अल्लाह अत्यंत कृपाशील और दयावान है। वही सृष्टि का निर्माता है। उसने अपने सर्जित जीवों में इनसान को श्रेष्ठ और महिष्ठ बनाया है। अल्लाह के सभी उदार अनुग्रहों और उसकी अनुकंपाओं की गणना करनी कठिन है, जो उसने इनसानों पर की हैं। उसकी इनसानों पर विशेष कृपा यह रही कि उनके मार्गदर्शन का प्रबन्ध किया और उन्हें सही रास्ता दिखाने के लिए अपने पैग़म्बरों, रसूलों और अवतारों को प्रत्येक क़ौम और समुदाय में भेजा। क़ुरआन में है : "कोई क़ौम ऐसी नहीं गुज़री, जिसमें कोई सचेत करनेवाला न आया हो।" (35 : 24)

"अवतार" का अर्थ यह कदापि सही नहीं है कि ईश्वर स्वयं धरती पर सशरीर आता है, बल्कि सच्चाई यह है कि वह अपने पैग़म्बर और अवतार भेजता है। उसने इनसानों के उद्धार, कल्याण और मार्गदर्शन के लिए अपने अवतार, पैग़म्बर और रसूल भेजे। यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समाप्त कर दिया गया। स्वामी विवेकानन्द और गुरुनानक सरीखे महानुभावों ने भी पैग़म्बरी और ईशदूतत्व की धारणा का समर्थन किया है। वरिष्ठ विद्वानों में पं० सुन्दर लाल, श्री बलराम सिंह परिहार, डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ० पी०एच० चौबे, डॉ० रमेश प्रसाद गर्ग, पं० दुर्गा शंकर सत्यार्थी आदि ने "अवतार" का अर्थ ईश्वर द्वारा मानव-कल्याण के लिए अपने पैग़म्बर और दूत भेजा जाना बताया है। प्राणनाथी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध चिंतक श्री कश्मीरी लाल भगत ने भी इस तथ्य का स्पष्ट समर्थन किया है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की पूर्व सूचना हमें बाइबिल, तौरेत और अन्य धर्मग्रन्थों में मिलती है, यहाँ तक कि भारतीय धर्मग्रन्थों में भी आप (सल्ल०) के आने की भविष्यवाणियाँ मिलती हैं। हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म की पुस्तकों में इस प्रकार की पूर्व-सूचनाएँ मिलती हैं। इस पुस्तिका में सबको एकत्र करके पेश करने का प्रयास किया गया है।

पैग़म्बरों और अवतारों के भेजे जाने का विशिष्ट औचित्य होता है। लोगों में अधर्म की प्रवृत्ति पैदा हो जाने, धर्म के वास्तविक स्वरूप से हट जाने और मूल धर्म में मिलावट हो जाने के कारण पैग़म्बर एवं अवतार भेजे गए, जिन्होंने धर्म को फिर से मौलिक रूप में पेश किया और एक ईश्वर की ओर लोगों को बुलाया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उस समय भेजे गए, जब हज़रत ईसा मसीह

(अलैहि०) को आए हुए पाँच सौ से अधिक वर्ष बीत चुके थे। नबियों (अलैहि०) की शिक्षाएँ नष्ट अथवा विकृत हो चुकी थीं, सनातन धर्म पर अधार्मिकता छा गई थी, ईशभय और ईशपरायणता समाप्त हो चुकी थी। इनसान अपने पैदा करनेवाले को भूला हुआ था। उसने अनेक ईश्वर बना डाले और अपनी दशा इतनी पतित कर डाली कि पेड़, पहाड़, आग, पानी, हवा, धरती, चाँद, सूरज आदि चीज़ों को पूजने में लिप्त हो गया।

इन विकट और विषम परिस्थितियों में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का आगमन हुआ। आप (सल्ल०) ने अल्लाह के पैग़म्बर के रूप में महान और अनुपम सद्क्रान्ति कर दिखाई। आप (सल्ल०) कोई नया धर्म लेकर नहीं आए थे, बल्कि मानव जाति के आरंभ से चले आ रहे सनातन धर्म (इस्लाम) में आई ख़राबियों और विकृतियों को दूर कर उसे मौलिक रूप में पेश किया। आप (सल्ल०) ने इनसानों को उनकी अस्ल हैसियत बताई और उनकी मिथ्या धारणाओं का उन्मूलन किया। आप (सल्ल०) ने बताया कि इनसान का ईश्वर केवल एक है, वह निराकार है। इनसान को उसी की ही दासता अपनानी चाहिए, उसी की ही इबादत करनी चाहिए। यदि वह इस धारणा और भक्ति-कर्म का इनकार करता है, तो अपने को ग़लत जगह खड़ा कर लेता है, जिसके कारण उसके क़दम ग़लत दिशा में उठने लगते हैं। ऐसे में भला उसकी जीवन-यात्रा कैसे सफल हो सकती है?

जीवन की सुगम, सार्थक, सफल और फलदाई यात्रा के लिए अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर और दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा पेश की गई शिक्षाओं को अपनाया जाए एवं आप (सल्ल०) के बताए मार्ग पर चला जाए, तभी पारलौकिक जीवन को भी सफल बनाया जा सकता है। अब यह सच्चाई छिपी नहीं रही कि भारतीय धर्मग्रन्थों में जिस अवतार(पैग़म्बर) के आने की पूर्व-सूचना दी गई थी, वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। यह पुस्तिका सच्चाई उजागर करने की दिशा में एक प्रयास है। इसका उद्देश्य सत्य को समझना और समझाना है। अतः इसमें वर्णित तथ्यों के सिलसिले में कोई न्यूनता और त्रुटि रह गई हो, तो हमें अवगत कराने का कष्ट करें। अल्लाह हमारी कोशिशों को क़बूल फ़रमाए, आमीन!

स्थान—नई दिल्ली **डॉ० एम०ए० श्रीवास्तव**

दिनांक—12 सितंबर 1997

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और भारतीय धर्मग्रन्थ

सत्य हमेशा स्पष्ट होता है। उसके लिए किसी तरह की दलील की ज़रूरत नहीं होती। यह बात और है कि हम उसे न समझ पाएँ या कुछ लोग हमें इससे दूर रखने का कुप्रयास करें। अब यह बात छिपी नहीं रही कि वेदों, उपनिषदों और पुराणों में इस सृष्टि के अन्तिम पैग़म्बर (संदेष्टा) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की भविष्यवाणियाँ की गई हैं। मानवतावादी सत्य गवेषी विद्वानों ने ऐसे अकाट्य प्रमाण पेश कर दिए, जिससे सत्य खुलकर सामने आ गया है।

वेदों में जिस उष्ट्रारोही (ऊँट की सवारी करनेवाले) महापुरुष के आने की भविष्यवाणी की गई है, वे मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। वेदों के अनुसार उष्ट्रारोही का नाम 'नराशंस' होगा। 'नराशंस' का अरबी अनुवाद 'मुहम्मद' होता है। 'नराशंस' के बारे में वर्णित समस्त क्रियाकलाप हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आचरणों और व्यवहारों से आश्चर्यजनक साम्यता रखते हैं। पुराणों और उपनिषदों में कल्कि अवतार की चर्चा है, जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही सिद्ध होते हैं। कल्कि का व्यक्तित्व और चारित्रिक विशेषताएँ अंतिम पैग़म्बर (सल्ल०) के जीवन-चरित्र को पूरी तरह निरूपित करती हैं। यही नहीं उपनिषदों में साफ़ तौर से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का नाम आया है और उन्हें अल्लाह का रसूल (संदेशवाहक) बताया गया है। पुराण और उपनिषदों में यह भी वर्णित है कि ईश्वर एक है। उसका कोई भागीदार नहीं है। इनमें 'अल्लाह' शब्द का उल्लेख कई बार किया गया है। बौद्धों और जैनियों के धर्मग्रन्थों में भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में भविष्यवाणियाँ की गई हैं।

इन सच्चाइयों के आलोक में मानवमात्र को एक सूत्र में बाँधने और मानव एकता एवं अखण्डता को मज़बूत करने के लिए सार्थक प्रयास हो सकते हैं। यह समय की माँग भी है। वैमनस्यता और साम्प्रदायिकता के इस आत्मघाती दौर में ये सच्चाइयाँ मील का पत्थर साबित हो सकती हैं। भाई-भाई को गले मिलवा सकती हैं और एक ऐसे नैतिक और सद् समाज का निर्माण कर सकती है, जहाँ हिंसा, शोषण, दमन और नफ़रत लेशमात्र भी न हो। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर सभी

सच्चाइयों को एक साथ आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इस कोशिश में हमें कितनी सफलता मिली यह आप ही बताएँगे। उम्मीद है कि ये सच्चाइयाँ दिल की गहराइयों में उतरकर हम सभी को मानव कलयाण के लिए प्रेरित करेंगी। प्रस्तुत पुस्तिका में डा० वेद प्रकाश उपाध्याय के शोध ग्रन्थों 'नराशंस और अंतिम ऋषि' और 'कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब' के अलावा अन्य स्त्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं सामग्रियों का समावेश किया गया है।

मुहम्मद (सल्ल०) और वेद

वेदों में नराशंस या मुहम्मद के आने की भविष्यवाणी कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, बल्कि धार्मिक ग्रन्थों में ईशदूतों (पैग़म्बरों) के आगमन की पूर्व सूचना मिलती रही है। यह ज़रूर चमत्कारिक बात है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आने की भविष्यवाणी जितनी अधिक धार्मिक ग्रन्थों में की गई है उतनी किसी अन्य पैग़म्बर के बारे में नहीं की गई। ईसाइयों, यहूदियों और बौद्धों के धार्मिक ग्रन्थों में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अंतिम ईशदूत के रूप में आगमन की भविष्यवाणियाँ की गई हैं।

वेदों का 'नराशंस' शब्द 'नर' और 'आशंस' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'नर' का अर्थ मनुष्य होता है और 'आशंस' का अर्थ 'प्रशंसित'। सायण ने 'नराशंस' का अर्थ 'मनुष्यों द्वारा प्रशंसित' बताया है।[1] यह शब्द कर्मधारय समास है, जिसका विच्छेद 'नरश्चासौ आशंसः' अर्थात प्रशंसित मनुष्य होगा। डा० वेद प्रकाश उपाध्याय कहते हैं कि "इसी लिए इस शब्द से किसी देवता को भी न समझना चाहिए। 'नराशंस' शब्द स्वतः ही इस बात को स्पष्ट कर देता है कि 'प्रशंसित' शब्द जिसका विशेषण है, वह मनुष्य है। यदि कोई 'नर' शब्द को देववाचक मानें तो उसके समाधान में इतना स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि 'नर' शब्द न तो देवता का पर्यायवाची शब्द ही है और न तो देवयोनियों के अंतर्गत कोई विशेष जाति।"[2]

'नर' शब्द का अर्थ मनुष्य होता है, क्योंकि 'नर' शब्द मनुष्य के पर्यायवाची शब्दों में से एक है। 'नराशंस' की तरह 'मुहम्मद' शब्द का अर्थ 'प्रशंसित' होता है। 'मुहम्मद' शब्द 'हम्द' धातु से बना है, जिसका अर्थ प्रशंसा करना होता है। ऋग्वेद में 'कीरि' नाम आया है, जिसका अर्थ है ईश्वर प्रशंसक। अहमद शब्द

---

1. नराशंस : यो नरै : प्रशस्यते। (सायण भाष्य, ऋग्वेद संहिता, 5/5/2)। मूल मंत्र इस प्रकार है—"नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्य।" "नराशंस" शब्द का अर्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी मनुष्यों द्वारा प्रशंसित बताया है।
   (ऋग्वेद हिन्दी भाष्य, पृ० 25, प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
2. 'नराशंस और अंतिम ऋषि', पृ० 5।

का भी यही अर्थ है। अहमद, मुहम्मद साहब का एक नाम है।[1]

वेदों में ऋग्वेद सबसे पुराना है। उसमें 'नराशंस' शब्द से शुरू होनेवाले आठ मंत्र हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंडल, 13वें सूक्त, तीसरे मंत्र और 18वें सूक्त, नवें मंत्र तथा 106वें सूक्त, चौथे मंत्र में 'नराशंस' का वर्णन आया है। ऋग्वेद के द्वितीय मंडल के तीसरे सूक्त, दूसरे मंत्र, 5वें मंडल के पाँचवें सूक्त, दूसरे मंत्र, सातवें मंडल के दूसरे सूक्त, दूसरे मंत्र, 10वें, मंडल के 64वें सूक्त, तीसरे मंत्र और 142वें सूक्त, दूसरे मंत्र में भी 'नराशंस' विषयक वर्णन आए हैं। सामवेद संहिता के 1319वें मंत्र में और वाजसनेयी संहिता के 28वें अध्याय के 27वें मंत्र में भी 'नराशंस' के बारे में ज़िक्र आया है। तैत्तिरीय आरण्यक और शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थों के अलावा यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी 'नराशंस' का उल्लेख किया गया है।

'नराशंस' की चारित्रिक विशेषताओं की हज़रत मुहम्मद (सल्ल) से साम्यता

वेदों में 'नरांशस' की स्तुति किए जाने का उल्लेख है। वैसे ऋग्वेद काल या कृतयुग में यज्ञों के दौरान 'नराशंस' का आह्वान किया जाता था। इसके लिए 'प्रिय' शब्द का इस्तेमाल होता था। 'नराशंस' की चारित्रिक विशेषताओं की हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से तुलना इस प्रकार है—

1. वाणी की मधुरता

ऋग्वेद में 'नराशंस को 'मधुजिह्व' कहा गया है[2], यानी उसमें वाणी की मधुरता होगी। मधुर-भाषिता उसके व्यक्तित्व की ख़ास पहचान होगी। सभी जानते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) की वाणी में काफ़ी मिठास थी।

2. अप्रत्यक्ष ज्ञान रखनेवाला

'नराशंस' को अप्रत्यक्ष ज्ञान रखनेवाला बताया गया है। इस ज्ञान को रखनेवाला कवि भी कहलाता है। ऋग्वेद संहिता में 'नराशंस' को कवि बताया गया है।[3] मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह ने कुछ अवसरों पर परोक्ष बातों की

---

1. पं० रवीन्द्रनाथ त्रिपाठी 'कान्ति' के 28 अक्तूबर–4 नवम्बर 1990 के अंक में। ऋग्वेद का मूल श्लोक यह है—यो रध्रस्योचोदिताय : कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः॥ (ऋग्वेद, 2/12/6)
2. नराशंस मिहप्रियम स्मिन्यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम्। (ऋग्वेद संहिता 1/13/3)
3. नराशंस : सुदूषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः। (ऋग्वेद संहिता 5/5/2)

जानकारी प्रदान की थी अतः पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) ने रोमियों और ईरानियों के युद्ध में रूमियों की हार और नव वर्ष के अंदर ही रूमियों की होनेवाली विजय की पूर्व जानकारी दी थी। नैनवा की लड़ाई में रूमियों की जीत 657 ई० में हुई थी। पवित्र क़ुरआन की सूरा रूम इसी से सम्बन्धित है। रूमियों की पराजय के पश्चात पुनः विजय प्राप्त कर लेने का उल्लेख आया है। इसके साथ ही निकट भविष्य में इनकार करनेवालों पर मुसलमानों के विजयी होने की भविष्यवाणी की गई है।

वे ईश्वर को सबसे अधिक प्यारे और उसे जाननेवाले थे। वे नबी थे। 'नबी' शब्द 'नबा' धातु से बना हुआ शब्द है, जिसका अर्थ सन्देश देनेवाला होता है। आप (सल्ल०) ईश्वर के सन्देशवाहक थे। आचार्य रजनीश के शब्दों में "आप ईश्वर तक पहुँचने की 'बाँसुरी' हैं जिसमें फूँक किसी और की है।"

3. सुन्दर कान्ति के धनी

'नराशंस को सुन्दर कान्तिवाला बताया गया है। इस विशेषता का उल्लेख करते हुए ऋग्वेद में 'स्वर्चि' शब्द आया है।[1]

'स्वर्चि' शब्द का विच्छेद है 'शोभना अर्चिर्यस्य सः' यानी सुन्दर दीप्ति या कान्ति से युक्त। इस शब्द का तात्पर्य यह है कि इतने सुन्दर स्वरूप का व्यक्ति जिसके चेहरे से रौशनी-सी निकलती हो। ऋग्वेद में ही बता दिया गया है कि वह अपने महत्त्व से घर-घर को प्रकाशित करेगा।[2] स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने घर-घर में ज्ञान की ज्योति जलाई, अज्ञान को ख़त्म कर दिया और अंधकार में भटक रहे लोगों को नई रौशनी दी।

ऋग्वेद में ही कहा गया है कि 'अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि॥ (ऋग्वेद : 8, 6, 10)

सामवेद में भी है : 'अहमिधि पितुः परिमेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि॥ (सामवेद प्र० 2 द० 6 मं० 8) अर्थात, अहमद (मुहम्मद) ने अपने रब से हिकमत से भरी जीवन व्यवस्था को हासिल किया। मैं सूरज की तरह रौशन हो रहा हूँ।

मुहम्मद साहब इतने सुन्दर थे कि लोग स्वतः आपकी तरफ खिंच आते थे।

---

1. नराशंस : प्रति धामान्यञ्जन तिस्रो दिव : प्रति मह्वा स्वर्चिः॥ (ऋग्वेद संहिता 2/3/2)
2. नराशंस : प्रतिधामान्यञ्जन तिस्रो दिव : प्रति मह्वा स्वर्चिः॥ (ऋग्वेद संहिता 2/3/2)

इस संदर्भ में रेवरेंड बासवर्थ स्मिथ ने 'मुहम्मद एण्ड मुहम्मेदनिज़्म' में लिखा है कि मुहम्मद साहब के विरोधी भी उनकी आकर्षण शक्ति तथा उनकी गरिमा से प्रभावित होकर उनका सम्मान करने को बाध्य हो जाते थे। तमाम बाधाओं और विरोध के बावजूद मुहम्मद साहब घर-घर में ज्ञान की ज्योति प्रकाशित करते रहे।"

4. पापों का निवारक

ऋग्वेद में नराशंस को 'पापों से लोगों को हटानेवाला' बताया गया है।[1] यह कहने की ज़रूरत ही नहीं है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की समस्त शिक्षाएँ और आप पर अवतरित क़ुरआन समग्र जीवन को पापों से उबार देता है। यह सन्मार्ग का आईना (दर्पण) है जिसे 'देखकर' और उसपर अमल करके व्यक्ति को तमाम पापों से छुटकारा मिल जाता है। उसकी दुनियावी और मरने के बाद की ज़िन्दगी ख़ुशहाल हो जाती है। इस्लाम जुआ, शराब और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से लोगों को रोकता है तथा अवैध कमाई से प्राप्त धन को खाने, ब्याज लेने और किसी का हक़ मारने को निषिद्ध ठहराता है। वह अत्याचार, दमन और शोषण से मुक्त समाज की स्थापना करता है।

5. पत्नियों की साम्यता

'नराशंस' के पास 12 पत्नियाँ होंगी, इस बात की पुष्टि भी अथर्ववेद के उसी मंत्र से होती है जिस मंत्र में उसके द्वारा सवारी के रूप में ऊँट के प्रयोग करने की बात का उल्लेख है। यह मंत्र इस प्रकार है—

> उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तों द्विर्दश।
> वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः।
>
> —अथर्ववेद कुन्ताप सूक्त 20/127/2

अर्थात, जिसकी सवारी में दो ख़ूबसूरत ऊँटनियाँ हैं। या जो अपनी बारह पत्नियों समेत ऊँटों पर सवारी करता है उसकी मान-प्रतिष्ठा की ऊँचाई अपनी तेज़ रफ़्तार से आसमान को छूकर नीचे उतरती है।

इस मंत्र के अनुरूप हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बारह पत्नियाँ थीं।

आप (सल्ल०) की पत्नियों के नाम क्रम से इस प्रकार हैं—1. हज़रत

---

1. नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे। —ऋग्वेद, 1/106/4
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अहंसो निष्पिपर्तन॥

ख़दीजा (रज़ि०), 2. हज़रत सौदा (रज़ि०), 3. हज़रत आइशा (रज़ि०), 4. हज़रत हफ़्सा (रज़ि०), 5. हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०), 6. हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि०), 7. हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश (रज़ि०), 8. हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा (रज़ि०), 9. हज़रत जुवैरिया (रज़ि०), 10. सफ़ीया (रज़ि०), 11. हज़रत रैहाना (रज़ि०), और 12. हज़रत मैमूना (रज़ि०)[1] उल्लेखनीय है कि और किसी भी धार्मिक व्यक्ति की बारह पत्नियाँ नहीं थीं। हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में कुछ महापुरुषों के पास सैकड़ों पत्नियाँ होने का विवरण मिलता है।

6. स्थानगत साम्यता

अथर्ववेद के उपर्युक्त मंत्र में नराशंस द्वारा सवारी के रूप में ऊँटों के उपयोग की जो बात कही गई है, उससे नराशंस की पहचान के साथ उसके आगमन के स्थान का भी बोध होता है। ऊँट की सवारी का अर्थ यह हुआ कि नराशंस जिस स्थान में पैदा होगा वहाँ ऊँटों की प्रचुरता होगी। ऊँट रेगिस्तानी क्षेत्र में अधिक पाए जाते हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म अरब के रेगिस्तानी क्षेत्र में हुआ।

7. अन्य साम्यताएँ

अथर्ववेद में अन्योक्ति अलंकार के माध्यम से नराशंस के बारे में पहचान की कतिपय बातें भी बताई गई हैं।

कुन्ताप सूक्त में है—

इदं जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते।

इसका अर्थ बताते हुए पं० क्षेम करण दास त्रिवेदी लिखते हैं—"हे मनुष्यो ! यह आदर से सुनो कि मनुष्यों में प्रशंसावाला पुरुष बड़ाई किया जाएगा।"[2]

एक अन्य मंत्र में कहा गया है—

एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम्॥ (अथर्ववेद 20, 127, 3)

अर्थात, ईश्वर मामहे ऋषि को सौ सोने के सिक्के देगा, दस हज़ार गायें देगा, तीन सौ अरबी घोड़े देगा और दस हार।

---

1. अल्लामा इब्ने ज़री की किताब में यही क्रम है।
2. अथर्ववेद हिन्दी भाष्य, पृ० 1401, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

यहाँ मामहे ऋषि से मतलब मुहम्मद (सल्ल०) से है। आप (सल्ल०) को ईश्वर द्वारा सौ स्वर्ण मुद्राएँ देने का तात्पर्य ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति से है जो रत्नवत महत्व के हों। मुहम्मद (सल्ल०) जो शिक्षाएँ लोगों को देते थे उनकी सुरक्षा का कार्य सौ व्यक्ति करते थे। ये अस्हाबे सुफ़्फ़: कहलाते थे। ये लोगों को शिक्षाओं की जानकारी भी देते थे और शिक्षाओं की रक्षा भी करते थे।

इसी प्रकार दस हज़ार गो प्रदान किए जाने का अर्थ 'अच्छे व्यक्ति दिए जाने से है। 'गो' अलंकारिक शब्द है, जो साधारणतया अच्छे व्यक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है। मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं के अनुयायियों की संख्या आपके जीवन काल के अंतिम चरण में दस हज़ार थी। मक्का को जीतने के लिए मदीना से जाते समय आपके सहायकों की संख्या दस हज़ार थी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दस हज़ार अनुयायी जब मक्का पहुँचे तो वहाँ न किसी प्रकार का युद्ध हुआ न ही किसी अनुयायी ने किसी को नष्ट किया, इसी कारण से उन दस हज़ार लोगों को गो कहा गया।

नराशंस को तीन सौ अर्वन की प्राप्ति का अर्थ ऐसे वीर योद्धाओं की प्राप्ति है जो घोड़े की तरह तेज़ हों। 'अर्वन' शब्द का शाब्दिक अर्थ घोड़ा होता है। यह भी गो की भाँति अलंकारिक शब्द है। बद्र की लड़ाई में मुहम्मद (सल्ल०) के साथियों (सहाबा) की संख्या तीन सौ थी।

नराशंस को दस स्रज: या गले का हार दिए जाने से तात्पर्य ऐसे व्यक्ति हैं जो गले के हार के समान हों और नराशंस को प्रिय हों। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दस ऐसे व्यक्ति थे, जो उनपर अपने प्राणों को भी समर्पित करने को तैयार रहते थे। वे गले के हार की तरह मुहम्मद (सल्ल०) के चारों तरफ़ हमेशा रहते थे। ये दसों व्यक्ति अशरः मुबश्शरः कहे जाते हैं। ये हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के वे साथी (सहाबी) हैं,जिन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई।
इनके नाम हैं— अबूबक्र(रज़ि०),उमर(रज़ि०),उसमान बिन अफ़्फ़ान(रज़ि०),तल्हा (रज़ि०),अली(रज़ि०),सअद बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि०),सईद बिन ज़ैद(रज़ि०),अब्दुर्रहमान बिन औफ़(रज़ि०),अबू उबैदा बिन जर्राह(रज़ि०) और ज़ुबैर(रज़ि०)।

अथर्ववेद के एक मंत्र में कहा गया है कि 'ऐ लोगो, यह (ख़ुशख़बरी) ध्यानपूर्वक सुनो, नराशंस की प्रशंसा की जाएगी। साठ हज़ार नब्बे दुश्मनों में इस हिजरत करनेवाले, अमल फैलानेवाले को हम (सुरक्षा) में लेते हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र में भी मामहे ऋषि के दस हज़ार साथियों (सहाबा) का ज़िक्र आया है। मंत्र इस प्रकार है—

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्त्रैर्वैश्वानरः त्र्यरुणाश्चिकेत ॥

(ऋग्वेद म० 5, सू० 27, मंत्र 1)

अर्थात, हक़परस्त, अत्यन्त विवेकशील, शाक्तिशाली, दानी मामहे ऋषि ने कलाम (वाणी) के साथ मुझे सुशोभित किया। सर्वशक्तिमान, सब ख़ूबियाँ रखनेवाला, सारे संसार के लिए 'कृपामय' दस हज़ार सहयोगियों (सहाबा) के साथ मशहूर हो गया।

मामहे ऋषि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी मामहे ऋषि को मुहम्मद (सल्ल०) ही माना है।

पुराणों के प्रमाण

भविष्य पुराण और हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)*

केवल वेद ही नहीं बल्कि पुराणों में भी मुहम्मद साहब का कार्यस्थल रेगिस्तानी क्षेत्र में होने का उल्लेख आता है। भविष्य पुराण में स्पष्टतः कहा गया है कि 'एक दूसरे देश में एक आचार्य अपने मित्रों के साथ आएँगे। उनका नाम महामद होगा। वे रेगिस्तानी क्षेत्र में आएँगे।[1] इस अध्याय का श्लोक 6, 7, 8 भी मुहम्मद साहब के विषय में है। इस्लाम के पैग़म्बर (सल्ल॰) का जन्म स्थान-सहित अन्य साम्यताएँ कल्कि अवतार से भी मिलती हैं, जिनका वर्णन कल्कि पुराण में है। इसकी चर्चा बाद में की जाएगी।

यहाँ यह उल्लेख कर देना उचित होगा कि भविष्य पुराण में कई नबियों (ईशदूतों) की जीवन गाथा है। इस्लाम पर भी विस्तृत अध्याय है। इस पुराण में एकदम सटीक तौर पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बारे में बातें आती हैं। इसमें जहाँ महामद आचार्य के नाम की 'मुहम्मद' शब्द से निकटता है, वहीं इस्लाम के पैग़म्बर (सल्ल॰) की पहचान की अन्य बातें बिल्कुल सत्य उतरती हैं। इनमें ज़रा भी व्याख्या की ज़रूरत नहीं है। भविष्य पुराण के अनुसार, शालिवाहन (सात वाहन) वंशी राजा भोज दिग्विजय करता हुआ समुद्र पार (अरब) पहुँचेगा। इसी दौरान (उच्च कोटि के) आचार्य शिष्यों से घिरे हुए महामद (मुहम्मद सल्ल॰) नाम से विख्यात आचार्य को देखेगा। भविष्य पुराण (प्रतिसर्ग पर्व 3, अध्याय 3, खंड 3, कलियुगीयेतिहास समुच्चय) में कहा गया है–

लिंङ्गच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी स दूषकः।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम ।।
विना कौलं च पशवस्तेषां भक्ष्या मता मम ।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति ।।
तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकाः ।
इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृतः ।।
(श्लोक 25-27)

इन श्लोकों का भावार्थ इस प्रकार है– 'हमारे लोगों का ख़तना होगा, वे शिखाहीन होंगे, वे दाढ़ी रखेंगे, ऊँचे स्वर में आलाप करेंगे यानी अज़ान देंगे। शाकाहारी-मांसाहारी (दोनों) होंगे, किन्तु उनके लिए बिना कौल यानी मंत्र से पवित्र किए बिना कोई पशु भक्ष्य (खाने योग्य) नहीं होगा (वे हलाल मांस खाएँगे)। इस प्रकार हमारे मत के अनुसार हमारे अनुयायियों का मुस्लिम संस्कार

[1] एतिस्मिन्नन्तिरे म्लच्छ आचाय्योंण समन्वितः।। महामद इति ख्यातः शिष्य शाखा सममन्विः।।

होगा। उन्हीं से मुसलवन्त यानी निष्ठावानों का धर्म फैलेगा और ऐसा मेरे कहने से पैशाच धर्म का अंत होगा।'[1]

भविष्य पुराण की इन भविष्यवाणियों की हर चीज़ इतनी स्पष्ट है कि ये स्वतः ही हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर खरी उतरती हैं। अतः आप (सल्ल॰) की अंतिम ऋषि (पैग़म्बर) के रूप में पहचान भी स्पष्ट हो जाती है। ऐसी भी शंका नहीं है कि इन पुराणों की रचना इस्लाम के आगमन के बाद हुई हो। वेद और इस तरह के कुछ पुराण इस्लाम से काफ़ी पहले के हैं।

पं॰ धर्मवीर उपध्याय का शोध

डॉ॰ कमला कान्त तिवारी और डॉ॰ रमेश प्रसाद गर्ग ने अपनी प्रकाशित पुस्तक 'कलयुग के अंतिम नबी' में संस्कृत के उद्भट विद्वान पं॰ धर्मवीर उपाध्याय की पुस्तक 'अंतिम ईशदूत'[2] के कतिपय अंशों को उद्धृत करते हुए लिखा है–

"पंडित जी ने एक और अनोखी बात लिखी है कि कागभुसुन्डी एवं गरुड़ दोनों ही श्री रामचंद्र की सेवा में दीर्घकाल तक रहे एवं उनके उपदेशों को न केवल सुनते ही रहे अपितु अन्य जिज्ञासु श्रोताओं को सुनाते भी रहे। इन उपदेशों की चर्चा श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'संग्राम पुराण' के अनुवाद में (जिसमें ईश्वर ने अपने पुत्र शण्मुख को आनेवाले धर्म और अवतार के प्रति भविष्य वाणी की है) लिखा है, जिसका अनुपाद इस प्रकार से है–

यहाँ न पक्षपात कछु राखहुँ। वेद पुराण संत मत भाखहुँ।।

अर्थात्, मैंने यहाँ किसी का पक्ष न लेकर वेदों, पुराणों और संतो के मत को प्रकट किया है।

संवत् विक्रम दोउ अनङ्गा। महाँकोक नस चतुर्पतङ्गा।।

अर्थात्, सातवीं विक्रम सदी के चारों सूर्यों की ज्योति के साथ वह जन्म लेगा।

राजनीति भव प्रीति दिखावे। आपन मत सबका समझावे।।

अर्थात्, राज्य करने में जैसी स्थिति हो प्रेम से अथवा कठोता से अपना मत सभी को समझा सकेगा।

सुरन चतुसुदर शतचारी। तिनको वंश भयो अतिभारी।।

अर्थात्, उनके चारों देव साथ होंगे जिनकी सहायता से उसके अनुयायियों की संख्या बढ़ेगी।

तब तक सुंदरमाद्दिकोंया। बिना महामद पार न होए।।

---

[1] 'Similarities Between Hinduism & Islam' (By Dr. Zakir naik P.37; 38 Publisher : M.S.S. New Delhi-25), 'अन्तिम सन्देष्टा कब कहाँ और कौन?' पृष्ठ, 52, 53 लेखक : मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य, B.H.U., वाराणसी) प्रकाशक : मक्तबा पयामे अमन, 504/38/2 फ़ारूक़ी मन्ज़िल, नदवा रोड़, लखनऊ (उ.प्र.)

[2] यह पुस्तक 1927 ई. में नैशनल प्रिंटिंग प्रेस, दरिया गंज, दिल्ली से सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी।

जब तक उसका पत्र रहेगा महामद के बिना पार नहीं होगा–

तवसे मानहु जन्तु भिखारी। समरथ नाम एहि ब्रत धारी।।

अर्थात्, मानव, भिक्षुक एवं जन्तु सभी इस व्रतधारी का नाम जपते[1] ईश्वर के भक्त हो जाएँगे।

हर सुंदर निर्माण का होई। तुलसी वचन सत्य सच सोई।।

अर्थात, फिर कोई उसकी तरह जन्म न लेगा गोस्वामी तुलसी जी वह कह रहे हैं जो सत्य है। (संग्राम पुराण, स्कन्द 12 काण्ड 6)।

पं. धर्मवीरजी ने इसी प्रकार अन्य कथा भी लिखी है वह इस प्रकार है– जब श्री शंकर जी पृथ्वी को त्याग हिमालय पर्वत की ओर जाने लगे तो उन लोगों को संबोधित करते हुए बोले, जिन्होंने उन्हें सताया होगा कि आप लोग कुमार्ग पर न चलें अपितु सद्मार्ग पर चलें अन्यथा द्वापर के अंत में एक ऐसा ईश्वर-भक्त जन्म लेगा जो आप जैसे आततायियों का अंत कर देगा।

जब श्री शंकर जी कैलाश पर्वत की चोटी पर पहुँच कर ध्यानावस्थित हुए तो किसी दिन उनकी प्रिय पत्नी पार्वती जी ने प्रश्न पूछा कि हे महादेव! द्वापर के अंत में ऐसा पराक्रमी कौन होगा जो धर्मभ्रष्टों का अंत करेगा। श्री शंकर जी ने उन्हें उत्तर दिया आदाम (आदम) के 6000 वर्षों बाद शम्बल द्वीप के समीप मंदरीने में ईश्वर का अंश आदम की संतान चमत्कारिक रूप में अवतरित होगा जिस धरती पर वह जन्म लेगा वह मेरी प्रिय धरती होगी। उसके सिर पर मेघ आच्छादित रहेंगे और धरती पर उसकी परछाई नहीं पड़ेगी।

उपरोक्त कथा को श्री रामचन्द्र के गुरु (श्री वशिष्ठ मुनि) ने भगवान शंकर जी से सुनकर रामचंद्र जी को बतलाया। मुनि वशिष्ठ श्री शिव के भक्त तो थे ही, रामचंद्र के गुरु भी थे। श्री हरगोविन्द लाल ने अपनी लिखित 'रामकथा' के पृष्ठ 112 पर इन सभी बातों की चर्चा की है। पंडित धर्मवीर जी भागवत पुराण, स्कन्द दस के अन्तर्गत लिखते हैं कि कल्कि अवतार की सवारी विद्युत सरीखी तीव्रगामी होगी एवं उसका मुखमंडल स्त्री की भांति एवं शेष शरीर घोड़े की तरह होगा।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के पूर्व अध्यक्ष लाला हंसराज ने बतलाया है कि राजा सामरी की अन्तिम इच्छा केरल के एक मठ में लिखित प्रमाण स्वरूप सुरक्षित है, जिसका अवलोकन करने से ही स्पष्ट हो जाता है कि राजा मदीना गया था एवं राजा ने हज़रत मुहम्मद के धर्म को स्वीकार किया।"
{'कलयुग के अंतिम ऋषि', पृ. 7-9 प्रकाशक, हिन्दी-उर्दू साहित्य संगम, (रजिस्टर्ड) ए 25/42, मछोदरी, वाराणसी, 221001}

---

[1] मूल पाठ में 'मानहु' शब्द प्रयुक्त हुआ है, अतः इसका अर्थ 'मानना' हुआ। इसलिए अर्थ यह होगा कि 'इस व्रत धारी को मानते ही ईश्वर के भक्त हो जाएंगे।'

कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपने एक शोधपत्र में मुहम्मद (सल्ल०) को कल्कि अवतार बताया है। कल्कि और मुहम्मद (सल्ल०) की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करके डा० उपाध्याय ने यह सिद्ध कर दिया है कि कल्कि का अवतार हो चुका है और वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। इस शोधपत्र की भूमिका में वे लिखते हैं—

"वैज्ञानिक अणु विस्फोटों से जो सत्यानाश संभव है, उसका निराकरण धार्मिक एकता सम्बन्धी विचारों से हो जाता है। जल में रहकर मगर से बैर उचित नहीं, इस कारण मैंने वह शोध किया जो धार्मिक एकता का आधार है। राष्ट्रीय एकता के समर्थकों द्वारा इस शोधपत्र पर कोई आपत्तिं नहीं होगी। आपत्ति होगी तो कूपमण्डूक लोगों को, यदि वे कूप के बाहर निकलकर संसार को देखें तो कूप को ही संसार मानने की उनकी भावना हीन हो जाएगी।". . . . "मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस शोध पुस्तक के अवलोकन से भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि अखिल भूमण्डल में एकता की लहर दौड़ पड़ेगी और धर्म के नाम पर होनेवाले क़लह शांत होंगे।'

यहाँ पर इस शोधपत्र की ख़ास बातें और अन्य स्रोतों से प्राप्त तद् विषयक सामग्री पेश की जा रही है।

अवतार का तात्पर्य

अवतार शब्द 'अव' उपसर्गपूर्वक 'तृ' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगाकर बना है। इसका अर्थ पृथ्वी पर आना है। 'ईश्वर का अवतार' शब्द का अर्थ है— सबको संदेश देनेवाले महात्मा का पृथ्वी पर जन्म लेना। कल्कि अवतार को ईश्वर का अन्तिम अवतार बताया गया है। 'ईश्वर का अवतार' शब्द में 'का' शब्द सम्बन्धकारक चिह्न है, अतः ज़ाहिर है कि ईश्वर से संबद्ध व्यक्ति का अवतीर्ण होना। ईश्वर से संबद्ध कौन है? उसका भक्त ही सबसे संबद्ध हो सकता है। ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति को 'कीरि' कहा गया है। हिन्दी में 'कीरि'

शब्द का अर्थ 'ईश्वर का प्रशंसक' और अरबी में 'अहमद' होता है। लेकिन क्या ईश्वर का प्रशंसक 'कीरि' या 'अहमद' एक नहीं हो सकता। हर देश और समय के लिए अलग-अलग अवतार हुए हैं क्योंकि एक अवतार से पूरे विश्व का कल्याण नहीं हो सकता था। कुरआन में है कि हर भाग में रसूल (संदेशवाहक) भेजे गए। अंतिम अवतार कल्कि की अलग विशेषता है। वे किसी एक हिस्से के लिए नहीं वरन् समग्र विश्व के लिए भेजे गए।

जब लोग वास्तविक धर्म से विमुख होकर अधर्म की राह पकड़ लेते हैं या धर्म को अपने स्वार्थ के लिए तोड़-मरोड़ देते हैं, तो उन्हें फिर सही मार्ग दिखाने के लिए ईश्वर अपने अवतार या पैग़म्बर भेजता है।

अंतिम अवतार के आने का लक्षण

कल्कि के अवतरित होने का समय उस माहौल में बताया गया है, जबकि बर्बरता का साम्राज्य होगा। लोगों में हिंसा व अराजकता का बोलबाला होगा। पेड़ों का न फलना, न फूलना। अगर फल-फूल आएँ भी तो बहुत कम। दूसरों को मारकर उनका धन लूट लेना और लड़कियों को पैदा होते ही पृथ्वी में गाड़ देना। एक ईश्वर को छोड़कर कई देवी-देवताओं की पूजा, पेड़-पौधों एवं पत्थरों को भगवान मानने की प्रवृत्ति, भलाई की आड़ में बुराई करने की प्रवृत्ति, असमानता आदि है। ऐसे ही नाज़ुक दौर में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भेजे गए थे।

सातवीं शताब्दी के शुरू में रोमन और पर्सियन साम्राज्यों की जितनी बुरी अवस्था थी, उतनी शायद कभी नहीं हुई। बाइजेन्टाइन साम्राज्य के क्षीण हो जाने से सम्पूर्ण शासन भ्रष्ट हो चुका था। पादरियों के दुष्कर्मों और दुष्टताओं के फलस्वरूप ईसाई धर्म बहुत गिर गया था। पारस्परिक संघर्षों और शत्रुता के कारण अफ़रा-तफ़री का आलम था। इस समय हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भेजे गए। इस्लाम धर्म रोमन साम्राज्य के संघर्षों से दूर था। इस धर्म के भाग्य में यही लिखा था कि यह तूफ़ान की तरह से सम्पूर्ण पृथ्वी पर छा जाएगा और अपने समक्ष बहुत-से साम्राज्यों, शासकों और प्रथाओं को इस तरह उड़ा देगा जैसे कि आँधी मिट्टी को उड़ा देती है।[1] इसी प्रकार सेल ने कुरआन के अनुवाद की प्रस्तावना में लिखा है—"गिरजाघर के पादरियों ने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर डाले

---

1. 'Apology for Mohammed', by Gofrey Higgins, Pags. 2

थे और शांति प्रेम एवं अच्छाइयाँ लुप्त हो गई थीं। वे मूल धर्म को भूल गए थे। धर्म के विषय में अपने तरह-तरह के विचार बनाए हुए परस्पर कलह करते रहते थे। इसी पृथ्वी में रोमन गिरजाघरों में बहुत-सी भ्रम की बातें धर्म के रूप में मानी जाने लगीं और मूर्ति-पूजा बहुत ही निर्लज्जता से की जाने लगी।[1] इसके परिणामस्वरूप एक ईश्वर के स्थान पर तीन ईश्वर हो गए और मरयम को ईश्वर की माँ समझा जाने लगा। अज्ञानता के इस दौर में अल्लाह ने अपना अंतिम रसूल भेजा।

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि अन्तिम अवतार उस समय होगा जबकि युद्धों में तलवार का इस्तेमाल होता होगा और घोड़ों की सवारी की जाती हो। भागवत पुराण में उल्लेख है कि 'देवताओं द्वारा दिए गए वेगगामी घोड़े पर चढ़कर आठों ऐश्वर्यों और गुणों से युक्त जगत्पति तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे।[2] तलवारों और घोड़ों का युग तो अब समाप्त हो चुका है। आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पूर्व तलवारों और घोड़ों का प्रयोग होता था। उसके लगभग सौ वर्ष बाद से बारूद का निर्माण सोडा और कोयला मिलाकर होने लगा था। वर्तमान समय में तो घोड़ों और तलवारों का स्थान टैंकों और मिसाइलों आदि ने ले लिया है।

कल्कि का अवतार-स्थान

कल्कि के अवतार का स्थान शम्भल ग्राम में होने का उल्लेख कल्कि एवं भागवत् पुराण में किया गया है। यहाँ पहले यह निश्चय करना आवश्यक है कि शम्भल ग्राम का नाम है या किसी ग्राम का विशेषण। डा० वेद प्रकाश उपाध्याय के मतानुसार 'शम्भल' किसी ग्राम का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ग्राम विशेष को 'शम्भल' नाम दिया गया होता तो उसकी स्थिति भी बताई गई होती। भारत में खोजने पर यदि कोई 'शम्भल' नामक ग्राम मिलता है तो वहाँ आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले कोई पुरुष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का उद्धारक हो। फिर अन्तिम अवतार कोई खेल तो नहीं है कि अवतार हो

---

1. Translation of the Qur'an, by Gorage Sale, First Translation/Preface on pages 25/26
2. अश्वमाशुगमारुह्य देवदत्तं जगत्पतिः।
   असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्य गुणान्वितः॥

   (भागवत् पुराण,12 स्कंध, 2 अध्याय,19वां श्लोक)

जाए और समाज में ज़रा-सा परिवर्तन भी न हो, अतः 'शम्भल' शब्द को विशेषण मानकर उसकी व्युत्पत्ति पर विचार करना आवश्यक है।

(1) 'शम्भल' शब्द 'शम्' (शांत करना) धातु से बना है अर्थात, जिस स्थान में शान्ति मिले।

(2) सम् उप सर्गपूर्वक 'वृ' धातु में अप् प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न शब्द 'संवर' हुआ। वबयोरभेदः और रलयोरभेदः के सिद्धांत से शम्भल शब्द की निष्पत्ति हुई, जिसका अर्थ हुआ 'जो अपनी ओर लोगों को खींचता है या जिसके द्वारा किसी को चुना जाता है'।

(3) 'शम्वर' शब्द का निघण्टु (1/12/88) में उदकनामों के पाठ हैं। 'र' और 'ल' में अभेद होने के कारण शम्भल का अर्थ होगा जल का समीपवर्ती स्थान'।[1]

इस प्रकार वह स्थान जिसके आसपास जल हो और वह स्थान अत्यंत आकर्षण एवं शांतिदायक हो, वही शम्भल होगा। अवतार की भूमि पवित्र होती है। 'शम्भल' का शाब्दिक अर्थ है—शांति का स्थान। मक्का को अरबी में 'दारुल अमन' कहा जाता है, जिसका अर्थ शांति का घर होता है। मक्का मुहम्मद (सल्ल०) का कार्यस्थल रहा है।

जन्म तिथि

कल्कि पुराण में अंतिम अवतार के जन्म का भी उल्लेख किया गया है। इस पुराण के द्वितीय अध्याय के श्लोक 15 में वर्णित है—

"द्वादश्यां शुक्ल पक्षस्य, माधवे मासि माधवम्।
जातो ददृशतुः पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ॥

अर्थात "जिसके जन्म लेने से दुखी मानवता का कल्याण होगा, उसका जन्म मधुमास के शुक्ल पक्ष और रबी फसल में चन्द्रमा की 12वीं तिथि को होगा।" एक अन्य श्लोक में है कि कल्कि शम्भल में विष्णुयश नामक पुरोहित के यहाँ जन्म लेंगे।[2]

मुहम्मद साहब (सल्ल०) का जन्म 12 रबीउल अव्वल को हुआ। रबीउल

---

1. कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, (पृ० 30)
2. शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
   भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति॥
   (भागवत पुराण, द्वादश स्कंध, 2 अध्याय, 18वाँ श्लोक)

अव्वल का अर्थ होता है : मधुमास का हर्षोल्लास का महीना। आप मक्का में पैदा हुए। विष्णुयशसः कल्कि के पिता का नाम है, जबकि मुहम्मद साहब के पिता का नाम अब्दुल्लाह था। जो अर्थ विष्णुयश का होता है वही अब्दुल्लाह का। विष्णु यानी अल्लाह और यश यानी बन्दा = अर्थात अल्लाह का बन्दा = अब्दुल्लाह।

इसी तरह कल्कि की माता का नाम सुमति (सोमवती) आया है जिसका अर्थ है—शांति एवं मननशील स्वभाववाली। आप (सल्ल०) की माता का नाम भी आमिना था जिसका अर्थ है शांतिवाली।

अन्तिम अवतार की विशेषताएँ

कल्कि की विशेषताएँ हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के जीवन (सीरत) से मिलती-जुलती हैं। इन विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन यहाँ पेश किया जा रहा है।

1. अश्वारोही और खड्गधारी—पहले लिखा जा चुका है कि भागवत पुराण में अंतिम अवतार के अश्वारोही और खड्गधारी होने का उल्लेख है। उसकी सवारी ऐसे घोड़े की होगी जो तेज़ गति से चलनेवाला होगा और देवताओं द्वारा प्रदत्त होगा। तलवार से वह दुष्टों का संहार करेगा। घोड़े पर चढ़कर तलवार से दुष्टों का दमन करेगा। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भी फ़रिश्तों द्वारा घोड़ा प्राप्त हुआ था, जिसका नाम बुर्राक़ था। उसपर बैठकर अंतिम रसूल ने रात्रि को तीर्थयात्रा की थी। इसे 'मेराज' भी कहते हैं। इस रात आपकी अल्लाह से बातचीत हुई थी और आपको बैतुलमक़्दिस (यरूशलम) भी ले जाया गया था।

मुहम्मद साहब को घोड़े अधिक प्रिय थे। आपके पास सात घोड़े थे। हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने मुहम्मद (सल्ल०) को देखा कि घोड़े पर सवार थे और गले में तलवार लटकाए हुए थे।[1] आपके पास नौ तलवारें थीं। कुल परम्परा से प्राप्त तलवारें जुल्फ़िक़ार नामक तलवार, क़लईया नामवाली तलवार।

2. दुष्टों का दमन—कल्कि के प्रमुख विशेषताओं में एक विशेषता यह भी है कि यह दुष्टों का ही दमन करेगा।[2] धर्म के प्रसार और दुष्टों के दमन में मदद के लिए देवता भी आकाश से उतर आएँगे।[3] हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दुष्टों

---

1. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस
2. भागवत पुराण 12-2-19
3. यात यूयं भुवं देवाः स्वांशावतरणे रताः। (कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 7)

का दमन किया। उन्होंने डकैतों, लुटेरों और अन्य असामाजिक तत्त्वों को सुधारकर मानवता का पाठ पढ़ाया और उन्हें सत्य मार्ग दिखाया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ऐसे कुसंस्कृत लोगों को सुसंस्कार से रहना सिखाया। औरतों को उनका हक़ दिलाया। एकेश्वर के साथ तमाम देवताओं के घालमेल का आपने ज़ोरदार खंडन किया तथा कहा कि इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है, बल्कि सनातन धर्म है। दुष्टों के दमन में आपको फ़रिश्तों की मदद मिली। क़ुरआन मजीद में अल्लाह कहता है कि अल्लाह ने तुमको बद्र की लड़ाई में मदद दी और तुम बहुत कम संख्या में थे, तो तुमको चाहिए कि तुम अल्लाह ही से डरो और उसी के शुक्रगुज़ार होओ। जब तुम मोमिनों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा रब तुमको तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजकर मदद करे, बल्कि अगर उसपर सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो, तो अल्लाह तुम्हारी मदद पाँच हज़ार फ़रिश्तों से करेगा।[1]

सूरा अहज़ाब में भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को ईश्वर की मदद मिलने का उल्लेख है। इस सूरह की आयत संख्या 9 में वर्णित है कि "ऐ ईमानवालो! अल्लाह की उस कृपा का स्मरण करो, जब तुम्हारे विरुद्ध सेनाएँ आईं तो हमने भी उनके विरुद्ध पवन और ऐसी सेनाएँ भेजीं, जिनको तुम नहीं देखते थे, और जो कुछ तुम कर रहे थे, वह अल्लाह देख रहा था।" इस प्रकार दुष्टों का नाश करने में ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की मदद के लिए अपने फ़रिश्ते और अपनी सेनाएँ भेजी।

3. जगत्पति—पति शब्द 'पा' (रक्षा करना) धातु में उति 'प्रत्यय' के संयोग से बना है। जगत का अर्थ है संसार। अतः जगत्पति का अर्थ हुआ संसार की रक्षा करनेवाला। भागवत पुराण में अंतिम अवतार कल्कि को जगत्पति भी कहा गया है।[2]

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जगत्पति[3] हैं, क्योंकि उन्होंने पतनशील समाज को

---

1. क़ुरआन, सूरा आले इमरान, आयत संख्या 123, 124 और 125।
2. भागवत पुराण, द्वादश स्कंध, द्वितीय अध्याय, 19वाँ श्लोक
3. संस्कृत के व्याकरणाचार्य वामन शिवराम आप्टे ने "पति" शब्द का अर्थ "प्रधानता करनेवाला" भी बताया है (देखिए, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 568, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स संस्करण 1989)। इस प्रकार जगत्पति का अर्थ हुआ : संसार में प्रधानता करनेवाला। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जिस इस्लाम धर्म को लेकर आए, वह यद्यपि मानव

बचाया। उसकी रक्षा की और संमार्ग दिखाया। आप सारे संसार के लोगों के लिए ईश्वर का संदेश लेकर आए। क़ुरआन में है—"ऐ मुहम्मद एलान कर दो कि सारी दुनिया के लिए नबी होकर तुम आए हो।"[1] एक अन्य स्थान पर है—"अत्यंत बरकतवाला है वह जिसने अपने बंदे पर पवित्र ग्रन्थ क़ुरआन उतारा ताकि सम्पूर्ण संसार के लिए वह पापों का डर दिखानेवाला हो।"[2]

4. **चार भाइयों के सहयोग से युक्त**—कल्कि पुराण के अनुसार चार भाइयों के साथ कल्कि कलि (शैतान) का निवारण करेंगे।[3]

मुहम्मद (सल्ल०) ने भी चार साथियों के साथ शैतान का नाश किया था। ये चार साथी थे—अबू बक्र (रज़ि०), उमर (रज़ि०), उसमान (रज़ि०) और अली (रज़ि०)।

5. **अन्तिम अवतार**—कल्कि को अन्तिम युग का अंतिम अवतार बताया है।[4] मुहम्मद (सल्ल०) ने भी एलान किया था कि मैं अंतिम रसूल हूँ।

'कल्कि' शब्द का अर्थ 'वाचस्पत्यम्' तथा 'शब्दकल्पतरु' में अनार का फल खानेवाले तथा कलंक को धोनेवाले किया गया है। पैग़म्बर (सल्ल०) भी अनार और खजूर का फल खाते थे तथा प्राचीन काल में आगत मिश्रण (शिर्क) और नास्तिकता (कुफ़्र) को धो दिया।[5]

जीवन के आरंभ से विद्यमान था, परन्तु आप (सल्ल०) के ज़रिए इसे पूर्णता और प्रधानता प्राप्त हुई। क़ुरआन में अल्लाह का कथन है : "आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को "दीन" (धर्म) की हैसियत से पसन्द किया।" (5 : 3)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने संसार में सत्य को प्रधानता दी, उसे फैलाया और लोगों को इसके लिए उभारा कि स्वयं भी सत्य का अनुसरण करें और दूसरों तक सत्य-संदेश पहुँचाएँ। आप (सल्ल०) के द्वारा नेकियों और अच्छाइयों को प्रधानता मिली। अच्छे शील स्वभाव और नैतिकता की पूर्ति हुई। एक हदीस में आप (सल्ल०) ने कहा : "अल्लाह ने मुझे नैतिक गुणों और अच्छे कामों की पूर्ति के लिए भेजा है।" (शरहुस्सुन्नह)

1. क़ुरआन, सूरा आराफ़, आयत संख्या 158
2. क़ुरआन, सूरा फ़ुरक़ान, आयत संख्या 1
3. चतुर्भिर्भ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्। (कल्कि पुराण अध्याय 2, श्लोक 5)
4. भागवत पुराण के 24 अवतारों के प्रकरण में कल्कि सबसे अंतिम अवतार हैं। (भा० पु० प्रथम स्कंध, तृतीय अध्याय, 25वाँ श्लोक)
5. कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ० 41

6. उपदेश और उत्तर दिशा की ओर जाना—कल्कि पैदा होने के पश्चात पहाड़ी की तरफ़ चले जाएँगे और वहाँ परशुराम जी से ज्ञान प्राप्त करेंगे। बाद में उत्तर की तरफ़ जाकर फिर लौटेंगे। मुहम्मद (सल्ल०) भी जन्म के कुछ समय बाद पहाड़ियों की तरफ़ चले गए और वहाँ जिबरील (अलैहि०) के ज़रिए अल्लाह का ज्ञान प्राप्त किया। उसके बाद वे उत्तर मदीने जाकर वहाँ से फिर दक्षिण लौटे और अपने स्थान को जीत लिया। पुराणों में कल्कि के बारे में ऐसा भी लिखा है।

7. आठ सिद्धियों और गुणों से युक्त—कल्कि अवतार को भागवत पुराण 12 स्कन्ध, द्वितीय अध्याय में 'अष्टैश्वर्यगुणान्वित:' (आठ ईश्वरीय गुणों से युक्त) बताया गया है। ये आठ ईश्वरीय गुण महाभारत में भी उल्लेख किए गए हैं। ये गुण निम्न हैं—

1. वह महान ज्ञानी होगा।
2. वह उच्च वंश का होगा।
3. वह आत्मनियंत्रक होगा।
4. वह श्रुतिज्ञानी होगा।
5. वह पराक्रमी होगा।
6. वह अल्पभाषी होगा।
7. वह दानी होगा और
8. वह कृतज्ञ होगा।[1]

अब हम इन गुणों को पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) के गुणों से क्रमवार साम्यता करेंगे। मुहम्मद (सल्ल०) महान ज्ञानी थे। उनमें प्रज्ञा दृष्टि थी।

आप (सल्ल०) ने भूत और भविष्य की अनेक बातें बताईं, जो एकदम सत्य सिद्ध हुईं।

पहले उल्लेख किया गया है कि रूमियों की हार और बाद में उनकी जीत की भविष्यवाणी मुहम्मद (सल्ल०) ने की थी। आपकी दूरदर्शिता से संबंधित अनेक उदाहरण हैं, जो आपके उच्च ज्ञान को सिद्ध करते हैं।

मुहम्मद (सल्ल०) उच्च वंश में पैदा हुए। आपका जन्म 571 ई० में क़ुरैश की पंक्ति में हाशिम परिवार में हुआ था, जो अरब के निवासियों द्वारा माननीय

---

1. अष्टौगुणा : पुरुषं दीपयन्ति, प्रज्ञा च कौल्यं च दम श्रुतंच।
पराक्रमश्चा बहुभाषिता च, दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च। —महाभारत

और काबा का परम्परागत संरक्षक था।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को इन्द्रियदमन या आत्मनियंत्रण का ईश्वरीय गुण भी प्राप्त था। आप आत्मप्रशंसा से हीन, दयालु, शांत, इन्द्रियजीत और उदार थे।[1]

आप श्रुतिज्ञानी भी थे। श्रुत का अर्थ है, 'जो ईश्वर के द्वारा सुनाया गया और ऋषियों द्वारा सुना गया हो'। मुहम्मद (सल्ल०) पर जिबरील (अलैहि०) नामक फ़रिश्ते के ज़रिए ईश्वरीय ज्ञान भेजा जाता था। लेनपूल अपनी पुस्तक "Introduction; Speeches of Muhammad" में लिखते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) को देवदूत की सहायता से ईश्वरीय वाणी का भेजा जाना निस्संदेह सत्य है। सर विलियम म्योर ने भी लिखा है कि वे सन्देष्टा और ईश्वर के प्रतिनिधि थे।[2]

पराक्रम अष्टगुणों में पाँचवाँ गुण है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) काफ़ी पराक्रमी भी थे। आपके पराक्रम को दर्शाते हुए डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने एक घटना का ज़िक्र किया है जो इस प्रकार है—

'किसी गुफा में अकेले उपस्थित रुकाना पहलवान, जो क़ुरैश से सम्बन्धित था, से मुहम्मद (सल्ल०) ने ईश्वर से न डरने और ईश्वर पर विश्वास न करने का कारण पूछा, जिसपर पहलवान ने सत्य की स्पष्टता के लिए कहा। तब मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि तू बड़ा वीर है, यदि कुश्ती में मैं तुझे नीचा दिखाऊँ तो क्या विश्वास करेगा? उसने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। तब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उसे हरा दिया। (अल्लामा क़ाज़ी सलमान मंसूरपुरी ने अपनी सीरत की किताब "रहमतुललिल आलमीन" में "शिफ़ा" नामक पुस्तक के पृष्ठ 64 के हवाले से लिखा है कि आप (सल्ल०) ने उसे तीन बार हराया, फिर भी उस पहलवान ने मुहम्मद (सल्ल) को पैग़म्बर न माना तथा ईश्वर की सत्यता पर विश्वास न किया।

आठ गुणों में अल्पभाषी होना एक विशिष्ट गुण है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कम बोलते थे। अधिकतर मौन रहते परन्तु जो कुछ बोलते थे, वह इतना प्रभावोत्पादक होता था कि लोग आपकी बातें नहीं भूलते थे।[3]

दान देना महापुरुषों का एक प्रमुख गुण रहा है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

---

1. Modesty and kindliness, patience, self deanial and riveted the affections off all around him, p. 525, Life of Mohamed' by Sir Willaim Muir.
2. He was now the Servant, the Prophet, the vice gerent of God.
3. Introduction The speeches of Mohammad by Lane-Pool Page-24

दान देने से पीछे नहीं हटते। यही कारण था कि आपके घर पर ग़रीबों की भीड़ लगी रहती थी। आपके घर से कभी कोई निराश होकर नहीं लौटा।

मुहम्मद (सल्ल०) के गुणों में कृतज्ञता भी थी। वे किसी के उपकार को नहीं भूलते। अनसार के प्रति कहे गए वाक्य आपकी कृतज्ञता का प्रमाण पेश करते हैं।[1] इस प्रकार यह सिद्ध हो गया कि मुहम्मद (सल्ल०) में आठों ईश्वरीय गुणों का समावेश था।

8. शरीर से सुगन्ध का निकलना—भागवत पुराण में भविष्यवाणी की गई है कि कल्कि के शरीर से ऐसी सुगन्ध निकलेगी, जिससे लोगों के मन निर्मल हो जाएँगे। उनके शरीर की सुगन्ध हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी।[2] शिमायल तिरमिज़ी में लिखा है कि मुहम्मद (सल्ल०) के शरीर की ख़ुशबू तो प्रसिद्ध ही है। मुहम्मद (सल्ल०) जिससे हाथ मिलाते थे, उसके हाथ से दिनभर सुगन्ध आती रहती थी।[3]

एक बार उम्मे सुलैत ने मुहम्मद (सल्ल०) के शरीर का पसीना एकत्र किया। आप (सल्ल०) के पूछने पर उन्होंने बताया कि इसे हम ख़ुशबूओं में मिलाते हैं क्योंकि यह सभी सुगन्ध से बढ़कर है।

9. अनुपम कान्ति से युक्त—कल्कि अनुपम कान्ति से युक्त होंगे।[4] बुख़ारी शरीफ़ की हदीस के मुताबिक़ मुहम्मद (सल्ल०) सभी व्यक्तियों में अधिक सुन्दर थे और सभी मनुष्यों में अधिक आदर्शवान एवं योद्धा थे।[5] सर विलियम म्योर ने भी मुहम्मद (सल्ल०) को बहुत सुन्दर स्वरूपवाला, पराक्रमी और दानी बताया है।[6]

---

1. असह उस सियर, पृ० 343
2. अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वै।
   वासु देवांगरागाति पुण्यगन्धानिल स्पृशाम्।
   (भागवत पुराण, द्वादश स्कंध, द्वितीय अध्याय, 21वाँ श्लोक)
3. पृष्ठ 208, शिमाएल तिरमिज़ी, अनुवाद : मौलाना मुहम्मद ज़करिया
4. विचरन्नाशुना क्षोण्यां हयेनाप्रतिमद्युतिः।
   नृपलिंगच्छदो दस्यून्कोटिशोनिहनिष्यति॥
   (भा० पु०, द्वादश स्कंध, द्वितीय अध्याय, 20वाँ श्लोक)
5. हज़रत अनस (रज़ि०) की रिवायत, जमउल फ़वायद, पेज 178
6. 'He was' says an admiring followen, the handsomest and bravest, the bright faced and most generous of men., P. 523, The Life of Mohammad'

10. ईश्वरीय वाणी का उपदेष्टा—डा० वेद प्रकाश उपाध्याय 'कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब' के पृष्ठ 50, 51 पृष्ठ पर लिखते हैं कि 'कल्कि के विषय में यह बात भारत में प्रसिद्ध ही है कि वह जो धर्म स्थापित करेंगे वह वैदिक धर्म होगा और उनके द्वारा उपदिष्ट शिक्षाएँ ईश्वरीय शिक्षाएँ होगी। मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा अभिव्यक्त क़ुरआन ईश्वरीय वाणी है, यह तो स्पष्ट ही है, भले ही हठी लोग इस बात को न मानें। क़ुरआन में जो नीति, सदाचार, प्रेम, उपकार आदि करने के लिए प्रेरणा के स्रोत विद्यमान हैं, वही वेद में भी है। क़ुरआन में मूर्ति पूजा का खण्डन, एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा, परस्पर प्रेम के व्यवहार का उपदेश है। वेद में 'एकम् सत्' तथा विश्वबन्धुत्व की उत्कृष्ट घोषणा है। वेदों में ईश्वर की भक्ति का आदेश है और क़ुरआन की शिक्षा के द्वारा मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज़ अवश्य पढ़ते हैं, जबकि ब्राह्मण वर्ग में बिरले लोग ही त्रिकाल संध्या करनेवाले मिलेंगे।

यहाँ यह तथ्य उजागर करना उचित होगा कि वेदों और क़ुरआन की शिक्षाओं में भी बहुत कुछ समानता है। मिसाल के तौर पर वेद, गीता और स्मृतियों में एक ईश्वर की भक्ति करने का आदेश है और अपनी की हुई बुराइयों की क्षमा माँगने के लिए भी उसी ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश है। क़ुरआन में है : "ऐ नबी ! कह दो, मैं तो केवल तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर वह्य (प्रकाशना) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य अकेला पूज्य है, तो तुम सीधे उसी की ओर मुख करो और क्षमा भी उसी से माँगो।[1] डा० उपाध्याय कहते हैं कि कल्कि और मुहम्मद (सल्ल०) के विषय में जो अभूतपूर्व साम्य मुझे मिला उसे देखकर आश्चर्य होता है कि जिन कल्कि की प्रतीक्षा में भारतीय बैठे हैं, वे आ गए और वही मुहम्मद साहब हैं।[2]

---

1. हा० मीम० अस सजदा आयत संख्या 6।
2. कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ० 59

उपनिषद् में भी मुहम्मद (सल्ल॰) की चर्चा

उपनिषद् में भी मुहम्मद साहब और इस्लाम के बारे में जहाँ-तहाँ उल्लेख मिलता है। नागेन्द्र नाथ बसु द्वारा संपादित विश्वकोष के द्वितीय खण्ड में अल्लोपनिषद् के वे श्लोक दिए गए हैं, जो इस्लाम और पैग़म्बर (सल्ल॰) से ताल्लुक़ रखते हैं। यहाँ इसके श्लोक और उनके अर्थ प्रस्तुत किए जा रहे हैं ताकि पाठकों को वास्तविकता का पता चल सके–

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते।

इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्दुदुः।

हया मित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो मित्रस्तेजस्कामः।।1।।

होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्राः।

अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्ण ब्रह्माणं अल्लाम् ।।2।।

अल्लोरसूलमहामदरकबरस्य अल्लो अल्लाम्।।3।।

(अल्लोपनिषद् 1, 2, 3)

अर्थात् "इस देवता का नाम अल्लाह है। वह एक है। मित्रा वरुण आदि उसकी विशेषताएँ हैं। वास्तव में अल्लाह वरुण है जो तमाम सृष्टि का बादशाह है। मित्रो! उस अल्लाह को अपना पूज्य समझो। वह वरुण है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों के काम सँवारता है। वह इन्द्र है, श्रेष्ठ इन्द्र। अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा पूर्ण और सबसे ज़्यादा पवित्र है। मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के श्रेष्ठतर रसूल हैं। अल्लाह आदि अंत और सारे संसार का पालनहार है। तमाम अच्छे काम अल्लाह के लिए ही हैं। वास्तव में अल्लाह ही ने सूरज, चाँद और सितारे पैदा किए हैं।"

उपर्युक्त उद्धरणों से यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट हुआ कि सर्वशक्तिमान अल्लाह एक है और मुहम्मद (सल्ल॰) उसके सन्देशवाहक (पैग़म्बर) हैं। इस उपनिषद् के अन्य श्लोकों में भी इस्लाम और मुहम्मद (सल्ल॰) की साम्यगत बातें आई हैं। इस उपनिषद् में आगे कहा गया है–

आदल्लाबूकमेककम्। अल्लाबूक निखातकम् ।।4।।

अल्लो यज्ञेन हुतहुत्वा। अल्ला सूर्य्य चन्द्र सर्वनक्षत्राः।।5।।

अल्लो ऋषीणां सर्वदिव्यां इन्द्राय पूर्व माया परममन्तरिक्षा।।6।।

अल्लः पृथिव्या अन्तरिक्षं विश्वरूपम्।।7।।

इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्लाः।।8।।

ओम् अल्लाइल्लल्ला अनादिस्वरूपाय अथर्वणाश्यामा हुंह्रीं जनान पशूनसिद्धान् जलचरान् अदृष्टं कुरु कुरु फट्।।9।।

असुरसंहारिणी हुं ह्रीं अल्लोरसूलमहमदरकबरस्य अल्लो अल्लाम् इल्लल्लेति इल्लल्लाः।।10।।

इत्यल्लोपनिषत् समाप्ता।।

अर्थात् "अल्लाह ने सब ऋषि भेजे और चन्द्रमा, सूर्य एवं तारों को पैदा किया। उसी ने सारे ऋषि भेजे और आकाश को पैदा किया। अल्लाह ने ब्रह्माण्ड (ज़मीन और आकाश) को बनाया। अल्लाह श्रेष्ठ है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। ऐ पुजारी! कह दे, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। अल्लाह अनादि से है। वह सारे विश्व का पालनहार है। वह तमाम बुराइयों और मुसीबतों को दूर करनेवाला है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं, जो इस संसार का पालनहार है। अतः घोषणा करो कि अल्लाह एक है और उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।"[1]

---

1. बहुत थोड़े से विद्वान, जिनका सम्बन्ध विशेष रूप से आर्यसमाज से बताया जाता है, अल्लोपनिषद् की गणना उपनिषदों में नहीं करते और इस प्रकार इसका इनकार करते हैं, हालांकि उनके तर्कों में दम नहीं है। इस कारण से भी हिन्दू धर्म के अधिकतर विद्वान और मनीषी अपवादियों के आग्रह पर ध्यान नहीं देते। गीता प्रेस (गोरखपुर) का नाम हिन्दू धर्म के प्रामाणिक प्रकाशन केन्द्र के रूप में अग्रगण्य है। यहाँ से प्रकाशित "कल्याण" (हिन्दी पत्रिका) के अंक अत्यंत प्रामाणिक माने जाते हैं। इसकी विशेष प्रस्तुति "उपनिषद् अंक" में 220 उपनिषदों की सूची दी गई है, जिसमें अल्लोपनिषद् का उल्लेख 15वें नंबर पर किया गया है। 14वें नंबर पर अमृत बिन्दूपनिषद् और 16वें नंबर पर अवधूतोपनिषद् (पद्य) उल्लिखित हैं। डॉ॰ वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी अल्लोपनिषद् को प्रामाणिक उपनिषद् माना है। (देखिए : 'वैदिक साहित्य : एक विवेचन', प्रदीप प्रकाशन पृ॰ 101, संस्करण 1989)

प्राणनाथी (प्रणामी) सम्प्रदाय की शिक्षा

हिन्दुओं के वैष्णव समुदाय में प्राणनाथी सम्प्रदाय उल्लेखनीय है। इसके संस्थापक एवं प्रवर्तक महामति प्राणनाथ थे। आपका जन्म का नाम मेहराज ठाकुर था। प्राणनाथजी का जन्म 1618 ई० में गुजरात के जामनगर शहर में हुआ था। आपने इन्सानों को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी और एक ही निराकार ईश्वर की पूजा-उपासना पर बल दिया। आपने नुबूव्वत अर्थात ईशदूतत्व की धारणा का समर्थन किया और इसे सही ठहराया। प्राणनाथ जी कहते हैं—

कै बड़े कहे पैगमंर, पर एक महमंद पर खतम।

अर्थात, धर्मग्रन्थों में अनेकों पैग़म्बर बड़े कहे गए, किन्तु मुहम्मद साहब पर ईशदूतों की शृंखला समाप्त हुई। रसूल मुहम्मद (सल्ल०) आख़िरी पैग़म्बर हुए।[1]

प्राणनाथ जी ने एक स्थान पर लिखा—

रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान।
आए मेरे अरस की, देखी सब पेहेचान॥

अर्थात, (ईश्वर ने कहा :) मेरा रसूल मुहम्मद तुम्हारे पास मेरा संदेश लेकर आएगा। वह संसार में आकर तुम्हें मेरे अर्श या परमधाम की सब तरह से पहचान कराने के लिए कुछ संकेत देगा।[2]

---

1. मारफ़त सागर, पृ० 39, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली।
2. मारफ़त सागर, पृ० 19, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और बौद्ध धर्म ग्रन्थ

अंतिम बुद्ध-मैत्रेय और मुहम्मद (सल्ल०)

बौद्ध ग्रन्थों में जिस अन्तिम बुद्धि मैत्रेय के आने की भविष्यवाणी की गई है, वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही सिद्ध होते हैं। 'बुद्ध' बौद्ध धर्म की भाषा में ऋषि होते हैं। गौतम बुद्ध ने अपने मृत्यु के समय अपने प्रिय शिष्य आनन्दा से कहा था कि "नन्दा ! इस संसार में मैं न तो प्रथम बुद्ध हूँ और न तो अन्तिम बुद्ध हूँ। इस जगत् में सत्य और परोपकार की शिक्षा देने के लिए अपने समय पर एक और 'बुद्ध' आएगा। वह पवित्र अन्तःकरणवाला होगा। उसका हृदय शुद्ध होगा। ज्ञान और बुद्धि से सम्पन्न तथा समस्त लोगों का नायक होगा। जिस प्रकार मैंने संसार को अनश्वर सत्य की शिक्षा प्रदान की, उसी प्रकार वह भी विश्व को सत्य की शिक्षा देगा। विश्व को वह ऐसा जीवन-मार्ग दिखाएगा जो शुद्ध तथा पूर्ण भी होगा। नन्दा ! उसका नाम मैत्रेय होगा।[1] 'बुद्ध' का अर्थ 'बुद्धि से युक्त' होता है। बुद्ध मनुष्य ही होते हैं, देवता आदि नहीं।[2] मैत्रेय का अर्थ 'दया से युक्त' होता है।

मैत्रेय की मुहम्मद (सल्ल०) से समानता

अंतिम बुद्ध मैत्रेय में बुद्ध की सभी विशेषताओं का पाया जाना स्वाभाविक है। बुद्ध की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

1. वह ऐश्वर्यवान् एवं धनवान होता है।
2. वह सन्तान से युक्त होता है।
3. वह स्त्री और शासन से युक्त रहता है।
4. वह अपनी पूर्ण आयु तक जीता है।[3]

---

1. Gospel of Buddha, by Carus, p-217
2. It is only a human being that can be a Buddha, a deity can not. (Mohammad in the Buddist Scriptures P. 1)
3. Warren, P. 79

5. वह अपना काम ख़ुद करता है ।[1]

6. बुद्ध केवल धर्म प्रचारक होते हैं ।[2]

7. जिस समय बुद्ध एकान्त में रहता है, उस समय ईश्वर उसके साथियों के रूप में देवताओं और राक्षसों को भेजता है ।[3]

8. संसार में एक समय में केवल एक ही बुद्ध रहता है ।[4]

9. बुद्ध के अनुयायी पक्के अनुयायी होते हैं, जिन्हें कोई भी उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता ।[5]

10. उसका कोई व्यक्ति गुरु न होगा ।[6]

11. प्रत्येक बुद्ध अपने पूर्णवर्ती बुद्ध का स्मरण कराता है और अपने अनुयायियों को 'मार' से बचने की चेतावनी देता है ।[7] मार का अर्थ बुराई और विनाश को फैलानेवाला होता है । इसे शैतान कहते हैं ।

12. सामान्य पुरुषों की अपेक्षा बुद्धों की गर्दन की हड्डी अत्यधिक दृढ़ होती थी, जिससे वे गर्दन मोड़ते समय अपने पूरे शरीर को हाथी की तरह घुमा लेते थे ।

अंतिम बुद्ध मैत्रेय की इनके अलावा अन्य विशेषताएँ भी हैं। मैत्रेय के दयावान होने और बोधि वृक्ष के नीचे सभा का आयोजन करनेवाला भी बताया गया है । इस वृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति होती है ।

डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने यह सिद्ध किया है ये सभी विशेषताएँ मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन में मिलती हैं तथा अंतिम बुद्ध मैत्रेय हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं । डा० उपाध्याय द्वारा इस विषय में प्रस्तुत तथ्य यहाँ ज्यों के त्यों प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

'क़ुरआन में मुहम्मद साहब के ऐश्वर्यवान और धनवान होने के विषय में यह ईश्वरीय वाणी है कि 'तुम पहले निर्धन थे, हमने तुमको धनी बना दिया'।

---

1. The Dhammapada, S.B.E. Vol. X. P. 67
2. 'The Tathagatas are only preachers. (The Dhammapada S.B.E. Vol X. P. 67)
3. Saddharma-Pundrika, S.B.E. Vol. XXI., P. 225
4. The life and teachings of Buddha, Anagarika Dhammapada P. 84
5. Dhammapada, S.B.E. Vol. X. P. 67
6. Romantic History of Buddha, by Beal, P. 241
7. Dhammapada, S.B.E. Vol. XI, P. 64

मुहम्मद साहब ऋषि पद प्राप्त करने के बहुत पहले धनी हो गए थे।[1] मुहम्मद साहब के पास अनेक घोड़े थे। उनकी सवारी के रूप में प्रसिद्ध ऊँटनी 'अलकसवा' थी, जिस पर सवार होकर मक्का से मदीना गए थे और बीस की संख्या में ऊँटनियाँ थीं, जिसका दूध मुहम्मद साहब और उनके बाल-बच्चों के पीने के लिए पर्याप्त था, साथ ही साथ सभी अतिथियों के लिए भी पर्याप्त था। ऊँटनियों का दूध ही मुहम्मद साहब व उनके बाल-बच्चों का प्रमुख आहार था। मुहम्मद साहब के पास सात बकरियाँ थीं, जो दूध का साधन थीं। मुहम्मद साहब दूध की प्राप्ति के लिए भैंसें नहीं रखते थे, इसका कारण यह है कि अरब में भैंसे नहीं होतीं।[2] उनकी सात बाग़ें खजूर की थीं जो बाद में धार्मिक कार्यों के लिए मुहम्मद साहब द्वारा दे दी गई थीं।

मुहम्मद साहब के पास तीन भूमिगत सम्पत्तियाँ थीं, जो कई बीघे के क्षेत्र में थीं। मुहम्मद साहब के अधिकार में कई कुएँ भी थे। इतना स्मरणीय है कि अरब में कुआँ का होना बहुत बड़ी सम्पत्ति समझी जाती थी, क्योंकि वहाँ रेगिस्तानी भू-भाग है। मुहम्मद साहब की 12 पत्नियाँ, चार लड़कियाँ और तीन लड़के थे। बुद्ध के अंतर्गत पत्नी और संतान का होना द्वितीय गुण है। मुहम्मद साहब के पूर्ववर्ती भारतीय बुद्धों में यह गुण नाम मात्र को पाया जाता था, परन्तु मुहम्मद साहब के पास उसका 12 गुना गुण विद्यमान था।[3]

मुहम्मद साहब ने शासन भी किया। अपने जीवनकाल में ही उन्होंने बड़े-बड़े राजाओं को पराजित करके उनपर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। अरब के सम्राट होने पर भी उनका भोज्य पदार्थ पूर्ववत् था।[4]

मुहम्मद साहब अपनी पूर्ण आयु तक जीवित रहे। अल्पायु में उनका देहावसान नहीं हुआ और न तो वे किसी के द्वारा मारे गए।

मुहम्मद साहब अपना काम स्वयं कर लेते थे। उन्होंने जीवन भर धर्म का प्रचार किया। उनके धर्म प्रचारक स्वरूप की पुष्टि अनेक इतिहासकारों ने भी की

---

1. 'व-व-ज-द-क आ-इलन फ़अग्ना' (और तुमको निर्धन पाया, बाद में तुमको धनी कर दिया)
2. Life of Mahomet-Sir William Muir (Cambridge Edition) P. 545-54
3. Life of Mahomet-Sir William Muir (Cambridge Edition) P. 547
4. 'The fare of the desert seemed most congenial to him, even when he was sovereign of Arabia.'

   The Speeches an table talk of the Prophet Mohammad by Lanepoole

है।[1]

मुहम्मद साहब ने भी अपने पूर्ववर्ती ऋषियों का समर्थन किया, इस बात के लिए आप पूरा क़ुरआन देख सकते हैं। उदाहरण के रूप में क़ुरआन में दूसरी सूरा में उल्लेख है—

"ऐ आस्तिको ! (मुसलमानो) तुम कहो कि हम ईश्वर पर पूर्ण आस्था रखते हैं और जो पुस्तक हमपर अवतीर्ण हुई, उसपर और जो-जो कुछ इब्राहीम, इसमाईल और याक़ूब पर और उनकी संतान (ऋषियों) पर और जो कुछ मूसा और ईसा को दी गई उनपर भी और जो कुछ अनेक ऋषियों को उनके पालक (ईश्वर) की ओर से उपलब्ध हुई, उनपर भी हम आस्था रखते हैं और उन ऋषियों में किसी प्रकार का अंतर नहीं मानते हैं, और हम उसी एक ईश्वर के माननेवाले हैं।"[2]

मुहम्मद साहब ने अपने अनुयायियों को शैतान से बचने की चेतावनी बार-बार दी थी। क़ुरआन में शैतान से बचने के लिए यह कहा गया है कि जो शैतान को अपना मित्र बनाएगा, उसे वह भटका देगा और नारकीय कष्टों का मार्ग प्रदर्शित करेगा।[3]

मुहम्मद साहब के अनुयायी कभी भी मुहम्मद साहब के बताए हुए मार्ग से विचलित न होते हुए उनकी पक्की शिष्यता अथवा मैत्री में आबद्ध रहते हैं। मुहम्मद साहब के अनुयायियों ने आमरण उनका संग नहीं छोड़ा, भले ही उन्हें कष्टों का सामना करना पड़ा हो। संसार में जिस समय मुहम्मद साहब बुद्ध थे, उस समय किसी भी देश में कोई अन्य बुद्ध नहीं था। मुहम्मद साहब के बुद्ध होने के समय सम्पूर्ण संसार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति बहुत ही ख़राब थी।

मुहम्मद साहब का कोई भी गुरु संसार का व्यक्ति नहीं था। मुहम्मद साहब पढ़े-लिखे भी नहीं थे, इसी लिए उन्हें 'उम्मी' भी कहा जाता है। ईश्वर द्वारा मुहम्मद साहब के अंतःकरण में उतारी गई आयतों की संहिता क़ुरआन है। प्रत्येक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष का होना आवश्यक है। किसी बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष के रूप में अश्वत्थ (पीपल), किसी के लिए न्यग्रोध (बरगद) तथा किसी बुद्ध के लिए उदुम्बर (गूलर) प्रयुक्त हुआ है। बुद्ध के लिए जिस बोधिवृक्ष का होना बताया

---

1. Mohammad and Mohammadenism by Bosworth Smith, P. 98
2. क़ुरआन, सूरा-2, आयत 136
3. क़ुरआन, सूरा-22, आयत 4

गया है, वह कड़ी और भारयुक्त काष्ठवाला वृक्ष है।[1]

हज़रत मुहम्मद साहब के लिए बोधिवृक्ष के रूप में हुदैबिया स्थान में एक कड़ी और भारयुक्त काष्ठवाला वृक्ष था, जिसके नीचे मुहम्मद साहब ने सभा भी की थी।

'मैत्रेय' का अर्थ होता है—दया से युक्त। 16 अक्तूबर सन् 1930 'लीडर' पृ० 7 कॉलम 3 में एक बौद्ध ने 'मैत्रेय' का अर्थ 'दया' किया है। मुहम्मद साहब दया से युक्त थे। इसी कारण मुहम्मद साहब को "रहमतुललिल आलमीन" कहा जाता है।[2] जिसका अर्थ है—'समस्त संसार के लिए दया से युक्त।' ('नराशंस और अंतिम ऋषि' पृष्ठ 54 से 58)

स्वर्गीय बोधिवृक्ष बहुत ही विस्तृत क्षेत्र में है। कहा गया है कि बुद्ध स्थिर दृष्टि से उस बोधिवृक्ष को देखता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी जन्नत में एक वृक्ष देखा था, जो ईश्वर के सिंहासन के दाहिनी ओर विद्यमान था। यह वृक्ष इतने बड़े क्षेत्र में था जिसे एक घुड़सवार लगभग सौ वर्षों में भी उसकी छाया को पार नहीं कर सकता।[3] हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी स्वर्गीय वृक्ष को आँख गड़ाए हुए देखा था।

मैत्रेय के बारे में यह भी कहा गया है कि किसी भी तरफ़ मुड़ते समय वह अपने शरीर को पूरा घुमा लेगा। मुहम्मद साहब भी किसी मित्र की ओर देखते समय अपने शरीर को पूरा घुमा लेते थे।[4]

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि बौद्ध ग्रन्थों में जिस मैत्रेय के आने की भविष्यवाणी की गई है वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं।

---

1. According to some of the modern Buddhist Scholars the Bo-tree of the Buddha Maiterya is the Iron wood-tree (Mohammad in the Buddhist Scriptures, P. 64)
2. वमा अर्सल्ना-क इल्ला रहमतलिल आलमीन (कुरआन, सूरा-11, आयत 107)
   (ऐ मुहम्मद ! हमने तुमको सारी दुनिया के लिए दया बनाकर भेजा।)
3. In Paradise there is a tree (such) that a rider can not cross its shade even in hundred years. (Mohammad in the Buddhist Scriptures, Page 79)
4. If the turned in conversation towards a friend he turned not partially but with his full face and his whole body. (The Life of Mahommat by William Muir, Page 511, 512)

जैन धर्म और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

डॉ० पी०एच० चौबे ने लिखा है—

“मैं मुहम्मद (सल्ल०) को कल्कि अवतार मानता हूँ। पुराणों में इस अवतार (पैग़म्बर) का वर्णन है। कहा गया है कि कल्कि अवतार बुद्धावतार के बाद होगा, जिसका जन्म शम्भल नामक नगर में एक पुजारी परिवार में होगा, उसकी सवारी घोड़ा और हथियार तलवार होगा। वह सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपने सत्य धर्म की विजय करेगा। (विस्तृत विवरण के लिए देखें कल्कि पुराण)

जैन धर्म के ग्रंथकारों ने भी कल्कि अवतार का वर्णन किया है और उसके आने का काल महावीर स्वामी ने निर्वाण के एक हज़ार वर्ष बाद माना है। महावीर स्वामी के निर्वाण का वर्ष प्राय: 571 ई०पू० निश्चित किया जाता है। इस प्रकार एक हज़ार वर्ष बाद कल्कि अवतार का आगमन होता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्मकाल वही वर्ष पड़ता है जो कल्कि अवतार के आने का काल है। कल्कि अवतार की अन्य विशेषताएँ और उसके गुण हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से साम्यता रखते हैं। एक प्रसिद्ध जैन लेखक जिसने अपने ग्रंथ हरिवंश पुराण में लिखा है कि महावीर के निर्वाण के 605 वर्ष 5 माह बाद शक राज का जन्म हुआ तथा गुप्त संवत 231 वर्ष के शासन के बाद कल्कि अवतार का जन्म हुआ। इस आशय का श्लोक इस प्रकार है—

> “..... गुप्तानां चशत द्वयम।
> एक विंवश च वर्षणि कालविद् भिरुदा हृतम ॥490॥
> चित्वा रिंश देवात: कल्किराजस्य राजता।
> ततोड जिटंजयों राजा स्यादिन्द्रपुर संस्थित: ॥491॥
>
> —जिनसेन कृत हरिवंश पुराण अ० 60

दूसरे जैन ग्रंथकार गुणभद्र ने उत्तर पुराण में लिखा है कि महावीर निर्वाण के 1000 वर्ष बाद कल्किराज का जन्म हुआ। (Indian Antiquary Vol. X V.P. 143)

तीसरे जैन गंथकार नेमिचन्द्र अपने ग्रंथ 'त्रिलोकसागर' में लिखते हैं, “शकराज निर्वाण के 605 वर्ष 5 माह बाद तथा शककाल से 394 वर्ष 7 माह पश्चात कल्कि राज पैदा हुआ।” इस ग्रंथ में इस भाव का वाक्य है—

"पणछस्सयं वस्संपण मासजदं गमिय वीर णिवुइ दो ।
सगराजो सो कल्कि चतुणवतिय महिप सगमासं ॥" —त्रिलोकसार, पृ० 32

इस प्रकार ऐसा लगता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) वही थे, धर्माचायों ने जिनके बारे में बताया ।

सचमुच जिस प्रकार जब तक एक शासक शासन करता है तब तक उसके द्वारा बताए नियम का पालन जनता करती है, परन्तु उसके शासन के समाप्त होते ही दूसरे शासक के आदेशों को लोग शिरोधार्य करते हैं, ठीक उसी प्रकार जब तक जिस शास्ता, अवतार, पैग़म्बर का काल रहता है उसकी आज्ञाओं-उपदेशों का फैलाव होता है परन्तु उसके उपदेशों में विकृति आते ही ईश्वर की तरफ़ से जब दूसरा पैग़म्बर, अवतार आता है तो उसका शासन चलता है। इस लिहाज़ से आज हम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अन्तिम 'रसूल' अथवा आख़िरी अवतार 'कल्कि' के 'शासन काल' में हैं और अब प्रलय (क़ियामत) तक उनका शासन रहेगा, जिसका प्रमाण पुराण, क़ुरआन और अन्य ग्रन्थ दे चुके हैं। अतएव हमारे लिए इस अन्तिम शास्ता (हज़रत मुहम्मद) के ही 'शासन' में रहकर आपके उपदेशों व आचारों का अनुगमन करना ही आध्यात्मिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों से उचित है। इससे हमारा संसार व परलोक दोनों सुधर सकता है।

अत: अन्तिम संदेष्टा, पैग़म्बर, 'कल्कि अवतार' हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के उपदेशों का अनुगमन ही आपके प्रति सही एवं सच्चे अर्थों में श्रद्धा-अर्पण होगा। यही ईश समर्पण के लिए सच्चा मार्ग होगा।"[1]

---

1. कान्ति मासिक (दिल्ली), जुलाई 1997, पृ० 33-34

(वेदों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति)

कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब

लेखक :-

डॉ वेद प्रकाश उपाध्याय एम०ए० (संस्कृत वेद)

फिल० धर्मशास्त्रा चार्य-डिप० इन० जर्मन

(वेदों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति)

कल्कि अवतार

और

मुहम्मद साहब

लेखक

डा० वेदप्रकाश उपाध्याय

एम्० ए०. (संस्कृत-वेद)
डी० फिल्०, धर्मशास्त्राचार्य,
डिप्० इन जर्मन
सहायक अनुसन्धान अधिकारी
वी० आई० एस्० एण्ड आई० एस्०
पंजाब यूनिवर्सिटी, पो० आ०
साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)
आनरेरी डायरेक्टर सारस्वत
वेदान्त प्रकाश संघ (भारत)

प्रकाशक

जम्हूर बुक डिपो,

देवबन्द २४७५५४ यू० पी०

समर्पणम्

श्रीमतां विद्वद्धुरिधौरेयाणां सारस्वतानां पण्डितमन्यदारुणद -
पंञ्वरविदारणायौधरूपाणां मानवैक्यप्रतिपादकमतविभूषितमानसाना
दर्शनिन सन्मार्ग प्रदर्शनकारिणां दर्शनशास्त्रकृतनिर्मलान्त :
करणानां प्रयागविश्वविद्यालयीयसंस्कृतविभागाध्यक्षाणां
गुरुवर्याणां डा० आद्याप्रसादमिश्रमहोदयानां
करकमले समर्प्यते शोधपुस्तकमिदम् ।

साभार :

वेदप्रकाशोपाध्यायः

उपाध्यक्ष :

सारस्वतवेदान्तप्रकाशसंघः

विषय-सूची

शोध पुस्तक पर विद्वानों के विचार

डा० गोविन्द कविराज

एम्० ए०, एम्० ए० एम्० एस०, एच० एम्० डी०, पी० एच्० डी०,
सर्वदर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, आयुर्वेदविज्ञानाचार्य,
भिषगाचार्य, वैद्यरत्न, हिन्दी साहित्यरत्न, वेदान्तशास्त्री (अंग्रेजी सहित)
प्रोफेसर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय,
पिंसिपल नेपाली संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी - १

प्रिय महाशय,

'कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब' ग्रन्थ को मैंने पढ़ा । समस्त संसार में विस्तृत पारस्परिक सैद्धान्तिक वैमनस्य को हटाकर मानव मात्र को एक सूत्र में आबद्ध करने के लिये आपने जो अथक प्रयास किया है वह अतीव प्रशंसनीय है।

सेवा में

श्री पं० वेद प्रकाश उपाध्याय
संचालक - सारस्वत वेदान्त प्रकाश संघ
प्रयाग

भवदीय
गोविन्द
१९-१०-७०

प्रो० डा० श्री गोपाल चन्द मिश्र

एम० ए०, पी० एच० डी० धर्मशास्त्राचार्य, वेदाचार्य
वेदविभागाध्यक्ष, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी - २

ईश्वरीय सृष्टि में मानवता समान है। उसके उत्थान और पतन के नियम एवं स्वरूप भी समान हैं। सभी देशों में महापुरूष या महामानव की आवश्यकता भी समय समय पर पड़ती है। किसी व्यक्ति का अवतार या महापुरूष या महामानव होना बिना ईश्वरांश के प्रकाश के सर्वथा असम्भव है। मोहम्मद साहब अरब देश की आवश्यकता के अनुरूप ईश्वरांशीय महापुरूष थे इस सत्य को मानने में किसी भी व्यक्ति को हिचक नहीं हो सकती। महापुरूष देशकाल परिस्थिति के अनुरूप भले ही एक भूभाग में सम्मानित या उपदेष्टा हो, पर उसकी महत्ता का वर्णन दूसरे देशवासी अपनी भाषा एवम् संस्कृति के अनुरूप शब्दो में करते हैं। इस भावना को डा० वेदप्रकाश उपाध्याय एम० ए० की कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब पुस्तक

विश्वास दिलाती है। यद्यपि लेखक ने हिन्दू शब्द को भारतीय का पर्यायवाची सिद्ध किया है । पर हम जन प्रसिद्धि की भ्रम को ठीक भी मानें तो इस पुस्तक में सिद्ध हुई बात मुसलमान भाइयों के विचार में दृढ़ हो जाय, हिन्दू मुसलमान नाम के दो घर मानने पर भी एक मूल पुरूष मुहम्मद साहब या कल्कि के मानने वाले होने के नाते अभिन्नता का भाईचारा बढ़ जायगा, जो दोनों सम्प्रदायों के अनुयायियों के लिये अविरोधी सहअस्तित्व को जगा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति की आभ्यान्तरिक विभिन्नता तब तक घृणित नहीं हो सकती जब तक व्यवहार अर्थात सुरक्षा, सुख दुःख सहयोग, खेलकूद आदि में भेद बुद्धि नहीं पनपती । भारत के हिन्दुओं में तथा मुसलमानों में भी अनके सिद्धांत विचार एवं सम्प्रदाय हैं । पर वे आभ्यान्तरिक भेद, व्यवहार को प्रभावित नहीं करते इसलिये सभी हिन्दू या मुसलमान अपने में एक हैं । उसी प्रकार आभ्यान्तरिक या आध्यात्मिक सिद्धात विचार के भेद रहने पर भी यदि मुसलमान हिन्दू व्यवहार में सुरक्षा सुख दुःख सहयोग खेल कूद में एकता हृदय से मानने लगें - तो वह दिन दूर नहीं कि विश्वव्यापी मानवता के संहार का भय सर्वदा के लिये दूर भाग जाय ।

शुभाशंसी
श्री गोपाल चन्द्र मिश्र
४-११-१९७०

संस्कृत विश्वविद्यालय
७ अध्यापक निवास
जगतगंज वाराणसी - २
फोन न० ६७०२६

25 Stanley Road
Allahabad

Dated : 15-4-69

(१) श्री वेदप्रकाश उपाध्याय (शोधछात्र) ने हाल ही में 'मोहम्मद साहब और कल्कि अवतार' पर एक पुस्तिका प्रकाशित करने की योजना बनाई है । पैंने पुस्तक के प्रारूप को देखा है । लेखक ने एक विचारणीय विषय पर लेखनी उठाई है काफी खोज कर अपना मत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। उनका अध्यवसाय तथा दृष्टिकोण सराहनीय है ।

स० प्र० चतुर्वेदी, एम० ए० (संस्कृत-वेद), व्याकरणाचार्य
भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

(२) कल्क्यवतार मोहम्मदयोस्तुलनात्मकाध्ययनवैशिष्ट् यबोधकनव्यशैली समीक्ष्य विशिष्टं तुष्यन् मदीयं मनः रचयितुर्विशिष्टविकासकासनतया आधुनिक युगीनजनैक्यसम्पादनतया च परं प्रसीदति, श्रीमानीशःरचयितारं वैशिष्ट्नावलोकयत्वितिशम्।

भव्यरचनमिदमद्य विलोक्य कस्य जनस्य न हृष्येच्चेतः ।
जयकिशोरविदुषः श्रीलस्य सम्मतिरस्तु रचयितुश्रेयः ।।

झोपाद्द श्री जयकिशोर शर्म्मा, व्याकरणाचार्य
प्रधानाचार्य - सौदामिनी संस्कृत महाविद्यालय, इलाहाबाद

(३) 'कल्कि और मोहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन' विषयक शोधपुस्तक को पढ़कर हृदय में सर्वधर्मसमन्वय की पूर्वप्रतिष्ठित भावना और भी दृढ़ हुई । पुस्तक में प्रस्तुत अन्यान्य प्रमाणों एवं उद्धरणों को देखकर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस्लाम की उत्पत्ति का मूल बीज वैदिक धर्म में ही निहित है। उस (कल्कि) सन्देष्टा की धर्म विजयहेतु प्रयुक्त सामग्री में 'घोड़ो व तलवार' आदि का संकेत किसी भी बौद्धिक व्यक्ति को यह सोचने के लिये बाध्य कर सकता है, कि आज वह भविष्य की कल्पना का विषय नहीं अपितु भूतकाल का पात्र रह चुका हैं । पुस्तक का पर्यवेक्षण अन्ततः यही सिद्ध करता है, कि 'भागवत्' के कल्कि हमारे मोहम्मद साहब ही हैं ।

वस्तुतः उस परमसत्ता की सर्वमयता के लिए इन प्रमाणों की कोई आवश्यकता तो नहीं है। परन्तु शुभशंसा के रूप में मैं यही कहूँगा कि उपाध्याय जी का यह प्रयास हिन्दूमुस्लिम विचार-वैभिन्नय को धो डालने में समर्थ हो ।

श्री अशोक तिवारी
लवेदी-इटावा (उ० प्र०)

(४) 'कल्कि और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन' विषयक शोध पुस्तक निःसन्देह नवीन, अन्वेष्णात्मक, तर्कपूर्ण विचारों से युक्त, मुसलमानों और हिन्दूओं के असमान दृष्टिकोण को एक सूत्र में बाँधते हुए ऐसे संसार की स्थापना करेगी, जो कल्याण कारक, आनन्दपूर्ण एवं क्लेशरहित होगा ।

श्री राम भवन मिश्र
भोज कोल्हुआ, चील्ह,
मिर्जापुर (उ० प्र०)

(५) 'कल्कि और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन' पुस्तक पढ़ने से मुझे यह विश्वास हो गया कि कल्कि और मुहम्मद एक ही हैं ।

श्री इन्द्रजीत शुक्ल, वर्दवान

(६) पं० वेदप्रकाश उपाध्याय द्वारा किया गया 'कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन' विषयक शोधकार्य मैंने भलीभाँति देखा ।

इस लघुपुस्तक में विद्वान् शोधकर्त्ता ने भारतीय पौराणिक साहित्य और इस्लामी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करके कल्कि अवतार के सम्बन्ध में जो महत्वपूर्ण अन्वेषणात्मक कार्य किया है वह वर्तमान धार्मिक संघर्षो का उन्मूलन करने में अत्यधिक उपकारी होगा । इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में एकेश्वरवाद का पुन: प्रसार होगा और समस्त मानवजाति में साधारण भाईचारे का प्रेम उत्पन्न होगा । हमें पूर्ण आशा है कि इस लघु ग्रंथ को सभी सम्प्रदाय के अनुयायी पसन्द करेंगें और अपने सीमित अन्धविश्वासों से उठकर विश्वबन्धुत्व के प्रकाश में आएँगे। इस प्रकार यह प्रयास एक महान् समन्वय का सन्देश देगा ।

हमारी यह शुभकामना है कि लेखक का यह प्रयास समाज के लिए कल्याणकारी हो ।

डा० रामसहाय मिश्र, शास्त्री

बहादुरगंज, इलाहाबाद

(७) इस शोधपुस्तक को पढ़ने मात्र से मुझे हिन्दू-मुसलमान दो व्यापक सम्प्रदायों के बीच उलझी गुत्थियों का सुलझना और साथ ही साथ हिन्दुत्व का वह प्राचीन व्यापक रूप पुन: समक्ष आता हुआ दिखाई पड़ रहा है ।

प० राम बहादुर मिश्र

लौगावाँ, कुभियावाँ, इलाहाबाद

(८) अभी तक ऐसी कोई भी अन्वेषणात्मक पुस्तक नहीं निकली, जिसने विभिन्न सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया हो ।

अशोक कुमार जायावाल 'सारस्वत'

सदस्य, प्रयाग कार्यकारिणी समिति

सारस्वत-वेदान्त प्रकाश संघ, इलाहाबाद (उ० प्र०)

शोध पुस्तक सहायक ग्रन्थों की सूची

संस्कृत –

(१) ऋग्वेद संहिता (२) यजुर्वेद संहिता (३) सामवेद संहिता

(४) अथर्ववेद संहिता (५) श्वेताश्वरोपनिषद् (६) केनोपनिषद्

(७) महाभारतम् - महर्षिविदव्यासप्रणीतम (८) श्रीमद्भगवद्गीता

(९) श्रीमद्भागवतपुराणम् - महर्षिविदव्यासप्रणीतम, गीताप्रेस गोरखपुर, सं० २०२१

(१०) भविष्य पुराणम् - महर्षिविदव्यासप्रणीतम

खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, बम्बई, १९५९

(११) कल्किपुराणम् - महर्षिविदव्यासप्रणीतम, सं० १९६३ श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई

हिन्दी –

(१२) हिन्दूमुस्लिम एकता - पं० सुन्दरलाल जी, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी, १४५ मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

(१३) कुरआन

उर्दू और अंग्रेजी –

(14) Shimail Tirmizi - Maulana Mohammad Zakaria

(15) Sarwar-e-Alam.- Mohammad Muslim, Published at Jayyad Press, September, 1960 A.D. Kishanganj Delhi.

(16) Sirtunnabi.- Shibli Nomani and Sayyad Sulaiman Nadawi, Published from - Matba Maarif, Azamgarha. Fourth Edition 1958 A.D.

(17) Asah-us-Siyar.- Hakim abdul Barkat, Abdur-Rauf, Publisher Noor Mohammad, Asag-ul-Matba, Karachi, September 1932 A.D.

(18) Jamaul - Favaid - Sulaiman, Publisher Ashiqilahi, Khairia Press, Meratha

(19) Mohamed and Mohamedenism; by Rev. Bos-worth Smith.

(20) Decline and fall of the Roman Empire; by Edwerd Gibbon; Publisher from E. P. Dutton & Co. Newyork, 1210 A.D.

(21) The speeches of Monommad, by Lanepoole, Published by Macmillan & Co. (London) 1882.

(22) An Encyclopedia of worid History-W.L. Langer, Published by George G. Harrap & Co. Ltd., Printed in the U.S.A.

(23) A History of civilization in Ancient India - by R.C. Dutt, Revssed Edition, 1893, Published by Kegan Paul, Trench Trubner & Co. Ltd. (London).

(24) Apology for Mohammed - by Godfrey Higgins, published by Allahabad Reform Society, Dariyabad 1929 A.D.

(25) Life of Mohamet. - Sir William Muir Published from Smith, Elder & Co. (London) 1877 A.D.

प्रस्तावना

इस शोध पुस्तक में प्राचीन भारतीय परम्परा तथा इस्लामी परम्परा के समन्वय को प्रस्तुत किया गया है ..। इस्लामी परम्परा में जो स्थान रसूलों नबियों या पैगम्बरों का है , वही स्थान भारतीय परम्परा में अवतारों का है । मुसलमानो मोहम्मद साहब को अन्तिम सन्देष्टा मानते हैं और भारतीय परम्परा कल्कि को अन्तिम अवतार । विदेशो में केवल सन्देष्टा आते है और भारत में केवल अवतार, यह असम्भव है, क्योंकि सभी भूमि परमेश्वर की है उसमें वैषम्य का स्थान नहीं है । सभी देशों के तत्तद् साहित्यों में उन्ही देशों की महिमा का गुणगान हुआ है अत: कोई भी स्वदेशी या विदेशी अपने देश को नीचा नहीं कहेगा । सन्देष्टा केवल अरब में ही आए, भारत में नहीं, यह भी एकांगी विचार है, और अवतार केवल भारत में ही हुए विदेशों में नहीं, यह भी एकांगी विचार है, और अवतार केवल भारत में ही हुए विदेशों में नही , यह भी एकाँगी विचार है । मोहम्मद साहब अन्तिम सन्देष्टा हैं, यह जानकर मुझे पुराणों में कल्कि विषयक चरित पढ़ने की उत्कणठा हुई । भारतीय परम्परा के अनुसार पहले कुछ कलियुग बीत गए, उनमें कल्कि के अवतार में जो घटनायें घटीं और इस कलियुग में जो घटनाएँ घटनी है, उनकी तुलना मैंने मोहम्मद साहब के जीवन से की जो प्राय: समान उतरीं । अल्पमात्र जो कहीं कहीं कुछ अन्तर पड़ा वह जैसे राम के चरितों में अन्तर पड़ जाता है, उसी प्रकार हुआ, और उसका समाधान लोग यह कहकर देते है कि "हरि अनन्ता हरि कथा अनन्ता" वही कहकर मैं भी कर रहा हूँ । मैं कल्कि अवतार को कथा इसलिए नहीं कहना चाहता, क्योंकि 'कथा कल्पितवृत्तान्ता सत्यार्थास्यायिका' के सिद्धान्त से इसको आख्यायिका ही मानना युक्तिसंगत है ।

वैज्ञानिक अणुविस्फोटकों से जो सत्यानाश सम्भव है, उसका निराकरण धार्मिक एकता समबन्धी विचारों से हो जाता है । जल में रहकर मगर से बैर करना उचित नहीं । इस कारण मैंने वह शोध किया जो धार्मिक एकता का आधार (Substratum) है । राष्ट्रीय एकता (National Intigration) के समर्थकों द्वारा इस शोधपत्र पर कोई आपत्ति नहीं होगी । आपत्ति होगी तो कूपमण्डूक लोगों को, यदि वे कूप के बाहर निकलकर संसार को देखें तो कूप को ही संसार मानने की उनकी भावना हीन हो जाएगी । ईश्वर की आज्ञा से ईश्वरीय वाणियों का प्रचार हो, इस उद्देश्य से मैंने इस प्रकार के शोधकार्यों में

हाथ डाला है । इसके पूर्व कुछ लोगों ने इस विषय पर कुछ लिखा था, या नहीं यह स्पष्ट कहा नहीं जा सकता, परन्तु 'सरवरे आलम'[१] में इतना संकेत है कि मोहम्मद साहब और कल्कि एक ही हैं । मेरे इस शोधपत्र का प्रचार होगा, स्वदेश और विदेशों मे, क्योकि ईश्वर की सहायता से यह पुस्तक लिखी गई है । इसमें जो तर्क संगत बातें आई हैं, वह मेरे विचार नहीं, या तो वे वेदों पुराणों के विचार हैं, या मेरे अन्दर हुई ईश्वरीय प्रेरणा के ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस शोध पुस्तक के अवलोकन से भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि निखिल भूमण्डल में एकता की लहर दौड़ पड़ेगी, और धर्म के नाम पर होने वाले कलह शान्त होंगे । यदि लोगों की बुद्धि काम करेगी, तो परस्पर एक दूसरे के पर्वो में हाथ बटांकर स्वयं एकता के प्रतीक बनेंगे । नाम से कोई हिन्दू, मुसलमान या ईसाइ नहीं बनता है । यदि मैं सिराजुल हक को सत्यदीप, अब्दुल्लाह को पं० रामदास या रामयश तथा अंदुर्रहमान को भगवानदास कहूँगा तो वे बुरा नहीं मानेंगे, क्योंकि उनके नामों का संस्कृत में अनुवाद यही होता है, यदि वे चाहें, तो मेरे नाम का अनुवाद अरबी भाषा में नूरूलहुदा भी कर सकते हैं । ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि सभी वर्गो में विशेषकर हिन्दू और मुसलमानों में पूर्ण मेल हो, तथा मेरा यह शोधपत्र लोगों में सद्भावना का संचार करे । विश्व में बन्धुत्व हो और सभी का कल्याण हो । कल्कि और मोहम्मद साहब के तुलनात्मक अध्ययन को पढ़ कर कहीं लोगों को यह न शंका होने लगे कि मोहम्मद साहब के चरित्रों का आधार लेकर लोगों ने कल्कि का भावी वृत्तान्त बना डाला है, इसलिए मैंने जिन सनातन धर्मग्रन्थों का आश्रय लिया है, उनमें से पुराणों के रचनाकाल के विषय में कोई भी लेखक किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा । पाश्चात्य इतिहासकारों ने श्रौतसूत्रों, उपनिषदों, पुराणों आदि के कालनिर्धारण करने के समय स्थान २ पर शायद (**Probably**) शब्द का प्रयोग प्रचुरता के किया है, जो उनके निर्णय की अनिश्चितता का प्रतीक है । सर्वप्रथम मैं 'उन पाश्चात्य विद्वानों का मत पुराणों के रचनाकाल के विषय में क्या है' ? इसका उल्लेख करके कालनिर्णय करूंगा तब विषय-वस्तु का प्रारम्भ करूंगा ।

१. सरवरे आलम – मोहम्मद मुस्लिम, Published at Jayyad Press, Sept. 1960, A.D. Kishanganj Delhi.

पुराणों का समय डब्ल्यू० एल० लांगर के अनुसार ईसा के ४०० वर्ष बाद का है[१]। इनके अनुसार रामायण और महाभारत की रचना दो सौ ई० पूर्व की है[२]। लांगर महोदय के उपर्युक्त कथन में ये विप्रतिपत्तियाँ हैं -

१. रामायण के कर्त्ता बाल्मीकि और महाभारत के कर्त्ता व्यास जी का समकालीन होना रामायण और महाभारत की समकालीनता से पुष्ट होता है, जो नितान्त असंगत है, क्योंकि आदि कवि बाल्मीकि व्यास जी के समकालीन कभी नहीं हो सकते। इसका कारण यह हैं कि राम के ही समय के बाल्मीकि थे, जैसा कि 'राम द्वारा परित्यक्त सीता के संरक्षण का कार्य बाल्मीकि को ही अपने आश्रम में करना पड़ता है', इस बात से सिद्ध होता है । इतना ही नही; बल्कि अपने महाकाव्य की पूर्ति भी बाल्मीकि जी अपने आश्रम में करते हैं, इस बात की भी पुष्टि होती है ।

२. राम की जीवन घटना त्रेता युग की है, अत: त्रेता युग में ही बाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना किया जाना सम्भव है, और द्वापर युग में वेदव्यास जी द्वारा महाभारत की रचना ।

३. शकराज का ईसा से मिलन भविष्य पुराण से सिद्ध है,[३] और वह शकराज

---

१. Puranas (dis-ordered genealogies of kings compounded with legends, put in present form, fourth century A.D. and later).
Encyclopedia of world History,
By W.L. Langer (Page 43)

२. The Mahabharat and epic poems composed by several generations of bards, seems to have taken form about the second century B. C. Although probably revised early in our era.
Encyclopedia of world History,
By W.L. Langer (Page 42)

३. एकदा तु शकाधीशो हिमतुंग समाययौ । २१
हूणदेशस्य मध्ये वै गिरिस्थ पुरूषं शुभम् ।
ददर्श बलवान् राजा गोरागं श्वेतवस्त्रकम् ।। २२
को भवानिति तं प्राह स होवाच मुदान्वित: ।
ईशपुत्रं च मां विद्धि कुमारीगर्भसम्भवं ।। २३
ईशामसीह इति च मम नाम प्रतिष्ठितम् ।। ३१
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड, द्वितीय अध्याय

विक्रमादित्य का परवर्ती[१] था, अतएव विक्रमादित्य का समय ईसा से पूर्व का सिद्ध होता है । विक्रमादित्य के समय में रामायण और महाभारत तथा पुराण श्रद्धा के विषय थे, अत: इन तीन कारणों से लांगर का कथन असत्य सिद्ध होता है ।

भाषा की दृष्टि से पुराण पाणिनि की अपेक्षा पर्याप्त प्राचीन हैं, क्योंकि वह भाषा पणिनीय व्याकरण के बन्धनों से रहित हैं । उसमें संस्कृत शब्दों का प्रयोग आर्ष प्रयोग है, जो वैदिक और लौकिक संस्कृत के मध्यकाल का है । पाणिनि का समय लांगर के अनुसार ३५० ई० पू० से लेकर ३०० ई० पू० के मध्य है[२]। इसके अतिरिक्त बुद्ध जी का समय ५६३ पू० से लेकर ४८३ ई० पू० के मध्य है[३] । बुद्ध जी ने अपना धर्म प्रचार 'पालि' भाषा में किया, जो उस समय की बोल चाल की भाषा थी, यह बौद्ध धर्मग्रन्थों से सिद्ध होता है, भाषा की विकासशीलता होने के कारण संस्कृत भाषा का रूप बिगड़ कर पालि से प्राकृत तथा प्राकृत से अपभ्रंश तथा आज हिन्दी हो गया । संस्कृत भाषा की स्थिति बुद्ध जी के पूर्व सिद्ध होती है । कोई भी भाषा बहुत ही शीघ्र नहीं बदल जाती है, बदलते बदलते हजारों वर्ष लग जाते हैं । बुद्ध जी के पहले व्याकरण के नियमों में बद्ध संस्कृत भाषा का बातचीत में प्रयोग होता था, उस निश्चित व्याकरण के संस्थापक पाणिनि का समय, बुद्ध जी के समय में एक

---

१. विक्रमादित्यपौत्रश्च पितृराज्यं गृहीतवान ।
जित्वा शकान् दुराधर्षां श्चीनतैत्तिरिदेशजान् ।। १८
एकदा तु श्काधीशो हिमतुंगं समाययौ । २१
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड
द्वितीय अध्याय

२. Panini (? G. 350-300)
Encyclopedia of world History,
By W.L. Langer, (Page 42)

3. Buddhism was founded in the same period and pegion by Siddhariha (? 563-483 ?) of the clan of Gautama and the hill of tribe of Sakya, who attained "Illumination" (bodhi)
Encyclopedia of world History,
By W.L. Langer, (Page 41)

हजार वर्ष जोड़कर १५६३ ई० पू० के लगभग सिद्ध होता । पाणिनि के सूत्रों की रचना से यह भी सिद्ध होता हैं कि उस समय लेखन के अभाव के कारण केवल कण्ठाग्र कराने की प्रक्रिया थी, जो सूत्रों के माध्यम से सुगम थी । पुराणों की भाषा पाणिनि से पूर्व की है, अतः आर्ष संस्कृत में पुराणों की रचना ई० पू० २५०२ से १५६३ ई० पू० के मध्य में सिद्ध होती हैं । ये तो रहे ऊपरी प्रमाण जो, प्रायः निराधार से हैं, क्योंकि सभी विद्वानों का मत सन्देहपूर्ण हैं और वे उन मतों की स्थापना के समय स्वयं 'शायद', 'सम्भव है' या प्रश्नवाचक चिन्हों का प्रयोग करते हैं। अब हम पुराणों के अन्तरंग प्रमाण के आधार पर उनका रचनाकाल प्रस्तुत करते हैं ।

अट्ठारह पुराणों मे भविष्य पुराण भी एक है, जिसमें भविष्य की बातें बतायी गई हैं । जिन स्थानों मे 'लृट्' के स्थान में 'लट्' लकार का या 'लङ' लकार का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर 'व्यत्ययो बहुलम्' सूत्र से वैदिक संस्कृत की तरह तिङ्. का व्यत्यय हो गया है, अतएव पुराणों की आर्ष भाषा निःसन्देह लौकिक संस्कृत से उत्कृष्ट है । भागवतपुराण द्वादश स्कन्ध, द्वितीय अध्याय में कल्कि के पैदा होने की भविष्यवाणी की गई है और उनकी विशेषता भी बताई गई है । प्रथम स्कन्ध में भी चौबीस अवतारों के प्रकरण में 'कल्कि' को अंतिम अवतार माना गया है । भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पर्व में व्यास जी भविष्य में होने वाली गाथा को आदम से प्रारम्भ करते हैं कि हे मन ! भविष्य में होने वाली सूत जी द्वारा वर्णित कलियुग की पूर्ण गाथा सुनकर तृप्ति प्राप्त करो [१] । इस कथन से यह सिद्ध होता है कि पुराण आदम के पूर्ववर्ती ठहरे । द्वापर युग को समाप्त होने में दो हजार दो सौ आठ वर्ष शेष रह गये थे, तब आदम का जन्म हुआ था [२] । कलयुग के बीते हुये ५०७० वर्ष हो रहे हैं, अतएव आदम आज

---

१. 'मनः श्रृणु ततो गाथां भावीं सूतेन वर्णिताम् ।
कलेयुर्गस्य पूर्णां तां तच्छुत्वा तृप्तिमावह ।।
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय, श्लोक २५

२. द्विशाष्ट सहस्रेद्रेशेषे तु द्वापरे युगे ।
बहुकीर्तिमती भूमिभविता कीर्तिमालिनी । २८ ।
इन्द्रियाणि दमित्वा यो ह्यात्मध्यानपरायणः ।
तस्मादादमनामासौ पत्नी हव्यवती तथा । २९ ।
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय

से ५०७०+२२०८=७२७८ वर्ष पहले हुये । उस समय लेखन कला थी नहीं, अतएव श्लोकों को कंठाग्र ही रखना पड़ता था। न्यूह के समय से संस्कृत भाषा का पतन होने लगा, क्योंकि विष्णु ने प्रसन्न होकर संस्कृत भाषा को अपशब्द करके न्यूह के लिये प्रदान किया । उस भाषा का नाम म्लेच्छ भाषा रखा गया [१] । न्यूह के तीन पुत्र हुये - सिम हाम और याकूत [२] । यहाँ से भाषा परिवार बंटा, सिम से सेमेटिक, हाम से हेमेटिक । आदम का पूर्ववर्ती होने के कारण पुराणों का रचना काल आज से ७२७८ वर्ष पूर्व सिद्ध होता है, जो सर्वथा सम्भाव्य है, भले ही कुछ लोगों को आपत्ति हो । आदम के पहले अर्थात् पुराणों के काल में ४ वर्ण थे, परन्तु वे गुण और कर्म के विभाग से थे, न कि जाति के विभाग से । शूद्र ब्राह्मण बन जाता था और ब्राह्मण भी शूद्र बन जाता था [३] । जब प्रजाओं का पालक परमेश्वर एक है, तो जातिकृत भेद हो ही नहीं सकता [४] । चलने-फिरने की क्रिया, शरीर, वर्ण, केश, सुख, दुःख, खून,

---

१. 'म्लेच्छभाषा कृता तेन वेदवाक्यपरांड्.मुखा ।
कलेश्च वृद्धये ब्राह्मी भाषा कृत्वाऽशव्दगाम् ।। ३ ।
न्यूहाय दत्तवन्देवो बुद्धीशो बुद्धिगः स्वम् ।
विलोमं च कृतं नाम न्यूहेन त्रिसुतस्य वै ।। ४ ।।
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, प्रथम खण्ड
पंचम अध्याय

२. सिमश्च हामश्च तथा याकूतो नाम विश्रुतः ।। ५ ।
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, प्रथम खण्ड
पंचम अध्याय

३. शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ।
क्षत्रियो याति विप्रत्वं विद्याद्वैश्यं तथैच च ।। ४७ ।
भविष्य पुराण, ब्रह्मपर्व, ४० अध्याय

४. स एक एवात्र पतिः प्रजानां, कथं पुनर्जा तिकृतः प्रभेदः ।
प्रमाणदृष्टान्तनयप्रवादैः परीक्ष्यमाणो विघटत्वेति ।। ४४ ।
भविष्य पुराण, ब्रह्मपर्व, ४० अध्याय

त्वक्, मांस, मेदा, अस्थि और रस की दृष्टि से तो सभी मनुष्य बराबर हैं, फिर मनुष्यों में जातिगत चार भेद क्यों हो सकते हैं [1] ? जो ऋग्वेद में चार- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये नाम आये हैं, उनका तात्पर्य यह नहीं हैं, कि वे जाति के सूचक हैं । उनका अर्थ है कि गुण तथा कर्म के आधार पर चार वर्णो की स्थापना [2] । चार वर्णो के कृत्यों में से जिसे जो अच्छा लगता था, उसी को वह स्वीकृत करता था ।

इस प्रकार पुराणों के रचनाकाल एवं चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का वर्णन करके यह बतलाना आवश्यक समझता हूँ, कि पुराणों में क्षेपक को स्थान नहीं क्योंकि भागवतपुराण में एक अध्याय में अट्ठारहों पुराणों की श्लोक संख्या दी हुई है, जिसके कारण एक भी श्लोक बढ़ाने का किसी को साहस ही नहीं ।

अब मैं ईश्वर का नाम लेकर अन्तिम अवतार का विवरण प्रस्तुत करूँगा जिसके लिये मुझे निर्देश विद्वर्य प्रोफेसर सरस्वती प्रसाद जी चतुर्वेदी, भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय तथा १००८ स्वामी श्री रामानन्द जी सरस्वती से मिला है, अतएव मैं इन दोनों विद्यामूर्तियों का कृतज्ञ हूँ ।

लेखक
पं० वेद प्रकाश उपाध्याय
एम० ए०, (संस्कृत-वेद)
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
प्रयाग विश्वविद्यालय ।

---

१. पाद प्रचारैस्तनुवर्णकेशैः,
सुखेन दुःखेन च शोणितेन ।
त्वङ्.मांसमेदो स्थिरसैः समाना ।
श्चतुष्प्रभेदा हि कथं भवन्ति' ।। ४२ ।
भविष्य पुराण, ब्रह्मपर्व, ४० अध्याय

२. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।
ऋग्वेद १०-९०-१२, अथर्वेद १९-६-६, बा० य० ३१-११,
तै० आ० ३-१२-५ ।

अवतार का अर्थ

'अवतार' शब्द 'अव' उपसर्गपूर्वक 'तॄ' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगाकर बना है। अवतार शब्द का अर्थ यह है कि पृथ्वी में आना । 'ईश्वर का अवतार' शब्द का अर्थ है कि 'सब को सन्देश देने वाले महात्मा का पृथ्वी में जन्म लेना' । परमेश्वर सर्वव्यापी है, किसी निश्चित स्थान में उसका रहना और वहाँ से उसका कहीं आना जाना यह कथन उस असीम को सीमित बनाता है । कहीं उसका तेज विशेष सुव्यक्त नहीं होता, जैसे तुषाराच्छादित सूर्य का तेज मन्द दीखने लगता है, परन्तु उससे सूर्य का तेज कम नहीं होता । ऊपर के सात लोकों में सर्वोच्च लोक (अर्थात् सातवें आसमान) में उसकी उपलब्धि है, जहाँ न तो सूर्य चमकता है और न ही चन्द्रमा या तारों का दर्शन होता है [1] । वहाँ पर ईश्वर का इतना अधिक प्रकाश (नूर) फैला हुआ है कि सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति उसके सामने क्या है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से सभी ग्रह (Planet) प्रकाशित होते हैं । उसी प्रकार उस परमपिता परमेश्वर के तेज से सभी प्रकाशित होते हैं । उसी से सम्बद्ध अर्थात उनका कोई श्रेष्ठ (beloved) महात्मा लोगों का कल्याण करने के लिये जगतीतल में अवतीर्ण होता है, या जगतीतल में अवतीर्ण लोगों में से निर्मल हृदय एवं सच्चरित्र किसी एक व्यक्ति में ज्ञान भर दिया जाता है, और ईश्वर के तेज का उसे साक्षात्कार हो जाता है, जिसके कारण बिना अध्ययन किये हुए ही उसमें सर्वोत्कृष्ट ज्ञान भर जाता है । 'ईश्वर का अवतार' शब्द में 'का' शब्द सम्बन्ध कारक का चिह्न है, अतः स्पष्ट ही है कि ईश्वर से सम्बद्ध व्यक्ति का अवतीर्ण होना । ईश्वर से सम्बद्ध कौन है ? उससे सम्बद्ध वही है, जो उसका भक्त है । ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति

---

१. ' न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भाति कुतोऽयमग्निः ।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ।।
श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय ६, मन्त्र १४

को 'कीरि' [१] कहा गया है । 'कीरि' शब्द का अर्थ हिन्दी में 'ईश्वर का प्रशंसक' और अरबी में 'अहमद' होता है । सन्देह यह उठता है, कि इस तरह तो जितने भी ईश्वर के प्रशंसक हैं, सभी अहमद कहे जाएँगे, परन्तु ऐसा नहीं है । ईश्वर की विशेष प्रशंसा करने वाले पर 'कीरि' शब्द या 'अहमद' शब्द रूढ़ हो गया। जिस पर शब्द की जो रूढ़ि हो जाती है, उससे उसी का बोध हो जाता है । 'आदम' भी तो ईश्वर के प्रशंसक थे, परन्तु उनका नाम 'अहमद' नहीं हुआ। तात्पर्य यह निकला कि ईश्वर से सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति 'कीरि' नहीं हो सकता। यहाँ हमें केवल अन्तिम अवतार का वर्णन करना है, न कि सन्देष्टाओं या अवतारों का इतिहास कहना । इतना तो कहना आवश्यक समझता हूँ, कि 'अवतार' [२] शब्द संस्कृत भाषा में और 'प्रोफेट' अँग्रेजी भाषा में 'नबी' अरबी भाषा में संसार के उद्धारकों के लिये प्रयोजनीय विश्रुत शब्द है । हर देश के लिये अलग-अलग अवतार हुए हैं । क्योंकि एक अवतार से सम्पूर्ण देशों का हित असम्भव है। परन्तु अन्तिम अवतार की बात और है, उसका जब उद्‌घाटन होता है, तब उसका धर्म संसार के सभी धर्मों में सन्निहित हो जाता है । अब हम 'अवतार' के कारणों पर विचार करते हैं ।

अवतार के कारण

१. लोगों की अधर्म में प्रवृत्ति, और **धर्म** के वास्तविक स्वरूप से दूर हो जाना है [३] ।
२. मूलधर्म में मिश्रण (mixture) कर लेना अर्थात् अपने स्वार्थ की सिद्धि

---

१. 'यो रघ्रस्य चोदिता यः कृशस्य,
यो ब्रह्मणो नाधमनस्य कीरेः
ऋग्वेद २-१२-६

२. हिन्दू-मुस्लिम एकता, लेखक सुन्दरलाल जी, पेज २९-३०

३. यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ।। - गीता

के लिये धर्म में धर्माभास को मिला लेना ।
३. धर्म के नाम पर अधर्म करना ।
४. धर्म के स्वरूप से अनभिज्ञ लोगों को अधर्म का धर्म के रूप में उपदेश देना ।
५. ईश्वर के भक्तों को कष्ट देना ।
६. पापों एवं अत्याचारों का बढ़ना ।
७. घोर हिंसा तथा अराजकता का फैल जाना ।
८. अपने पेट तथा परिवार के पोषण तक ही धर्म को सीमित रखना ।
९. ईश्वर द्वारा प्रदत्त उपभोग की वस्तुओं का विषमता से उपभोग [१]।
१०. साधुओं की रक्षा करने के लिये एवं दुष्टों का संहार करने के लिए अवतार होता है [२] ।
११. धर्म के विनाशोन्मुख होने पर अवतार होता है ।
१२. मारकाट तथा लूटपाट के बढ़ने पर अवतार होता है ।
१३. युगानुसार लोगों की प्रवृत्ति को देखकर तथा उनके लिये उपदिष्ट धर्म में विश्रृङ्खलता देखकर धर्म के पुरातन सिद्धान्तों को नया रूप देकर उनसे पालन करवाने के लिये ।

उपर्युक्त कारणों के उपस्थित होने पर अवतार होता है ।

---

१. इस आज्ञा का खण्डन होने पर -
ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किन्च जगत्यां जगत्
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।'
यजुर्वेद ४० अध्याय, मं० १

२. 'परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।। '

अन्तिम अवतार के कारण

अवतार के कारणों का संक्षिप्त विवेचन करके अब हम आपको अन्तिम अवतार के कारणों से परिचित कराना चाहते है ।

१. बर्बरता का साम्राज्य – लोगों में क्रूरता की भावना तथा अपनी आत्मा के महत्व को समझना तथा दूसरों के प्राणों की परवाह न करना । राजाओं में दुष्टता का संचार, करों का बढ़ा देना । सच्चे धर्म को बताने वालों पर ईंटों का प्रहार ।

२. पेड़ों का न फलना फूलना, अगर फल फूल आएँ भी, तो बहुत कम ।

३. नदियों में जल की कमी ।

४. अधर्म की वृद्धि – दूसरों को मार कर उनका धन लूट लेना, अधिकतर लड़कियों को मार कर पृथ्वी में गाड़ देना ।

५. असमानता का प्रचार – समान भावना का समाप्त हो जाना, ऊँच–नीच छुआ–छूत आदि का प्रकोप ।

६. ईश्वर को छोड़कर अंन्य की पूजा – यद्यपि सृष्टि का नियामक एक ही परमेश्वर है, परन्तु उसको छोड़कर अन्य देवी देवताओं की पूजा, पेड़–पौधों एवं पत्थरों को ही भगवान मानने की प्रवृत्ति ।

७. भलाई की आड़ में बुराई – भलाई का आश्वासन देकर किसी को फँसा लेना, और उसका अनिष्ट करता । इसी को कपट कहते हैं ।

८. ईर्ष्या–द्वेष तथा बाह्य आडम्बरों का प्रसार – लोगों में सहानुभूति का अभाव हो जाना । आपस में एक दूसरे को शत्रुता के भाव से देखना ।

ईश्वर के प्रति श्रद्धा का अभाव हो जाना, वेषभूषा केवल दिखावे के ही लिये हो कि वे ईश्वर के भक्त हैं ।

९. धर्म के नाम पर अधर्म करना – धर्मसे हीनता और अधर्म से अनुराग।

१०. साधुओं की रक्षा करना – अच्छे लोगों की समाज में दुर्गति देखकर उनकी रक्षा के लिये अन्तिम अवतार ।

११. ईश्वराज्ञापालन का अभाव – लोगों में वेदों के प्रति श्रद्धाहीनता, और उनकी आज्ञाओं का पालन न करना ।

अन्तिम अवतार की विशेषतायें

१. अश्वारोहण–पुराणों में अन्तिम अवतार के विषय में जहाँ कहीं भी वर्णन हुआ है उनकी सवारी अश्व (Horse) ही बताई गई है । वह अश्व वेग से चलने वाला होगा । अश्व के विशेषण में देवदत्त नाम आया है । देवदत्त का अर्थ है – देवताओं द्वारा दिया गया ।

२. खड्गधारण – अश्वारोहण के अतिरिक्त अन्तिम अवतार को खड्गधारी भी बताया गया है [१] । दुष्टों का संहार अन्तिम अवतार के द्वारा तलवार से है न कि एटम बम्ब आदि से । विचारणीय है कि यह समय अणुयुग है, न कि तलवार का युग । अवतार की सबसे बड़ी विशेषता है कि अपनी वेशभूषा तथा अस्त्र देश, काल और पात्र के अनुसार उसकी वेशभूषा भी रहती है ।

३. अष्टैश्वर्यगुणान्वित – उनमे आठो सिद्धियाँ एवं अच्छे गुणों का सन्निधान पुराणों में बताया गया है ।

४. जगत्पति – पति शब्द 'पा, (रक्षा करना) धातु में 'डति' प्रत्यय के संयोग से बना है । जगत् का अर्थ है संसार, अतः जगत्पति' शब्द का अर्थ हुआ, संसार की रक्षा करने वाला ।

५. असाधुदमन – अन्तिम अवतार की सबसे प्रशंसनीय विशेषता यह है कि वह दुष्टों का ही दमन करेगा, [२] न कि अच्छे लोगों का ।

---

१. 'अश्वमाशुगमारूह्य देवदत्तं जगत्पतिः ।

असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः ।।' भागवत पु० १२–२–१९

आठ ऐश्वर्यों और गुणो से युक्त जगतपालक देवताओं द्वारा दिये गये वेगगामी अश्व पर चढ़कर तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे ।

२. ३,४, और ५वें वैशिष्टय की पुष्टि के लिये देखिये

भागवतपुराण १२–२–१९

६. चार भ्राताओं के सहयोग से युक्त – 'भ्राता' शब्द का अर्थ है सहायक। अन्तिम अवतार के सहायक चार होंगे, जो हर तरह से उसे सहायता देंगे [१] ।

७. देवताओं द्वारा उसकी सहायता – धर्म के प्रसार एवं दुष्टों का दमन करने में सहायता देने के लिये देवता भी आकाश से उतर आएँगे ।

८. कलि का निराकरण करने वाला – जिस अर्थ में 'कलि' शब्द प्रयुक्त होता है, उसी अर्थ में शैतान शब्द भी प्रयुक्त होता है । अन्तिम अवतार के द्वारा कलि अर्थात् शैतान की पराजय होगी ।

९. अप्रतिमद्युति – अन्तिम अवतार के शरीर में इतनी अधिक कान्ति रहेगी, कि उसकी उपमा नहीं दी जा सकती,[२] और न उनके समान कान्तिमान और कोई अवतार ही हुआ ।

१०. राजाओं के वेश में छिपे हुए दस्युओं का विनाश-अन्तिम अवतार के विषय में यह भी भागवत पुराण में है कि वह राजाओं मे वेश में छिपे हुए दस्युओं का संहार करेगा ।

११. शरीर से सुगन्ध का निकलना – अन्तिम अवतार के शरीर से सुगन्ध निकलेगी,[३] जो हवा में मिलकर लोगों के मन की निर्मल करेगी ।

---

१. 'चतुर्भिर्भ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्'
कल्किपुराण अध्याय २, श्लोक ५

हे देव ! चार सहयोगियें के साथ मैं शैतान का नाश करूंगा ।

२. 'विचरत्राशुना क्षोण्यां हयेना प्रतिमद्युतिः ।
नृपलिड.च्छदो दस्यून्कोटिशोनिहनिष्यति ।।'
भागवतपुराण १२-२-२०

वेगगामी अश्व से पृथिवी में विचरते हुए अप्रतिम कान्ति वाले वह राजाओं के वेष में छिपे करोड़ों दुष्टों का संहार करेंगे ।

३. 'अथतेषां भविष्यन्ति मनांसि विश्दानि वै ।
वासुदेवंगरागतिपुण्यगन्धानिलस्पृशाम् ।।'
भागवत पुराण १२ स्कन्ध, २ अध्याय, २१ वां श्लोक

१२. बहुत बड़े समाज का उपदेशक बनना – अन्तिम अवतार बहुत बड़े समाज का कल्याणकारी होगा । धर्म से दूर अत्याचारियों का दमन करके उन्हें सीधे रास्ते पर लगाएगा ।

१३. माधवमास की द्वादशी शुक्ल पक्ष को जन्म – अन्तिम अवतार का जन्म शुक्लपक्ष की बारहवीं तिथि को माधवमास (वैशाख) में होगा । यह कल्कि पुराण से विदित है [१] ।

१४. शम्भल के प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म – शम्भल स्थान के प्रमुख पुरोहित विष्णुयश [२] के यहाँ जन्म होगा और माता का नाम सुमति [३] होगा ।

ये सभी विशेषताएँ अन्तिम अवतार में होंगी ।

अन्तिम अवतार का समय

भारतीय धर्मग्रन्थों ने समय को चार भागों में विभाजित किया है ।

१. सत्ययुग – इस युग का नाम कृतयुग है । इसकी अवधि सत्रह लाख अट्ठाइस हजार वर्ष है ।

२. त्रेतायुग – सत्ययुग के बाद त्रेतायुग आता है । त्रेतायुग का समय बारह लाख छियानबे हजार वर्ष तक है ।

---

१. द्वादश्यां शुक्लपक्षस्य माधवे मासि माधवम् : ।
जातो ददृशतुः पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ ।।'
कल्कि पुराण, द्वितीय अध्याय, १५वां श्लोक ।

२. 'शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ।।'
भागवतपुराण १२-२-१८,

३. 'शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भवाम्यहम् ।
कल्कि० अध्याय २, श्लोक ४
'सुमत्यां विष्णुयशसा गर्भमाधत्त वैष्णवम्' ।
कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक ११

३. द्वापर युग - त्रेतायुग के बाद द्वापर युग आता है, इसकी अवधि आठ लाख चौसंठ हजार वर्ष है ।

४. कलियुग - कलियुग की अवधि चार लाख बत्तीस हजार वर्ष है ।

अवतार भविष्य में होगा परन्तु अवतार के पूर्व ही अत्याचारों से दबकर पृथ्वी जलमग्न हो जाय, तो भावी अवतार से लाभ ही क्या ? गीता में भी कहा गया है, कि जब जब धर्म की हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब अवतार होता है । साधुओं की रक्षा के लिये तथा दुष्टों के संहार के लिये, एवं धर्म की स्थापना के लिये युग-२ में अवतार होता है [१]। अब यह देखना है, कि जिन जिन परिस्थितियों के बाद अवतार होता है, क्या वे परिस्थितियाँ बीत चुकीं या बीत रही है ? इतना तो निश्चित ही है कि अन्तिम अवतार कलियुग में होगा, और कलियुग को आरम्भ हुये आज से पांच हज़ार उन्हत्तर वर्ष हो गये [२] । अन्तिम अवतार का समय कलियुग के प्रायः बीत जाने पर या कुछ बीत जाने पर है [३]। परिस्थिति वह रहेगी, कि केवल अपना ही पेट पालना लोगों को अभीष्ट रहेगा ।

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि अन्तिम अवतार उस समय होगा जब कि युद्धों में तलवार का प्रयोग किया जाता हो, ओर सवारियों में अश्व का प्रयोग होता हो । क्योंकि 'भागवत पुराण में उल्लेख है, कि देवताओं द्वारा दिये गये वेगगामी अश्व पर चढ़कर आठों ऐश्वर्यो एवं गुणों से युक्त जगत्पति तलवार से दुष्टों का दमन करेगें [४] । यह तलवारों और घोड़ो का युग नहीं है,

१. यदा याद हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।' - भगवद्गीता

२. 'गतकलि: ५०६९' पंचागं २०२५ सं०

३. 'इत्थं कलौ गतप्राये जनेषु खरधर्मिणि ।
धर्मत्राणाय सत्वेन भगवानवतरिष्यति ।।'
भागवतपुराण १२ स्कन्ध, २ अध्याय, १७ वां श्लोक ।

४. 'अश्वमाशुगमरूह्य देवदत्त जगत्पतिः ।
असिनासधुदमनमष्टैश्वगुणान्वितः ।।'
भागवतपुराण १२ स्कन्ध, २ अध्याय, १९ वां श्लोक

यह तो अणुबम्ब एवं टैंकों आदि का युग है । तलवार एवं घोड़ों का समय समाप्त हो चुका है अतः अन्तिम अवतार की स्थिति तलवारों एवं घोड़ों के युग मे ही होनी सिद्ध होती है । आज से लगभग १४०० वर्ष पहले घोड़ों तथा तलवारों का प्रयोग होता था और उसके लगभग १०० वर्षो बाद से बारूद का निर्माण सोडा और कोयला के संयोग से अरब में होने लगा ।

जन्मतिथि का भी निरूपण होना आवश्यक है । कल्किपुराण में अन्तिम अवतार का समय माधव मास, शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि दिया गया है [१] ।

स्थान निरूपण

यह तो निविवाद सिद्ध है कि अन्तिम अवतार का स्थान शम्भल ग्राम होगा [२] । केवल ग्राम के नाम से ही सन्तोष नहीं होता, जब तक कि उसका पूरा विवरण न हो । पहले यह निश्चय करना आवश्यक है, कि शम्भल ग्राम का नाम है या किसी ग्राम का विशेषण ।

शम्भल किसी ग्राम का नाम महीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ग्राम विशेष को शम्भल नाम दिया गया होता तो उसकी स्थिति भी बतलाई गई होती। परन्तु पुराणों में कहीं भी शम्भल ग्राम की स्थिति नहीं बतलाई गई है । भारत में खोजने पर यदि कहीं कोई शम्भल नामक ग्राम मिलता है, तो वहाँ आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले कोइ पुरूष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का उद्धारक हो । फिर अन्तिम अवतार कोई खेल तो नहीं है कि अवतार हो जाय और समाज में ज़रा सा परिवर्तन भी न हो, अतः 'शम्भल' शब्द को विशेषण मान कर उसकी व्युत्पत्ति पर विचार करना आवश्यक है ।

१. 'शम्भल' शब्द 'शम्' (शान्त करना) धातु से बना है । अर्थात जिस स्थान में शान्ति मिले ।

१. द्वादश्यां शुक्ल पक्षस्य, माघवे मासि माधवम् ।
जातं............।।' कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक १५ ।

२. 'शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्मवाम्यहम्' ।
कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक ४ ।

२. सम् उपसर्गपूर्वक 'वृ' धातु में अप् प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न शब्द 'संवर' हुआ । 'वबयोरभेद:' और 'रलयोरभेद:' के सिद्धान्त से शम्भल शब्द की निष्पत्ति हुई, जिसका अर्थ हुआ जो अपनी ओर लोगों को खींचता है या जिसके द्वारा किसी को चुना जाता है ।

३. 'शम्भर' शब्द की निघण्टु (१/१२/८८) में उदकनामों में पाठ है । 'र' और 'ल' में अभेद होने के कारण शम्भल का अर्थ होगा जल का समीपवर्ती स्थान ।

लोगों को यह सन्देह होगा कि जब 'शम्भल' का अर्थ जल निकल रहा है, तो जल का समीपवर्ती स्थान या गांव अर्थ क्यों लिया गया ? इसके उत्तर में मैं इतना ही बतला रहा हूँ कि प्रसंग यहाँ ग्राम का है न कि जल का । जब गंगा में घोष शब्द से आप यह अर्थ करते हैं, कि गंगा के समीप स्थित गांव में घोष, न कि गंगा के जल के ऊपर घोष, तो आप शम्भल शब्द से वैसे ही क्यों अर्थ नहीं निकाल लेते ? यदि 'गंगा में घोष, वाक्य में लक्षण मानते हैं, तो यहाँ भी लक्षण मानिये ।

अन्तिम अवतार के स्थान के विषय में केवल इतना ही विचारणीय है कि वह स्थान, जिसके आस-पास जल हो और वह स्थान आकर्षक एवं शान्तिदायक हो । अवतार की भूमि पवित्र होती है, अत: उस स्थान में भी पवित्रता होनी चाहिये और हिंसा आदि नहीं होनी चाहिये । साथ ही साथ वह स्थान एक तीर्थ होना चाहिये अर्थात् लोगों का धार्मिक स्थान हो ।

'शम्भल' का शब्दिक अर्थ है – 'शान्ति का स्थान', अन्तिम अवतार का स्थान शान्तिदायक, हिंसा और द्वेष से रहित होना चाहिये ।

अन्तिम अवतार के लिये आवश्यक नहीं कि वह भारत में ही हो और संस्कृत या हिन्दी ही बोले । भाषा, वेशभूषा तो केवल देश-काल पात्र के अनुसार होती है । यदि अवतारों के लिये एक ही प्रकार की भाषा, वेशभूषा तथा एक ही भाषा के नाम प्रयुक्त होते तो सभी देशों के अन्दर होने वाले अवतारों की भाषा तथा वेशभूषा एक ही होती । यह कहना अज्ञानता है, कि अवतार केवल भारत में ही हो । क्या भारत ही ईश्वर का प्रिय स्थान है, और अन्य देश नहीं, अथवा क्या सृष्टि केवल भारत ही है और दूसरे देश नहीं ।

अत: अन्तिम अवतार भारत से बाहर भी हो सकता है और वहाँ उस देश की भाषा, रीति-रिवाज तथा वेषभूषा के अनुरूप उसको चलना होगा, परन्तु अधर्म एवं अन्याय के विरूद्ध ।

समय को दृष्टि में रखते हुये इतना तो स्पष्ट ही है, कि भारत में आज से लगभग तेरह-चौदह सौ वर्ष पूर्व कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ, जो अन्तिम अवतार की कसौटी पर खरा उतरे ।

जितने भी पुराण हैं, कल्कि के अवतार के विषय में सभी स्थान को 'शम्भल' बतलाते हैं । 'सम्भल' या 'शम्भल' शब्द एक ही हैं । अन्तिम अवतार ही सिद्धि प्रकरण में स्थान आदि का निर्धारण किया जायेगा ।

संसार के सामाजिक और धार्मिक पतन का काल

प्रत्येक महापुरूष के जन्म के पहले काफी संकटों की परिस्थिति आती है या यों कहिये कि प्रत्येक कष्टमय दशाओं के बाद ही ईश्वर किसी महापुरूष को भेजता है । भारत की भी दशा आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पहले ख़राब थी । प्राचीन भारत के इतिहास में सबसे अधिक अन्धकार और अत्याचारों का युग है जो लगभग पाँच सौ ई० से प्रारम्भ होता है । वैदिक काल में मूर्तिपूजा का अभाव था, परन्तु इस समय मन्दिरों में मूर्तिपूजा का सर्वत्र प्रचलन और स्थापन हो गया था [1] । मन्दिरों के पुजारी तरह-तरह की त्रुटियों का उद्‌गम बने, जो धार्मिक आडम्बरों से भोले-भाले यात्रियों को लूटते थे [2] ।

1. A History of Civilisation in Ancient India, Vol. 3, Page 281
2. A History of Civilisation in Ancient India, Vol. 3, Page 243.

नोट : – 'वाचस्पत्यम्' के अनुसार शम्भल में ६० तीर्थ हैं । वहाँ पर लात मनात नामक तीर्थ की भी स्थिति कुछ विद्वानो ने बतलाई है । लात मनत तथा कनात आदि ६० प्रसिद्ध मूर्तियों की प्राप्ति का स्थान शम्भल हैं, ऐसा मुसलमान विद्वान मानते हैं । मुसलमान विद्वान दारूल अमन को ही शम्भल कहते हैं ।

वैदिक काल में सारी हिन्दू जाति में एकता तथा समानता का व्यवहार होता था, लेकिन अब जाति-पाँति के कारण अन्तरँग भेद-भाव का बोलबाला हो गया था । वैदिक काल की वर्ण-व्यवस्था, जो स्वेच्छया अपनाने पर थी, अब जाति व्यवस्था बन गई थी । इससे सामाजिक संगठन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा [1] । स्त्रियों को दासता का पद प्रदान किया गया [2] । विधान इस प्रकार का बना जो प्रत्यक्ष रूप से पक्षपातपरक था । ब्राह्मण चाहे कितना ही अत्याचार क्यों न करे, मृत्यु दण्ड का भागी कभी नहीं होता था । निम्न जाति द्वारा उच्च वर्ग की पत्नी से व्याभिचार मृत्यु दण्ड को दिलाता था, तथा उच्च जाति द्वारा निम्न जाति की पत्नी के साथ व्याभिचार करने से कुछ अर्थदण्ड दिया जाता था । यदि निम्न जाति का पुरूष उच्च जाति के पुरूषों को उपदेश दे, तो गरम तेल उसके मुख में छोड़ने का विधान था, गाली देने पर जीभ काटने का विधान था [3] । शराब पीना राजाओं के महत्व की बात थी, और राजमहिषी भी शराब के नशे में मदमस्त झूमती थी [4] । मार्गों पर व्यभिचारियों का जमघट लगा रहता था [5] । ईश्वर की खोज जंगलों और पहाड़ों में की जाती थी । काल्पनिक और मनगढ़न्त विचारों का एवं भूत प्रेतों की पूजा का धर्म था ।

सम्भवत: इतनी बुरी अवस्था रोमन और पर्सियन साम्राज्य की पहले कभी नहीं थी, जितनी सातवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई । बाईजेण्टाइन साम्राज्य

1. A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt, Vol. 3, Page 308.
2. A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt, Vol. 3, Page 331.
3. A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt, Vol. 3, Page 342 - 343.
4. A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt, Vol. 3, Page 469.
5. A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt, Vol. 3, Page 469.

के क्षीण हो जाने से सम्पूर्ण शासन भ्रष्ट हो चुका था और पादरियों के दुष्कर्षो और दुष्टताओं का परिणाम यह हुआ कि ईसाइ धर्म बहुत गिर गया, और इतनी खराब परिस्थिति हो गई कि आज उसकी वैसी कल्पना नहीं की जा सकती । उन बुरी परिस्थितियों को यदि आज स्पष्ट किया जाय, तो शायद कोई उस पर विश्वास न करे । यद्यपि उन बुराइयों का ऐसा प्रबल प्रमाण है, कि सन्देह लेशमात्र भी नहीं रह सकता । पारस्परिक संघर्षो और शत्रुता के कारण समाज मार्ग को भूल चुका था । शहरों और कस्बों में रक्त की धारा बहती थी । ईसामसीह ने सच की कहा था, कि मैं शान्ति नहीं लाया हूँ, अपितु तलवार लाया हूँ [1]। इस समय अरब के एक भाग में मोहम्मद साहब का धर्म उठा, जो रोमन साम्राज्य के संघर्षो से दूर था । इस धर्म के भाग्य में यही लिखा था कि यह तूफान की तरह से सम्पूर्ण पृथ्वी में छा जायगा, और अपने समक्ष बहुत से साम्राज्यों, शासकों और प्रथाओं को इस तरह उड़ा देगा, जैसे कि आँधी मिट्टी को उड़ा देती है [2] ।

1. Perhaps in no previous period had the empire of the Persiasn of the oriental part of Roman empire, been in a more deplorable or unhappy state than at the beginning of the 7th century. In consequence of the weakness of the Byzantinc despots the whole frame of their government was in a state of complete dis-organization of the most frightful abuses and corruption of the priests, the Christian religjon had fallen into a state of degradation scarcely at this day concievably and such as would be absolutely iucredible had we not evidence of it the most unquestionable, The feuds and animosities of the almost innumerable sects had risen to the greatest possible heights; the whole frame of soeiety was loosened; the towns and cities flowed with blood. Well, indeed, had Jesuss prophesied when he said he brought not peace, but a sword."

'Apology for Mohamed' by Godfrey Higgins, page 1 .

2. "At this time, in a remote and almost unknown colner of Arabia, at a distance from ciril broils which were tearing to piecs of Roman empire, arose the reigion of Mohamed, a religion destined to sweep like a tornado over the face of the earth to carry before it empires, Kingdoms and systems, and to scatter them like dust before the wind."

Apology for Mohamed' by Godfrey Higgins, page 2.

अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से यह भी सिद्ध है कि मोहम्मद साहब के जन्म के पहले ईसाइयों में कितनी बुराइयाँ फैल गई थीं [१]। इसी प्रकार सेल ने कुरआन के अनुवाद की प्रास्तावना में लिखा है – गिरजाघर के पादरियों ने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे, और शांति प्रेम एवं अच्छाइयाँ उनमें से दूर हो गई थीं । वे 'मूल धर्म' को भूल गये थे । धर्म के विषय में अपने तरह-तरह के विचार बनाये हुये परस्पर कलह करते रहते थे । इसी पृथ्वी में रोमन गिरिजाघरों में बहुत सी भ्रम की बातें धर्म के रूप में मानी जाने लगी और मूर्तिपूजा बहुत ही निर्लज्जता से की जाने लगी [१] ।

मोहम्मद साहब से पहले ईसाई धर्म और मूर्तिपूजा दोनों ने मिलकर एक नवीन रूप धारण कर लिया, जिसके कारण ईसाईयों में मूर्तिपूजा सामान्य हो गई, और एक ईश्वर के स्थान पर तीन ईश्वर माननीय हो गए और मरियम (ईसामसीह की माँ) को ईश्वर की माँ समझा जाने लगा [२] ।

अन्तिम अवतार सिद्धि

उपर्युक्त विवरणों में यह तो स्पष्ट ही किया जा चुका है, कि कल्कि अश्वारोही तथा खड्गधारी होगा । तलवार एवं अश्व का समय बीत चुका है, और अब तो जेट विमानों एवं अणुअस्त्रों का युग आ गया है । अन्तिम अवतार का काल निर्धारण आज से पूर्व ही सिद्ध होता है । अन्तिम अवतार के पूर्व की परिस्थितियां भी सिद्ध हो चुकी है, कि धर्म की हानि और अधर्म एवं अत्याचारों की वृद्धि होने पर अन्तिम अवतार की प्रक्रिया होगी । अब हम कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन उपस्थित करते हैं ।

---

1. Translation of Holy Quran. by George Sale. First translation/ Preface on pages 25/26

2. The History of Struggle between Science and Religion. By Draper (Noted from Siratun Nabi, Vol. IV, Page 227.)

१. अश्वारोहण एवं खड्गधारण – भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध द्वितीय अध्याय के उन्नीसवें श्लोक से कल्कि का देवताओं द्वारा दिये गये अश्व पर चढ़ना एवं तलवार द्वारा दुष्टों का संहार करना उल्लिखित है [१] । कल्कि का घोड़ा जो देवताओं द्वारा उन्हें दिया जायगा बहुत उत्तम रहेगा, उसी पर चढ़कर वह दुष्टों का संहार करेंगे । मोहम्मद साहब को भी फरिश्तों द्वारा घोड़ा मिला था, जिसका नाम बुर्राक़ था, [२] उस पर बैठकर मोहम्मद साहब ने रात्रि को तीर्थयात्रा की थी [३] । मुहम्मद साहब को घोड़े अधिक प्रिय थे । और उनके सात घोड़े थे [४] । अनस ने कहा है कि मैंने मुहम्मद साहब को देखा कि घोड़े पर सवार थे और गले पर तलवार लटकाये हुये थे [५] । मुहम्मद साहब के पास नौ तलवारें थीं ।

१. कुल परम्परा से प्राप्त २. जुलफ़िक़ार नामक तलवार
३. कलई नाम वाली तलवार [६] ।

---

१. 'अश्वमाशुगारूह्य देवदत्तं जगत्पतिः ।
असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः ।।
भागवत पुराण, द्वादश स्कन्ध द्वितीय अध्याय, १९ वां श्लोक ।

2. The picture of Burak was published in organiser, february 8, 1969.

3. " He explained to Ommehani, daughter of Abu Talib that during the night he had petrformed his devotions in the temple of Jerusalem. He was going forth to make his vision known, when she confijurcd him not this to expose himself to the derision of the unbelievers".
'Life of Mahomet,' by Sir William Muir, page 125

4. Asah us-siyar page, 565, Jamaul Favaid, Vol 2, page 179

५. बुखारी की हदीस

६. असहुस्यिर, पेज ५९६

२. जगद्गुरू – भागवतपुराण में अन्तिम अवतार को जगतपति कहा गया है [१]। जगत् का अर्थ है संसार और पति का अर्थ है रक्षक । जगत्पति शब्द का अर्थ हुआ कि अपने उपदेशों द्वारा गिरते हुये समाज को बचाने वाला । वह समाज कोई सीमित समाज तो हैं नहीं, वह समाज है संसार । तात्पर्य यह हुआ कि जगद् का गुरू । मुहम्मद साहब के लिये भी कुरान में कहा गया है, 'ऐ मोहम्मद ऐलान कर दो सारी दुनियाँ भर के लिये नबी होकर तुम आये हो' । दूसरी जगह यह भी कहा गया है कि पवित्र है वह अस्तित्व, जिसने अपने भक्त पर पवित्र ग्रन्थ उतारा, ताकि सम्पूर्ण संसार के लिये वह पापों का डर दिखाने वाला हो [२] ।

इस प्रकार जगद् गुरूत्व का अस्तित्व एवं महत्व दोनों ही सिद्ध होते हैं ।

३. असाधुदमन – कल्कि के विषय में उल्लेख है कि वह दुष्टों का दमन करेंगे। यही बात मुहम्मद साहब पर भी घटित होती है । उन्होने भी दमन किया, तो दुष्टों का ही । कुरआन में भी यह कहा गया है, कि जिनको सताया गया है, उनको आज्ञा दी जाती है कि वे भी लड़ें, इस कारण से कि उन पर अत्याचार किया गया है' और परमेश्पर उनकी सहायता पर पूरी शक्ति रखता है । जो लोग अपने घरों से निकाले गये, केवल इस बात पर कि ईश्वर उनका पालक है । मोहम्मद साहब ने लुटेरों और डाकुओं को सुधार कर उन्हें एकेश्वरवाद की शिक्षा दी, तथा ईश्वर की पूजा में और देवताओं के मिश्रण का विरोध किया तथा मूर्तिपूजा का भी खण्डन किया । उन्होंने जिस धर्म की स्थापना की, उसके विषय में कहा कि मैं प्राचीन धर्म को ही स्थापित कर रहा हूँ । कोई यह नवा

---

१. भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध
द्वितीय अध्याय, १९ वां श्लोक

२. कुरआन, सूरे एराफ़, आयत नं० १५८

३. कुरआन, सूरे फुरकान, आयत नं० १

धर्म नहीं । 'इस्लाम' शब्द का अर्थ है, ईश्वर की आज्ञा का पालन कराने वाला धर्म और वेद शब्द भी ईश्वरीय वाणी है और उनकी आज्ञा पालन कराने वाला धर्म वैदिक है, अतः वैदिक धर्म और इस्लाम धर्म में साम्य है जो वैदिक या इस्लाम धर्म के मार्ग में बाधक है, उन्हें नास्तिक या काफिर कहा जाता है, उनसे विरोध की बात और उनके दमन की बात स्वाभाविक ही है ।

जिस परिस्थिति में मोहम्मद साहब का जन्म हुआ, वह परिस्थिति डाकुओं और दुष्टों से युक्त थी । लड़कियों को कत्ल कर दिया जाता था ।

उनके जन्म के पहले ईरान में तो कुबाद प्रथम बादशाह हुआ था, जो भज्दक के उपदेश से प्रभावित होकर यह घोषित कर चुका था [१] कि धन और औरत सभी की हैं, उन पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं । इसी के परिणाम स्वरूप व्यभिचार अपनी सीमा को पार कर चुका था । बाद में मोहम्मद साहब ही ऐसे व्यक्ति हुये जिनके वर्ग ने उन आतताइयों को पराजित करके धर्म की मर्यादा स्थापित करने में सफलता प्राप्त की ।

४. स्थान सम्बन्धी साम्य – कल्कि का स्थान शम्भल होगा और वह वहाँ के पुरोहित के यहाँ जन्म लेगें [२]। पुरोहित का नाम विष्णुयश होगा । इतना तो ज्ञात ही है कि उक्त नाम संस्कृत भाषा के हैं, जो या तो अर्थ को निर्धारित करके लिखे गये हैं, या तो उन नामों का विकृत रूप अरबी भाषा में हो गया है ।

संस्कृत प्रायः अर्थप्रधान नामों को महत्व देता है, अतएव उंन नामों के अर्थ को ही स्वीकार करना अधिक उपयुक्त है ।

---

१. सीरतुन्नबी, वा़ल्यूम ४, पेज २१५

२. 'शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ।।'
भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध, २ अध्याय, १८ वां श्लोक

'शम्भल' शब्द 'शान्त करना' अर्थ वाली 'शम्' धातु से बना हुआ है, जिसमें 'बन्' प्रत्यय लगा हुआ हैं । शम्भल शब्द का अर्थ होगा 'शान्ति का घर' और मक्का को अरबी भाषा में 'दारूलअमन' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ 'शान्ति का घर' है ।

५. प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म – कल्कि के विषय में यह कहा गया है कि वह प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म लेंगे । मोहम्मद साहब ने भी मक्का में काबा के प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म लिया ।

६. माता पिता सम्बन्धी साम्य – कल्कि की माता का नाम कल्कि पुराण में सुमति (सोमवती) आया हुआ है जिसका अर्थ है, शांति एवं मननशील स्वभाव वाली । पिता का नाम विष्णुयश आया हुआ है, जो बहुत ही पवित्र तथा ईश्वर का उपासक होगा, मोहम्मद साहब की माता का भी नाम 'आमिना' था जिसका अर्थ होता है, शान्ति (अमन) वाली, तथा पिता का नाम 'अब्दुल्लाह' था। अब्दुल्लाह का अर्थ है अल्लाह अर्थात विष्णु का बन्दा [१] ।

७. अन्तिम अवतार की धारणा में साम्य – कल्कि को अन्तिम युग का अन्तिम अवतार बताया है [२], मोहम्मद साहब ने भी घोषणा की है, कि मैं अन्तिम सन्देष्टा हूँ । यही कारण है कि मुसलमान भावी किसी सन्देष्टा या अवतार को नहीं मानते ।

---

१. कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश होगा, विष्णु – अल्लाह यश – बन्दा यानी अब्दुल्लाह, कल्कि अवतार की माता का नाम सुमति (सोमवती) होगा । सोमवती – अमन व सलामती वाली यानी आमिना । इसका पिता इसकी पैदाइश से पहले फौत हो जायेगा और बाद में माता भी फ़ौत हो जायेगी तारीख़ ने इसकी ताईद की सरवरे, पेज १०-११

२. भागवतपुराण के २४ अवतारों के प्रकरण में कल्कि सबसे अन्तिम अवतार है । भागवतपुराण प्रथम स्कन्ध, तृतीय अध्याय, २५वां श्लोक ।

'कल्कि' शब्द का अर्थ 'वाचसत्यम्' तथा 'शब्दकल्पतरू' में अनार का फल खाने वाले तथा कलंक को धोने वाले किया गया है । मोहम्मद सहाब भी अनार और खजूर का फल खाते थे, तथा उन्होंने प्राचीन काल से आगत मिश्रण (शर्क) और नास्तिकता (कुफ़्) को धो दिया ।

८. उत्तरदिशिगमन तथा उपदेश सम्बन्धी साम्य – कल्कि पुराण में उल्लिखित है, कि [१] कल्कि पैदा होने के बाद पहाड़ी की तरफ चले जायेंगे और वहाँ परशुराम जी से ज्ञान प्राप्त करेंगे बाद में उत्तर की तरफ जाकर फिर लौटेंगे। मोहम्मद साहब भी जन्म लेने के कुछ समय बाद पहाड़ियो की तरफ चले गये और वहाँ जिब्रील द्वारा ज्ञान प्राप्त किया, अर्थात उन पर कुरआन की आयतों का उतरना शुरू हुआ । उसके बाद वे उत्तर मदीने जाकर वहाँ से फिर दक्षिण की ओर लौट आये और अपने स्थान को विजित किया, [२] यही घटना कल्कि के विषय में भी घटने की पुराणों द्वारा घोषणा है ।

९. शिव द्वारा कल्कि को एक घोड़ा दिया जाना [३] शिव कल्कि को एक घोड़ा देंगे जो बहुत ही चमत्कारों से युक्त होगा । मोहम्मद साहब को भी बुर्राक नाम का चमत्कारी घोड़ा मिला था, जो ईश्वर से उन्हें प्राप्त हुआ था ।

१०. चार भाइयों के साथ कलि का निवारण – कल्कि पुराण में उल्लेख है कि [४] चार भाइयों के साथ कल्कि कलि (शैतान) का निवारण करेंगे । मोहम्मद साहब ने भी चार साथियों के साथ शैतान का निवारण किया था।

---

१. सरवरे आलम, पेज १०

२. 'परशुराम कल्कि अवतार को गुफा में ले जाकर तालीम देंगे, परशुराम – जिब्रील, या रूहुलकुदुस । गुफा – गार यानी गारेहिरा का वाक़्या। '
सरवरे आलम, पेज ११

३. शिव कल्कि अवतार को एक घोड़ा देंगे जो अजीबो ग़रीब सिफ़त रखता होगा। शिव यानि खुदा और घोड़े का इशारा बुर्राक़ की तरफ़ है ।
सरवरे आलम, पेज ११

४. चतुर्भिर्भ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम् ।
कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक ५ ।

ये चार साथी थे [१] । १. अबूबक्र, २. उमर ३. उस्मान और ४. अली ।

बाद में ये ही खलीफा हुये जिन्होने मोहम्मद साहब के एकेश्वरवाद और आडम्बर विहीन धर्म का प्रचार किया ।

११. देवताओं द्वारा सहायता – कल्कि पुराण में उल्लेख है, कि देवताओं द्वारा कल्कि को युद्धों में सहायता मिलेगी [२] । यही बात मुहम्मद साहब के भी विषय में हुई कि बद्र की लड़ाई में फरिश्ते उनकी सहायता के लिये उतरे ।

कुरआन में लिखा है कि 'अल्लाह ने तुमको बद्र की लड़ाई में मदद दी और तुम बहुत कम तादाद (संख्या) में थे, तो तुमको चाहिये कि तुम अल्लाह ही से डरो और उसी के शुक्रगुजार होओ । जब तुम मोमिनीन से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिये काफी नहीं है, कि तुम्हारा रब तुमको तीन हजार फरिश्ते भेजकर मदद करें, बल्कि अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो । तो अल्लाह तुम्हारी मदद पाँच हजार फरिश्तों से करेगा [३] । 'जब तुमने अपने रब से मदद माँगी, तो तुम्हारे रब ने मन्जूर किया कि मैं तुम्हारे लिये एक हजार फरिश्ते मदद को भेजूँगा [४] ।

ऐ ईमान वालों, अल्लाह की उस कृपा का स्मरण करो, जब तुम्हारे विरूद्ध सेनायें आई तो हमने उनके विरूद्ध पवन और ऐसी सेनायें भेजी, जिनको तुम नहीं देखते थे, और जो कुछ तुम कर रहे थे, वह अल्लाह देख रहा था [५] ।

---

1. 632 A.D. to 661. A.D. The orthodox caliphate including the first four Calibhs.
   Encyclopedia of World History.
   by W. L. Langer page 184
२. यात यूयं भुवं देवा: स्वांशावतरणे रत: ।
   कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक ७ ।
३. कुरआन, सूर: आल इमरान आयत नं० १२३,१२४,१२५ ।
४. कुरआन, सूरे अनफाल, आयत नं० ९
५. कुरआन, सूर: अहजाब, आयत नं० ९

१२. अनुपमकान्ति से युक्त – कल्कि से विषय में उल्लेख है कि वे अनुपम कान्ति से युक्त होंगे, अर्थात वे इतने अधिक सुन्दर होगे कि उनकी उपमा नहीं दी जा सकती [१] । मोहम्मद साहब के भी विषय में कहा गया है कि मोहम्मद साहब सभी आदमियों सें अधिक सुन्दर थे और सभी मनुष्यों में अधिक आर्दशवान् एवं योद्धा थे [२] ।

१३. जन्मतिथि सम्बन्धी साम्य – कल्कि पुराण में कल्कि के जन्म की तिथि के सम्बन्ध में लिखा है कि माधव मास मे शुक्लपक्ष द्वादशी को जन्म होगा [३] । और मोहम्मद साहब का जन्म भी बारह रबीउल अव्वल को हुआ था [४] । बारह रबीउल अव्वल का अर्थ है, चाँद की बारहवी तिथि अर्थात शुल्कपक्ष द्वादशी ।

१४. शरीर से सुगन्ध का निकलना – श्री मद्भागवत पुराण के अनुसार कल्कि के शरीर से निकली सुगन्ध से लोगों के मन निर्मल हो जाएँगें । उनके शरीर की सुगन्ध हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी [५] ।

---

१. 'विचरन्नाशुना क्षोणयां हयेनाप्रतिमद्युति: ।
   नृपलिंगप्तछदो दस्यून् कोटिशोनिहनिष्यति ।।'
   भागवत पुराण, द्वादश स्कन्ध, द्वितीय अध्याय, २० वां श्लोक ।
२. जामे उल फवायद पेज १७८
   बुखारी की हदीस में अनस का बयान ।
३. 'द्वादश्यां शुल्कपक्षस्य माधवेमासि माधवम्'
   कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक १५ ।
४. असह उस्सियर, पेज ४९
५. 'अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वै ।
   वासुदेवाङरागतिपुणयगन्धानिलस्पृशाम ।।'
   भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध, द्वितीय अध्याय, २१ वां श्लोक ।

मोहम्मद साहब के शरीर की खुश्बू तो प्रसिद्ध ही है । मोहम्मद साहब जिससे हाथ मिलाते थे, उसके हाथ से दिन भर सुगन्ध आती रहती थी [1] । मोहम्मद साहब के नौकर ने कहा था कि मोहम्मद साहब के शरीर की सुगन्ध वायु को सुगन्धित कर देती है थी, जब वह घर से बाहर निकलते थे [2] ।

एक बार उम्मेसुलैन ने मोहम्मद साहब के शरीर का पसीना इकट्ठा किया। मुहम्मद साहब के पुछने पर उसने बताया कि इसे हम खुशबुओं में मिलाते हैं, क्योंकि यह सभी सुगन्धों से बढ़ कर है ।

१५.. अष्टैश्वर्यगुणान्वित – भागवत पुराण १२ स्कन्ध द्वितीय्र अध्याय में कल्कि को 'अष्टैश्वर्यणान्वित' (आठ ईश्वरीय गुणों से युक्त) कहा गया है । वे आठ ईश्वरीय गुण हैं – प्रज्ञा, कुलीनता, इन्द्रिय-दमन, श्रुतिज्ञान, पराक्रम, थोड़ा बोलना, दान और कृतज्ञता [3] ।

(क) प्रज्ञा – ऊँचा ज्ञान विषयक साम्य भी मोहम्मद साहब से है । भूत , भविष्य और वर्तमान की सभी बातें बताने में मोहम्मद साहब पूर्ण समर्थ थे, इस बात के समर्थन में अनेकों उदाहरण मोहम्मद इनायत अहमद

---

१. शिमाएल तिरमिज़ी – अनुवादक मौलाना मोहम्मद ज़करिया, पेज २०८

२. "Anas, his servant, says, " we always used to know when Mohamet had issued forth fume that filled the air."
Life of Mohamet' by Sir William Muir
page 342.

३. 'अष्टौ गुणा: पुरूषं दीपयन्ति
प्रज्ञा च कौल्यं च दम: श्रुतं च ।
पराक्रमश्चबहुभापिता च'
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च' ।।
महाभारत

की 'अलकलामुलमुबीन' पुस्तक में मिल जाएँगे । प्रमाण रूप में उस पुस्तक में इतिहास संक्षेप में यह है – रोमियों और ईरानियों की लड़ाई में रोमी जब परास्त हुये, तो मोहम्मद साहब ने अपनी परोक्षदर्शिता से इस घटना को अपने मित्रों से बताया । उनके मित्रों से इस घटना को जानकर कुरैशी(विरोधी) बहुत प्रसन्न हुआ, परन्तु एक फरिश्ते से '९ वर्ष के अन्दर रूमियों की होने वाली विजय' की भविष्य वाणी को सुनकर मोहम्मद साहब के मित्र अबूबक्र से एक दो हजार ऊँटों के हार जाने की शर्त रखी, अन्त में ९ वर्षो के अन्दर नैनवा(Ninevah) के युद्ध में रूमियों की विजय ६२७ ई० में हुई इसी विषय से सम्बन्धि 'सूरे रूम' नामक कुरान की ३० वीं सूरत उत्तरी है इसी प्रकार के अनेकों उदाहरण, जो उनकी दुरदर्शिता से सम्बन्धित है, इतिहास से ज्ञात है ।

(ख) कुलीनता – 'कल्कि मुख्य ब्राह्मण के परिवार से सम्बद्ध होंगें', इसकी पुष्टि ऊपर हम कर चुके हैं । मोहम्मद साहब भी ऊँचे पुरोहित परिवार में पैदा हुये थे । उनका परिवार पवित्र काबा का संरक्षक था [1] । मोहम्मद साहब का जन्म ५७१ ई० में कुरैश की पंक्ति में हाशिम के परिवार में हुआ था, जो अरब के निवासियों द्वारा माननीय तथा काबा का परम्परागत संरक्षक था [2] ।

(ग) इन्द्रियदमन – आठ ईश्वरीय गुणों में तीसरा गुण है – इन्द्रियों को वश में करना । भारतीय धर्म ग्रन्थों में कल्कि के विषय में कहा गया है,

---

1. 'He was born in A.D. 571, and came of the noble tribe of the Koreysh, who had long been guardians of the sacred Kaaba.' Page - XXVI of Introduction. the speeches of Mohammad, by Lane-Poole, Published by macmillan and Co. (London).

2. 'He sprung from toe trible of Koretsh and the family of Hashem. the most illustrious of the Arabs, the princes of Macca, and the hereditary guardians of the Caaba'.

Page - 229, Vol 5, Decline and fall of the Roman Empire, by Edward Nibbon Published from E.P. Euttou and Co. Newyork.
1910 A.D.

कि कल्कि इन्द्रिय दमन करने वाले होंगे । मोहम्मद साहब के विषय में कहा गया है कि वह आत्मप्रशंसा से हीन, दयालू, शान्त, इति, इन्द्रियजीत और उदार होंगे [1] । 'इन्द्रियदमन' का अर्थ है, कि इन्द्रियों को वंश में करना । इन्द्रियाँ मन के अधीन होकर काम करतीं हैं अतएवं मन को वश में करना ही इन्द्रियों को वश में करना है । यदि कोई यह आपत्ति करे, कि जो पुरूष ९ विवाह करे, उसको घोर कामी या भोग विलासी छोड़कर इन्द्रियों को वश में करने वाला कैसे कहा जा सकता है ? तो उन्हें यह ज्ञात होना चाहिये कि योगिराज श्री कृष्ण की पटरानियां क्या संख्या में छः से अधिक नही थीं ? योगी तो सांसारिक भोग विलासों के अन्तर्गत रहकर भी निष्काम भावना के कारण मुक्त हो जाता है । जैसे कमल का पत्ता जल में रहते हुये भी जल से परे रहता है, वैसे योगी पुरूष (ईश्वर को प्राप्त करने वाला) भी संसार के भोगों द्वारा ९ पत्नियों का रखा जाना लोकोत्तर पुरूषत्व का ही द्योतक है, न कि इससे उनके इन्द्रियदमनकारी होने में कोई कमी आती है ।

(घ) 'श्रुतं –श्रुतं आठ ईश्वरीय गुणों में चोथा गुण है । 'श्रुतं का अर्थ है, जो ईश्वर के द्वारा सुनाया गया और ऋषियों या पैगम्बरों द्वारा सुना गया हो । 'श्रुतं शब्द 'श्रुं (सुनना) धातु से बना है । ईश्वरीय ज्ञान जिस ग्रंथ में हो, उसे 'श्रुतं कहा जाता हैं । मोहम्मद साहब पर फरिश्ते द्वारा ईश्वरीय ज्ञान उतारा जाता था, जिसे वह्य भी कहा जाता है । लेनपूल इस बात का समर्थन करते है, कि मोहम्मद साहब पर देवदूत की सहायता से ईश्वरीय वाणी

---

1. 'Modesty and kindliness, patience, self denial, and reveted the affections off all around him.'

Page 525, 'Life of Mohamet'

by - Sir William Muir

Published by smith, Elder and Co. (London), 1877 A.D.

का भेजा जाना निःसन्देह सत्य है [1] । आर० वी० स्मिथ भी इस बात मे सहमत है, कि एक वह्य में मोहम्मद साहब सन्देष्टा का पद पाने वाले घोषित किये गये हैं [2] ।

सर विलियम म्योर ने भी मोहम्मद साहब के विषय में लिखा है कि वह सन्देष्टा तथा ईश्वर के प्रतिनिधि थे [3] । इस प्रकार मोहम्मद साहब और कल्कि अवतार की समानता दृष्टिगोचर होती है ।

(ङ) पराक्रम – अष्टगुणों में 'पराक्रम पांचवा गुण है । शरीरिक शक्ति में मोहम्मद साहब काफी बढ़े हुये थे । इसके उदाहरण के रूप में एक पहलवान जिसका नाम रकाना था, का वृतान्त उपस्थित किया जा रहा है । किसी गुफा में अकेले उपस्थित रकाना पहलवान, जो कुरैश से सम्बन्धित था, से मोहम्मद साहब ने ईश्वर से न डरने और ईश्वर पर विश्वास न करने का कारण पूछा जिस पर पहलवान ने सत्य की स्पष्टता के लिएं कहा । तब मोहम्मद साहब

---

1. These are the first revelations, that came to Mohammad. That he believed, he heard them, spoken by an angles from heaven is beyond doubt.,

page xxxi, Introduction, speeches of Mohammad, by Lane-poole.

2. 'Upon this, Mohammad felt the heavenly inspiration, and read, as he believed, the deeres of God, which he after words, promulgated in Koran. Then came the announcement, 'O, Mohamed, of a truth thou art the prophet of God and I am his angle Gabriel" This was the crisis of Mohamed's life. It was his call to renonce and to take the office of prophet.

page 98, Mohamed and Mohamednisu. by Rev. Bosworth smith

3. He was now the servant, the prophet, the vice gerent of God.

Page 48. Life of Mohamed, by Sir William Muir.

ने कहा, कि तू तो बड़ा वीर है, यदि कुश्ती में मैं तुझे नीचा दिखाऊँ, तो क्या विश्वास करेगा ? उसने स्वीकारात्मक उत्तर दिया, तब मोहम्मद साहब ने उसे दो बार परास्त किया, फिर भी उस पहलवान ने मोहम्मद साहब को पैग़म्बर न माना, तथा ईश्वर की सत्यता पर विश्वास न किया [१] ।

(घ) अबहुभाषिता – 'अबहुभाषिता' का अर्थ है – थोड़ा बोलना । थोड़ा बोलना महान् पुरूष का बहुत बडा गुण माना जाता है । मोहम्मद साहब भी अधिकतर मौन रहा करते थे, परन्तु जो कुछ बोलते थे, वह इतना प्रभावोत्पादक होता था, कि लोग उनकी बातें नहीं भूलते थे [२] । पारस्परिक वार्तालाप में मोहम्मद साहब शान्त ही रहते थे, परन्तु अरब के लोग उनकी बातें सुनना बहुत पसन्द करते थे [३]।

(छ) दान – 'दान' धर्म का आवश्यक अंग है । दीनों को दान देना आठ गुणों में सातवां गुण है, जो पुरूष को आलोकित करता है । लगभग प्रत्येक महापुरूष ने इसे स्वीकृत किया है । कल्कि को तो 'अष्टैश्वर्यगुणान्वित' कह कर पुराणों द्वारा उनमें आठों गुणों का सन्निवेश कर दिया गया है । मोहम्मद

---

१. देखिये 'असह उस-सियर', पेज ९७ तथा 'Life of Mohamed' का पेज ५२५, By sir W. Muir

2. ' He was of great taciturnity, but when he spoke, it was with emqhasis and deliberation, and no one could forget what he said.'

page - xxix, Introduction The speeches of Mohammad' by Lane-pool.

3. 'In his intercourse with others, he would sit silent among his companions for a long time together, but truely was more eloquent tham other men's speech, for the moment, speech was called for, it was forth coming in the shape of some weighty apothegm of proverb such as Arabs love to hear.'

page - 110 'Mohammed and Mohammadenism' by R. Bos Worth smith.

साहब दान देने में सतत लगे रहते थे । उनके घर में गरीबों की जमघट लगा रहती थी [१]। वे किसी को निराश नहीं करते थे । सरविलियम म्योर ने भी मोहम्मद साहब को बहुत सुन्दर स्वरूप वाला, पराक्रमी तथा दानी बताया है [२] ।

(ज) कृतज्ञता – आठ दैवी गुणों में कृतज्ञता (किये गये उपकार को समझना) अन्तिम गुण है । इस गुण के अभाव में कोई भी महापुरूषत्व को नहीं प्राप्त करता है । कल्कि में 'कृतज्ञता' को लेकर आठों गुणों की स्थिति की भविष्यवाणी पुराणों में है, जैसे कि पहले हम स्पष्ट कर चुके हैं । मोहम्मद साहब ने भी ऊपर ७ गुणों की स्थिति स्पष्ट हो चुकी, और कृतज्ञता की उनमें स्थिति को कोई भी इतिहासकार अस्वीकार नहीं कर सकता । अन्सार के प्रति कहे गये वाक्य मोहम्मद साहब की कृतज्ञता का स्पष्टीकरण करते हैं [३]।

१६. ईश्वरीय वाणी का उपदेष्टा – कल्कि के विषय में यह बात भारत में प्रसिद्ध ही है कि वह जो धर्म स्थापित करेंगे वह वैदिक धर्म होगा और उनके द्वारा उपदिष्ट शिक्षाएँ ईश्वरीय होगी । मोहम्मद साहब के द्वारा अभिव्यक्त कुरआन ईश्वरीय वाणी है, यह तो स्पष्ट ही है, भले ही हठी लोग इस बात को न मानें, क्योंकि कुरआन नें जो नीति, सदाचार, प्रेम, उपकार आदि करने के लिए प्रेरणा के स्रोत विद्यमान हैं, वही वेद में भी हैं । कुरआन में मुर्ति पूजा का खण्डन, एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा परस्पर प्रेम के व्यवहार का उपदेश

---

1. 'Indeed, outside the prophet' s house was a bench or gallery, on which were always to be found a number of poor, who lived entirely upon his generosity and were hence called, 'the people of the bench'.

page - xxx. Introduction, the speeches of Mohammed. by - Lane-poole.

2. 'He was', says an admiring follower, the handsomest and bravest, the bright faced and most generous of men.'

page 523, The life of Mohamet, by Sir William Muir

3. Asah us siyar, page 343.

है, वेद में एकं सत्' तथा विश्वबन्धुत्व की उत्कृष्टा घोषणा है । वेदों में ईश्वर की भक्ति का आदेश है और कुरआन की शिक्षा के अनुसार मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज़ अवश्य पढ़ते हैं, जब कि ब्राह्मण वर्ग में विरले लोग ही त्रिकाल संध्या करने वाले मिलेंगे । इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्कि और मोहम्मद साहब के विषय में एक सी बातें हैं । अब उपसंहार के रूप में हम वेदों और कुरआन की मूल शिक्षाओं की समानता पर विचार प्रस्तुत करेंगे ।

वेदों और कुरान की शिक्षायें

१. ईश्वर वह है, जिसके अतिरिक्त कोई दूसरा पूज्य नहीं, वह सदा रहने वाला और स्वयं अपने में स्थित है और जितनी वस्तुएँ हैं, उसी पर आधारित हैं । जब तक उसकी आज्ञा न हो, कोई उसके प्रबन्ध में व्याघात नहीं डाल सकता, वह हमारे आगे और पीछे की सब बात जानता है और उसके ज्ञान के भंडार से केवल उतना ही जान सकते हैं जितना वह चाहे, आकाश और पृथ्वी सब उसके ज्ञान के क्षेत्र में सम्मिलित हैं, वह इन सबको संभाले है, वह कभी थकता नहीं, यह सबके ऊपर और सबसे बड़ा है [१] ।

उपनिषदों के 'एकं ब्रह्म द्वितीय नास्ति, नेहनानास्ति किंचन' का अर्थ यह है कि वह ईश्वर एक है, उसके अतिरिक्त दूसरा नहीं है, यहाँ तो उसके बिना कुछ है ही नहीं, अर्थात जगत् का अस्तित्व तभी तक है, जब तक ईश्वर की सत्ता जगत् को संभाले है । यदि ईश्वर की सत्ता को अस्वीकृत किया जाय, तो जगत् का अस्तित्व ही नहीं रहेगा ।

२. जिसको कोई भी चक्षु के द्वारा नहीं देख सकता अपितु जिससे नेत्र अपने विषयों को देखता है, उसे ही तू ब्रह्म जान [२] । कुरआन में कहा गया है कि

---

१. कुरआन २-२५५

२. यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूषि पश्यति ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ।।
-केनोपनिषद् {सामवेद तलवकार (ब्राह्मण), खण्ड १, मन्त्र ६}

आँख उसे नहीं देख सकती पर वह सब आँखो को देखता है [१] ।

३. तू हमें सीधे रास्ते पर ले चल [२] । ऋग्वेद में भी कहा गया है कि हे प्रकाशक परमेश्वर हमें सुन्दर रास्ते से ले चलो [३] ।

४. कह दो कि ईश्वर एक है, बाकी सब उसी के आश्रय है । न वह कभी जन्म लेता है और न किसी को जनता है । उसके जोड़ का कोई दूसरा नहीं है । परमेश्वर एक है, सभी प्राणियों में व्याप्त है, सभी कर्मो का अध्यक्ष है, सभी के ऊपर है, सबका साक्षी (गवाह) है, सब कुछ जानता है, और निर्गुण है [४] ।

५. ईश्वर सत्य (अल्लाह हक है) [५] । वेदान्त में कहा गया है कि 'सत्यं ब्रह्म' अर्थात ब्रह्म सत्य है ।

६. जिधर भी तुम मुँह करो, उधर ही परमेश्वर का मुख [६] । गीता में कहा गया है कि 'विश्वतोमुखम्' अर्थात उसके सब तरफ मुख हैं [७] ।

---

१. कुरआन, ६-१०२ से १०४ ।

२. कुरआन सूर १, आयत ५

३. 'अग्नेनय सुपथा रायेo' ऋग्वेद १.१८९.१, वा य. ३, ३६; ७,४३; ४०,१६; तैo संo १.१.१४, ३; ४, ४३; १, तैo ब्राo २.८, २, ३, तै आo १.८.८, शतब्रा १४.८.३.१ ।

४. एको देव: सर्वभूतेषु गूढ़: सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्ष: सर्वभूताधिवास:, साक्षी जेता केवलो निर्गुणश्च ।।
श्वेताश्वतर उपनिषद् अध्याय ६, मन्त्र ११

५. कुरआन २१. ६२ ।

६. कुरआन २.११५ ।

७. 'सहस्रशीर्षापुरूष: सहस्राक्ष: सहस्रपात् ।
स भूमि विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ।।
ऋग्वेद १०९०.१
सामवेद ६१७, अथर्वेद १९.६.१
वाo यo ३१.१, तै आo ३-१२.१,

७. वेदों में और गीता तथा स्मृतियों में एक ईश्वर की भक्ति करने का आदेश है तथा अपनी की हुई बुराईयों की क्षमा माँगने के लिए भी उसी ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश हैं । कुरआन में भी कहा गया है, कि ऐ नबी कह दो ! मैं तो केवल तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ । मेरी ओर वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह(पूज्य) अकेला पूज्य है, तो तुम सीधे उसी की ओर मुख करो और क्षमा भी उसी से मांगो [१] ।

८. वेदों (ईश्वरीय वाणी या ईश्वराज्ञा) पर श्रद्धा न करना एवं उसके उपदेशों को न मानना 'नास्तिकता' है । 'नास्तिकता' का अर्थ है कि 'अस्वीकार करना'। कुरान में भी काफिर शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । 'कुफ्र' का अर्थ है, 'अस्वीकार करना' या 'भुला देना' । ईश्वर तथा पैगम्बरों को न मानने वालों के मुख से कहलाया गया है कि 'जो कुछ तुम कहते हो उसकी तरफ से हम 'काफिर' हैं (अर्थात् उसको हम अस्वीकार करते है [२]) ।

९. मुसलमान का अर्थ है कि ईश्वर की आज्ञा को मानने वाला । तात्पर्य यह कि ईश्वर पर, ईश्वरीय वाणियों पर तथा आप्त पुरूषों पर जो ईमान लाया, वही है मुसलमान । ठीक इसी शब्द के अनुरूप संस्कृत साहित्य में 'आस्तिक' शब्द आया है 'आस्तिक' का अर्थ है, ईश्वर, ईश्वरीयवाणी, आप्त पुरूषों पर श्रद्धा रखने वाला । जिस प्रकार आप्त पुरूषों की वाणी को संस्कृत साहित्य में आगम प्रमाण माना गया है, उसी प्रकार आप्त (पैगम्बरों) की वाणी को भी आगम प्रमाण माना गया है । 'काफिर' का ठीक विलोम 'मुसलमान' है और 'नास्तिक' का ठीक विलोम आस्तिक । काफिर से कोई मुसलमान तर्क करना नहीं चाहेगा और न तो नास्तिक से कोई आस्तिक भी बात करना स्वीकार करेगा । भारत में पचहत्तर प्रतिशत आस्तिक तथा पच्चीस प्रतिशत नास्तिक हैं । पढ़े लिखे समाज में नास्तिकों की संख्या अधिक है । नास्तिक और काफ़िर एक दूसरे के भाषान्तर हैं और मुसलमान और आस्तिक भाषान्तर हैं ।

---

१. कुरआन अस-सजदः ।
अध्याय ४१, आयत नं० ६

२. कुरआन ३४.३४

१०. रही बात 'हिन्दू' शब्द की, सो यह शब्द बिल्कुल ही नवीन शब्द है । प्राचीन भारतीय धर्म को आर्य धर्म कहा जाता था या सनातन धर्म ।

आर्य धर्म का अर्थ है श्रेष्ठ धर्म [१], और सनातन धर्म का अर्थ है, सब दिन से चला आने वाला धर्म । सना - सब दिन । तन - चला आने वाला। वेद की संस्कृत के 'सकार' को फारसी तथा ईरानी (ग्रीक) में हकार कहा जाता है । ग्रीक के लोग सिन्धु तट तक आते थे और 'सिन्धु के सकार को हकार में बदल कर 'हिन्द' शब्द बना दिये, 'स्थान' को 'स्तान' उच्चारण करके 'हिन्दुस्तान' और वहाँ रहने वाले लोगों को 'हिन्दू' कहने लगे । उन्ही लोगों के सम्पर्क से संस्कृत साहित्य से अनभिज्ञ लोग भी हिन्दू और हिन्दुस्तान का उच्चारण करने लगे । मुसलमानों के राज्य से भारत को 'हिन्दुस्तान' और भारतीयों को हिन्दू कहा जाने लगा तथा अँग्रेजो ने 'हिन्द' शब्द मे अपनी भाषागत विशेषता के कारण (हिन्द) 'Hind' के 'H' का लोप करके Ind इण्ड और Indo तथा देश सूचक ia जोड़कर India (इण्डिया) शब्द बना लिया । इण्डिया में रहने वाले इण्डियन कहे जाने लगे । अतएव भारतीय, हिन्दू और इण्डियन शब्दों का एक ही अर्थ हुआ । भारत हिन्दुस्तान, इण्डिया में रहने वाला । यदि कोई भारत हिन्दुस्तान तथा इण्डिया को एकार्थक न माने तो उसकी अल्पज्ञता है । भारत में रहने वाला ईसाई, मुसलमान, द्रविड़, कोल, किरात, भिल्ल पारसी, संथाल आदि सभी हिन्दू (हिन्दी) हैं, सभी इण्डियन हैं, सभी भारतीय हैं । यह भाषा विज्ञान से सिद्ध है । हिन्दू धर्म, इण्डियन धर्म, सनातन या आर्य धर्म में भेद नहीं है । भेद केवल भाषा का ।

---

१. आर्यधर्मो कि ते राजन् सर्वधर्मोत्तमः स्मृतः ।
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारूणम् ।।
भविष्यपुराण प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड, अध्याय ३, २४ वां श्लोक।

उपसंहार

केवल मैं ही नहीं, सभी शिक्षित वर्ग पक्षपात रहित होकर सम्पूर्ण राष्ट्रों की एकता के उद्देश्य से इस शोध पुस्तक को अवश्य स्वीकार करके राष्ट्र के भावी जीवन को शान्तिप्रिय बनायें । भारतीय जिन कल्कि को भगवान मानते हैं, मुसलमान उन्हीं कल्कि के चेले हैं । कल्कि के विषय में कहा गया है, कि यह भारतीयों का बहुत ही बड़ा कल्याण करेंगे, इस भावना को लेकर प्रत्येक भारतीय स्वयं को हिन्दू कहे या इण्डियन, कल्कि पर विश्वास करे, क्योंकि वही अन्तिम अवतार हैं । जो घोड़े पर चढ़ना तथा तलवार धारण करना स्वीकार करेंगे, अब जो भावी युग आ रहा है, वह घोड़ो और तलवारों के युग से काफी दूर होता जा रहा है । भारतीय मुसलमानों को दूसरा नहीं समझें, क्योंकि वे भारतीयों के सबसे बड़े हितैषी सिद्ध होंगे । इस्लाम, मुसलमान अरबी भाषा के शब्द हैं, जिनका अर्थ ईश्वराज्ञा पालन धर्म या सनातन धर्म तथा आस्तिक होता है ।

जो धर्म के अन्धे अनुयायी होकर अपने सनातन धर्म को सीमित बना देते हैं, और दूसरे धर्मों को न समझते हुसे परस्पर विद्रोह करते है, वे ईश्वर के राज्य में अग्नि द्वारा तपाये जाते हैं । मैंने अपने इस शोधपत्र को किसी पक्षपात की भावना से नहीं लिखा है । अन्तर्यामी का मुझे आदेश मिलता है, कि हिन्दू मुस्लिम एकता का बाधक जो विद्रोह कभी-कभी खड़ा हो जाता है, और ईश्वर की दुहाई देकर दोनों पक्ष एक दूसरे का संहार करते हैं, यह ईश्वर को बुरा लगता है । शिक्षा देना उपदेश का काम है पालन कराना उपदेशक के ज़िम्मे नहीं है वह तो ईश्वर के ज़िम्मे है । एक मनुष्य क्या किसी से कुछ करायेगा ? ईसा ने जिन अहमद (ईश्वर के प्रशंसक) के विषय में भविष्यवाणी की, वेदव्यास जी ने भावी वृत्तान्त के रूप में जिन कल्कि का व्याख्यान किया, उन्हीं की गवाही देना मेरा कर्म है । ईसाई कल्कि को मानें या न मानें, परन्तु भारतीय तो अवश्य उसे मानेंगे ।

कल्कि और मोहम्मद साहब के विषय में जो अभूतपूर्व साम्य मुझे मिला, उसे देखकर यह आश्चर्य होता है कि जिन कल्कि की प्रतीक्षा में भारतीय बैठे हैं, वे हो गये और वही मोहम्मद साहब हैं । दोनों के साम्य में यदि कहीं कोई बाधक प्रमाण मिले, तो या तो उन्हें क्षेपक समझ लेना चाहिये या

'हरि अनन्ता हरि कथा अनन्ता' से युगानुसार चरित वैभिन्य । मौलिक धर्म-सिद्धान्त प्रायः एक ही हैं, परन्तु अल्पबुद्धि के लोगों को वह बोध -गम्य नहीं ।

कुछ समय पहले वैदिक धर्म में मिश्रित बुराइयों का निराकरण करने वाले बुद्ध जी द्वारा उपदिष्ट धर्म एवं तद्धर्मानुयायियों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था और लोग यह समझते थे कि वैदिक धर्म से अतिरिक्त यह नया धर्म है, परन्तु पुराणों के चौबीस अवतारों के प्रकरण में जब यह पढ़ा गया कि बुद्ध जी तेईसवां अवतार हैं, तब लोगों की समझ में आया, कि यह धर्म अपना धर्म ही है और बुद्ध जी तो अवतार ही हैं, तब वैदिक एवं बौद्धों का भेद दूर हो गया और आज बौद्ध भी वैदिक धर्मानुगत ही आते हैं । उसी प्रकार मोहम्मद साहब द्वारा प्रदर्शित सनातन धर्म तथा उनके अनुयायियों को देखकर यह लगता है कि यह तो वैदिक धर्म का उल्टा ही धर्म है, परन्तु चौबीस अवतारों के प्रकरण में भागवत पुराण में जब मैंने कल्कि को देखा तथा द्वादश स्कन्ध में उनके होने वाले वृत्तान्त को पढ़ा, तब मोहम्मद साहब से पूर्ण समानता मिली और मुझे विश्वास हो गया कि यही हैं कल्कि और उनके धर्म की बाढ़ तथा अनुयायियों की वृद्धि से तो अपना वैदिक धर्म ही पुष्ट होता है । अभी न सही, जब इस बात का सबको ज्ञान हो जायेगा, तब मुसलमानों का इस्लाम धर्म या आस्तिकों का ईश्वराज्ञा पालन धर्म, भारत में प्रचलित वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन तथा बौद्ध धर्म की भाँति सभी लोगों द्वारा स्वीकृत होगा, तथा भारतीयों का और मुसलमानों का वर्ग मिलकर एक बहुत बड़ा समाज बनेगा । लाठी डंडो की चोट से धर्म नहीं फैलता, अपितु लोगों को जब ईश्वर की कृपा से धर्म के सत्य स्वरूप का ज्ञान हो जाता है, तो वे स्वयं श्रेष्ठ धर्म का आचरण करने लगते है । धर्म के जानकार का कर्त्तव्य है कि वह धर्म के सिद्धान्तों से लोगों को अवगत कराये, वे श्रद्धा उत्पन्न होने पर उसे स्वयं मानेंगे, दंगा करने पर थोड़े कोई मानता है । ईश्वरीय धर्म के प्रचारकों को तो शान्ति पूर्वक धर्म का प्रचार करना है। धर्म का सम्बन्ध वेषभूषा से नहीं है, धर्म का सम्बन्ध हृदय में सन्निहित उन विचारों से है, जिनसे जीवन की यात्रा सुचारू रूप से सम्पन्न हो ।

प्रत्येक हिन्दू, भारतीय या इण्डियन को यह ज्ञात होना चाहिये कि केवल वे ही हिन्दू नहीं है, बल्कि यहाँ रहने वाले मुसलमान तथा ईसाई भी हिन्दू हैं, क्योंकि हिन्दू शब्द का अर्थ होता है कि जो हिन्दुस्तान में रहे ।

मेरा मुसलमानों से भी अनुरोध है कि हिन्दू तथा हिन्दुस्तान शब्द उन्हीं की देन है, जिनका (हिन्दी) अर्थ ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है, अतः वे भी अपने को हिन्दू कहने में संकोच न करें । भारत में जो वर्ण व्यवस्था थी, वह कर्म से थी न कि जाति से, क्योंकि 'वरणात् वर्णः जात्या जातिः' । वर्ण शब्द किसी भी पेशा को अपनाने से है । ईश्वराधन करने वाले तथा नित्य संयम से रहने वाले मुसलमान भी ब्राह्मण हैं, तथा ईश्वर पर विश्वास करने वाले भी मुसलमान अर्थात् आस्तिक हैं । मुसलमान का यह अर्थ नहीं कि खतना कराया सो मुसलमान और आस्तिक का यह अर्थ नहीं कि चोटी रखाई सो ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र । दाढ़ी आदि तो प्राचीनकाल में मुनि लोग भी रखते थे । भारत में ऊँच-नीच का भेद भाव जब तक दूर न होगा, समानता का व्यवहार जब तक न होगा, तब तक सुख एवं शान्ति सम्भव नहीं । इस विषय पर बाद में कोई दूसरी पुस्तक लिखूँगा क्योंकि इस शोधपत्र में इतना स्थान नहीं, कि हर एक बात आ सके ।

सारस्वत-वेदान्त-प्रकाश-संघ

एक ही धर्म के अनेकों टुकड़े हो गये हैं, जिससे धर्म का स्वरूप बिगड़ गया है । आवश्यकता है उन टुकड़ों के फिर जुड़ने की, और सतयुग के सम्पादन की ।

ईश्वरीय वाणी वेदों और वेदान्त पर श्रद्धा उत्पन्न कराना, इस्लाम धर्म एवं ईसाई धर्म का वैदिक धर्म से समन्वय व्यक्त करके समाज में एकता एवं एकेश्वरवाद का सन्देश देना, समाज के अन्तर्गत एवं धर्म रूपी दूध में पड़ी हुई अन्धविश्वास रूपी मक्खी को निकाल फेंकना, लकीर के फकीर एवं कूपमण्डूक लोगों को धर्म जीवन के सीमित दायरे से निकाल कर व्यापक धर्म का संसार दिखाना, धार्मिक कलहों को शान्त कराने के लिये लोगों में सद्भावना का प्रचार करना इस संघ का मूल उद्देश्य है ।

इस संघ का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं ।

{ वैदिकधर्म ईशाज्ञाधर्म और इस्लाम धर्म ईशाज्ञा-पालन धर्म में चीनी और उसकी मिठास का सम्बन्ध है । यदि वैदिक धर्म में एकेश्वरवाद का सन्देश है, तो इस्लाम धर्म में एकेश्वरवाद का पालन । प्रतीक्षा करें वैदिक धर्म एवं इस्लाम धर्म पुस्तक की }

MUHAMMAD

in Parsi, Hindoo and Buddhist Scriptures

A.H. Vidyarthi and U. Ali

MUHAMMAD IN PARSI, HINDOO AND BUDDHIST SCRIPTURES

BY

A. H. Vidyarthi

&

U. Ali.

TAJ PUBLISHERS & PERFUMERS

1993

Rs. 100/-

ISBN No. 81-7231-004-8

TAJ
PUBLISHERS & PERFUMERS

Print by :
ARORA OFFEST PRESS
Laxmi Nagar Delhi-92

INTRODUCTION

"Verily, whether it be of those who believe, or those who are Jews, or Christians, or Sabeans, whosoever believe in God and the Last day and act aright, they have their reward at their Lord's hands, and there is no fear for them, nor shall they grieve."—(Al-Quraan II. 59).

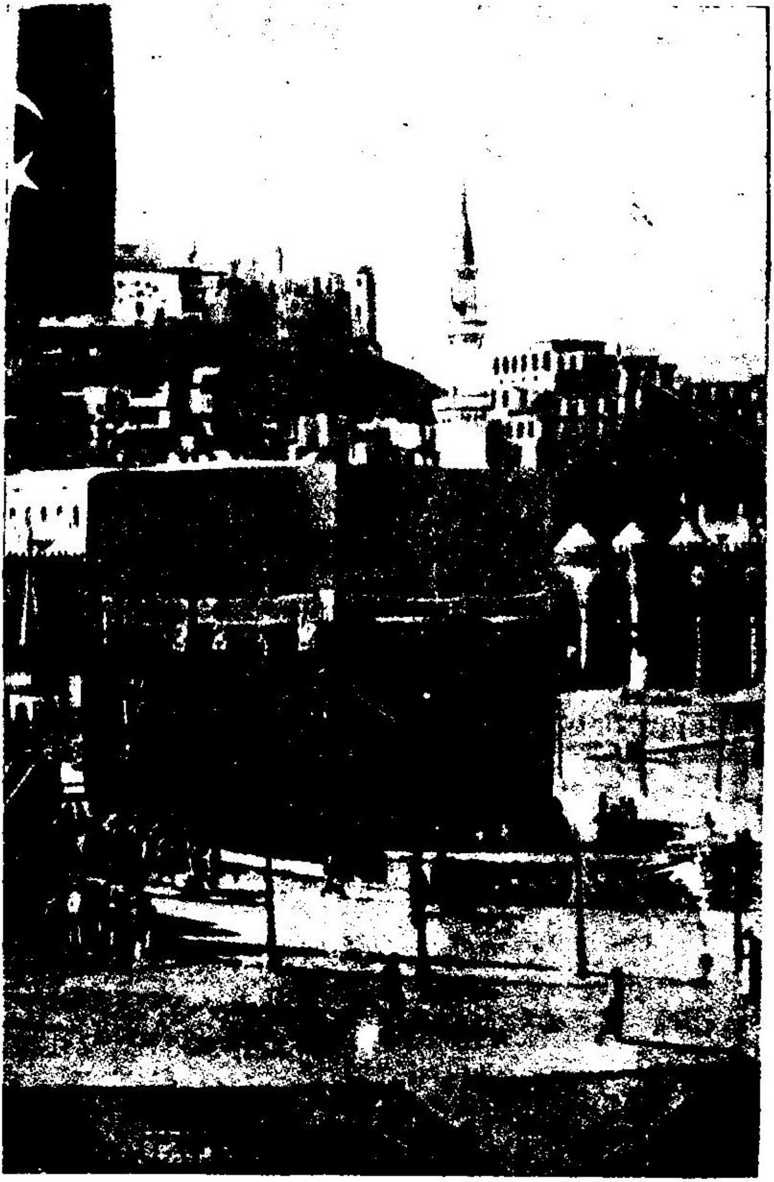
Salvation lies in all religions, and Parsis, Hindoos and Buddhists are no exception, provided one but trusts in God and acts aright. It does not depend on any particular dogma, creed, ritual, penance intercession atonement, and much less on ones own breed, pedigree or caste. But then the question arises, what is God and what is good and evil or the natural question that comes uppermost to one's mind, whence, why and wherefore in this scheme of creation

If your own religion answers these questions satisfactorily, then salvation is your birthright, stick to it and hope for the best. God who knows the innermost feeling of your heart, knows your purpose and intentions, He may be a stern taskmaster to an evil doer, but He is equally kind and merciful, and ignores your little deviation, specially one not committed inordinately.

What you have to do is to keep your mind open and donot subject it to parochial and racial prejudice and bigotry, or hermetically seal it from receiving any

further light coming from outside. This correct attitude, if adopted, will lead to your happiness herein and hereafter. Once you are made internationally-minded, your religous outlook could take the same colour and you will prefer a religion international and universal in its aspect, rather a religion having all the features of a national cult, or sectarianism which with its twin sister racialism has been the root cause of all the mischiefs and ills we are facing in the world.

CONTENTS:—



THE FOUNDATION TEMPLE OF ISLAMIC UNITY AND POLITY.

(See Reverse, also pages 46 & 114)

Kaaba or "Cubic structure" was founded and built by Abraham in Mecca two thousand years before Christ. It was repaired when damaged by inundation in the boyhood of the Prophet, and again repaired when it was accidentally burnt in the struggle between the army of Khaliph Abdul Malik (73 A. H.) and the partisans of Ibne Zobair the pretender of the Khilaphate. The circumbulation of this building seven times is an ordained pilgrim rite to be performed once in the life-time by every capable Muslim of the world.

Even the birds respect its sanctity and the following observation recorded by an Englishman may be read with interest.

"It has been asserted by the Mekkans, that neither the sacred pigeons, nor any other bird, ever perches on the roof of Kaaba. Sleeping ever night for some months on a roof which overlooked that of Kaaba, I had a good opportunity of testing the truth of this assertion. I have repeatedly searched the roof of the sacred building and have never once seen there either a bird or any other living thing. At times, when the roofs of the Makams of the Imams and the ground below them were covered with myriads of pigeons, I have constantly seen the Kaaba roof bare and silent. The Shaybi, too. informed me that no defilement of birds is ever found there".

(The "Holy Cities of Arabia" by Eldon Rutter, page 376, London. 1928 Edition.)

The Sanctuary is situated in the barren valley of Mecca where for miles not a blade of grass is visible, and yet miraculously enough all seasonal fruits and vegetables could be had there cheap and plenty. This is in conformity with the promise of Allah in response to the prayer of ABRAHAM referred in the Quraan. (II. 120).

PROPHECIES ABOUT THE HOLY PROPHET IN THE PARSI SCRIPTURES

> "Their parable is like the parable of one who kindled a fire, but when it had illumined all around him, God took away their light, and left them in darkness—they do not see."
> (The Holy Qur'an, II : 17.)

ZOROASTRIANISM, which is commonly known as Parsi-ism, is the ancient religion of Persia.. This was the religion of the Iranian people before Islam. This religion is also called the religion of the 'Fire worshippers' and 'Magianism'. The religious scriptures of the Parsis are found in two languages, Zendi and Pahlawi. Besides these two scripts, some literature in cuneiform writing is also found. The Pahlawi script resembles the present Persian script but Zendi and cuneiform writing is different from it. Two divisions in the ancient Iranian scriptures are of importance—the one is known as Dasatir and the other as Vesta or Zend Avesta. Each one of them is again divided into two portions—the *Khurda Dasatir* and *Kalan Dasatir,* the *Khurda Avesta* and *Kalan Avesta,* also known as *Zend* or *Maha Zend.*

So many different versions there are, about the number, language, and the period of revelation of these books, that nothing can be taken as definite. There are eleven different pronunciations of Zoroaster's name, who is said to be the chief author of these books. What the name Zoroaster means, is also doubtful and similarly, nothing can be definitely said as to what place did he belong to and where he was born*. These differences have led some of the learned scholars to think that the very person of Zoroaster is fictitious and imaginery.

It is held by Zoroastrians that their religion is of a very ancient date, but many orientalists and research workers have disproved this contention, and have also shown, through facts of history, that this religion has borrowed a good deal from Egyptian and Jewish legends and Greek mythology. The propagation of Zoroastrianism had been, of old, limited to Persia only. It is, however, recorded in Dasatir, that Shankara Kas and Vyasaji, two dignataries of India, after much discussions, were convinced of the truth of this religion, and hence began to preach it in India.† Similarly, we find in Zend Avesta Farvardin Yasht, that Buddha also argued with them and was vanquished. But these anecdotes cannot prove either that the religion of the Vedas was spread in Persia or that the Iranian Faith was promulgated in India. No historical record is found in

---

* *Cf.* Introduction of *Gatha, Sarodhai Zartustara,* published by the Iranian Association of Zoroastrians, 1927.

† *Cf.* Dasatir, Namah-i-Sasan.

support of these theories. Only this much can be concluded that both the Indians and Persians had just become aware of each other's religion. Neither Vedic Dharma nor Parsi-ism was a missionary religion and hence they remained confined to the precincts of their own respective countries.

The Zoroastrians call themselves monotheists, but others hold them to be believers in two Gods. They call their God as 'Ahurmazda', Ahur means Master and Mazda means Wise, the name of their God thus means the 'Wise Master'.

The relation of Zoroastrian teachings with other religions

THE earliest part of Zoroaster's teachings is known as Gathas. We find a mention of Gathas in Vedas as well.* But there is no mention of the Vedas and other Hindu books in Zoroastrian scriptures. This shows that Gathas are of an earlier date than Vedas. Similarly, in the Vedas there is a reference to ***Puranam Yajusha Sah***†. "Yajush comes with Puran," which, in fact, is 'Yajush Ha Puranam' or 'Yajush Ha Puran'. This 'Yajush Ha' is a part of the Parsi scripture Zend Avesta. And according to the Vedic religion Puranas are not older than Vedas but Vedas are older than Puranas. But 'Purana Yajush Ha' does exist in Zend Avesta.

---

* Artharva Veda, XV : 6-12.

† Atharva Veda, XI : 7-24.

The Teachings of Zoroastrianism

A PART of the teachings of Zoroastrian religion is also in conformity with the teachings of the Bible and the Holy Qur'an. Below we give a few instances:—

1. The creation of this universe was completed in six periods of time. Ahurmazda first created the heavens then water then the earth then vegetables then animals, and last of all He created man.

2. Mankind was born of one pair, which is known as *Mashya* and *Mashyana* (male and female). Mashya means male.

3. God told Yim (Noah) that a fierce snow-storm was imminent, which would cause all the evil-doers to perish. Noah was then asked to make an underground alcove and to accumulate in it a pair each, of vegetables, animals and man. So was it done, and with the exception of those who were sheltered in that cave, all creation perished.

4. Yim or Noah, is stated to be the first Law-giver prophet, but he is said to have declined to preach his prophethood, and thus Zoroaster became the first Law-giver.*

5. Just as Christ and other prophets gave the news of the advent of a Promised one, in like manner, Zoroaster has also prophesied the coming of the one resembling him. His name is said to be 'Soeshyant' which means 'Mercy for the Worlds'. His chief attri-

---

* **Vendidad Fargard,** II : 4.

bute is, that he will be 'Astvat-ereta' or the upholder and gatherer of all nations. He will be raised for the guidance and reformation of all men. This prophecy is not only found in Zend Avesta, but is also mentioned by scholars of other religions in their researches. For instance, H. P. Blavatsky has referred to it in her book *'Isis Unveiled'*, Vol. II, p. 236.

THE FIRST PROPHECY OF ZARTUSHTRA

Eulogy of the Holy Prophet and his Companions

THERE are numerous clear prophecies in Zend Avesta, the recognized book of the prophet Zartushtra, about the Holy Qur'an, the Prophet Mohammad and his companions. A part of these prophecies is mythical, and is stated in such terms which cannot be taken to be literally true. But if we interpret them in a reasonable manner and corroborate them by facts of history, they clearly apply to the Holy Prophet Mohammad and none else. For instance, in Vendidad, the first part of Zend Avesta, and Yashts, the second part of the same book, it is recorded that there is a hidden progeny of Zoroaster which will appear some time after him. A woman, it is said, will bathe in the Kasava Lake and will get pregnant. She will give birth to a promised prophet "Astvat-ereta" or "Soeoshyant" (the Mercy for the worlds), who will protect the Zoroastrian Faith, will kill devil, sweep away idol-worship and will reclaim the Zoroastrians from their vices. This Kasava Lake is located by Zoroastrians somewhere in Sistan, where the Persian King Xerxes had disappeared while bathing. It is the same "spring of the water of life"

where Xerxes of Zoroastrians is said to be still alive, teaching wisdom to the people and guiding those who have gone astray. According to our interpretation, however this Kasava is not a material Lake, but is a spiritual fountain or the "Kausar" of the Prophet Mohammad, as the Qur'an says, "We have given thee Kausar." This 'Kausar' is nothing else but the sacred Qur'an, which is a mine of truth and bears the common teachings of all the prophets. It was through this 'Kausar' that the Holy Prophet became the confirmer of all the prophets and also the promised one of all religions. Just according to the prophecy of Zoroaster, he protected his real teachings as he protected the teachings of other prophets. And the water of this very spring cooled down the fire that was burning in the Zoroastrian temple.

The following is the translation of the original prophecy:—

'We homage the good, strong, beneficent Fravashes of the faithful, who fight at the right hand of the reigning Lord . . . . They come flying unto him, it seems, as if they were well-winged birds. They come in as a weapon and as a shield, to keep him behind and to keep him in front, from the enemy unseen, from the female *varenya* fiend, from the evil-doer bent on mischief and from that fiend who is all death, *Angra Mainyu* (Abu Lahab). It will be, as if there were a thousand men watching over one man, so that neither the sword well-thrust, nor the club well-falling, nor the arrow well-shot, nor the spear well-darted, nor the

stones flung from the arm shall destroy him." (Farvardin Yasht, 63, 70—72).

This prophecy gives a vivid picture of the protection of Zoroastrian Faith and the loyalty and selfless sacrifices of the companions of the Holy Prophet. How they built a human wall around the Prophet to protect him from the enemy's attacks, is a well-known fact of history; but how this 'Kausar', that was given to the Prophet, incorporated in itself the teachings of Zoroastrianism and thus protected them, will be proved from the following quotations:—

Zoroastrian Teachings Confirmed by the Holy Prophet.

1. "Allah is One". But His unity is not a numerical oneness, but is a personal attribute. Zoroaster, similarly, says, "He is one, not one in number."[1]

2. "None is like Him."[2] Similarly, we find in Dasatir, "He has none like Him."[2]

3. "Nothing is like a likeness of Him".[3] In Dasatir, we similarly, find "Nothing resembles Him".[4]

4. The Dasatir say: "He is without an origin or end, without a rival, an enemy, a prototype, a friend, father, mother, wife, son, an abode, a body or form and without colour and scent."[5] The Holy Qur'an has

(1) *Namah Shat Vakshur Zartusht Dasatir*, p. 69.
(2) The Quran, CXII : 4.
(3) The Quran, XLII : 11.
(4) Dasatir.
(5) *Ibid.*

more beautifully put it: "God is He on Whom all depend. He begets not, nor is He begotten; none is like Him."[1]

5. The Dasastir state that 'He gives life and existence to everything.[2] The Qur'an confirms it, saying: "He created every thing."[3]

6. "Neither the eye can behold Him nor the power of thinking can conceive Him."[4] The Holy Qur'an says: "Vision comprehends Him not, and He comprehends (all) vision; and He is the Knower of subtleties, the Aware."[5] The Qur'an has not merely made a statement, but has also advanced an argument. The Being that comprehends all vision and is, at the same time, Subtle and Infinite One, cannot be comprehended by the physical eye. He is the spirit and can be seen only with the spiritual eye. This fact is also stated in Dasatir "Tell the world that God cannot be seen with these (physical) eyes; some other eyes are required to behold Him."[6]

7. Matter and Soul are not eternal like Him "Thou art the most ancient, there was none before thee nor shall anything remain after thee."[7] The Holy Qur'an has, in like manner, expressed: "He is the First

---

(1) CXII : 1-4.
(2) Dasatir.
(3) VI : 102.
(4) Dasatir, p. 68.
(5) VI : 104.
(6) Dasatir, p. 107.
(7) Dasatir, p. 66.

and the Last and the Ascendant (over all) and the Knower of hidden things."[1]

8. In Dasatir it is said "He is above all that you can imagine of." The Holy Qur'an says: "His is the most exalted state."[2]

9. "Don't be disappointed of His favours and kindness,"[3] is the teaching of Dasatir. The Qur'an corroborates it by saying "Do not despair of the mercy of Allah."[4]

10. Zoroaster said: "I am nearer to you than your ownself."[5] The Qur'an also says: "We are nearer to him than his life-vein."[6]

11. Regarding angels, Zoroaster said "Angels are countless."[7] In the Qur'an we find: "And none knows the hosts of your Lord but He Himself."[8]

12. God says unto Adam: "The Word of the Lord is that which the angel reveals to your heart."[9] The Holy Qur'an verifies this truth saying:

"For surely he (Gabriel) revealed it to your heart by Allah's command."[10]

---

(1) LVII : 3.
(2) XXX : 27.
(3) Dasatir, p. 33.
(4) XXXIX : 53.
(5) Dasatir, p. 122.
(6) L : 16.
(7) Dasatir, p. 6.
(8) LXXIV : 31.
(9) Dasatir, p. 37.
(10) II : 97.

13. "When a man of good deeds," says Zoroaster, "leaves this body, I send him to the paradise."[1] The Holy Qur'an says: "Surely (as for) those who believe and do good deeds, their place of entertainment shall be the gardens of Paradise."[2]

14. About paradise, Zoroaster says: "The dwellers of Paradise will get, through the kindness of the Lord, such a body that will neither wear out nor will get old nor anything dirty will enter it."[3] Again he said: "They will live for ever in that joyful abode."[4] The teachings of the Qur'an are as follows: "The righteous shall live in the midst of gardens and fountains. Enter them in peace, secure. And we will root out whatever rancour is in their breasts—(they shall be) as brethren, on raised couches face to face. Toil shall not afflict them in it, nor shall they be ever ejected from it."[5]

15. "The dwellers of hell will live there for ever they will be tortured both with intense heat and intense cold." (Dasatir, p. 38). The chastisement of fire and intense cold is found particularly in the Zoroastrian religion and in no other principal religion. The Holy Qur'an also corroborates this fact: "They shall not taste therein cool nor drink, but boiling and intensely cold water."[6]

---

(1) Dasatir, p. 13.
(2) XVIII : 107.
(3) Dasatir, p. 9.
(4) *Ibid*, p. 13
(5) The Quran, XV : 45 —48.
(6) LXXVIII : 24, 52.

16. Besides, we find in Dasatir, commandments regarding gentlemanly behaviour, marriage, chastity, fulfilment of promise, prohibition of wine, hair cutting of a young born, cleansing the body by taking bath, ablution, and *Tayammum*, etc.

17. In the beginning of every *namah* of Dasatir, verses equivalent to *Aaoozobillah* and *Bismillah* are found, just as every chapter of the Holy Qur'an begins with "In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful."

18. Three different ways of Divine revelation are described—in dream, in a state between dream and wakefulness and in wakefulness.[1]

19. Two kinds of injunctions decisive and allegorical are described as *Parkhida* and *Aparkhida*.[2]

20. About prophethood, Zoroaster remarks: "A prophet is needed for enforcing such laws which everybody could abide by. Men are inter-dependent and they stand in need of Divine laws acceptable to all of them, which could root out tyranny, deceit and ill-feeling and give peace and harmony to the world. These law-givers should be Divinely inspired men so that all could submit to them."[3]

As regards the recognition of a prophet, the prophet Zoroaster has said: "They ask you as to how should they recognize a prophet and believe him to be true in what he says; tell them what he knows the

---

(1) *Namah Shat Vakhshur Zartusht*, 5—7.
(2) *Ibid.*, 5.
(3) *Ibid.*, 45—49.

others do not, and he shall tell you even what lies hidden in your nature; he shall be able to tell you whatever you ask him and he shall perform such things which others cannot perform."[1] Shortly before the advent of the Holy Prophet in Arabia, Persia was under the sovereignty of Sasan V. When the companions of the Prophet, on invading Persia, came in contact with the Zoroastrian people and learned these teachings, they at once came to the conclusion that Zoroaster was really a Divinely inspired prophet. Thus they accorded the same treatment to the Zoroastrian people which they did to other "People of the Book." Though the name of Zoroaster is not mentioned in the Holy Qur'an, still he was regarded as one of those prophets whose names have not been mentioned in the Qur'an, for there is a verse in the Holy Book saying: "And We did send apostles before thee: there are some of them that We have mentioned to thee and there are others whom We have not mentioned to thee." (40 : 78). Accordingly the Musalmans treated the founder of Zoroastrianism as a true prophet and believed in his religion as they did in other inspired creeds, and thus according to the prophecy, protected the Zoroastrian religion. James Darmestar has truly remarked in the translation of Zend Avesta: "When Islam assimilated the Zoroastrians to the People of the Book, it evinced a rare historical sense and solved the problem of the origin of the Avesta."[2]

---

(1) *Namah Shat Vakhshur Zartust*, 5–7. 50–54.
(2) Introduction to *Vendiad*. p. 69.

How did Zoroaster prophesy the truth of the Holy Prophet

SOME materialistic and thoughtless people, on finding a close resemblance between the teachings of two religious scriptures, are inclined to think, that the one that was revealed on a later date has cribbed those teachings from the older book. But God Who has given the Light to one prophet and people can also give the same Light and Truth to another prophet. Moreover the prophets and their followers have always been trying to keep those Divine gifts to their own particular sphere only. So there is little likelihood of imitation or reproduction. God being the Cherisher of the worlds can not ignore any of His creatures. He is the Lord of the Easts and the Lord of the Wests. Just as the physical sun travels from the East towards the West giving light to every people and place, similarly, the sun of spiritual and Divine Light also equally sheds light on all people and all countries. Every nation has got its own East and seeing the sun rising from there thinks that it has risen for them alone, there being only one East and West. But anyone who knows the shape of the earth can understand that every point from where the sun rises is the East for the people on its one side and the same point is the West for another people on the other side. This great scientific truth was revealed by the Holy Qur'an thirteen centuries before when it said "Lord of the Easts as well as of the Wests" East and West are relative terms. The same point can both be East and West for different people. Thus God equally blessed His creatures with both the physical and

spiritual lights. The Lord who gave a Fire to Zoroaster with which he brightened the country of Iran, also gave the Israelites, the 'Morning Star' (in the person of Jesus Christ) for their guidance* and He raised, for the people of India, Kirshna Chandra or the "Moon", for showing light to the people of this country. Then the point worth considering is that all these illuminaries, the Fire of Zoroaster, the Morning Star of Christ and the Moon of Krishna have prophesied the advent of the Shining Sun who was to appear last of them all in the person of Mohammad. If the Holy Qur'an has corroborated their teachings, they too have foretold the truth of the Prophet's mission. None of them has, thus, borrowed anything from the other. All of them drank at the same fountain and the One Lord gave them light and learning.

The verse quoted at the top of this chapter well applies to the Parsi people--"Their parable is like the parable of one who kindled a fire, but when it had illumined all around him, God took away their light, and left them in darkness—they do not see." These people are known as the fire-worshippers and their sanctuary is called the "Temple of Fire." Of these people, God says in this verse, that their surroundings got illumined for a time with the fire that was kindled, but when that light was taken away by God, they began to stumble in darkness like the blind. As they have, deviated from the right path of Zoroastrian teachings they are, in

* Revelation, XXII : 16.

the words of the Qur'an, "Deaf, dumb (and) blind, so they do not turn back"—II : 18. *'Kavis'* and *'Karapons'* are the two special terms applied in the Zoroastrian religion to those who cannot see nor hear anything of God.[1] When King Yazd Gard III (5th century A.C.) declared Zoroastrianism as the State Religion of Armenia, he promulgated the following edict: "You must know that any man who does not follow the religion of Mazda is deaf, blind, and deceived by Ahriman's devs."[2]

The Fire that was kindled by Zoroastrians, was, in fact, a symbol of Divine worship. By lighting fire they were supposed to make a covenant that they would always follow the Divine Light and abide by their religious laws. The prophet Zoroaster himself explained this point as follows:—"I explain to you, who have assembled here, the wisdom of the All-Wise God. I explain to you His praise and glory and the melodies of pious souls which is a mighty Truth and which I see rising from these Holy Flames. Listen carefully to the reality of these phenomena, and ponder, with a clear and devout mind, over the flames of Fire."[3] It is thus clear from this wise saying of Zoroaster that the Fire in the Temple was the conventional sign of the promise to abide by the laws of religion and to give them a deep thought.

---

(1) *Ormazd Yasht*, 10—*Bahram Yasht*, I : 4.
(2) Elisacus, *The War of Vartan*.
(3) *Gatha Yasht*, XXX ; 1, 2.

The Holy Qur'an has also spoken of a Fire and has made this point more clear to the Zoroastrians. The Qur'an, in fact, speaks of four kinds of fire:

1. The fire which has light as well as which burns just as the material fire.

2. The fire neither having light nor the quality to burn, as the fire that is present in trees.

3. The fire that has no light, but that burns. as the fire of hell.

4. The fire that has light but that does not burn. And this the cardinal of guidance. As Moses had said, "Or I find a guidance at the fire." The Qur'an, XX : 11. At another place we find the words "Blessed is he who is in search of the fire."[1]

The present history of the Parsi religion shows that some time after Zoroaster, the Parsis abandoned their religious laws and that "Covenant of Fire," which was then reduced to mere worship of Fire, was totally forsaken by them. (Epistles of Sasan I and Sasan V in Dasatir). Their religious scriptures having been thrown in the background were either destroyed by the sacking of Parsis by the Greeks or were tampered with so that to-day they are regarded only as the ruins of a religion. "As the Parsis are a ruin of a people so are their sacred books the ruins of a religion."[2]

If a nation or religion is said to be alive on account of its guiding force and the unpollutedness of its scrip-

---

(1) The Quran : XXVII : 8.
(2) *Sacred Books of the East*, Vol. IV.

ture, then the Parsi religion is surely devoid of that life. Neither the Parsi scriptures are found to-day in their original form, nor their language is a living language. Some relics, however, are still to be found in these ruins containing some guidance and prophecies of Zoroaster for their present decay. And among these relics are the prophecies of the cooling down of the fire in their temples, the renaissance of the Parsis, their following the lead of the Arabian prophet, turning their faces in worship towards Ka'ba and the acceptance of Islam by the Persian chiefs.

Just as Zoroaster kindled a Spiritual Fire in Persia, in like manner, the Prophet Mohammad, on extinguishing of that fire, lit the same in Arabia. The Prophet, in accordance with the verse of the Holy Qur'an,[1] is reported to have said "My parable is like the parable of that man (Zoroaster) who kindled a fire." (Bukhari). These words, in fact, refer to a great prophecy of Zoroaster. Just as Moses bore witness of one like him "And a witness from among the children of Israel has borne witness of one like him",[2] similarly, Zoroaster bore witness of a prophet like him.

TWO OTHER PROPHECIES OF ZOROASTER

Reform of Zoroastrianism and the Holy name of the Prophet

GOD Almighty addressed the Prophet Zoroaster in the Zend Avesta in the following terms: "The most

(1) Their parable is like the parable of one who kindled a fire, II : 17.

(2) The Quran. XLVI : 10.

powerful amongst the Companions of the Muslims, O Zaratushtra, are those of the men of the primitive law, or those of the 'Soeshyant' (not yet born), who are to restore the world."[1]

Just as the followers of Zoroaster, by walking in his footsteps, attained the height of glory, similarly, a nation of believers will come into existence at a later date who will give a new life to the world and its religions; and who will stand for the help of their Prophet in the most fearful battles.

Again was said with more explicitness: "Whose name will be, the Victorious, 'Soeshyant' and whose name will be 'Astvat-ereta.' He will be Soeshyant (the beneficent one) because he will benefit the whole bodily world. He will be Astvat-ereta (he who makes the people rise up) because as a bodily creature and as a living being he will stand against the destruction of the bodily being to withstand the idolaters and the like and the errors of the Mazdaynians."[2]

There is no other prophet but the Prophet Mohammad on whom this prophecy applies with true appropriateness. His being a beneficent victorious is clearly illustrated from the treatment he meted out to his blood-thirsty opponents, after the fall of Mecca, whom he let go just by saying "There shall be no reproof against you this day." His name Mohammad (the

(1) Farvardin Yasht. XIII :17.
(2) *Ibid.*, XXVIII : 129.

praised one), his being a 'mercy for the worlds', while the preceding prophets were only a 'mercy unto their own people', and his correcting the errors of both the idolaters and the Mazdaynians,—are characteristic signs found in no other prophet save the Prophet of Arabia (peace and the blessings of Allah be upon him)!

THE FOURTH PROPHECY

The remarkable sanctity of the Prophet's Companions

"AND there shall his friends come forward, the friends of Astvat-ereta, who are fiend-smitting, well-thinking, well-speaking, well-doing, following the good law and whose tongues have never uttered a word of falsehood". Zamyad Yasht, 95.

Along with the Holy Prophet, a mention is also made of the piety and sanctity of the companions of the Prophet in various prophecies. In the Bible also we find a reference to the ten thousand saintly people. In fact, the holiness of the life of his companions and followers, is the greatest proof of the truth and success of a prophet. He himself must be the truest man who can make his followers so truthful and honest. It is a well-known fact to the student of Islamic Traditions, that whichever hadith is narrated by a companion of the Holy Prophet, is decidedly taken to be true, for falsehood can in no way be ascribed to the blessed companions of the Holy Prophet. Their veracity and truthfulness is a matter of fact.

THE FIFTH PROPHECY

Fire in the Temples would cool down with the advent of the Prophet

THE following prophecy is also very striking and worthy of notice and deep thought by every serious student. The prophet Zoroaster remarked: "Mayest thou burn in this house! Mayest thou ever burn in this house! Mayest thou blaze in this house! Mayest thou increase in this house! Even for a long time, till the powerful restoration of the world, till the time of the good, powerful restoration of the world." Atash Nyayish : 9.

This verse is quite plain and hardly needs comment. It was foretold that the fire would cease to burn when the restoration of the world would take place. The Zoroastrian prophet had taken a covenant from his followers to burn fire in the house of God as a symbol of the appearance of Divine Light; and they were to keep it burning till the Promised Prophet, who was to bring about a complete restoration of the world, appeared. And the world has seen that when the Promised Prophet came into the world, the fire in the temples was extinguished.

In the foregoing prophecies, one word, however, needs an explanation. We have translated the word 'Astvat-ereta' as 'the praised one' or '*Mohammad*' (in Arabic). The root of this word is 'Astu,' which means, both in Sanskrit and Zend, 'to praise'. The infinitive

'Sitaudan' used in the present day Persian also means 'praising'. Some lexicographers, however, have translated it as 'one who makes a thing rise up', and have derived it from the root 'Istadan'. But as Sanskrit is nearer to Zend than Persian therefore the word 'Astvatereta', according to the common root in both Zendi and Sanskrit, would mean 'the praised one', which is just the translation of the Arabic name 'Mohammad'.

PROPHECIES IN THE SECOND PART OF THE ZOROASTRIAN SCRIPTURES

News of the Prophet's advent in Dasatir

THERE are two parts of Zoroastrian scriptures, as we have stated in the beginning of this chapter. Opinions differ as to the authenticity of these books. Some hold that Zend Avesta is more authentic, while according to others Dasatir are more reliable. We have already discussed the prophecies in the Zend Avesta, and now deal with those that are found in Dasatir. We have taken the two parts separately, lest any sect of the Zoroastrians may come forward to say that it believes in one part and not the other. Dasatir is divided into two parts, 'Khurdah Dasatir' and 'Kalan Dasatir'. Various interpretations have been given to the term Dasatir. According to some, it means 'a book of ten parts'—'das' meaning ten and 'tir' meaning a part or portion. Some orientalists have taken the word 'tir' to be a Sanskrit word meaning an edge or bank. While others hold that Dasatir is the plural of Dastur which means law or religious code.

In the current editions of Dasatir there are fifteen epistles beginning with the epistle of Mahabad and ending with that of Sasan V. Among these epistles the epistle of Sasan I is strikingly remarkable, and records a prophecy about the Holy Prophet in very clear words. The edition of Dasatir from which this portion is copied was published by Mulla Pheroze with the help of several other learned Zoroastrian priests, in the time of Nasir-ud-Din Kachar, Shah of Persia. Mulla Pheroze, also the author of *Dabistan-i-Mazahib,* was a well-known scholar in Bombay who besides being a master of Pahlwi, Zend and Persian, was also a scholar of Arabic, and it was mainly through his efforts that the present Dasatir were published.

The real author of this prophecy was, in fact, Zoroastèr and not Sasan I, for Sasan was just a reformer of the Zoroastrian faith. Before the actual prophecy begins, a mention is made of the profligacy and dissolution of Iranians. The original text is in Pahlawi but its translation in Persian is also given. Few explanatory notes have also been added, here and there, by Sasan.

The sum and substance of the prophecy is, that when the Zoroastrian people will forsake their religion and will become dissolute, a man will rise in Arabia whose followers will conquer Persia and subjugate the arrogant Persians. Instead of worshipping fire in their own temples, they will turn their faces in prayer towards Ka'ba of Abraham which will be cleared of all idols. They (the followers of the Arabian prophet),

(۵۴) چم چمید کا جام کمند مهر قوار جیام ور تاه هیتال جدود ❀ چون چنین کارها کنند از تازیان مردی پیدا شود (۵۵) یو مهرار

تسا مام هو هیر تاکت و نیر تاکت و سمیر اکت و امیر اکت سر دیم ارتد ❀ که از پیروان او دیهیم و تخت و کشور و این همه

رافتد (۵۶) و هو ند مهر ور کتام تیودام ❀ و شوند سر

کشان زیر دستان (۵۷) بیرن فه شای نیمار و سیمار کیوار آبادلی جوار هده یو ستا ❀ ببینند بجای پیکرگاه آتش

کده خانه آبادی بیپیکر شده نماز بردن سو ❀ خانه که در تازیان است و بریک‌ها و وران ساخته آباد است و در ان پیکرهای اختران بود گویند سودا

خانه نماز بردن سو و بردارند از و پیکرها (۵۸) و هو رد هوش

شنشور ❀ و فرآب شود (۵۹) و تدرا هند شای

سیمارام مدیر دا نوراهم هاهم و مغود و یواکت و شایام

شمناد ❀ و بازستانند جای تشکده‌های مداین و گردهای آن

دتوس و بلخ و جاهای بزرگ (۶۰) و هایم هار هیشام در تاه یامد

هرتال و سمین هود مهن طرزیده ❀ و آیین گر ایشان مردی

باشد سخنور و سخن او در هم پیچیده (۶۱)

کمند (deeds) کا جام (such) چیم (when) جسم (the Persians will do) هز توار جیارم (from among the Arabs) ورتا (a man) هتیال هود (will be born) هسو (from among the followers) یسو هزار تسا مام (of whom) هیرتاک و نیرتاک (crown and throne) و سمیراک و امیراک (and kingdom and religion of the Persians) سرویم ارتسد all shall (be overthrown and dissoluted). و هوند (And will be) هر در کتام (the arrogant people) یتود ام (subjugated). بیرن (They will see) فه شای (instead of) نیمسار (the house of idols) و سیمار (and the temple of fire) کسوار (the house of worship) آبساد (of Abraham) بسے جسوارهده (without any idols in it) نیوستا (the Qibla).

و هسوزد (And they will be) هسوش شینشور (a mercy for the worlds) وتد (and then) راهند (they will capture) شای ها (places) سیما رام (of the temples of fire) مسدیر (Madain or Ctesiphon) و انتو رام (and of the surrounding places) هسام (of it) و نیفود (and Tūs) و نیواک (and Balkh) و شایام (and other places) شمناد (of eminence and sacred) -- و (and) هابم هار (religious leader) هرتال هشیام (their's) ورتا پاند (will be a man) (eloquent) وسمین هو (and his message or what he will say) دم هن بدبده (will be well-connected)

will be a mercy unto the world. They will become masters of Persia, Madain, Tus, Balkh, the sacred places of the Zoroastrians and the neighbouring territories. Their prophet will be an eloquent man telling miraculous things

We have stated before that Zend Avesta and Dasatir are two separate scriptures and different sects hold their own respective book to be authentic. Notwithstanding their differences, both the books agree in the prophecies about the Holy Prophet. Both the scriptures clearly declare that a man will be raised in Arabia whose name will be Mohammad, who will be a mercy unto the world, who will testify to the truth and religion of Zoroaster and whose companions will be pious and saintly people. Fire in the temples will cool down with his advent, idols will be removed from the Ka'ba of Abraham, the Persian chiefs will turn towards the Ka'ba, and that he will correct the errors of both the idol-worshippers and Zoroastrians. It is hardly possible for any Zoroastrian to deny such a clear, vivid and illustrative prophecy. Some bigoted people may, however, tamper with their books to avoid the issue, or may suggest that the promised reformer must necessarily have been from among the Zoroastrians, or that this prophecy was just a trick to persuade the Zoroastrians to formally embrace Islam and then to uproot the religion in the guise of Musalmans; but no sensible man can believe that such tricks and devices are worthy of any prophet or divine. The real truth is that every word of these prophecies has been fulfilled in the person of the Prophet Mohammad. There is no other alter-

native for the Parsis; either they should believe in the Prophet and take him to be 'Astvat-ereta' (the praised one or Mohammad), or should point out any other man on whom these descriptions could apply, who would have exterminated idol-worship, produced truthful and saintly followers, and according to Avesta, must have corrected Mazdaynians as well as idol-worshippers, and who would have become the master of the Persian religion, crown and kingdom.

A very strong prejudice is generally experienced in every creed and community about matters concerning religion. Nobody will easily accept even a clear and plain fact if it is presented by a man of a different persuasion, rather several adverse reasons will be put forth. We have recounted some very clear prophecies of Zoroaster, still, to refute a possible objection that the promised reformer must necessarily have been a Zoroastrian, we record another historical proof. When there is a dispute between two communities over a point, an easy course to decision is to appoint an arbiter, whose decision should be binding on both the parties as long as it is not tinged with any personal bias or prejudice on the part of the arbiter. Before the advent of the Holy Prophet, the Zoroastrians had lost most of their scriptures. They were deteriorated both in morality and religion, and all these facts are clearly recorded in the epistle of Sasan. This was the first sign of the appearance of the reformer. The prophecy of his advent was so well-known to the Parsis and Magians and they were so anxious about the appearance of their redeemer, that they flocked with their

presents to any place where they heard a reformer had appeared. The author of St. Matthew's Gospel also heard of this news and in order to apply this famous prophecy on Jesus Christ he coined an imaginary tale and recorded it in the Gospel. The author of this Gospel is well-known for this peculiar trait. Whatever good news he heard of, he at once applied it on Jesus, and he never cared what interpretation he was giving to the text of an ancient scripture, but he did his best to prove somehow or other that the text referred to Jesus Christ. A prophecy of the appearance of 'the praised one' was current in Persia, and the Gospel writer having come to know of it at once coined a story, without contemplating that he was recording many unbelievable things and events contrary to actual facts. And the very fact that no other Gospel-writer has confirmed this story is enough to reject it. The author of St. Matthew's Gospel writes that when Jesus was born, some Magians and wise men of the East were directed to him by a star; the star went before them till it came and stood over where Christ was, and thus they came to worship him and offer him their presents. St. Luke, on the other hand, claims to 'have perfect understanding of all things from the very first', but he makes no mention at all of the Magians having come to Christ or of the star that directed them to him, although he makes mention of a petty fact of the shepherds having come to see Christ. No star directed the shepherds, the only sign given to them by the angel was: "Ye shall find the babe wrapped in swaddling

clothes, lying in a manger".[1] Nowhere else save in the Gospel of St. Matthew, is there a mention of the Magians having come all the way from Persia to present their gifts to Christ or of the star going before them.

Dr. Ferrar, in his 'Life of Jesus Christ', writes of these contradictions in the following terms: "There is nothing but a mass of confused and contradictory traditions to throw any light either on their rank, their country, their number or their names." (p. 20).

This tradition in the Christian scriptures, however, proves that a prophecy of the advent of the Holy Prophet was current among the Magians and they were so anxiously waiting for the Promised Prophet that even their anxiety was known far and near. The author of St. Matthew's Gospel misused the widespread publicity of this prophecy and at once applied it to Christ Jesus.

The Reformation made by the Prophet

WE have seen in the prophecies of Zoroaster that the promised reformer will correct the evils of the Zoroastrians as well as the idol-worshippers. It is a fact that there is no idol-worship in Zoroastrianism, but a sort of nature-worship is, of course, present. To start with, they believe in two Creators. The One is the Creator of light and the other is the Creator of darkness. Yazdan and Ahriman are their respective names. All the useful and good things are the creation of Yazdan or Hormuzd

---

(1) Luke, II : 12.

and the evil ones are created by Ahriman. Life, light, health and all pure things are created by Hormuzd, while death, darkness, disease and other dirty things are the creation of Ahriman.[1] The idea of two Gods in the creation of this universe is incongruous and is due to an ignorance of the properties of the things created. Everything, though apparently it may seem harmful or injurious, is possessed of several advantages and hidden utilities and when used properly exhibits extreme wisdom of the All-Wise God. Day time seems to be more advantageous for man, but night too is equally essential and useful. The Holy Qur'an says: "And We made your sleep to be rest (to you), And We made the night to be a covering, And We made the day for seeking livelihood".[2] How dreadful death appears, yet death is the way to future progress and development. How rightly did the Prophet remark: 'He created death and also He created life.'[3] Had there been different creators of these things, there would have been a great clash between them and life in this world would have been impossible.

Again, the idea that fire was created by Hormuzd and darkness by Ahriman, is also unsubstantial. The real fact is, that neither fire is all good nor darkness is total evil. The proper use or misuse of a thing makes it good or bad. If fire is all good, and really a pure

---

(1) Vendidad Fargard, I.
(2) LXXVIII, 9—11.
(3) The Quran: LXVII : 2.

and sacred thing, why does it so often burn men and their properties? Similarly, is not darkness, which is regarded as an evil creation, very essential for the development of our faculties and for the life and sustenance of vegetables and animals? Disease, of course, is a bad and painful thing, but it was not created by God. How truly Abraham had said: "When I fall sick He restores me to health."[1] Disease is the result of man's own actions and is mostly due to violation of the laws of health. In a word, all those things that have been regarded as evil and attributed to Ahriman, are not without their uses and advantages. Everything that is properly used is good and the same thing if misused becomes bad. Thus, the verdict of the Holy Qur'an—"He created everything," carries the point.

The Qur'an and the Holy Prophet Mohammad have corrected hundred and one flaws and wrongs in the Zoroastrian religion. Ours is the age of science and reason and no absurdity in the name of religion can appeal to any one in this age. The intelligentsia of every community are rather getting averse to religion, on account of so many unreasonable and ridiculous things named as religion. And all those defects which strike the Parsi youth to-day were corrected by the Holy Prophet Mohammad thirteen hundred years ago. We give below a brief account of some of the points:

1. It is said that Hormuzd granted prophethood to *Yim* (Noah), but he refused to take that responsi-

---

(1) The Quran : XXVI : 80.

bility. Similar actions of disobedience to God are ascribed to *Vakhshur* (prophets), which are contrary to reason and common sense. Did not God know before hand that such and such person was not fit for the onerous work of a prophet? *Vakhshur* or prophets come into the world as models and examplaries, and if they themselves begin to disregard God's commandments, what guidance will they give to others?

2. It is believed that a dead body makes unclean the earth, the air and the men who carry it; and that the wards of hell enter into a dead body and on seeing a dog they leave the body and fly away.[1] All this is nothing but old superstitions.

3. Women are considered to be so unclean and dirty during their days of menstruation that even their meals are not properly served to them. Food can not be handed over to these unclean women, but is thrown away from a distance in a pan or pot. They can not eat to their fill nor can they drink such a pure thing as water, except when they begin to die of thirst.[2]

4. Killing a dog is more punishable an offence than a man's murder. Even giving bad food to a dog is also more punishable than killing a man. Ninety lashes is the punishment for a murder and two hundred lashes for improperly feeding a dog. If a woman drinks water after giving birth to a child, she is punishable with two hundred lashes; and the penalty for an unclean

---

(1) Vendidad, VIII : 14—21
(2) Fargard V : 45, VII : 70

man's touching water or a tree is four hundred lashes. Burying a dead body or burning it, is an offence that cannot be atoned or pardoned at all.[1]

Many base and indecent things regarding women were introduced by Mazdak in the Zoroastrian faith. But Anushirvan the Just, being influenced by the teachings of Islam, removed these abuses.

Let our Parsi friends carefully consider the prophecy of their prophet Zoroaster about that great reformer, Astvat-ereta (Mohammad), the Arab, whom Zoroaster praised and eulogized his companions and also commended his teachings and foretold that he would correct the evils of the Parsi faith, would extirpate idol-worship, would face towards Ka'ba in his prayers and whose companions would become the masters of the sacred places of the Parsis. Let the Parsis believe in these clear facts and thus obey their Lord Hormuzd and also fulfil the heartfelt desire of Zoroaster. It is said "The wise men of Iran and others also will join them."[2] Wise is, thus, only he who believes in this prophecy, embraces Islam and joins the Muslim brotherhood.

---

(1) Fargard, IV : 49. VII : 20 , VI : 5, V : 39—44, VI : 47 and VIII : 22—29.
(2) Dasatir.

THE PROPHET IN THE HINDU SCRIPTURES

NUMEROUS prophecies of the advent of the Holy Prophet are also found in the sacred books of the Hindus. There are three divisions of these books—the Vedas, the Upanishads and the Puranas. The *Brahmanas Granth,* another sacred book, is nothing but a commentary of the Vedas, still it is included in the revealed books (*Shurti*). There are four principal divisions of the Vedas, although according to their number, they amount to 1131[1] out of which only about a dozen are available. The Rig Veda, the Yajur Veda and the Sam Veda are considered to be the more ancient books, the Rig Veda being the oldest. The Rig Veda was compiled in three long and different periods of time.[2] According to Manu, the above-mentioned are the three old Vedas,[3] which are also known as 'Trai Viddya', or the Triple Sciences. The fourth one, Atharva Veda is of a later date. Opinions greatly differ as to the date of compilation or revelation of the four Vedas. European Orientalists, however, are more or less unanimous in their research; but there is an unbridgable gulf of difference between various Hindu sects and scholars. One scholar holds that the Vedas were re-

(1) Maha Bhasahya Patanjali.

(2) *Rigvedic India* by Abinash Chandra Datta.

(3) Traim Brahm Sanatanam,

vealed one thousand three hundred and ten millions of years ago,[1] and according to others they are not more than four thousand years old.[2] Similarly, a great difference is found in the various accounts about the places where these books were revealed and the Rishis (prophets) to whom these scriptures were given. Notwithstanding these differences, the Vedas are the most authentic scriptures of the Hindus and the real foundations of the Hindu Dharma.

Next in order of superiority and authenticity to the Vedas are the Upanishads. Some Pandits, however, consider the Upanishads to be superior to the Vedas.[3] The Hindus are proud of these philosophic treatises; and in the Upanishads as well, we find a claim to superiority over the Vedas.[4]

The next authentic books after the Upanishads and the most widely read of all are the Puranas. These books are as easily intelligible and available at every place, as the Vedas are difficult to understand and rarely found. The Hindus show great reverence to these books and read them with much interest and faith. The Puranas comprise of the history of the creation of this universe, the history of the early Aryan tribes, and life stories of the divines and Deities of the Hindus. Maha Rishi Vyasa has divided these books into eighteen

---

(1) Swami Daya Nand, founder of the Arya Samaj.
(2) Arctic Home in the Vedas by Mahatama Tilak.
(3) Lectures of Raja Mohan Roy;
(4) Mandak Upanishad Mandak, I : 1, 4-6.—Chhandogya,—VII : 1-2.—Shatpath, X : 3, 5-12.

voluminous parts. The majority of the Hindu people believes that the Vedas too attest the truth of the Puranas, which shows that the Puranas are more authentic and more ancient. In the Atharva Veda we find: "Verses and songs and magic hymns, Purana, sacrificial text—All the celestial Gods Whose home is heaven, sprang from the residue."[1] Again we find: "He went away to the great region. Itihasa and Purana and Gathas and Narashansis followed him."[2] Similarly, in the Rig Veda a mention is made of Puranas: "So by this knowledge (of) Puran Yajua our fathers raised up to Rishis."[3] A reference to Puranas is also met with in Chhandogya Upaniṣhad.[4]

All these references show that the Puranas are also revealed books like the Vedas, and as regards the age of revelation, they were either revealed simultaneously with the Vedas or some time before. In a word, the sanctity and reverence of the Puranas is admitted and recognized in all the authentic books of the Hindus. But in spite of all this, some Pandits have to-day begun to reject these collections simply because they find in them numerous prophecies and vivid signs of the truth of the Prophet Mohammad. Instead of having believed in the Prophet and thus obeying their great and Holy Rishis and realising the truth of their sayings, these Pandits have thought it best to totally

(1) Atharva Veda, XI : 7, 24.
(2) *Ibid,* XV : 6. 12.
(3) Rig Veda, X : 130, 6.
(4) VII : 1-2.

refuse credence to what the Puranas contain. But the Vedas have clearly testified to the truth of the Puranas and it is recorded that just as the Vedas were revealed from God, in like manner, the Puranas too were revealed by Him. Sometimes, however, it is pleaded that the present Puranas are not the same collection of which the Vedas speak, the real books having been lost. But this contention is not correct. It is impossible and far from truth that all the Puranas which were so widely read and keenly studied, could have fallen in oblivion and totally wiped out from the surface of the earth, and the Vedas, which only a few could read and understand, remained intact upto this time.

It is further said that these prophecies were added to the Puranas at a later date. But this too is a baseless argument. Such a well-known book, having a vast circulation, and also being read at appointed times in the prayers,[1] can not be possibly tampered with. Seeing clear prophecies of the Arabian Prophet in their books, the Pandits began to clamour that the Puranas were corrupted. Moreover, it is nonsensical to think that all the Pandits and the learned divines of the Hindus could have assembled at some place and added these prophecies to the Puranas. There are, at the same time, so many sects among the Brahmans and each sect is strongly opposed to the other, so it was impossible for them to agree to such a change. A copy of a Puran

(1) It is recorded in Shatpath Brahmana, an old and very authentic commentary of Yajur Veda, that Puranas should be read on the ninth day of *Yaggayah*. *The Vayu* Puran (one of the eighteen Puranas) is particularly recommended.

will be found in almost every Brahman's house, and it is really strange that so far the world has not seen any collection without these prophecies. And the most ridiculous thing is that corruption is said to have been made in favour of the Prophet and against their own religion. It was just possible to add something against these prophecies or to change their text, but it is simply absurd to think that the Hindu Pandits added something against their own religion and conviction. Thus, we appeal to our Hindu brethren to give a serious consideration to this question. Every word of the Puranas is as genuine and revealed by God as that of the Vedas, reading of which brings salvation and blessings in this world as well as in the next. Let them, therefore, carefully study, in their revealed scriptures, the glory of the Prophet Mohammad and let them declare their faith in him.

Mahrishi Vyasa's Reverence for the Prophet

THE Hindus have been very well-known for hero-worship. This trait of their character, as a matter of fact, forms part of their religion. Mahrishi Vyasa is greatly esteemed among the Hindus as a great rishi and learned divine. He was a very pious, God-fearing and pure-hearted man. He was the man who arranged the Vedas under various heads. He also wrote a valuable book on mysticism. The Gita and the Maha Bharat too were the productions of his masterly pen. But his greatest compilation is the eighteen volumes of Puranas. Chief among the Puranas is a book known as 'Bhavishya Puran,' in which the Mahrishi makes a wonderful survey of the coming events. It is called Bhavishya

Puran because it gives an account of the future events. The Hindus regard it as the Word of God just as the Vedas are. Mahrishi Vyasa was just the compiler of the book, the real author being God Himself. The copy of the Bhavishya Puran, from which we quote the following prophecies, was printed in the Venkteshwar Press at Bombay. We find the following prophecy in the Prati Sarg Parv III : 3, 3, 5-8.

एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः ।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखासमन्वितः ॥ ५ ॥
नृपश्चैव महादेवं मरुस्थलनिवासिनम् ।
गङ्गाजलैश्च संस्नाप्य पञ्चगव्यसमन्वितैः ।
चंदनादिभिरभ्यर्च्य तुष्टाव मनसा हरम् ॥ ६ ॥
भोजराज उवाच—नमस्ते गिरिजानाथ मरुस्थलनिवासिने ।
त्रिपुरासुरनाशाय बहुमायाप्रवर्त्तिने ॥ ७ ॥
म्लेच्छैर्गुप्ताय शुद्धाय सच्चिदानन्दरूपिणे ।
त्वं मां हि किंकरं विद्धि शरणार्थमुपागतम् ॥ ८ ॥
सूत उवाच—इति श्रुत्वा स्तवं देवः शब्दमाह नृपाय तम् ।
गंतव्यं भोजराजेन महाकालेश्वरस्थले ॥ ९ ॥
म्लेच्छैस्सुदूषिता भूमिर्वाहीका नाम विश्रुता ।
आर्य्यधर्मो हि नैवात्र वाहीके देशदारुणे ॥ १० ॥
बाभूवात्र महामायी योऽसौ दग्धो मया पुरा ।
त्रिपुरो बलिदैत्येन प्रेषितः पुनरागतः ॥ ११ ॥

अयोनिः स वरो मत्तः प्राप्तवान्दैत्यवर्द्धनः ।
महामद इति ख्यातः पैशाचकृतितत्परः ॥ १२ ॥
नागन्तव्यं त्वया भूप पैशाचे देशधूर्तके ।
मत्प्रसादेन भूपाल तव शुद्धि प्रजायते ॥ १३ ॥
इति श्रुत्वा नृपश्चैव स्वदेशान्पु नरागमतः ।
महामदश्च तैः सार्द्धं सिंधुतीरमुपाययौ ॥ १४ ॥
उवाच भूपतिं प्रेम्गा मायामदविशारदः ।
तव देवो महाराजा मम दासत्वमागतः ॥ १५ ॥
ममोच्छिष्टं सभुंजीयाद्यथा तत्पश्य भो नृप ।
इति श्रुत्वा तथा दृष्ट्वा परं विस्मयमागतः ॥ १६ ॥
म्लेच्छधर्मे मतिश्चासीत्तस्य भूपस्य दारुणे ॥ १७ ॥
तच्छ्रुत्वा कालिदासस्तु रुषा प्राह महामदम् ।
माया ते निर्मिता धूर्त नृपमोहनहेतवे ॥ १८ ॥
हनिष्यामिदुराचारं वाहीकं पुरुषाधमम् ।
इत्युक्त्वा स जिद्वः श्रीमान्नवार्णजपतत्परः ॥ १९ ॥
जप्त्वा दशसहस्रंच तद्दशांशं जुहाव सः ।
भस्म भूत्वा स मायावी म्लेच्छदेवत्वमागतः ॥ २० ॥
भयभीतास्तु तच्छिष्या देशं वाहीकमाययुः ।
गृहीत्वा स्वगुरोर्भस्म मदहीनत्वामागतम् ॥ २१ ॥

स्थापितं तैश्च भूमध्येतत्रोषुर्मदतत्पराः ।
मदहीनं पुरं जातं तेषां तीर्थं समं स्मृतम् ॥ २२ ॥
रात्रौ स देवरूपश्च बहुमायाविशारदः ।
पैशाचं देहमास्थाय भोजराजं हि सोऽब्रवीत् ॥ २३ ॥
आर्य्यधर्मो हि ते राजन्सर्वधर्मोत्तमः स्मृतः ।
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारुणम् ॥ २४ ॥
लिङ्गच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रु धारी स दूषकः ।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम ॥ २५ ॥
विना कौलं च पशवस्तेषां भक्षया मता मम ।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति ॥ २६ ॥
तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकाः ।
इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृतः ॥ २७ ॥

and below we give the English translation of the prophetic words:—

"A malechha (belonging to a foreign country and speaking foreign language) spiritual teacher will appear with his companions. His name will be Mohammad. Raja (Bhoj) after giving this Maha Dev Arab (of angelic disposition) a bath in the 'Panchgavya' and the Ganges water, (*i.e.*, purging him of all sins) offered him the presents of his sincere devotion and showing him all reverence said, 'I make obeisance to thee.' 'O ye! the pride of mankind, the dweller in Arabia, Ye have collected a great force to kill the Devil and you your-

self have been protected from the malechha opponents.' 'O Ye! the image of the Most Pious God the biggest Lord, I am a slave to thee, take me as one lying on thy feet.' In this eulogy of the Holy Prophet, Maharishi Vyasa has enumerated the following points:—

(1) The name of the Prophet is clearly stated as Mohammad. (2) He is said to be belonging to Arabia. The Sanskrit word *marusthal* used in the prophecy means a sandy tract of land or a desert. (3) Special mention is made of the companions of the Prophet. There has hardly been any other Prophet in the world who had such a host of companions all resembling him. (4) He will be immune from sins, having an angelic disposition. (5) The Raja of India will show him his heart-felt reverence. (6) The Prophet will be given protection against his enemies. (7) He will kill Devil, root out idol-worship and will do away with all sorts of vices. (8) He will be an image of the All-powerful God. (9) The Mahrishi claims to be lying at his feet (10) He is regarded as the pride of mankind (*Parbatis Nath*).

This prophecy is as clear as day-light, there being not a shadow of doubt as to its application to the Prophet Mohammad. Some people, however, have raised an objection that the raja of whom this prophecy makes a mention was named as Bhoj who lived in the 11th century A.D. and was the descendant in the tenth generation of Raja Shalivahan. Raja Bhoj, thus came into the world five hundred years after the advent of the Prophet. But names in prophecies, as we have stated

before, do not matter much. Names are also given as a prophecy and often these names have to be given an interpretation. Moreover, there was not only one raja of the name of Bhoj. Just as the Egyptian monarchs were known as Pharaohs and the Roman kings were called Kaisers, similarly, the Indian rajas were given the epithet of Bhoj. Several rajas who lived before the above-mentioned Raja Bhoj had the same kingly name. We find a mention of Raja Bhoj made in an old Sanskrit book 'Aitarya Brahmana'—Panchka, VIII : 12 and XIV : 17. Similarly, Panni, who was a renowned grammarian of Sanskrit and lived long before Islam, also refers to Bhoj, his cities and his offsprings—Adhya, I : 1,075. Besides, this prophecy gives clearly the name of the prophet as Mohammad which shows that it applies to none other but the prophet of Islam.

Another point which requires elucidation, is, the Prophet's taking bath in 'Panchgavya' and the water of the Ganges. This did not, of course, actually happen as it was only a vision; so we give it the interpretation that the Prophet will be purged of and made immune from all sorts of sins. These waters are considered to be very holy and sacred and they make people sinless, just as the water of the river Jordon is sacred to the Christians and that of *Zamzam* to the Musalmans.

We have, thus, seen what Brahmaji (God) revealed and what Vyasaji told the world. The Mahrishi has regarded the Holy Prophet as absolutely pious and sinless and showing his true loyalty and reverence to him has desired to lie at his feet. Should we not appeal.

in the light of the above facts, to our Hindu brethren, who believe in these Divine Scriptures and deify their religious leaders, to ponder over what Mahrishi Vyasa has said about the Prophet and believing in the Prophet to obey the commandments of Brahma and to fulfil the heart-felt desire of the Mahrishi?

Another Clear Prophecy of Vyasaji.

IN continuation of the same quotation from Bhavishya Puran that we have given above, we find a still clearer prophecy in Shalokas 10—27. Mahrishi Vyasa has remarked about the Holy Prophet as follows:—

"The Malechhas have spoiled the well-known land of the Arabs. Arya Dharma is not to be found in that country. Before also there appeared a misguided fiend whom I had killed; he has now again appeared being sent by a powerful enemy. To show these enemies the right path and to give them guidance the well-known Mahamad (Mohammad), who has been given by me the epithet of Brahma, is busy in bringing the 'Pishachas' to the right path. O Raja, You need not go to the land of the foolish Pishachas, you will be purified through my kindness even where you are. At night, he of the angelic disposition, the shrewd man, in the guise of a Pishacha said to Raja Bhoj, "O Raja! Your Arya Dharma has been made to prevail over all religions, but according to the commandments of *Ishwar Parmatma,* I shall enforce the strong creed of the meat-eaters. My follower will be a man circumcised, without a tail (on his head), keeping beard, creating a revolu-

tion, announcing *Adzan* (call for prayer) and will be eating all lawful things. He will eat all sorts of animals except swine. They will not seek purification from the holy shrubs, but will be purified through warfare. On account of their fighting the irreligious nations, they will be known as Musalmans. I shall be the originator of this religion of the meat-eating nation."

In this prophecy Vyasaji has enumerated numerous signs of the advent of Mohammad (peace be on him). Prominent among these are the following:—(1) The land of the Arabs has been corrupted by evil-doers. (2) Arya Dharma is not to be found in that land. (3) The present enemies will perish just as the former enemies like Abraha and others had perished. (4) In order to guide these opponents of truth, Mohammad has been given by God the epithet of 'Brahma', and he is busy in the construction of his nation. (5) The Indian Raja is afraid of going to the land of the Arabs. His purification, however, will take place here in India when the Musalmans will arrive here. (6) The coming prophet will attest the truth of the Aryan faith and will reform these misguided people. (7) The followers of the Prophet will be circumcised, will keep beard, will not keep a tail, and their leader will create a great revolution. (8) There will be no secrecy in his religion and the call to prayer will be raised from the minarets of every mosque. (9) The flesh of swine will be unlawful for them, the rest of eatable animals being lawful. (10) The Hindus use a kind of grass for purification, but these people will be purified by means of sword. (11) They will be known as Musalmans on

account of their fighting the irreligious people. (12) And this religion of the meat-eaters will be a Divine cult.

It is related in this prophecy that the Holy Prophet will verify the truth of the Aryan faith and also that the Arya Dharma will predominate over all other religions. A question arises here that if Arya Dharma was the best of all faiths and was to prevail over the rest, what need there was of giving the world a new faith of Islam? But the reply to this is, that the Aryan religion, when it was revealed, was of course the best for the Aryan people and it did predominate over other religions. But by and by it got corrupted and hence the need for Islam. Mahrishi Vyasa himself has described the condition of this religion at the time of the Prophet's appearance. He has given a true picture of the so-called 'malechha dharma' (Islam) and the Aryan faith. Says he:—

"Corruption and persecution are the order of the day in the seven sacred cities of Kashi, etc. India is inhabited by Rakshas, Shabar, Bhil and other foolish people. In the land of 'malechhas', the followers of the 'malechha dharma' (Islam) are wise and brave people. All good qualities are found in the Musalmans and all sorts of vices have accumulated in the land of the Aryas. Islam will rule in India and its islands. Having known these facts O Muni, glorify the name of thy Lord."[1]

(1) Bhavishya Puran Parv, III : 1, 4, 21—23.

In the above Shalokas the word *'malechha'* has been used again and again. Apparently this word is used in a bad sense, but Mahrishi Vyasa has used it in quite a different sense. He himself defines this word as: "A man of good actions, sharp intellect, spiritual eminence, showing reverence to the deities, is known as a wise 'malechha'."[1]

Thus, when the Arya Dharma was reduced to a jumble of vices and was totally corrupted and disconcerted, was it not essential that some *Brahma* should have appeared in Arabia to reform the Arabs as well as the Aryan people? So did actually happen as Mahrishi Vyasa had foretold. Let the Aryan people, therefore, obey their Rishi and glorify the name of the Lord on the appearance of the Prophet Mohammad the Saviour of the world.

PROPHECIES IN THE ATHARVA VEDA

Atharva Rishi's Regard for the Prophet

THE Atharva Veda holds a prominent position among all the four Vedas for being known as *Brahma Veda* or Divine Knowledge. It is a collection of all kinds of mantras. It contains *Richas* (eulogies) of the Rig Vedic type, literary compositions of the Sam Vedic type and also the details of worship as are found in the Yajur Veda. Thus it comprises of all kinds of mantras found in the different Vedas. Besides, it contains

(1) **Bhavishya Puran Parv, pp. 256, 257.**

mantras giving details of how one can overcome fatal diseases, how victories can be achieved in warfare and the descriptions of heaven and hell. This is why it was particularly described in the Mundak Upanishad, as *Brahma Viddya* or Divine Knowledge.

Modern excavations in Egypt and Babylon have not only proved that the real source of the Bible were the Babylonian Tablets, but have also proved, in accordance with the internal evidence of the Vedas, that the Vedas too have chiefly borrowed their subject-matter from the Babylonian scriptures. Dr. Pran Nath, a professor in the Benares Hindu University, contributed a valuable article on the relations of the Bible, the Vedas and Egypt, in the *Times of India* in July and August, 1935. He had shown in his article that mention is made in the Rig Veda of the Egyptian and Babylonian kings and their warfares. He had also shown that one-fifth of the Rig Veda is derived from the Babylonian scriptures. In the light of these researches, it is difficult, rather wrong, to assert that the Atherva Veda is an exact copy of the Book of the Prophet Abraham, as it is believed to be by some pandits

The Kuntap Sukt in Atharva Veda

IN the twentieth chapter of the Atharva Veda some Suktas (chapters) are known as Kuntap Sukt. These are repeated every year in big assemblages where prayers are said and sacrifices are offered. Seventeen big worshipping pandits sit down annually to repeat these mantras with great devotion. This shows that

the Hindus are strongly advised to remember these mantras.[1] According to the exposition of commentators, the first Kuntap Sukt is comprised of four different subjects which are known as Narashansi, Raibhi, Parikshit and Karavya. This division, however, is made only on account of some words that occur therein, otherwise, these are the atributes of one and the same individual, as we shall make clear in the translation of these mantras.

The word Kuntap means 'the consumer of misery and troubles.' A collection of all those mantras in which a mention is made of the redresser of the world's misery is known as Kuntap Sukt. The message of Islam and the Prophet Mohammad's teachings are a blessing for humanity and the only remedy of the evils and wretchedness of the world. Kuntap Sukt, thus, can be easily interpreted as 'Islam' or 'the message of peace and safety'.

The Kuntap Sukt are a well-known part of Atharva Veda. The word Kuntap also means the 'hidden glands in the abdomen.' And these mantras are given this name, probably because, their true meanings were hidden and were to be revealed in a future age. These hidden meanings are connected with the navel or the middle point of this earth. Mecca is called *Ummul Qura* (the mother of the towns) or the navel of the earth, in many revealed books. The first house of Divine worship where the One God was adored and wherefrom

(1) *Ait. Br.*, VI : 32.

spiritual nourishment was given to the world was only at Mecca; as the Holy Qur'an says: "Surely the first house appointed for men is the one at Bekka, blessed and a guidance for the nations."[1] The Qur'an gives two names to Mecca, the one is Bekka and the other is Mecca. Bekka means 'breast' and Mecca means 'abdomen.' A man is nourished by his mother from two places—the belly or umbilicus and the breast. The same thing that feeds a child in the womb, turns into milk and comes to the breast of the mother, when the child is born. As long as that nourishment is in the belly it is just a few hidden glands and a secret to the world, but as soon as it comes to the breast, it becomes "pure milk, easy and agreeable to swallow for those who drink."[2] Thus, Kuntap (the hidden glands in the belly) stands for Mecca or Bekka—the place which gave the first nourishment to mankind, and when man passed through the necessary stages of development, the same hidden glands turned into fresh milk in the breast, and now for ever will mankind get its nourishment from the same nutrient *i.e.* Mecca.

This Kuntap Sukt had for long been a secret and an enigma. We shall, however, try to explain it. Pandit Raja Ram, a professor in the Lahore D. A. V. College, Professor Griffith, Professor Maxmullar, Dr. Whitney, M. Bloomfield and some other scholars regard these mantras as riddles. A riddle, as long as it is not solved, is of course a riddle. But after the

---

(1) III : 95.
(2) The Quaran, XVI : 66.

advent of the Holy Prophet Mohammad, this Kuntap is no longer a secret. The world can now easily understand its meanings. These hidden glands have now become pure and agreeable milk for fostering mankind, but only he will taste of this pure milk who recognizes his mother and runs to her breast for receiving his nourishment.

The first Mantra of Kuntap Sukt

इदं जना उप श्रुत नराशंस · स्तविष्यते ।
षष्टिं सहस्रा नवतिं च कौरम आ रुशमेषु दद्महे ॥ १ ॥

M. BLOOMFIELD has translated this mantra as follows:—"Listen ye folks, to this (a song) in praise of a hero shall be sung! six thousand and ninety (cows) did we get, when We were with Kaurama among the Rushamas."

In Prof. Griffith's translation we find: "Listen to this, ye men a loud of glorious bounty shall be sung. Thousands sixty and ninety, we, O Kaurama, among the Rushamas have received."

The English version of Pandit Raja Ram's translation (in Urdu) is as follows:—"Listen to this O people! a praiseworthy shall be praised. O Kaurama we have received among the Rushamas sixty thousand and ninety."

Pandit Khem Karan of Allahabad gives another translation:—

"O people! Listen to this respectfully! The praiseworthy man among the people will be praised. O easc-

loving king, we find sixty thousand and ninety brave men uprooting their enemies."

In all these translations the following four points are quite ambiguous and in spite of adding some text their meanings are not clear. (*a*) The first question is, who is going to be praised? (*b*) Secondly, what are these sixty thousand and ninety things? (*c*) Why should the people listen to it respectfully? (*d*) And who are these Rushamas and Kaurama?

The ancient history of India throws no light on these mantras and they remain obscure as they were. Early Islamic history and the course of events in Arabia, however, throw a flood of light on these obscure mantras and make them as clear as anything. (*a*) "He will be praised" is the literal translation of the word 'Mohammad'. (*b*) Sixty thousand or seventy thousand was the population of Mecca, all opposed to the Prophet. (*c*) As this mantra contained a great prophecy, so the people are told to listen to it respectfully. (*d*) Rushamas are the Prophet's enemies and Kaurama are the attributes of the Prophet, meaning an 'emigrant' or 'one who promotes peace.'

The text of the mantra shows that it is really a great prophecy. Nowhere else in all the four Vedas people are so particularly and emphatically addressed. The Hindus are enjoined upon listening to these words attentively and respectfully. They cannot ignore these words just by taking it as a riddle. The Sanskrit word *Astvishyate*, used in this mantra, is in the future tense meaning 'he will be praised'. This is the first sign of its being a prophecy. The event is to take place at

some future date, when the Prophet will be greatly praised. And the most widely praised and respected prophet among all the prophets of the world is Mohammad (peace and the blessings of Allah be on him). All the prophets have eulogized him and have made prophecies of his advent. Both friend and foe have praised him. The *Encyclopaedia Brittanica* regards him as "the most successful of all the prophets and religious personalities."

The blessed name of the Prophet

IT was necessary that the name of the promised one should have been given about whom this prophecy was meant. The Vedic Rishi, thus, accordingly mentions his name, *Narashansah astvishyate*—"Mohammad will be praised who is praiseworthy." He will be praised, God has praised him and men will also praise him. The word *narashansah* has been translated as *Naresh'u Ashansah yasya sah Munashyesh'u Parshansnih* 'the praised one among the people', which is the exact translation of the word Mohammad. 'He is praised and will always be praised'. He is Mohammad both among God and man, and deserves the commendation of both of them.

He is the Prince of Peace

ANOTHER sign of this Mohammad (the praised one) is, that he will be *Kaurama*[1] or the one who spreads and promotes peace. Of all the prophets of the world the

(1) In the above three translations, this word is taken as a proper noun as if it were the name of some king or ruling authority.

Holy Prophet Mohammad alone possesses this marked characteristic that he attested the truth of all the world-features and thus did away with hostility between different religions. No other prophet is possessed of this distinction. Again, the Holy Prophet was the prince of peace because he preached equality of mankind and human brotherhood. None can claim according to the teachings of the Prophet, superiority over the other on account of caste, colour or creed. All of you are Adam's sons and Adam was created of dust", is a saying of the Prophet. Being created of the same thing, you are all alike. None of you had a life before this life of yours on which one could claim superiority. The idea of transmigration of body and soul, the distinctions of caste and colour, and the marks of blood and nationality were responsible for human strife and discord between man and man. At the same time these ideas were specially preached by the Hindus and formed the special features of Vedic teachings. But the prince of peace broke off these chains of slavery and delivered the world. The word *Kaurama* also means an emigrant, and in this sense too it well applies to the Holy Prophet Mohammad, as the Prophet's emigration (from Mecca to Medina) is so marked in history that a new era starts with it. This Islamic

---

About this, Prof. Griffith vrites : "A hymn in praise of the liberality and good government of Kaurama, king of the Rushamas, a neighbouring people." Kaurama, thus was the King of a non-Aryan race. Rushamas were the people of North Arabia who along with the Babylonians had attacked Jerusalem (*Cyclopaedia Biblica*). It is generally seen in books of history that a country gets a particular name from a nation that is inhabited therein.

Hegira (emigration) was the end of the Prophet's troubles and struggle against his opponents and marked the beginning of his prosperity and success.

He will be safe among his foes

ANOTHER sign of this praiseworthy, prince of peace and stronghold of safety is, that he will be all alone in the midst of sixty thousand cruel and brutish enemies, but none will be able to injure him. He will take part in fierce battles and bloody wars, will always fight in the first row, will not absent himself from any dangerous situation; and yet he will remain safe and sound none being able to kill him. The pronouns in the mantra clearly show that it will be God Himself Who will protect him in the midst of his enemies and will guard him against his opponents. 'We shall protect him from the host of enemies.' The Lord's protection and presence always gave him the upper hand over his numerous enemies. What a clear sign was given to the people of the Vedas for judging the truth of the promised Narashans (Mohammad) and how literally and exactly was this prophecy fulfilled!

The Camel-rider Rishi

OF the second mantra of Kuntap Sukt runs as follows:

उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तो द्विर्दश ।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाणा उपस्पृशः ॥ २ ॥

Prof. Griffith gives the following translation: "Camels twice ten that draw the car, with females by their side

he gave. Fair would the chariots top bow down escaping from the stroke of heaven." Pandit Khem Karan translates it as: "Whose swift riding beasts are twenty camels with their she-camels. The fools are unregardful of the eminent position of man." Pandit Raja Ram gives another interpretation to this mantra: "Twenty camels draw his carriage, with him being also his wives. The top of that carriage or chariot bows down escaping from touching the heaven." All these translations show that the same person is referred to in this mantra to whom the first mantra was referred. All the translations save that of Bloomfield, agree in the fact of his being a camel-rider. These translations also show that the chariots top would be as high as the heaven.[1]

This mantra, thus, clearly shows that the promised rishi will be an Arab. An Indian rishi could not ride a camel. Just as, in the laws of Dharma Shastara, the flesh and milk of a camel is forbidden for an Indian rishi,[2] so it is unlawful for him to ride a camel. The Brahmans also were, in like manner, forbidden from riding a camel. It is written in Manu Samriti: "A Brahman gets polluted by wilfully riding an ass or a camel and by bathing naked. This pollution can be removed only by holding breath for a long time."[3] This prohibition in the Dharma Shastra was due to the very fact that there should not remain any ambiguity in the

---

(1) The Sanskrit word *rath* is used for every kind of carriage and conveyance. In the Rig Veda, it is said that the Sun travels on a golden *rath*, I : 35, 2.

(2) Manu, V : 8, 18.

(3) Manu, XI : 201.

interpretation of this prophecy, and it should be clearly understood that the promised rishi did not belong to India but was a camel-rider rishi of Arabia. No Indian rishi ever rode a camel but the Arabian prophet (may peace be on him) was often riding a camel and taking its milk. The land of the Arabs is known all over the world for its camels and the Arabs are renowned camel-riders.

The Prophet's Wives

THE words *'vadhu mantah davirdarsh'*[1] in the mantra have been given two different translations. Firstly, that the camels drag his chariot in which his wives are also with him. And secondly, the camels with their females drag his chariot. According to the first interpretation the promised rishi is said to have more than one wife which is true of the Holy Prophet, and according to the second, camel-riding is his peculiarity, which is also equally true of the Holy Prophet. Thus both the translations apply to no other rishi but the Holy Prophet Mohammad.

The Prophet's Ascension or Miraj

"THE top of the chariot bows down escaping from touching the heaven." This is a clear reference to the

---

(1) Some copies of the Atharva Veda contain the word *davirdarsh* meaning two beautiful camels or she-camels, but in others we find the word *davirdarsh* means twenty camels with she-camels. We examined both the copies the Deccan College, Poona, and have preferred the reading of *davirdarsh* which means two beautiful she-camels. At the time of his flight to Medina the Prophet had two she-camels, one under him and the other was under Abu Bakr. The Prophet had two she-camels well-known as Qaswa and 'Asba.

Holy Prophet's Ascension or *Miraj*. The Holy Qur'an refers to it, saying: "And he is in the highest part of the horizon."[1] The Prophet's being in the highest part of the horizon and then his bowing down a little or descending, illustrates his relations with God Almighty and man respectively. As a matter of fact, it was his bowing down for the love of man, that made him the beloved one of God, secured for him a place in the highest horizon and brought him so near to the Divine Being.

The beloved Rishi's name

एष ऋषये मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः ।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् ॥ ३ ॥

M. BLOOMFIELD translates it as: "This one presented the seer with a hundred jewels, ten chaplets, three hundred steeds and ten thousand cattle." Prof. Griffith's translation is: "A hundred chains of gold ten wreaths upon the Rishi He bestowed. And thrice a hundred mettled steeds, ten times a thousand cows He gave." Pandit Khem Karan writes: "He gave to that seer a hundred gold coins ten chaplets, three hundred steeds and ten thousand cows." Pandit Raja Ram translates it as follows:—"He gave the *Mamah Rishi* a hundred gold coins, ten chaplets, three hundred steeds and ten thousand cows." All these translations agree in the fact that the Rishi whose name will be 'Mamah' will be

---

(1) Holy Qur'an LIII : 7.

given a hundred gold coins, ten necklaces or chaplets, three hundred good steeds and ten thousand cows.

This mantra gives the Rishi's name as Mamah. No Rishi in India or any other prophet ever had this name. The root of this word is *Mah* which means 'to esteem highly, honour, revere, to magnify, to exalt', etc.[1]

Some Sanskrit books give the Prophet's name as *Mahamad*,[2] but this word, according to the Sanskrit grammar, is also used in a bad sense. Although it is a mistake to apply Sanskrit Grammar to an Arabic word, yet to make the prophecy clear, the word *Mamah*, which has nearly the same pronunciation as the word Mohammad and has the same meanings, is used in the Atharva Veda. *Mamah* is, thus, synonymous to Mohammad, no matter if the pronunciations are not exactly the same. A good many Muslim names are used in Sanskrit books with a little change. Mahmud of Ghazni, for instance, is spoken of as 'Mamud Gajnavi'.[3]

The Rishi of Atharva Veda, therefore, made a little change in the Arabic word Mohammad and used the Sanskrit *Mamah*, although the sense remained the same. He did it to guide the Hindu Pandits to the right and to enable them to depict the true sense of this prophecy, provided they care to do so.

---

(1) Sanskrit-English lexicon by Monier Williams.
(2) Allo-Upanishad and Bhavishya Purana.
(3) Kshitiz (Vanshavli Charit).

The Gold Coins

GOD bestowed upon the Mamah Rishi or the Holy Prophet Muhammad, hundred gold coins. These gold coins were the believers and the early companions of the Prophet which were given him in the turbulent Meccan life, who bore all sorts of hardships and sufferings and consequently became as pure and precious as pure gold. They were the 'foremost, the first',[1] who after a long persecution at the hands of the Meccans, left their homes, their kith and kin and even their beloved Prophet and were constrained to fly to Abyssinia. They forsook all their dear ones and their belongings but did not forsake Islam and thus became the chosen ones of God about whom the Qur'an says: "Allah is well pleased with them."[2] They were put to hard trials and they came out successful in every test. In the words of the Holy Qur'an: "And We will most certainly try you with some what of fear and hunger and loss of property and lives and fruits."[3] Again the Holy Book says: "And We try you by evil and good by way of probation."[4] The word evil (Fitnah) in this verse is explained as to put gold into the fire to separate the impurities from the real gold. Similarly, the early converts to Islam and the companions of the Holy Prophet

(1) The Qur'an : IX. 100.

(2) *Ibid.*

(3) Holy Qur'an, II : 155.

(4) *Ibid.*, XXI : 35.

were tried with evil, were persecuted and put to the fire of hardship and suffering and they became pure as real gold.

It is stated in 'Shatpath Brahmana,'[1] which is considered to be a revealed commentary of the Yajur Veda, that gold is metaphorically used for denoting the spiritual power of a man. The spiritual power in a man that overcomes all difficulties and tests is compared with pure gold. Thus, the companions of the Holy Prophet who faced all sorts of difficulties and bore severe hardships were the coins of pure gold that were granted to the Prophet. One hundred was the number of the companions who emigrated to Abyssinia, fulfilling the prophecy that the Mamah Rishi would be given hundred gold coins.

The ten chaplets

THE second gift granted to the Holy Prophet was ten beautiful and valuable necklaces. They were the ten best companions of the Holy Prophet known as *'Ashra-i-Mubbashshara*. They were the most successful of all Musalmans in their life's mission, and received the glad news of their exaltation in this world and the next from the Prophet's own lips who named each one of them and said 'in paradise'. They were Abu Bakr, 'Umar, 'Uthman, 'Ali, Talha, Zubair, 'Abdur Rahman ibni 'Auf, S'ad bin Abi Waqqas, S'ad bin Zaid and Abu 'Ubeidah (may God be well-pleased with them). Great

---

(1) XIII : 9.1.4.

and innumerable were the sacrifices that they made for the cause of Islam and equally unparalleled was their reward. They were the distinguished personalities about whom the Vedas speak of as *Dash asrijah*—'ten bouquets from the Paradise'.

The word *asrijah* is used in Sanskrit both in the sense of a 'wreath' or a 'bunch of flowers' and a 'chief'. In the Rig Veda[1] we find, "O Ye who want a child, may both Ashvani Kumar Dewta grant you children with wreaths of flowers on their heads."

Three hundred good steeds

THE third gift referred to in the mantra is that of three hundred good steeds. These horses are described as belonging to the Arab breed. The Sanskrit word *Arvah* means a swift Arab horse particularly used by *Asuras* (non-Aryans).[2] The ride of *Agni* and *Indara* (learned and powerful) is also named as *'Arvah'*.[3]

In the light of the Vedic commentary, therefore, the three hundred good steeds[4] of Mohammad were those companions of the Holy Prophet who fought at 'Badr' and besides being three hundred in number were also learned and powerful. They were, at night time, devout worshippers of their Lord and during the day were

(1) Rig Veda, X : 84.2—Atharva Veda, I : 14·1.
(2) *Ibid.*, V : 54·14.
(3) *Ibid.*, VIII : 40·2, VIII : 62·3.
(4) The exact number of the companions who took part in the battle of Badr was 313, but a fraction after a hundred is generally omitted.

great and powerful warriors. No other commander has ever been able to gather such a force as Mohammad did. They were divines as well as soldiers, and in spite of several handicaps with regard to arms and ammunition, etc., overcame a force three times their number.

The ten thousand cows

THE last gift bestowed upon the Holy Prophet, according to this mantra, was the host of ten thousand saints who accompanied the Prophet when he conquered Mecca. They are described in the Vedic mantra as 'cows.' The Sanskrit word *go* is derived from *gaw* meaning to go to war. A cow is called *go* because the Aryans made wars particularly to capture the cows of their enemies. This is why an ox is taken to be a symbol of victory. And very often the same word *go* is used for both an ox and a cow.

A cow or an ox is described in the Vedas both as a symbol of war as well as peace and amity. In the Rig Veda, we find, a mighty soldier who overthrows his enemies, described as a bull '*Gaw iva shaktah.*'[1] Similarly, in Shatpath Brahmana[2] and Taitreya[3] a cow is described as a symbol of ferocity and destruction. At another place in the Rig Veda, is said, *Gaw iva bhimyoh*, 'he is as ferocious and violent as a cow.'[4] In the same

---

(1) Rig Veda, X : 30·6.
(2) V : 2·4, 13.
(3) II : 2·5, 2.
(4) V : 56·3.

Rig Veda, however, a cow is also mentioned as a sign of peace and amity.

"Men of varying intellects, seekers of wealth we live (together) like cows."[1] Similarly, in the Rig Veda, X : 145-6, we find.

"Let your heart turn towards me just as a cow turns towards her calf." Just as a cow bestows her affections on her young one, in like manner, O husband, you should be affectionate towards me. In Shatpath Brahmana, cows are said to be the likes of men. Again, a cow is described as a symbol of worship, fortitude (*aditi*) and knowledge (*saraswati*).[2]

Bearing all these quotations in mind, we again turn towards the mantra and see what is meant by the ten thousand cows of Mohammad. These quotations make two things clear; firstly, that the companions of the Holy Prophet are saintly men, pious and compassionate like a cow, and secondly, they are fierce and strong like *Indra*. Apparently, these virtues are diametrically opposite to each other, but the Holy Qur'an easily solves this difficulty. Speaking of the Holy Prophet and his companions the Qur'an says:—"Mohammad is the Apostle of God, and those with him are firm against the unbelievers, compassionate among themselves; thou wilt see them bowing down, prostrating themselves, seeking grace from God and pleasure."[3] Again it says:

---

(1) X : 112·3.

(2) Shatpath, XII : 9.1.7.

(3)The Qur'an. XLVIII : 29.

"Lowly before the believers, mighty against the unbelievers."[1]

At the battle of Uhud the Prophet saw in a dream that cows were being slaughtered. He himself gave the interpretation that in that battle a number of his companions would be killed. This also shows, that the Holy Prophet's companions were rightly called cows for their compassion and mutual love. The Vedic mantra, thus, gives a vivid picture of the ten thousand saintly companions of the Holy Prophet who accompanied him at the time of the fall of Mecca.

Speaking of these companions, the Holy Qur'an also says: "That is their description in the Torah and their description in the Gospel."[2] The Qur'an, thus, also claims that a description of the Prophet Mohammad and his companions will be found and a reference to them will be met with in various religious scriptures and in the prophecies of a number of prophets.

This mantra of the Kuntap Sukt, as we have seen, clearly gives the Holy Prophet's name as Mamah which besides conveying the same sense as the word Mohammad, also resembles it in form and pronunciation. The mantra also shows that Mohammad was a great rishi who was given as a Divine gift tried and pure companions, who were pure and precious like real gold, and who were so exalted and perfected that they were compared to flowers of Paradise. He was given such com-

---

(1) V : 54.
(2) XLVIII : 29.

panions who were both saintly worshippers of God and brave fighters in the field of battle. History tells us that these signs were fulfilled only in the person of the Prophet Mohammad and his companions and in no body else. The Prophet got these things in the same order in which the mantra describes. First of all he got the hundred gold coins, then the *'ashra-i-mubash-shara* then the three hundred companions who fought in the battle of Badr and lastly ten thousand saints who accompanied the Prophet at the conquest of Mecca. The history of the world cannot point out any other personality possessing these attributes and fulfilling this description save the blessed Prophet of Arabia (peace be on him).

One may deny the truth through bigotry and obstinacy, but one cannot prove two contradictory facts to be true at one and the same time; for *truth cannot be two-faced.*

The Prophet's adoration of God.

वच्यस्व रेभ वच्यस्व वृक्षे न पक्वे शकुनः ।
ओष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षुरो न भुरिजोरिव ॥ ४ ॥

"DISPORT thyself, O chanter, disport thyself as a bird upon a flowering tree, thy tongue glides quickly over the lips as a razor over the strop."—(Bloomfield.)

Glut thee, O singer, glut thee like a bird on a ripe fruited tree.—(Griffith.)

Another translation that Hindu commentators give amounts to the following: "Disseminate the truth,

O ye who glorifies (*Ahmad*), disseminate the truth, just as a bird sings on a ripe fruited tree. Thy lips and tongue move swiftly like the sharp blade of a pair of shears" The Prophet is asked to propagate his religion and to diffuse the truth. The fruit of the tree being ripe, the success of the Prophet is sure. This mantra calls the Holy Prophet as *'Rebh'* which means astute[1] or 'one who praises or extols', and this is the exact translation of the Prophet's Arabic name Ahmad. The Prophet Ahmad, accordingly, preached his religion and the world partook of the ripe fruit that he bore. The Holy Qur'an has, just in accordance with this mantra, set forth a parable of a fruit-bearing tree in these words: "A good word is like a good tree, whose root is firm and whose branches are high, yielding its fruit in every season by the permission of its Lord."[2] A good word or Islam is, thus, likened to a firm-rooted tree bearing fruits.

At another place the Qur'an says: "Surely We have given you abundance of good, therefore pray to your Lord and make a sacrifice. Surely your enemy is the one cut off (from good)".[3] In the light of these verses, the meanings of the mantra are quite clear. God has given abundance of good or ripe fruits to the Prophet Ahmad. He is therefore asked to praise his Lord and extol Him. He moves his lips in the praise of his Lord, swiftly, as the mantra describes, and his

---

(1) Nighantu, III : 16.
(2) The Qur'an, XIV : 24.
(3) CVIII : 1-3.

lips and tongue, like a sharp pair of shears, cut off his enemies from good. This is what actually happened and the Prophet's truth was established just as the Vedic Rishi had foretold.

Prayers in the field of battle

प्रेभासो मनीषा वृषा गाव इवेरते ।
अमोत पुत्रका एषाममोत गा इवासते ॥ ५ ॥

"THE chanters with their pious song hurry on blithely as cows; at home are their children and at home the cows do they attend."—(Bloomfield.)

"Quickly and willingly like kine forth come the singers and their hymns: Their little maidens are at home, at home they wait upon the cows."—(Griffith.)

The purport of the translation given by some Hindu commentators is: "The praying ones with their prayers hurry on like powerful bulls. Only their children are at home, and at home do they wait for the cows."

The army that started from Medina to invade Mecca, was a host of brave fighters. They were the praying ones who while saying their prayers hurried to the field of battle. At Medina, only their females and children were left behind. Just as the young ones of cows anxiously wait at home for their mothers, so were the Muslim children waiting at home for the safe return of the praying ones.

5

The Holy Qur'an says: "And seek assistance. (at the time of battle), through patience and prayer."[1] Displaying of force and at the same time humbly praying to their Lord is a characteristic sign found in no other people of the world save the companions of the Holy Prophet Mohammad. Addressing the Prophet, says the Holy Qur'an, "And when you are among them and keep up the prayer for them, let a party of them stand up with you, and let them take their arms; then when they have prostrated themselves let them go to your year, and let another party who have not prayed come forward and pray with you, and let them take their precautions and their arms."[2]

Very remarkable indeed. is the description of the Muslim warriors, given in this mantra. Like powerful bulls, on the one hand, they hurry to the field of battle and fight bravely, and like meek cows, on the other, they live peacefully with their own people and they pray to their Lord wherever they are whether in a battlefield or outside it.

Propagation of the Book

प्रेभ धियं भरस्व गोविदं वसुविदम् ।
देवत्रेमां वाचं कृधीषुं न वीरो अस्ता ॥ ६ ॥

"BRING hither, O chanter thy poem, that which earns cattle and earns good things! Among the Gods place thy voice as a manly archer his arrow."

— (Bloomfield.)

---

(1) The Holy Qur'an, II : 45.
(2) The Holy Qur'an, IV : 102.

"O singer, bring thou forth the hymn that findeth cattle, findeth wealth. Even as an archer aims his shaft, address this prayer unto the Gods."—(Griffith.)

"O you who praises (the Lord), hold fast the wisdom, which earns cows and good things. Disseminate this among the divines, just as an archer places his shaft on the right point."—(Hindu commentators.)

The *Wisdom,* spoken of in this mantra, is nothing but the Holy Qur'an. Through the Qur'an one can earn the good in this world as well as the next. The Prophet is asked to propagate the teachings of this book among the saintly people, *i.e.* his companions, just as an archer aims his shaft. And the Holy Prophet actually did it. He is the only Prophet whose revelation was preserved in the memory of his followers and companions and whose book was written in his very lifetime. He propagated his Book among his saintly followers and they learnt it by heart. No other revealed book was thus written and preserved.

The Holy Qur'an also corroborates this mantra by saying: "O apostle! deliver what has been revealed to you."[1] Again it says: "Nay! surely it is (a source of) eminence. So let him who pleases mind it. In honoured books. Exalted, purified. In the hands of scribes. Noble, virtuous."[2]

---

(1) V : 67.

(2) LXXX : 11-16.

The Prophet as the best of men and a guide for the world

राज्ञो विश्वजनीनस्य यो देवोमर्त्यां अति ।
वैश्वानरस्य सुष्टुतिमा शृणोता परिक्षितः ॥ ७ ॥

"LISTEN ye to the high praise of the King who rules over all peoples, the God who is above mortals, of Vaishvanara Parikshit."—(Bloomfield.)

"Listen to Parikshit's eulogy, the sovereign whom all people love, the king who ruleth over all, excelling mortals as a God."—(Griffith.)

Hindu commentators have translated this mantra as follows:—

"Sing the high praise of the king of the world or the Light of the Universe, who is a god and the best among men. He is a guide to all people and gives shelter to everyone."

All the attributes expressed in this mantra particularly apply to the Holy Prophet Mohammad. He was the first and the last prophet who was a guide to all nations of the world. Similarly he was the prophet who was described as the best of men. None among the Vedic rishis could acquire such an exalted position, nay even their names are not known to the world. The followers of the Vedas themselves differ as to the superiority of one rishi over the other. Every word of this mantra, therefore, applies to the Prophet Mohammad (may peace be on him). 'Sovereign of the world'. 'Light of the Universe', the best of men, a 'guide

to the entire mankind' and 'a shelter for all peoples'—what a becoming praise of the Holy Prophet sung by the Vedic Rishi!

Gives peace to the world

परिक्षिन्नः क्षेममकरुत्तम आसनमाचरन् ।
कुलायं कृण्वन् कौरव्यः पतिर्वदति जायया ॥ ८ ॥

"PARIKSHIT[1] has procured for us a secure dwelling, when he the most excellent one, went to his seat. (Thus) the husband in Kuru-land when he founds his household, converses with his wife."—(Bloomfield.)

"Mounting his throne, Parikshit best of all hath given us peace and rest, saith a Kauravya to his wife as he is ordering his house."—(Griffith.)

"He, who affords shelter to everybody, gave peace to the world, as soon as he mounted the throne. Men in Kuru-land are talking of his peace-making at the time of the building of the house."

—(Hindu commentators.)

At the time of the reconstruction of Ka'ba (the House of God), the Arab tribes were just at the point of cutting each other's throats, when the matter was referred to the Holy Prophet, and he settled the dispute

---

(1) The 'Sanskrit Bhashya' of Khem Karan gives two meaning of the word Parikshit, '*Sarvat Aishvary Yuktasya*' (possessing all sorts of attributes and power), and secondly, 'one who gives a complete shelter to people'. The Holy Qur'an also speaks, of the Holy Prophet as "Lower thy wing to the faithful." (XV : 88.)

in such a beautiful way that all the tribes were satisfied without a drop of blood having been shed. The Prophet thus gave peace to the world and protected the House of God from human blood being shed in it. Similarly, at the time of the conquest of Mecca, when the Prophet's rule was established, he gave peace and shelter even to his bitterest foes and let them go just by saying: "There shall be no reproof against you this day."[1]

The word *Kauravya* used in this mantra requires some comment. The battle between the Pandvas and the Kurus is well-known in the religious literature of the Hindus, a mention of which is also made in the Mahabharta. The field where this battle was fought is known till to-day as 'Kurukshetra.' The Kurus were a very ancient people, whom the Rig Veda called as *Puru.* Originally these people belonged to Babylon, and they came to India some time after the emigration of the Aryan people from that land. The Bible also makes a mention of a nation known as *Kora* who had a dispute with the children of Aaron in connection with their offerings at the Holy Temple at Jerusalem. A man belonging to this nation is, thus, known as Kauravya. This word has also been translated as a 'workman,' and this is just in accordance with the sense in which this word is used in this mantra, *i.e.* a 'mason' or a house-builder. In Hebrew, the word Kuru means 'one who protects a house', *Kore* meaning a house, in

(1) XII : 92.

Hebrew and also in Pashto. It is also possible that this word may be another form of the word *Koreish*.

Peaceful realm

कतरत त आ हराणि दधि मन्थां परिस्रुतम् ।
जाया पतिं वि पृच्छति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ॥ ९ ॥

"WHAT may I bring to thee, curds, stirred drink, or liquor? (Thus) the wife asks her husband in the kingdom of king Parikshit."—(Bloomfield.)

"Which shall I set before thee, curds, gruel of milk, or barley brew? Thus the wife asks her husband in the realm which King Parikshit rules."—(Griffith.)

"In the realm of the King, who gives peace and protection to all, a wife asks her husband whether she should set before him curd or some other liquor."

—(Hindu commentators.)

This mantra also refers to the peaceful realm which the Promised One, the Parikshit, was to bring about. It is narrated as a prophecy in the early Traditions of the Prophet, that a time will come in Arabia when a woman will be able to travel alone from Medina to Mecca without fearing anything on the way. And the world has seen how after the advent of the Prophet peace and security spread all over Arabia, whereas before the appearance of Islam neither a woman's chastity was safe nor was there security of life and property. During the peaceful rule of the Prophet women could

easily travel alone and go about in a market to buy and sell things.

The signs of a true religion

अभिव स्व१: प्रजिहीते यव: पक्व: परो विलम्
जन: स भद्रमेधते राष्ट्रे राज्ञ:परिक्षित: ।। १० ।।

"LIKE light the ripe barley runs over beyond the mouth (of the vessels). The people thrive merrily in the kingdom of King Parikshit."—(Bloomfield).

"Up as it were to heavenly light springs the ripe corn above the cleft. Happily thrive the people in the land where King Parikshit reigns."—(Griffith.)

"The ripe barley springs up from the cleft and rises towards heavens. The people prosper in the reign of the king who gives protection to all."

—(Hindu commentators.)

One of the chief signs of a true religion and the Kingdom of God is that people thrive happily and prosper under its rule, just as corn springs up in a good field. Before the advent of the Holy Prophet, the Arabs were sunk in all sorts of vices and had fallen deep in degradation. But with the spiritual force of the Prophet and the blessings of his religion, the same people rose to the height of glory and eminence. The Torah, the Gospel, the Vedas and other Divine books also bear witness to this fact, as the Holy Qur'an says: "That is their description in the Torah and their description in the Gospel; like as seed-produce that puts

forth its sprout, then strengthens it, so it becomes stout and stands firmly on its stem."[1]

The Vedic words *abhivsvah prajihite yavah* (the barley springs forth and rises up) convey the same idea as expressed in the above-quoted verse from the Holy Qur'an. The Holy Book again says at another place· "Hast thou not considered how God sets forth a parable of a good word (being) like a good tree, whose root is firm and whose branches are in heaven, yielding its fruit in every season by the permission of its Lord? And God sets forth parables for men that they may be mindful."[2]

Both the Veda and the Qur'an have set forth this parable as the parable of a true religion. The Qur'an calls it a good tree and the Veda calls it *bhadram*, meaning goodness and affluence. According to the Qur'an the roots of the good tree are firm in the ground, and according to the Veda the roots of *Yavah* (or tree of barley) are deep in a cleft. The Qur'an says that its branches are in the heaven, and the Veda also states that it rises towards heaven. The Qur'an then says: "Allah confirms those who believe with the sure word in this world's life and in the hearafter."[3] The Veda, in like manner, states that man prospers and thrives happily under the rule of a true religion. The Qur'an

---

(1) XLVIII : 29.

(2) XIV : 24, 25.

(3) XIV : 27.

describes it as a ripe tree "Yielding its fruit in every season",[1] and the Veda also describes it as a ripe tree.

The Holy Qur'an has given this parable in support of the Holy Prophet Mohammad's truth, and we have seen how the Vedic mantra corroborates it word by word. In the words of the Qur'an. "God sets forth parables for men that they may be mindful;" let the followers of the Vedas, therefore, ponder over these facts and just as the Qur'an corroborates the Vedic mantras, they too should believe in and testify to the truth of the Prophet Mohammad in whose support these verses and mantras speak.

The Prophet is asked to arise and warn

इंद्रः कारुमबू बुधदुत्तिष्ठ वि चरा जनम् ।
ममेदुग्रस्य चर्कृधि सर्व इत ते पृणादरिः ॥ ११ ॥

"INDRA has awakened the poet, saying: Arise, move about, and sing; of me, the strong, verily, sing the praises; every pious one shall offer thee (sacrificial reward)."—(Bloomfield.)

"Indra hath waked the bard and said, Rise wander singing here and there. Praise me, the strong each pious man will give thee riches in return."—(Griffith.)

"Indra awoke the singer of his praises and asked him to go to the people in every direction He was asked to glorify Indra, the mighty, and all pious men would

(1) XIV : 25.

appreciate his effort and God would bestow on him His rewards."—(Hindu commentators).

This mantra gives, more or less, the exact translation of the first verse of the 74th chapter of the Holy Qur'an, 'The Clothed One' (*Al-Muddaththir*). "O you who are clothed! Arise and warn, and your Lord do magnify."[1] Then says the Qur'an: "And bestow not favours that you may receive again with increase, and for the sake of your Lord, be patient."[2] Again, "And soon will your Lord give you so that you shall be well pleased."[3] At another place is said: "Surely We have given you abundance of good, therefore, pray to your Lord and make a sacrifice."[4]

Without any remark or comment, we have given the exact translation of the Vedic mantra and the Qur'anic verses, so that every unbiased seeker after truth should see for himself how thousands of years before the Vedic rishi uttered the same words which were revealed to the Prophet Mohammad. This mantra alone is enough to establish the truth of the Prophet's claim. The Qur'an says: "O you who are clothed! Arise." The Veda says: "Indra awoke the singer of his praises (*i.e., Ahmad*)." The Qur'an tells him to warn the people, and similarly, in the Veda he is asked to go to the people in every direction. The Qur'an says: "And your Lord do magnify," the Veda says, "Glorify

---

(1) The Qur'an, LXXIV : 1—3.
(2) *Ibid* : 6—7.
(3) XCIII : 5.
(4) CVIII : 1, 2.

Indra, the mighty." According to the Qur'an, his Lord will give him abundance of good; and in the words of the mantra, God will bestow on him His rewards.

All these clear signs were fulfilled in the person of the Prophet Mohammad and in no other rishi or messenger. He arose and warned the people and magnified his Lord. Day and night he propagated his Faith and disseminated the truth, and, in the words of the Veda, like a bird on a ripe-fruited tree he sang his Lord's praise. O God bless the Prophet Mohammad.

The Prophet's Munificence

इह गाव: प्रजायध्वमिहाश्वा इह पूरुषा: ।
इहो सहस्रदक्षिणोपि पूषा नि षीदति ॥ १२ ॥

"HERE, O cattle, ye shall be born, here, ye horses, here, ye domestics! And Pushan also, who bestows a thousand (cows) as sacrificial reward, settles down here."

—(Bloomfield.)

"Here, cows! increase and multiply, here ye, O horses, here, O men. Here with a thousand rich rewards, doth Pushan also seat himself."—(Griffith.)

Hindu commentators give the following translation: "Cows, horses, and men multiply and increase here, because here rules the one who is bountiful and splendidly generous who gives thousands in charity and sacrifice."

The history of Islam bears a clear testimony to the truth of this prophecy. The world has seen how everything prospered and increased in the Holy Prophet's kingdom. The most backward people in the world became the very leaders and torch-bearers of light and learning. Riches, men and cattle, everything increased and multiplied. And this too is an established fact that Mohammad was the most generous, bountiful and kind-hearted man that the world has ever seen.

The Holy Qur'an says: "Thus it is due to mercy from Allah that you deal with them gently, and had you been rough, hard-hearted, they would certainly have dispersed from around you."[1] It was, thus, due to the Prophet's kindheartedness, magnanimity and munificence that people from all quarters flocked and assembled around him. Otherwise such a stubborn people as the Arabs could never have been won over and subdued.

The Vedic Rishi's Prayer for the Prophet

मेमा इन्द्र गावोरिषन् मो आसां गोपती रिषत ।
मासाममित्रयुर्जन इन्द्र मा स्तेन ईषत ॥ १३ ॥

"MAY these cattle, O Indra, not suffer harm, and may their owner not suffer harm, may the hostile folk, O Indra, may the thief not gain possession of them."

—(Bloomfield.)

(1) III : 158.

"O Indra, let these cows be safe, their master free from injury. Let not the hostile-hearted or the robber have control of them."—(Griffith.)

"O Indra, let these cows (saintly followers of the Prophet) be safe, and let not their master be harmed. And let not an enemy, O Indra, or a robber overpower them."—(Hindu Commentators.)

How remarkable is this prayer of the Vedic Rishi for the Holy Prophet and his followers. There is no gainsaying the fact that this prophetic prayer of the Rishi was clearly fulfilled. The Prophet and his saintly followers succeeded in their mission and were saved and helped by the Hand of God. Their hostile opponents and bitter enemies could not overpower them nor could rob them of the bounties that the Prophet had bestowed on them. The Muslims prospered whereas their enemies perished, and thus the prayer of the Rishi was accepted. A similar prayer is also found in the last chapter of the Holy Qur'an: "Say, I seek refuge in the Lord of men, the King of men, the God of men, from the evil of the whisperings of the slinking (devil), who whispers into the hearts of men, from among the Jinn and the men."

The Prophet is also reported to have taught a prayer to his followers: "O God empower him not over us who has no mercy for us." And God Himself says about the Holy Prophet in the Qur'an, "And Allah will protect you from the people."[1] The Rishi prayed to

(1) V : 67.

God for the safety of the Prophet, and God accepted that prayer and declared that the Prophet would remain safe and would succeed in his mission.

The Rishi's Praise and Prayer

उप नरं नोनुमसि सूक्तेन वचसा वयं भद्रेणवचसा वयम् ।
चनो दधिष्व नो गिरो न रिष्येम कदाचन ॥ १४ ॥
अथर्व-वेद-संहिता काण्ड २० ॥ १२७ ॥ १-१४

"WE shout to the hero with hymn and song. We (shout) with a pleasing song. Take delight in our songs; may we not ever suffer harm!"—(Bloomfield.)

"Oft and again we glorify the hero with our hymn of praise, with prayer, with our auspicious prayer. Take pleasure in the songs we sing; let evil never fall on us."—(Griffith.)

"We sing the praise of the great hero and with a pleasing song glorify him. Pleasingly accept this praise, O hero, so that evil may not befall us."
–(Hindu commentators.)

This is the last of the mantras that we have quoted in the foregoing pages, and here the Rishi of the Veda entreats the Holy Prophet to accept his prayers and praise. This entreaty of the Rishi, as a matter of fact, makes it incumbent on the followers of the Vedas that they too should sing the praise of the Prophet and by his glorification save themselves from the evils of this world as well as the next. The false doctrines of the caste system, the transmigration of soul and other

superstitions, are the chains that have enslaved them in this world; and similarly their religious differences have made their salvation and deliverance a matter of doubt in the next world as well. Mohammad, therefore, came into the world to deliver the people from all sorts of vices and to show them the right path.

Some more facts about these prophecies

SOME more light is necessary to be thrown on the prophecies in the Atharva Veda that we have discussed in the foregoing pages. There are two different schools of thought regarding these prophecies in the Kuntap Sukt. Some modern research students like Pt. Bhagwat Dat, research scholar in the D. A. V. College, Lahore, and Sawami Hari Prashad, Vedic muni, are inclined to think that the Kuntap Sukt, or the collection of these prophecies, does not actually from part of the Atharva Veda but was introduced to it on a later date. The second school of thought is, that these mantras are riddles and un-intelligible enigmas. And the modernists too, have, as a matter of fact, derived their conclusions after not being able to understand what these mantras mean.

The idea that the Kuntap Sukt were introduced to the Atharva Veda on a later date, is baseless on various scores. The most ancient books too do not fail to make a mention of the Kuntap Sukt, as for instance. The ***Aitreya Brahmana,***[1] ***Kaushitki Brahmana,***[2] ***Shankha-***

(1) VI : 32.
(2) XXX : 5.

yana Shraut Sutar,[1] *Ashvlayana Shraut Sutar,*[2] *Vaitan Sutar*[3] *and Gopath Brahmana.*[4] Had these mantras been appended to the Veda on a later date, they could not have been referred to in so many ancient books. Simply because they are not easily intelligible, should not lead one to think that they do not form part of the real book. Secondly, these mantras, as stated in *Brahmana Granth* were repeated every year in big assemblages where *soma* was offered to the deities, and seventeen pandits used to chant them for a long time. Thus, a thing which is repeated every year with devotion and strictness and is an agelong practice can not be regarded as apocryphal or a later-day invention. Only those parts of a religious book are given so much importance and remembered by heart and read with strictness, which are useful and beneficial for the devotee and help him in acquiring a deeper knowledge of this universe and knowing more about the Divine Being. This shows that the Kuntap Sukt is neither a collection of meaningless riddles nor a subsequent addition to the Veda.

It is recorded in Shatpath Brahmana that "The mantras that are divided by 21 are the belly. There are 20 glands (Kuntap) in the abdomen, the belly itself being twenty-first. Thus the mantras that are divided by 21 are known as the belly."[5] The testimony of

---

(1) XII : 14.
(2) VIII : 3, 7.
(3) XXXII : 19.
(4) II : 6, 12.
(5) XII : 2, 1, 126.

such an ancient book as Shatpath Brahmana is enough to prove the genuineness of these mantras. Even to-day the total number of these mantras is 147 which is seven times divided by 21.

Morris Bloomfield in his commentary of the Atharva Veda writes: "The Brahmanical authorities agree in assigning the so-called Kuntap hymns to this kind of literature, and the opening stanza of XX : 127. leaves no room for doubting their correctness....... Quite a number of the stanzas of Kuntap hymns are quoted in the Brahmanas exhibiting essentially the same textual corruption as the Atharvan version. The Shankhayana Shraut Sutar XII : 14, exhibits them in full."[1] Prof. Maxmuller also discusses this point in his 'History of Sanskrit Literature', p. 493.

A number of scholars are of the opinion that these mantras give no clear sense and are quite ambiguous. Pandit Raja Ram, for instance, writes: "These ten Suktas are known as Kuntap Sukt. Kuntap are the glands in the belly which are twenty in number. These Suktas cover different subjects, most of them are just riddles, the text as well as the meanings are ambiguous and in some cases the text absolutely gives no sense."[2] Similarly, M. Bloomfield says: "The text of the second hemistich is very corrupt; its amended form in the edition is at the base of our rendering."[3] In like manner, Prof. Griffith writes about these mantras as

(1) P. 689.
(2) Raja Ram Bhashya, 991.
(3) P. 991.

follows: "The section of this book which bears the name Kuntap is a strange miscellaneous collection of hymns, sacrificial formulas, incantations, riddles and odds and ends."[1]

These mantras are regarded as riddles simply because they are prophecies and a prophecy must necessarily be ambiguous and a secret lest it may be corrupted through the bias and prejudice of a people. When it is actually fulfilled, the meanings of the prophecy become quite clear. Actual facts are thus, the real commentary of a prophecy. While translating these mantras of the Kuntap Sukt, we have shown, how exactly do they apply to the life of the Holy Prophet. No ambiguity remains in their meaning and everything becomes vivid and clear. And of all the religious personalities and prophets Mohammad is the only prophet whose life-history with the minutest details is exactly and undisputably preserved. There are historical proofs for all the facts in the Holy Prophet's life. And therefore if one tries to apply these prophecies to the life of some other holy personality, one shall also have to historically prove that these things did happen in his lifetime, and this is, as modern research has proved, next to impossible.

Now the question is, why these mantras are called Kuntap? If Kuntap means abdominal glands, in what way does this name apply to these mantras? No commentator of the Vedas has discussed this point and

---

(1) Hymns of the Atharva Veda, p. 433 and foot-note.

tried to solve this riddle. We give below three reasons for this name.

(*a*) The word Kuntap is composed of two words *kuh* and *tap*. *Kuh* means sin and misery, and *tap* means to consume. Kuntap, thus, means 'consumer of sin and misery'. A collection of all those mantras in which a mention is made of the redresser of the world's misery is known as Kuntap Sukt. A similar prophecy is found in Farvardin Yasht, XXVIII : 129, made by the Prophet Zoroaster. The Holy Qur'an also says: "(The Prophet) enjoins them good and forbids them evil, and makes lawful to them the good things and makes unlawful to them impure things, and removes from them their burden and the shackles which were upon them."[1]

(*b*) The word Kuntap according to authentic Brahmana Garanths means glands in the belly or the belly itself. These mantras are, thus, given this name because they convey a prophecy about the first house of Divine worship in Mecca, the navel or middle-point of this earth; as the Qur'an says: "Surely the first house appointed for men is the one at Bekka, blessed and a guidance for the nations."[2] Just as man receives nourishment from the abdomen, similarly, spiritual nourishment is given to the world from Mecca or Bekka, the first house of Divine Light.

(*c*) The Quranic word Bekka and the Vedic Kuntap are not only synonymous, but the word Kuntap is

---

(1) VII : 157.
(2) III : 95.

just a changed form of the Arabic word Bekka. Hundreds of words in the Sanskrit language are borrowed from Arabic and are used in the former language with a slight change.

It is a strange fact that in all prophecies the word Bekka is used instead of Mecca. The Holy Qur'an locates at Bekka the first as well as the last house of Divine worship. Besides the Vedas, the Prophet David also refers to this house of God by the same name. In the Psalms we find: "O Lord of hosts, my King and my God. Blessed are they that dwell in thy house: they will be still praising thee, Selah. Blessed is the man whose strength is in thee; in whose heart are the ways of them. Who passing through the valley of *Baca* make it a well; the rain also filleth the pools. They go from strength to strength, every one of them in Zion appeareth before God."[1]

The following conclusions can be drawn from the Psalms:—

(*i*) The house of God to which David refers was no other but the one at Bekka, for the holy temple in Jerusalem had not been built at that time and God lived in Zion.

(*ii*) The prophet David was awaiting the Divine commandment to invade Palestine, and in order to seek blessing from the house of God that was built by the patriarch Abraham, he came to the valley of Baca.

(*iii*) The name of the valley is Baca, which, in Hebrew, is written and pronounced as *Bacah*, the last letter *h* showing that it is a well-known place.

(*iv*) The dwellers of this valley will always praise their Lord. And the world knows how much do the Musalmans praise and glorify their Lord. Every Muslim bows before his Lord and praises Him at least five times a day. These words can also mean that the house of God in Bekka will never perish and the Lord will always be praised therein, whereas Jerusalem was more than once destroyed.

(*v*) "Blessed is the man whose strength is in thee" clearly refers to the Prophet, who, though an orphan boy, weak and friendless, overcame his mighty foes with God's grace and taking strength from Him.

(*vi*) In the desert of Mecca the well (of Zamzam) is another sign of God's blessing this land.

(*vii*) Blessed one and 'going from strength to strength', is the translation the Quranic words.[1]

(*viii*) "Appearing before God in Zion", refers to the annual pilgrimage at Mecca. We have discussed at length what Zion denotes, in the sixth prophecy of Isaiah.

Thus, both the Veda and the Psalms confirm the fact that the Prophet Mohammad, the guide for the world and the saviour of mankind was to appear at Bekka.

---

(1) III : 95.

The Veda sings the Prophet's praise in the following terms:—

1. He is *narashansah* or the praised one (Mohammad).

2. He is the prince of peace or the emigrant, who is safe even amongst a host of opponents. (Mantra 1.)

3. He is a camel-riding Rishi, whose chariot touches the heaven. (Mantra 2.)

4. He is Mamah Rishi who is given a hundred chains of gold, ten wreaths, three hundred good steeds and ten thousand cows. (Mantra 3.)

5. He and his followers are always mindful of their prayers, even in the field of battle they bow down before their Lord. (Mantra 4.)

6. He gave wisdom unto the world, *i.e.* the Holy Qur'an. (Mantra 5).

7. He is the King of the worlds, the best of men and a guide for the entire mankind. (Mantra 6.)

8. He has procured a secure dwelling for the people, gives protection to everybody and has spread peace in the world. (Mantras 7-8.)

9. People thrive happily and prosper under his rule, and from the depth of degradation they rise to the height of glory. (Mantras 9-10.)

10. He is asked to wake up and warn the world. (Mantra 11.)

11. He is extremely bountiful and very generous. (Mantra 12.)

12. His followers have been saved from the hostility and robbery of the devil. (Mantra 13.)

13. In the last Mantra, the Rishi has entreated him for the acceptance of his (Rishi's) prayers and have sought his protection from harm and evil.

ते त्वा मदा अमदन् तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते।
यत् कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हय:।६।
युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम्।७।
त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः।षष्टिं सहस्रा
नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ।। ९ ।।

अथर्व वेद काण्ड २० । २१ । ६–७, ९ ।

अवद्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
आवत् तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त ।७।
द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः ।
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ।८।
अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत् तन्वं तित्विषाणः ।
विशो अदेवीरभ्याचरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे ।९।

अथर्व-वेद काण्ड २० । १३७ । ७–९

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानरः त्र्यरुणश्चिकेत ॥
ऋग्वेदः म० ५ । सू० २७ । १ ॥

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत् ।
मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत् पवमानोधि शीर्षतः ॥ २६ ॥
तद् वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुब्जितः ।
तत् प्राणो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मनः ॥ २७ ॥
ऊर्ध्वो नु सृष्टा३स्तिर्यङ नु सृष्टा३ः सर्वा दिशः पुरुष आ बभूवाँ३।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते ॥ २८ ॥
यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरम् ।
तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राणं प्रजां ददुः ॥ २९ ॥
न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरः ।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते ॥ ३० ॥
अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥ ३१ ॥
तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठते
तस्मिन् यद यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः ॥३२॥
प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम्
पुरं हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम् ॥ ३३ ॥
अथर्व वेद—काण्ड १० । २ । २६—३३

अहमिधि पितुः परिमेधामृतस्य जग्रह। अहं सूर्य इवाजनि॥

सामवेद०। प्र० २। द० ६ मं० ८॥

THE BATTLE OF THE ALLIES DESCRIBED IN THE VEDAS

से त्वा अमदन् तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते

यत कारवे दश वृत्रायप्रति वर्हिष्मते नि सहस्त्रानि वर्हयः।६।

"THESE our libatious, strength-inspiring soma draughts, gladdened thee in the fight with Vritra, Hero Lord. What time thou slewest for the singer with trimmed grass ten thousand Vritras, thou resistless in thy might."—(Griffith.)

"Lord of the truthful! these libatious drinks these feats of bravery and the inspiring songs gladdened thee in the field of battle. When thou renderst vanquished without fight the ten thousand opponents of the praying one, the adoring one."

—(Hindu commentators.) Atharva Veda XX : 21, 6.

This prophecy of the Vedas describes a well-known battle of the Holy Prophet, known in the Islamic history as the Battle of Ahzab or the Battle of the Allies. The words of the mantra remarkably corroborate with the facts of history as given in the Holy Qur'an.[1]

The first noteworthy point is that God is spoken of in this mantra as *Satpati*. *Sat* means a lover of

---

(1) III : 158.

truth or truthful, and *pati* means the master or lord. Satpati, thus, means the Lord of the truthful. The companions of the Holy Prophet Mohammad were well-known for their truthfulness. In the very chapter of the Qur'an where a mention is made of the battle of the Allies, the companions of the Prophet are spoken of as: "Of the believers are men who are true to the covenant which they made with Allah."[1] And then, "That Allah may reward the truthful for their truth."[2] The Qur'an calls them truthful and the Veda also calls their Lord as the Lord of the truthful.

The second thing in the mantra is that God was pleased with the bravery and inspiring songs of the companions of the Prophet. They were only three thousand in number with inadequate resources and the enemy besides being well-equipped was more than three times their number; but the companions of the Prophet showed no sign of anxiety, they were rather delighted to find that a prophecy of the Holy Prophet was fulfilled. In the words of the Holy Qur'an: "When the believers saw the allies, they said: This is what Allah and His Apostle promised to us, and Allah and His Apostle spoke the truth; and it only increased them in faith and submission." These brave and inspiring words of the companions pleased their Lord and He gave them a victory without an actual conflict.

---

(1) XXXIII ; 23.
(2) XXXIII : 24.

The Prophet Ahmad

THE words of the Mantra, 'the praying one', show that this prophecy is meant for the Prophet Ahmad, peace be on him. The Sanskrit word *Karu,* used in the mantra, has been translated by Professor Griffith as 'Singer' and Pandit Raja Ram, of the Lahore D.A.V. College, translates it as *'Satota'* meaning the praying one or Ahmad, the second name of the Prophet Mohammad, who was the hero of the battle of the Allies.

Another attribute of the Prophet given in this mantra, is *Brihashmate.* This word is derived from the root *Brhi* which means holy grass that is spread in a temple of worship. The man with the holy grass, thus, metaphorically means, 'the worshipper' or the one who adores his Lord.

The ten thousand opponents

THE main point is that of ten thousand opponents. The enemies of the Prophet in the battle of the Allies were ten thousand, and the Musalmans were only three thousand in number. The mantra makes a special mention of the bravery of the Prophet's companions. And there could be no greater proof of their valour and courage than the fact that inspite of being small in number and having insufficient resources, they on seeing a host of well-armed opponents did not lose heart or show any sign of anxiety, but shouted "This is what Allah and His Apostle promised to us." It gave them the greatest pleasure to notice another sign of the

truth of their prophet who had made a prophecy about this battle long before it actually took place.

A mention is made in this mantra[1] of the valour and bravery of the fighters, of the strength of the opponents and their large number, but their defeat and retreat is described to be due only to the adoration of Ahmad. The last words of the mañtra *'aprati ni barhayah'* mean that defeat was given to the enemy without an actual fight. Both Pandit Khem Karan and Prof. Raja Ram have translated these words as 'you overthrew without an actual struggle.'

It is a well-known fact that the Muslims, as compared to their enemy, were small in number and handicapped in every possible way, and on this very account they preferred to offer resistance by shutting themselves up in Medina. The enemy, on the other hand, had accumulated a huge force, and even the non-Muslim population of Medina itself had gone to their side. In spite of all these advantages the enemy took to its heals without an encounter and the victory was for the Muslims. All this was accomplished through Divine help, for it was beyond man's power to bring about such a victory. The Veda had, accordingly, made a prophecy long before this battle took place.

The deity referred to in this mantra is named as *Indra.* He is also addressed in mantras 1 to 8 of the same Sukta. This Indra is described in the Rig Veda as *'Thunder Wielding'* and the God of lightning and

---

(1) Atharva Veda, XX : 21, 6, Rig Veda, I ; 53, 6

wind-storm. And the cause of the flight of the enemy in the battle of the Allies was also thunder and storm. How vivid and clear are the words of the mantra, 'O Indra, you caused the ten thousand opponents to be vanquished without an actual fight.' These prophetic words of the Vedic Rishi do not apply to any other occasion with such an appropriateness as to the battle of al-Ahzab. The enemy came with pomp and show, conscious of its strength and confident of its success. The Muslims too were quite aware of their weak position, they decided to remain in the town, and a ditch was also dug as a protective measure against the onrush of the powerful force. But the Divine Hand moved and the mighty Indra caused the enemy to fly away fearing death through thunder and wind storm.

In a word, this prophecy of the Vedas enumerates the following ten facts:—(1) It relates to a battle. (2) God will give victory to the true believers. (3) The true believers will rejoice and utter brave and strength-inspiring words. (4) God will be pleased with them on account of their bravery. (5) The commander in this battle shall be one who adores God (Ahmad). (6) The enemy shall be ten thousand in number. (7) No actual fight shall take place. (8) The enemy shall take to flight through Divine help, as the Holy Qur'an says "And Allah sufficed the believers in fighting; and Allah is Strong, Mighty."[1] (9) The Quranic words (Strong, Mighty) mean exactly what *Indra* means.

---

(1) XXXIII : 25.

(10) The Divine hand made itself manifest through a great hurricane. In the words of the Qur'an: "O you who believe! call to mind the favour of Allah to you when there came down upon you hosts, so we sent against them a strong wind and hosts that you saw not, and Allah is Seeing what you do."[1] Wind and rain beat mercilessly on the enemy's camp. The storm rose to a hurricane. Fires were extinguished, tents blown down, cooking vessels and other equipage overthrown. The enemy thus took to its heels leaving the field to the Muslims and establishing the truth of the Prophet Mohammad's Divine mission (peace and blessings of Allah be upon him).

The Prophet fights another battle

Mantras 7 to 11 in the Atharva Veda, following the one that deals with the battle of the Allies, are also worth considering. During this battle all the opponents of Islam had united together. The Jews were in alliance with the Holy Prophet, and when the enemy laid siege to Medina they were bound to repel the attack. Instead of this they sided with the investing army and made an agreement with the Quraish to attack the Muslims from within. Thus from allies they had turned foes. Therefore, when the besieging army took to flight and the Jews returned to their fortress, it was besieged by the Holy Prophet, and they remained besieged for twenty-five days. There is no mention of

(1) XXXIII: 9.

fortresses in the mantra dealing with the battle of the Allies, but here we find.

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा।
नम्या यदिन्द्र संख्या परावति निवर्हयो नमुचि नाम मायिनम्।७।
अथर्व वेद काण्ड २०-२१-

"Thou goest on from fight to fight intrepidly destroying castle after castle here with strength. Thou Indra, with thy friend who makes the foes bow down slewest from far away the guileful Namuchi."[1]

—(Griffith).

"You go from one battle to another with bravery destroying fortress after fortress here with your bravery and strength. You, O Indra, with your friend who prays to God, have slain from far away the cunning and treacherous Namuchi."

Atharva Veda XX : 21, 7—(Hindu commentators).

The Prophet had just finished with one battle when he was required to fight another one. This was a clear sign of his bravery and that of his companions. In the first battle, of course, they had to destroy no castle, but in the other one, they overthrew fortress after fortress and cast awe into the hearts of their enemies. In the words of the Holy Qur'an: "And He drove down those of the followers of the Book who backed them from their fortresses and He cast awe into their hearts: some you killed and you took captive another part."

---

(1) Rig Veda : I, 53, 7

Just as mantra 6 of this Sukta exactly applies to the battle of the Allies, similarly, the events narrated in the following mantra also with the same appropriateness correspond to the events in the life of the Prophet and relate to the period just after the battle abovementioned. That is why the Prophet is said to be going from fight to fight. This endeavour of the Muslims was no doubt, a sign of their valour and intrepidity. The Prophet over threw the fortresses of Quraiza, Qainuq'a and Nadir. Again, the words of the mantra, *Namya yat Indra sakhya* (with your, friend who bows before or prays to God, O Indra), beautifully apply to the Holy Prophet Mohammad who was always praying to his Lord. The enemies of the Prophet are called in this mantra as the people lying far away or cast off by God. The Bible also bears a testimony to this and states that these people were rejected by the Lord.[1] Again, these enemies of the Muslims, the Jews, are described in this mantra as 'guileful and cunning.' These people were the allies of the Muslims and by the terms of the treaty, they had made with the Prophet, were bound to fight the enemy attacking Medina. But they proved treacherous and guileful and deserted their allies at the eleventh hour. The Sanskrit word *mayinan* is derived from *maya* which means a thing that is apparently beautiful but in fact has no value. The Bible has also described these people as Reprobate silver.[1]

The Veda has called these people *Namuchi*. The meanings of this word as given in Panini's grammar

(1) Jeremiah; IV : 30.

are, 'one who withholds rain.' Another meaning of this word is 'punishable.' The Jews held that they were the only recipients of Divine revelation and the rain or shower of Divine revelation had fallen on no other people. Indra or God the Mighty slew these people and thus showed that none could withhold Divine revelation, it was neither limited to the Jews nor the Aryan people but was the gift of God and could be bestowed on anyone as He pleased.

This word, as we have said, also means punishable. The Jews were punishable in the eyes of God not only for their vices but also for their deceit and treachery to the Holy Prophet Mohammad, the benefactor of mankind. Accordingly, they were punished for their treachery and were condemned to murder, and this judgment was pronounced by a leader of their own. The word *Namuchi*, thus, well applies to the Jews.

In the Rig Veda and other such books *Namuchi* stands for the evil spirit that stops the clouds from bringing rain on earth; and then Indra, slaying this evil spirit, releases the clouds. Almost all nations of the world hold that Divine revelation is limited to their particular sphere, and have, thus, confined the clouds of Heavenly rain to themselves. But the world is indebted to the Prophet of Islam who slew this *namuchi* and declared that the shower of spiritual rain has been falling on all people and is not limited to any caste or clan. The Holy Qur'an says: "And Allah has sent down water from the cloud and therewith given life to the earth after its death; most surely there is a sign in

this for a people who would listen."[1] By *water from the heaven* is clearly meant Divine revelation. Just as rain gives physical life to the earth, so does revelation give spiritual life to the people after they have suffered death through their vices. Thus, the universal message of the Prophet gives life to all the nations of the world, for the Prophet has done away with *namuchi*, the evil spirit.

The enemy's defeat in the conquest of Mecca

THE prophecies regarding the Prophet's battles end with the prophecy of the conquest of Mecca. In the same Sukta of the Atharva Veda, we find:

त्वमेतांजनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुनासुश्रवसोपजग्मुषः।षष्टिंसहस्रा
नवतिं नवश्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ ९ ॥

"With all outstripping chariot wheel, O Indra, thou far-famed, hast overthrown the twice ten kings of men, with sixty thousand nine and ninety followers who came in arms to fight with friendless Sushravas."[2]

—(Griffith.)

"You have O Indra, overthrown twenty kings and sixty thousand ninety-nine men with an outstripping chariot wheel who came to fight the praised one or far-famed (Mohammad) orphan."

—(Hindu commentators.)

We have stated in the foregoing pages that the population of Mecca at the time of the Prophet's advent

---

(1) XVI : 65.
(2) XX : 21, 6—9.

was nearly sixty thousand. Mecca at that time had a a sort of democratic government. Every clan had its own chief and thus some twenty chieftains ruled the population, the Quraish being the highest chiefs and custodians of the Ka'ba. Thus, on the one hand there were sixty thousand men with twenty big chiefs, and on the other was an *abandhu,* just a helpless man. But this one man (Mohammad) was far-famed and praised by the people. It was not a fight between two kings, but between one man and a host of opponents; and the world has seen how that helpless man overcame his enemies and how the Hand of God moved like an out-stripping chariot to overthrow his opponents. Only this one fact is sufficient to prove that Mohammad was a true prophet of God and the Divine Hand was always at his back, which in a very short time raised him from the state of helplessness to the height of power and glory.

The same prophecy is also found in the Rig Veda, I : 53, 9, as the prophecy of *Angris Rishi,* son of *Savya Rishi.* The word *sushrava* means 'praise-worthy or well-praised' which is equivalent to the Prophet's name *Mohammad* (peace be on him).

A joint testimony of three Vedas

THE following prophecy is given in three Vedas, the Rig Veda, the Atharva Veda and the Sama Veda,[1] This

---

(1) Atharva Veda, XX : 137, 7-9 ; Rig Veda, VIII : 96, 13-15 ; Sama Veda, III : 10, 1.

joint testimony of the Vedas shows that it is really something great that this prophecy refers to. And at the same time it is as vivid and clear as it is great.

अवद्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
आवत तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त।७।
द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः ।
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ।८।
अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत तन्वं तित्विषाणः
विशो अदेवीरभ्या३ चरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे।९।

7. "The black drop sank in Ansumati's bosom, advancing with ten thousand round about it. Indra with might longed for it as it panted; the hero-hearted laid aside his weapons."

8. "I saw the drop in the far distance moving, on the slope bank of Ansumati's river, like a black cloud that sank into the water. Heroes I send you forth. Go, fight in battle."

9. "And then the drop in Ansumati's bosom, splendid with light, assumed its proper body; and Indra, with Brihaspati to aid him, conquered the godless tribes that came against him."—(Griffith.)

"Krishna Chandra (the black moon) sank in Ansumati (*Haud-i-Kauthar*). Indra is protected with ten thousand brave ones around him. The brave fighters have laid down their arms singing victoriously."

"I saw the moon moving in the far distance, on the bank of Ansumati river, like a dark cloud that sank into the water. Heroes, I send you forth. Go, fight in the battle."

"And then in the bosom of Ansumati (*Haud-i-Kauthar*) the black moon assumed its real body resplendent with light; and Indra, with the help of Brihaspati conquered the godless tribes that came against him."—(Hindu commentators.)

According to the Hindu view point, as put forth by Syna Charya, the commentator of the Vedas, the moon becomes completely black during the last nights of a month and then after sinking in an imaginary river Ansumati it again becomes bright and rises anew. But in the light of the Gita, this mantra means that when religion and the world are corrupted, Krishna Chandra comes to the world in the person of a new man and gives new light to the world. Thus, we find Krishna addressing Arjuna in the Gita:

1. "This unchangeable law, I first revealed to Vivasvan (the Sun or Gabriel). Vivasvan revealed it to Manu and Manu told it to Ikshvaku.
2. The Raj Rishi knows well the kingdom that passes from the one to the other and which is now in a ruinous state.
3. This is the same old law that I teach you to-day. You are my friend and my servant. This is all a secret.

4. Arjuna said: 'My Lord! You were born in this age and Vivasvat was born long before; how should I know that you spoke like this before also.'
5. Shri Krishna said: 'O Arjuna! You and I had several births, I know all of them but you know not.'
6. The immortal soul, the Lord of all creation reveals Himself in the person of somebody without having been born.
7. O Arjuna! whenever religion is corrupted and blasphemy spreads, I reveal myself and make my power manifest to the world.
8. I appear in every age in order to protect the pious ones, to fight evil-doers and to uphold religion."[1]

In a word, when the moon becomes dark or when a religion loses its light and force and the world is corrupted, a new prophet appears with the same Divine light that was given to his predecessors.

In the Vedas too, the moon (and according to some the sun also) is described as *Sahasr shringo vrikhbho yah smudrat udachrat* 'a bull with a thousand horns rising from the sea.'

This prophecy affords a clear sign of the truth of the Holy Prophet. The spiritual moon had become black and there was darkness all over the world. No

(1) Gita, IV. 1—8.

religion possessed its pristine lustre. In India, people called the moon as Krishna or black. At such a time, therefore, when the world was dark and dreary, the Prophet Mohammad appeared like the sun with a thousand rays and beams of light. The Veda says that this sun shall shine for ever, it is protected from darkness and shines forth in this universe as majestically as a victorious sovereign marches in the field. At the conquest of Mecca, the Prophet appeared with his companions like the sun with ten thousand rays, and in the words of the mantra, he bravely laid down his arms extending pardon and amnesty to his bitterest foes. A remarkable prophecy indeed it was, which was fulfilled in the life of the Prophet word by word.

The Holy Qur'an also states: "And We have made the night and the day two signs, then We made the sign of the night to pass away and We have made the sign of the day manifest, so that you may seek grace from your Lord."[1] The sign of the day is the sun and the sign of the night is the moon. God made the sign of the night to pass away or the moon lost its own light and brightness. Modern science has shown that the moon too like the sun had its own light, but gradually it cooled down and became dark. The words of the Qur'an do not refer only to the physical world and its days and nights, but also to the spiritual world. First the moon used to give light to the world but on its cooling down it became dark and was regarded as the

---

(1) XVII, 12.

sign of the night. Night here stands for the darkness of ignorance and unbelief, and the passing away of the night indicates that ignorance will vanish and the light of Islam will take its place. On the passing away of the night the Prophet appeared on this world's firmament like the shining sun so that with his light people seek the grace of their Lord.

The moon as the motto of the Arabs

IN pre-Islamic Arabia, the moon was the national emblem and the motto of the Arabs. The chapter of the Holy Qur'an in which the end of the Meccans is prophesied, is also headed as 'al-Qamar', 'the Moon', and begins with the words "The hour drew nigh and the moon did rend asunder."[1] The moon, thus represented the power of the idolatrous Arabians, and its being cloven into two parts signified the departure of that power through the Holy Prophet's instrumentality. This incident took place in the battle of Badr. The Qur'an, has therefore, by combining these two facts, shown that the darkening of the moon as described in the Vedas and its again becoming bright is equivalent to the appearance of the Holy Prophet Mohammad and his overthrowing the power of his opponents.

It is a strange fact that the Vedic mantra after making a mention of the darkening of the moon says: 'Heroes, I send you forth. Go, fight in the battle.' Apparently, there seems to be no connection between

---

(1) LIV, 1.

these two facts, but in reality this is another proof of the facts that we have narrated above. The Musalmans were asked to go out from Medina and fight the infidels, "Permission (to fight) is given to those upon whom war is made."[1] The Muslim heroes were thus asked to go forth and fight. They were given the epithet of 'brave', because they were very small in number and without sufficient provisions of war and still they overcame the huge and mighty opponent forces. In the battle of Badr as well as the subsequent wars the Prophet's companions bravely fought their enemies, and in the last and the decisive battle, the conquest of Mecca, he again fulfilled the Vedic prophecy, "Indra advanced with ten thousand round about him."[2] The Holy Prophet had ten thousand companions with him when he advanced towards Mecca and conquered it. But he did not kill any of his opponents, but as the Veda says, "the hero-hearted laid aside his weapons." He conquered the city without bloodshed. These true facts of history corroborated by the Vedic mantra are true only of the life of the Holy Prophet and of no other prophet or rishi. It was only the mighty and merciful Prophet of Islam who fulfilled these Vedic prophecies. The last words of the mantra, 'Indra, with the help of Brihaspati (the Lord of the world) conquered the godless tribes that came against him', also apply to the Prophet Mohammad, who with the help and grace of God overthrew his enemies.

---

(1) XXII, 39.
(2) Rig Veda, V, 27, 1.

MOHAMMAD AND HIS TEN THOUSAND COMPANIONS

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानरः त्र्यरुणश्चिकेत ॥

"THE wagon-possessor, the truthful and truth-loving extremely wise, powerful and generous, Mamah (Mohammad) has favoured me with his words. The son of the All-powerful, possessing all good attributes, the mercy for the worlds has become famous with ten thousand (companions)."

Every word of this prophecy speaks of the truth of the Holy Prophet Mohammad. He was truthful and truth-loving. From his very childhood he was known for his veracity and truthfulness. People called him as *al-amin,* the faithful or the truthful one. When Abu Bakr came to know that Mohammad laid a claim to prophethood, he at once believed in him, for he knew that Mohammad had never told a lie. Similarly, numerous facts are narrated in the books of history showing the Prophet's extreme wisdom. Powerful he was to such an extent, that during the battle of the Allies, the Prophet, with one stroke of his hammer, smashed the big stone that no other man could break. He was so generous that he bestowed every thing upon his followers and kept nothing for himself. Whatever wealth and spoils of war came, were distributed among the community, the Prophet keeping nothing for himself. 'The mercy for the worlds', is a special attribute of the Holy Prophet, and similarly, he was the only

prophet who was famous for his ten thousand companions.

All these attributes clearly apply to the Prophet, but the first attribute 'wagon-possessor' needs a little comment. Apparently, the Prophet did not possess this attribute; but if we make out the true sense of the word, we shall find that this too equally applies to the Holy Prophet. The word *'anaswanta'* (wagon-possessor) is used on several occasions in the religious books of the Hindus. For instance, Indra is said to be riding a wagon.[1] Then he is said to be breaking the wagon of horizon.[2] Similarly, the sun is said to be riding a wagon drawn by horses, and its daughter to be born in a wagon.[3] All these quotations show that this word is used in a metaphorical sense. It does not mean the loading wagons in the literal sense, as Sawami Daya Nand has described it, but it means exalted, honourable and dignified. Thus, the 'wagon-possessor' too is an attribute of the Prophet Mohammad, and taken in its real sense, well applies to him.

The Ka'ba of the Muslims

THE Atharva Veda contains a long Sukta in praise of the Ka'ba. In order, however, to understand this prophecy clearly, three facts are to be borne in mind.

---

(1) Rig Veda, I, 121, 7.
(2) *Ibid.*, II, 15, 6—IV. 30, 11—VIII. 91, 7—X. 73, 6—X. 138, 5.
(3) Rig Veda, X. 85, 10.

(*i*) These mantras are headed as ***Purush Medha***, which means 'human sacrifice.' In earlier times a great personality was sacrificed, and these mantras are recited at the occasion of offering sacrifices just to commemorate that occasion.

(*ii*) The 'Atharva Rishi' referred to in these mantras was the Prophet Ishmael. We have discussed this point at length in the prophecies of Abraham. According to our research, Abraham and Brahmaji were the two names of the same person. His eldest son was known as *Atharva* or Ishmael and the your er one was named *Angira* or Isaac.

(*iii*) These mantras refer to Ishmael's being sacrificed. This, as a matter of fact, was a sacrifice of both the father and the son. This son in his old age was the only hope of Abraham, the second son having not been born till then. In spite of this, he decided to sacrifice his son, having seen himself doing so in a dream. It was, therefore, as great a sacrifice on his part as on the part of his son.

Bearing these facts in mind the meanings of the mantras will become clearer.

Ishmael's Sacrifice

"SO when they both submitted and he threw him down upon his forehead, and We called out to him saying, O Abraham! You have indeed shown the truth of the vision; surely thus do We reward the doers of Good."[1]

---

(1) XXXVII. 103-105.

In the Atharva Veda we find:

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत्
मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत् पवमानोधि शीर्षतः ॥ २६ ॥

"Atharva sewed together his head and heart, piety was moving on his forehead."[1]

The Prophet Abraham saw in dream that he was sacrificing his son Ishmael. He invited his son's opinion in the matter, and the son replied, "O my father! do what you are commanded: if Allah please, you will find me of the patient ones."[2] Ishmael, thus, gladly submitted to his father's proposal, and this is what the Veda says that Atharva or Ishmael sewed his head and heart, in other words, agreed to lay down his head.

तद् वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुब्जितः ।
तत् प्राणो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मनः ॥ २७ ॥

In the following mantra, is said: "The head of Atharva is a place where gods live. It is closed from all sides, the spirits, the head, the heart and provisions guard it."[3] The place where Abraham sacrificed his son is the seat of the angels and holy spirits. It is well-fortified and guarded, no enemy can ever conquer it. The word *puranah*, in this mantra, means angels, by head is meant Ishmael and by heart is meant Abraham. All these characteristic attributes are found only in the

---

(1) X, 2-26.
(2) XXXVII, 102.
(3) Atharva Veda, X. 2-27.

Ka'ba of the Muslims and in no other religious shrine. The Ka'ba is the place where angels live and which is protected from enemies, no hostile force has ever been able to subjugate it, the angels and the Lord being its protectors.

Some more attributes of the Ka'ba

ऊर्ध्वो नु सृष्टा३स्तिर्यङ्नु सृष्टा३ःसर्वा दिशःपुरुष आ बभूवाँ३। पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते ॥ २८ ॥

"WHETHER it is built high, its walls are in a straight line or not, but God is seen in every corner of it. He who knows the House of God, knows it because God is remembered there."[1]

The Ka'ba is not a beautiful or decorated building, —nay it is not even methodically and properly built. Its walls are not parallel to each other, if the length of one wall is 26 feet, the length of the other is 25, and similarly if the breadth on one side is 22 feet, on the other side it is 20 feet. It is not a temple of gold or silver but a very simple edifice of ordinary bricks; but in spite of this it is held sacred by millions of people who find in every inch of this building the manifestation of God and His abundant blessings. God is always remembered here and he who goes into the Ka'ba feels how near does he become to God. The Veda rightly described it as a building without straight walls but the place where God is seen and adored.

---

(1) Atharvo Veda, X. 28.

In the next mantra we find:

यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरम्

तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राणं प्रजां ददुः ॥ २९ ॥

"He who knows this sacred house of God, which is full of life, God, and Brahma (the Prophet of God) grant him insight, life and children."

The Ka'ba of the Muslims is replete with spiritual life and is the fountain-head of spirituality. It is written in the Torah of Moses that Abraham was given the good news of a great progeny and numerous descendants. Even today the followers of Abraham are much more in number than any other nation. This is exactly what the Vedic mantra says, 'he who associates himself with the House of God, the Ka'ba of the Muslims, will be given insight, life and a large progeny.'

The following mantra also gives a similar sense:

न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरः

पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते ॥ ३० ॥

"He who knows this Sacred House, spirituality and insight do not leave him before old age, for God is remembered in this House." When a man is once given true insight and he treads in the footsteps of the Holy Prophets and learns what the Ka'ba stands for, his spirituality increases day by day and he is not deprived of inspiration and Divine guidance.

A description of the Ka'ba

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ।। ३१ ।।

"THIS abode of the angels has eight circuits and nine gates. It is unconquerable, there is eternal life in it and it is resplendent with Divine light."[1]

The Veda has given a true description of the Ka'ba. The House of God, in fact, has nine gates, the eight circuits are the natural lines enclosing the areas between the surrounding hills. Again, the Ka'ba is the abode of angels and has ever remained unconquerable.

तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठते ।
तस्मिन् यद यक्षमात्मन्यत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः ।।३२।।

"The Supreme Spirit worthy of adoration, lives in the house which is built on three pillars and three wooden beams and is the centre of eternal life. Men of God know this well."[2]

The Ka'ba does not possess idols or any other material object of worship. It is an ordinary house standing on three pillars with three wooden beams over them, but in spite of this it is the centre of eternal life and a mine of spirituality. The Most High Spirit is seen and felt here by men of God who possess insight.

---

(1) Atharva Veda, X. 2-31.

(2) *Ibid*, X, 2-32.

प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम्
पुर हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम् ॥ ३३ ॥

"Brahma or Abraham stayed in this abode which is illumined by heavenly light and covered with Divine blessings. It is the place that gives (spiritual) life to the people and is unconquerable."[1]

All the foregoing mantras of the Atharva Veda give a description of the Ka'ba and praise this holy shrine. Each mantra gives new attributes which are the true characteristic qualities of the House of God. To sum up the whole thing, the Ka'ba is a memorial commemorating the memory of a great sacrifice, it has always been free from subjugation, its inhabitants get plenty to eat, its walls are not straightly built, it is the place which is full of spiritual life, it has nine gates and eight circuits, there are three pillars and three beams in it and it is the place where Abraham came from another land, made it his abode for some time and built the House of God there.

These mantras are, thus, quite in accordance with the Quranic description of the Ka'ba, "Surely the first house appointed for men is the one at Bekka, blessed and a guidance for the nations. In it are clear signs: the standing-place of Abraham, and whoever enters it shall be secure."[2]

---

(1) Atharva Veda. X, 2, 33.

(2) The Holy Qur'an, III, 95-96.

Prophecies about the Holy Prophet in the Sama Veda

THE SAMA VEDA is one of the four Vedas, and according to Sam-Vedic Brahmans, it is superior in some respect to the rest of the Vedas. The word Sama in the religious literature means silence, serenity, talking gently like the humming of bees and also a song.

'Gitishu sam akhya', 'songs are called as sama'. Another characteristic of this Veda is that its mantras are particularly suited to be sung melodiously and are well-sounding. The high position that the Sama Veda holds among the religious books of the Hindus is evident from the following quotations:

(*i*) "The Yajur Veda is the head of Brahma, the Rig Veda is the right limb, the Sama Veda is the left limb, the Upanishad is the soul and the Atharva Veda is his tail."—(Taittiriya Aranyaka.)

(*ii*) "The Yajur Veda is his belly and the Sama Veda is his head."—(Kaushitki Brahmana.)

(*iii*) "The Rig Veda is light, the Yajur Veda is power and the Sama Veda is fame"

—(Shatpath Brahmana.)

(*iv*) "The Rig Veda is the earth, the Sama Veda is the atmosphere and the Yajur Veda is the heaven."

—(Taittiriya Upanishad.)

(*v*) "The Sama Veda is the pores and the Atharva Veda is the mouth."—(Atharva Veda.)

(*vi*) "The Sama Veda is surely the husband of the Rig Veda."—(Shatpath.)

(*vii*) "The Sama Veda is the essence of all the Vedas."—(Shatpath.)

(*viii*) "This world was created from Brahma, the Vaishas were created from the mantras of the Rig Veda, the Kashatriyas were created from the Yajur Veda and the Brahmans were created from the Sama Veda."—(Taittiriya Brahmana.)

(*ix*) "The Sama Veda is sung not by *Om* but by *Hin*.—(Shatpath.)

(*x*) "The Rig Veda is the bone, the Sama Veda the skin and the Yajur Veda is the heart."

—(Atharva Veda.)

The Sama Veda too narrates numerous prophecies of the advent of the Holy Prophet Mohammad. We take up only one of these. This prophecy occurs in Sama Veda, II : 6, 8.

अहमिद्धि पितुः परिमेधामृतस्य जग्रह । अहं सूर्य इवाजनि ॥

सामवेद० । प्र० २ । द० ६ मं० ८ ॥

"Ahmad acquired *Shariah* (religious law) from his Lord. This Shariah is full of wisdom. I receive light from him just as from the sun."

This prophecy confirms the following truths:—

(*i*) The Prophet's name *Ahmad* is clearly mentioned.

(*ii*) The Prophet is said to have been given Shariah by his Lord.

(*iii*) He is also said to have been given wisdom along with it.

(*iv*) The Rishi is being enlightened through the Shariah of the Prophet as various objects are brightened by the light of the sun.

Syna Acharya, an old commentator of the Vedas, and other Arya translators have made a mistake in translating this mantra. They have not been able to understand the Arabic name Ahmad, and have taken it to be *Ahm at hi,* thus translating the mantra as: "I alone have acquired the real wisdom of my Father, so I am like the sun." This translation, is open to two objections. Firstly, the rishi of this mantra is Vatsah Kanvah belonging to the family of Kanv and his claiming to be the only one who acquired the true wisdom of the Father is contrary to the principles of the Vedic Dharma. A mention is made in the Vedas of hundred and one rishis like Vatsah, and there is no evidence in support of Vatsah's claim that he alone was the recipient of the Father's wisdom. Secondly, the god of this mantra is Indra, and Vatsah Kanvah was not his only son and heir. There is no historical proof of the fact that Vatsah alone was the heir and successor of Indra. The Rishi thus cannot make a false statement.

The Holy Qur'an, however, solves this enigma saying:

"O Prophet! surely We have sent you as a witness and as a bearer of good news and as a warner, and as one inviting to Allah by His permission and as a light-giving torch." The Prophet was, thus, bearer of good

news and the Sun that gave (spiritual) light to the world. At another place the Qur'an says:
"Blessed is He Who made the stars in the heavens, and made therein a sun and a shining moon."

There are two kinds of stars and planets in this firmament. The stars that have their own light and those which receive light through other planets. The moon and the stars at night receive light from the sun and in a way bear witness to its presence. Similarly the Prophet Mohammad was the sun and the rest of the prophets like the moon and the stars received light from him and illumined the world from time to time. Rishi Vatsah's saying that he was like the sun, is also another way of saying that he received light from Ahmad, the Prophet of Islam, about whose advent he made this prophecy. The Prophet Mohammad had his own light and the rest took their light from him.

MOHAMMAD IN BUDDHIST SCRIPTURES

THE BUDDHIST PROPHECY

I

(From the Burmese sources.)

The Buddha said to Sariputta:—

"................

Our cycle is a happy one.
Three leaders have already lived,
Kakusandha, Konogamana
And eke the leader Kasapa.
The Buddha supreme am I,
But after me Metteya comes,
While still this happy cycle lasts,
Before its tale of years shall lapse
This Buddha then Metteya called
Supreme, and of all men the chief"[1]

II

(From Ceylon Sources.)

Ananda "said to the Blessed One.
'Who shall teach us when thou art gone?'"

---

(1) Buddhism In Translation by Warren. PP. 481-2.

And the Blessed One replied:—

'I am not the first Buddha who came upon the earth, nor shall I be the last. In due time another Buddha will arise in the world, a holy one, a supremely enlightened one, endowed with wisdom in conduct, auspicious, knowing the universe, an incomparable leader of men, a master of angels and mortals. He will reveal to you the same eternal truths which I have taught you. He will preach his religion, glorious in its origin, glorious at the climax, and, glorious at the goal. He will proclaim a religious life, wholly perfect and pure, such as I now proclaim. His disciples will number many thousand, while mine number many hundred.'

Ananda said, 'How shall we know him?'

The Blessed One replied, 'He will be known as Maitreya............'[1]

Or

The Buddha said.—

"Monks. in the days when men live 80000 years. there will arise in the world a Buddha named Metteyyo (the benevolent one), a holy one (Arahat), a supremely enlightened one, endowed with wisdom in conduct; auspicious, knowing the universe, an incomparable charioteer of men who are tamed; a master of angels and mortals; a Blessed Buddha; even as I have now arisen in the world, a Buddha with these same qualities

---

(1) The Gospel of Buddha by Carus. PP. 217-8.

endowed. What he has realised by his own supernal knowledge he will publish to this universe with its angels, its fiends, and its archangels, and to the race of philosophers and brahmins, princes and peoples; even as I now having all this knowledge do publish the same unto the same. He will preach his religion, glorious in its origin, glorious at the climax, glorious at the goal, in the spirit and the letter. He will proclaim a religious life wholly perfect and thoroughly pure, even as I now preach my religion, and a like life do proclaim. He will keep up a society numbering many thousand, even as I now keep up a society of monks numbering many hundred."[1]

Or

"At that period, brethren, there will arise in the world an Exalted One named Metteya, Arahant, fully Awakened, abounding in wisdom and goodness, happy, with knowledge of the worlds, unsurpassed as a guide to mortals willing to be led, a teacher for gods and men, an Exalted One, a Buddha even as I am now. He, by himself, will thoroughly see and know, as it were face to face, this universe, with its world of the spirits, its Brahamas, and its Maras, and its world of recluses and Brahmins, of princes and peoples, even as I now by myself, thoroughly know and see them. The truth (the Norm) lovely in its origin, lovely in its progress,

---

(1) Buddhist and Christian Gospels by Edmunds. Vol. II. PP. 160-1.

lovely in its consummation, will he proclaim, both in the spirit and in the letter; the higher life will he make known, in all its fulness and all its purity, even as I do now. He will be accompanied by a congregation of some thousands of brethren, even as I am now accompanied by a congregation of some hundreds of brethren."[1]

III

(*From the Chinese-Sanskrit sources.*)

"In the old days when the Tathagata was living at Rajagriha (Wang-she), on the Gridhra-kuta[2] mountain, he spoke thus to the Bhikshus: 'In future years, when this country of Jambudvipa shall be at peace and rest, and the age of men shall amount to 80000 years, there shall be a Brahman called Maitreya (Sse-che). His body shall be of pure gold, bright, glistening and pure. Leaving his home he shall become a perfect Buddha, and preach the threefold[3] Law for the benefit of all creatures. Those who shall be saved are those who live, in whom the roots of merit have been planted through my bequeathed Law. These all conceiving their minds in profound respect for three precious

(1) Cakkavatti-Sihanada Suttanta. The Mahabodhi Society Translation.

(2) Others think at "Benares."

(3) "Thrice repeated."

objects of worship, whether they be already professed disciples or not, whether they be obedient to the precepts or not, will be led by the converting power (of his preaching) to acquire the fruit (of Bodhi) and final deliverance. Whilst declaring the threefold Law for the conversion of those who have been influenced by my bequeathed Law, by this means also hereafter others will be converted."[1]

IV.

(*Tibetan sources.*)

"It is said up to the time when Phanchhen-rinpochhe (The Great Jewel of Wisdom) condescends to be reborn in the land of the P'helings (Westerners) and appearing as the Spiritual Conqueror (Chom-den-da), destroys the error and ignorance of ages, it will be of little use to try to uproot the misconceptions of P'heling-pa (Europe); her sons will listen to none."[2]

From the above it is clear that the Buddha Gautama foretold the advent of a person named Maitreya or Metteyya as his successor.

---

(1) Si-Yu-Ki. Vol. 2. PP. 46-7.

(2) The Secret Doctrine by Blavatsky. Vol. III. P. 412.

IDENTIFICATION OF MAITREYA.

I.

Some Buddhists consider that the Buddha Maitreya has appeared[1] :—

1. "Wu, the mother of the sixth emperor of the T'ang dynasty in China, was presented a Sutra named Ta-yun-king, in the year 690. 'It stated that she was Maitreya, the Buddha that was to come'."[2]

2. Kings, Yeula and Vijayavirya, were supposed as incarnations of "Bodhisattva Maitreya."[3]

3. The Burmese monk, Ledi Sayadaw, "has been proclaiming far and wide the near coming of Bodhisattva Maitreya, who, he says, has left the Tusita Heaven, and was in 1914. A. D. on earth as a boy."[4]

In the past[5] as well as in the present,[6] Buddhists have pretended to receive written books of revelation from Maitreya. They have even imagined him to come down from heaven for making the image of the Buddha Gautama.[7]

The above claims have not received the serious attention of the Buddhist world and therefore need no comment on our part. The Buddhists, like some of the Theosophists, await the advent of Maitreya in

---

(1) Studies in Japanese Buddhism by Reischauer. P. 264.
(2) Chinese Buddhism by J. Edkins. P. 122.
(3) Life of Buddha by Rockhill. PP. 237-8.
(4) The Coming World Teacher by P. Parki, P. 52.
(5) Si-Yu-Ki by Beal. Vo. I. P. 226.
(6) Buddhism and Buddhists in China by Hodous. P. 38.
(7) Si-Yu-Ki Vol. II. PP. 121-2.

future. The Buddhists all over the world have built images of Maitreya, sometimes as high as 70 feet or more.[1] The European traveller well knows the "Laughing Buddha" Maitreya of the Chinese.[2]

II

WAS SHANKARACHARYA THE BUDDHA MAITREYA?

Some Brahmans consider the Buddha Gautama as the 9th Avatar of Vishnu.[3] Some Brahmans along with the Theosophists consider that Shankaracharya was the expected Maitreya:—

"Esoteric teaching is to the effect that *Shankaracharya was a Buddha in all respects,* in a new body .... I have received the information I am now giving from a Brahman Adwaiti, of Southern India—not directly from the Tibetan instructor............ Some of the later incarnations of Buddha are described differently as overshadowings by the SPIRIT OF BUDDHA, but *in person of Shankaracharya he reappeared on earth.* The object he had in view was to fill up some gaps and repair certain errors in his own previous teachings; for there is no contention in the esoteric Buddhism that even a Buddha can be absolutely infalliable at every moment of his career...."[4]

---

(1) Hodous PP. 120-1.
(2) *Ibid* PP. 20-1.
(3) The Essence of Buddhism by L. Narasu. P. 27 Foot Note.
(4) Esoteric Buddhism by A. P. Sennett. P. 149.

Shankaracharya cannot be the Buddha Maitreya, for,·

1. he never gave out in his life time that he was the Buddha Maitreya;

2. his life, as will appear later on, does not display the "TEN PERFECTIONS",[1] a necessary possession for a FULLY ENLIGHTENED BUDDHA;

3. he took up the cause of the Vedas[2] against the Buddhists. Shankaracharya writes:—

(a) "The Vedas are the highest authority"[3]

(*b*) "There is no authority for knowledge, equal to the Veda."[4]

Some oriental and occidental scholars, and the Buddhist divines consider that the Buddha Gautama made light of the Vedas:—

(*a*) "Empty, forsooth, are these Vedas, and as chaff. There is in them neither reality, nor worth nor essential truth."[5]

—NAGASENA.

(*b*) Pt. Mool Shanker, more commonly known as Dayananda Saraswati, the founder of Arya Samaj, the modern Protestant Hinduism, considers Buddhism "a strong and fearful Veda and Shastra denouncing" religion.[6]

---

(1) Warren PP. 22-37.
(2) Satyarath Prakash by Mool Shankar. PP. 415-16.
(3) Sankara's Select Works, by S. Vankataramanan P. 205.
(4) *Ibid* P. 206.
(5) S. B. E. Vol. XXV. P. 18.
(6) Satyarath Prakash P. 414.

(*c*) "Buddha discredited the sacrificial system; he censured with bitter irony the knowledge of the Vedic scribes as sheer folly."[1]

OLDENBERG.

(*d*) The Buddha Gautama "Scoffed at the Vedas."[2]

MACPHAIL.

This view is supported by numerous sayings of Sakya Muni:—

(*a*) "Reading the Vedas, making of offerings to priests, or sacrifices to the gods, self-mortification by heat or cold, and many such like penances performed for the sake of immortality, these do not cleanse the man, not free from delusions."[3]

AMAGANDHA SUTT.

(*b*) "Therefore the threefold wisdom of the Brahmans, wise in the three Vedas, is called a waterless desert, their threefold wisdom is called a pathless jungle, their threefold wisdom is called destruction."[4]

(*c*) "Of no value are the Vedas."[5]

(*d*) "These Veda studies are the wise-acre's toils,
The lure which tempts the victims whom he spoils.
A mirage formed to catch the careless eye,
But which the prudent passes safely by,
The Vedas have no hidden power to save,

(1) Buddha P. 172.
(2) Asoka P. 35.
(3) Buddhism by Rhys Davids. P. 131.
(4) S. B. E, Vol. XI. P. 185.
(5) Silavimansa quoted in Early History of the Spread of Buddhism and the Buddhist Schools by N. Dut. P. 13.

The traitor or the coward or the knave.
The Brahmans all a livelihood require,
And so for their gain they made the Vedas.
Full of sentences in metric forms,
Learned by rote and not easily forgot.
Their obscurity but tempts the foolish mind
Which swallows all 'tis told with impulses blind.
Doctrines and rules, absurd, concocted, and vain,
Coolly imagining wealth and power to gain,

. . . .

These greedy liars propagate deceit.
And fools believe the fiction they repeat."[1]

BHURIDATTA JATAKA.

Shankaracharya did not give it out in his lifetime that he was a Buddhist and a reformer of Buddhism. He was one of those who were antagonistic to Buddhism and succeeded in destroying or driving it out from India.[2]

Some more reasons we shall give later on.

---

(1) L. Narasu. PP. 129-30.
(2) Shankaracharya by Sita Nath Datta.

III

WAS JESUS THE BUDDHA MAITREYA?

For sometime past some learned men of East and West have been advertising that Jesus was the Buddha Maitreya:—

(1) "Will the Buddhists ever learn that this Buddha of the future, this Maitreya, this teacher of love, and not of the law, has appeared?"[1]

Max Muller

(2) "The Christ Metteyyo is yet to come."[2]

Edmunds.

(3) "In later day we know them as Gautama and Maitreya, Buddha and Christ."[3]

C. Jinarajadasa.

(4) "Maitreya and Christ are one."[4]

Johanna.

(5) "Lord Maitreya, on the other hand, when he appeared as the Christ, exhorted his disciples, 'Love one another as I have loved you.' "[5]

P. Pavri.

(6) "Lord Maitreya took the same course when He visited Palestine 2,000 years ago."[6]

Leadbeater.

---

(1) Chips from a German Workshop. Vol. I. PP. 452-3.
(2) The Buddhist and the Christian Gospels. Vol. 2. P. 164.
(3) Buddha and Christ. P. 8.
(4) The Coming Christ P. 106.
(5) The Coming World Teacher. P. 23.
(6) The Masters and the Path. P. 51.

(7) "Blavatsky maintains that Jesus shall be Maitreya in his second advent which is yet to take place.[1]

. . . .

. . . .

We shall refute this view at length, but here only in brief:—

(1) From the study of the four Gospels we can say that Jesus in his lifetime never gave it out that he was the Buddha Maitreya.

(2) The character of Jesus does not display "TEN PERFECTIONS." We shall discuss this in details.

(3) The cardinal doctrine of Christianity is that Jesus was "betrayed" into the hands of his enemies who hanged him, and he died upon the cross. The four Gospels are unanimous on the point.[2] Even Jesus is made to testify to this view.[3] The Christian world must abandon this doctrine first before the Buddhists can consider the advertised claim for being the Buddha Maitreya, for the Buddha Gautama said:—

"This, O Bhikkhus, is an impossible thing, one that cannot occur that one should deprive a Tathagata of life by violence. The Tathagatas, O Bhikkhus, are extinguished (in death) in due and natural course . . . ."[4]

---

(1) Isis Unveiled. Vol. II. P. 156. Foot Note.

(2) Matt. 27: 27; Mark 15: 37; Luke 23: 46; John P 1: 30.

(3) Luke 23: 43.

(4) Vinaya Text by Max Muller Part III. PP. 246-7.

The view of Blavatsky that Jesus shall be Maitreya in his second advent, is untenable. If Jesus at all returns to the world again, he cannot put forward the claim of being this Maitreya for,

(*a*) "The same Jesus."[1] "the Lord himself shall descend from heaven,"[2] "coming in the clouds of heaven with great power and glory."[3]

Contrary to this the Buddhist prophecy demands that this Maitreya must be born on earth[4] and of human parents who must be different from Joseph and Mary.[5]

(*b*) "Christ being raised from the dead dieth no more; death hath no more dominion over him,"[6] whereas according to the Buddhist prophecy Maitreya Buddha must die in due course of time.[7]

Hence neither the Christian nor the Buddhist scriptures support the view of Blavatsky that Jesus shall be Maitreya Buddha in his second advent. And "the scripture can not be broken."[8]

---

(1) Acts 1: 11.

(2) I Thes. 4: 16.

(3) Matt. 24: 30.

(4) THE LIFE AND TEACHINGS OF BUDDHA by A. Dharampal P. 82.

(5) M. B. J. May and June 1928. P. 280.

(6) Romans. 6: 9; Matt. 28: 20.

(7) Warren P. 485; Maitreya Samiti by Laumann Vol. I. P. 22.

(8) John. 10: 35.

IV.

EQUIVALENTS OF MAITREYA.

The person whose advent the Buddha Gautama prophesied bears different names in different languages. In Pali his name is Metteyya, in Sanskrit, Maitreya, in Burmese, "Aremideia",[1] in Chinese, "Mei-ta-li-ye",[2] or "Milie Pusa",[3] or "Mili Fo"[4] or "Tzushih",[5] in Tibetan, "Byams-pa"[6] or "Mahitreja",[7] and in Japanese, "Miroku."[8]

The English equivalent of Metteyya:—

(1) "Teacher of love." Max Muller.[9]

(2) "Lord of love." A Dharampal.[10]

(3) "He whose name is kindness." Carus.[11]

(4) "Buddha of kindness." Rhys Davids.[12]

(5) "Universal love," or "Benevolence."

L. Narasu.[13]

---

(1) THE LEGEND OF GAUDAMA by Bigandet. Vol. I. P. 11. Foot Note.

(2) Si-Yu-Ki Vol. I. P. XXIX.

(3) BUDDHIST CHINA by Johnston P. 367.

(4) Edkins P. 208

(5) Yuan Chwang Vol. I. P. 239 by T. Watters.

(6) Pr. 'Jampa' or 'Champa' Lamaism by Waddell P. 355.

(7) THE RELIGION OF TIBET AND THE TRUE RELIGION by Frauson P. 38.

(8) Reischauer PP. 264-5.

(9) CHIPS FROM A GERMAN WORKSHOP. Vol. I. P. 452.

(10) THE LIFE AND TEACHINGS OF BUDDHA. P. 83.

(11) THE GOSPEL OF BUDDHA. P. 218.

(12) BUDDHISM. P. 180.

(13) ESSENCE OF BUDDHISM. P. 101; 105.

(6) "Buddha of brotherly love." Lillie.[1]
(7) Buddha of "Friendliness." Fausboll.[2]
(8) "Loving and compassionate."
Monier Williams.[3]
(9) "Love or mercifulness." S. Beal.[4]
(10) "Compassionate" or of "Family of mercy". Getty.[5]
(11) "The merciful." Herbert Baynes.[6]
(12) "Merciful one." Joseph Edkins.[7]
(13) "Quality of a friend; friendly; benevolent; kind; love, amity, sympathy, active interest in others."[8]
William Steade.

RAHMAT IS THE ARABIC EQUIVALENT OF MAITREYA. Benevolence, loving kindness, friendliness, compassion, mercy or mercifulness, all words of similar import are all expressed by the Arabic word **Rahmat**. The Arabic English lexicon by Edward William Lane gives some of the following equivalents of **Rahmat**:—

"Mercy, pity, compassion, tenderness of heart; inclination requiring the exercise of favour, and beneficence; pardon and forgiveness."

(1) BUDDHISM IN CHRISTENDOM. P. VII.
(2) SUTTA NIPATA. P. 205.
(3) BUDDHISM. P. 181.
(4) THE CHINESE DHAMMAPADA. P. 69.
(5) GODS OF NORTHERN BUDDHISM. P. 20; 68.
(6) THE WAY OF BUDDHA. P. 15.
(7) CHINESE BUDDHISM. P. 240.
(8) THE PALI DICTIONARY.

Badger's English Arabic Lexicon includes "Goodness and providence".

"Ar-Rahman and Ar-Rahim are both derived from Rahmat, signifying **tenderness requiring the exercise of beneficience** (Raghib Imam) and thus comprising the idea of **love and mercy.** Ar-Rahman and Ar-Rahim are both active participle nouns of different measures. denoting intensiveness of significance, the former being of the measure fa'lan, and indicating the greatest preponderance of the quality of mercy, and the latter being of the measure fa'il and being expressive of a constant repetition and manifestation of the attribute. (A. H.) The two words have been explained by the holy prophet himself........He is reported to have said. 'Ar-Rahman is the Beneficent God whose love and mercy are manifested in the creation of this world, and Ar-Rahim is the Merciful God whose love and mercy are manifested in the state that comes after.' (A.H.) i.e., in the consequence of the deeds of men. Thus the attribute of mercy in Ar-Rahman is manifested before man comes in existence in the creation of things that are necessary for his life here, and therefore without his having deserved them, while the same attribute in Ar-Rahim is manifested when man has done something to deserve it. Thus the former is **expressive of the utmost degree of the love and generosity, the latter of unbounded and constant favour and mercy. Lexicologists agree in holding that the former includes both the believer and the unbeliever for its object,** while the latter particularises more the believer. (LL. R. gh. L.A. T.A.) Hence I render

Ar-Rahman as meaning the Beneficient God because the idea of doing good is predominent in it, though I must admit that the English language lacks an equivalent of Ar-Rahman even making an approach to giving expression to *all comprehensive love and goodness manifested in that word......*"[1]

Metteyya is from Metta. The Metta Sutta runs thus:—

"As a mother at the risk of her life watches over her own child, so let every one cultivate a boundless friend (friendly) mind towards all beings."[2]

"The **Merciful** ....it expresses the **universal attribute of mercy which the Almighty extends to all men, the wicked and the good, believers and the unbelievers. This is a noble thought.**"[3]

Thus Rahmat fully expresses the significance of the word Metteyya. Sale translates Rahmat as "Mercy."[4]

---

(1) Mohammed Ali's translation of the Koran, Foot Note 3.

(2) The Maha Bodhi Society translation.

(3) The Muslim Doctrine of God by S. M. Zwemer D. D. PP. 35-6.

(4) The Koran. Chapter 21 P. 326.

MAITREYA IDENTIFIED.

I.

MOHAMMED IS MAITREYA BUDDHA.

The followers of Jesus and of Shankaracharya both advertise their respective teachers as the Buddha Maitreya. Their own teachers remained silent on the point in their life-times. Not so Mohammed. Unlike Jesus and Shankaracharya he himself published that he was sent as the **Maitreya** (Mercy):—

"We have not sent thee (O Mohammed) but (as) a Mercy-unto-creatures."[1]

Very often the prophet is called a Maitreya (Mercy) in the Koran:—

(1) "(Thou art sent as) **a Mercy (Maitreya) from thy Lord.**"[2]

(2) "There are some of them who injure the prophet and say, **he is an ear:** Answer, He is an ear of good unto you: he believeth in **God**, and giveth credit to the faithful and is a mercy **(Maitreya) unto such of you who believe.**"[3]

A number of times in his conversation Mohammed gave out that he was sent as a Maitreya:—

(1) Narrator. Abu Saleh.

"The apostle of God used to address people,

---

(1) **The Koran 21. P. 26.**

(2) ***Ibid.* 28. P. 382.**

(3) ***Ibid.* 9. PP. 187-8.**

'O people, I am a Mercy (Maitreya) (who is) sent (to you.)' "[1]

(2) On the field of Ohod Mohammed "was very near losing his life, being struck down by a shower of stones, and wounded in the face with arrows."[2] When in this pitiable plight and profusely bleeding some of his companions asked him to curse the unbelieving enemy, he declined their request and prayed for the unbelieving enemy:—

"I have not been sent for cursing, but as an inviter (unto God) and a Mercy (Maitreya). O God, guide my people (and forgive them) as they know me not."[3]

"Mohammed was at all times of an affectionate disposition, and even demonstratively so."[4] "In the Koran he repeatedly points out what a privilege his presence is, and how he is a proof or embodiment of God's Mercy to the world."[5]

"It is a wonderful thing," observes Mr. Holland, "that Mohammed born of a fierce and war-like race, a people given to many cruel practices. should have so much regard for compassion. He thanked God who had put in men's heart to be compassionate. . . . . of all the qualities he regarded compassion as the most God-like, and every chapter of the Koran begins with this invocation, 'In the name of God the Compassionate, the Merciful.' "[6]

---

(1) D. P. 6.
(2) Sale's Koran Foot Note P. 60.
(3) M. Quoted in RAHMAT-AL-LIL-ALAMINA Vol. I. P. 114 by Q. Md. Sulaiman.
(4) Mohammed by S. D. Margoliouth P. 70.
(5) *Ibid.* P. 52.
(6) The Story of Mohammad P. 100

II.

MEASUREMENT OF HEARTS.

From the Muslim point of view all the inspired teachers of humanity, being the commissioned representatives of the most Merciful upon the earth, were all men of merciful nature. Their hearts were vast treasure houses of mercy. They were men of much more merciful nature than the uninspired. God in His wisdom chose to bestow upon them various amounts of His mercy. The Koran says:—

"These are the apostles; We have preferred some of them before others."[1]

Compared among themselves, some of the apostles were more merciful than others. We maintain that through the grace of God Mohammed had received the greatest portion of His mercy. In other words, the heart of Mohammed was the greatest treasure house of mercy, as compared with the hearts of other apostles. How to know this? We want a standard for measuring the merciful extent of hearts. Jesus gives a standard:—

"Out of the abundance of heart the mouth speaketh."[2]

"The tongue" writes Rt. Rev. W. W. How D. D., "is the truest sign of the state of the heart.........

---

(1) 2. P. 36.

(2) Matt. 12 : 34.

The fountain within shall over-flow in the words of the mouth..........."[1]

In guidance of the above we suppose that if in the teachings of an inspired teacher the word "mercy" or "merciful" occurs once his heart is merciful to one degree.

With this standard we measure the merciful extent of the heart of Mohammed.' The words "mercy" and "merciful" are used **more than 409 times in the Koran alone.**

We intentionally leave out the words occurring in the Hadis literature of more than quarter of a million of pages in which the sayings of the holy prophet are recorded. Therefore the heart of the holy prophet **was merciful more than 409 degrees.**

Now we measure the merciful extent of the heart of Jesus with his own standard. From the record of the four Gospels of the Bible we learn that the words "mercy" and "merciful" drop from the lips of Jesus only 9 times. Therefore his heart was merciful to 9 degrees only.

In view of the above an impartial enquirer shall consider Mohammed as the Buddha Maitreya in preference to Jesus.

The vast extent of the merciful nature of Mohammed is well expressed by the Koran:—

"Certainly an apostle has come to you from among yourselves, grievous to him is your falling into distress,

---

(1) Commentary on the New Testament.

excessively solicitous respecting you; to the believers (he is) **compassionate-merciful.**"[1]

"Compassionate" is the translation of the Arabic word "Raoof" which according to Bokari[2] means "very great mercy." Raoof "denotes a more special and a more tender affection than Rahmet, or **the utmost degree thereof.**"[3]

Shankaracharya being not an inspired teacher we leave him out of consideration.

---

(1) IX-128.

(2) Vol. 2. P. 299.

(3) Arabic English Lexicon by Lane.

III.

AN INCORRUPTIBLE NAME.

When we go through the works written by men of various nations on Islam we observe one curious thing. The word "Mohammed" is spelled in a number of ways, as "Mahamet," "Mahomet," "Mohamet," "Mehemet," "Mahemmet,".........

We utilise some of these natural differences for our purpose.

1.

"Mahamet or Mahomet." The word seems to be composed of Maaha and Metta. The word Maho or Maha in Pali and Sanskrit means "Great, illustrious"[1] Metta means "mercy." Therefore the entire word Mahamet or Mahomet means "an illustrious mercy" or "a great mercy". The Koran gives out that Mohammed is "a great mercy."

2.

"Mohamet" seems to be composed of Moh and Metta. Moh in Sanskrit means, "Affection or sympathy";[2] therefore the entire word means "of an affectionate or of sympathetic mercy". The events of the

---

(1) The Student's H. E. Dictionary by R. N. Lal.

(2) *Ibid.*

life of Mohammed show that he was of a sympathetic nature to an extra-ordinary degree. We shall describe these events in details.

3.

"Mehemet" seems to be composed of "Meh" and "Metta." Meh means "rain."[1] Therefore the entire word means "a mercy like rain", or "a man who rains mercy in general." According to the Koran rain is a general blessing of God to His creatures:—

(*a*) "We send down rain as blessing from heaven, whereby We cause the gardens to spring forth and the grain of harvest, and tall palm trees having branches laden with dates, hanging one above another as a provision for man-kind, and We thereby quicken a dead country."[2]

(*b*) "He sendeth down water from heaven, and quickneth thereby the earth, after it hath been dead: verily herein are signs unto people who understand."[3]

(*c*) "Dost thou not see that God sendeth down water from heaven, and causeth the same to enter (and form) sources on the earth, and produceth thereby corn of various sorts."[4]

Just as rain is a general blessing and mercy of God to all His creatures so the holy prophet was a

---

(1) The Student's H. E. Dictionary by R. N. Lal.

(2) 50. P. 500.

(3) 30. P. 396.

(4) 39. P. 451.

mercy to all His creatures: the Koran supports this:—

"We have not sent thee (O Mohammed) but (as) a mercy-unto-all-creatures."[1]

4.

"Mahemmet" seems to be composed of "Mahema" or "Mahima" which in Sanskrit means "greatness; glory,"[2] and Metta which means "mercy." Therefore the entire word means "the glorious mercy" or a great mercy."

(1) 21 P. 326.

(2) The Student's H. E. Dictionary by R. N. Lal.

ESOTERIC AND EXOTERIC DOCTRINE AND THE BUDDHAS.

"I have preached the truth without making any distinction between exoteric and esoteric doctrine: for in respect of truths, Ananda, the Tathagata has no such thing as the closed fist of a teacher, who keeps something back.[1]

If Jesus was the Buddha Maitreya the characteristic mentioned above should hold good in his case, but it does not:—

"And the disciples came and said unto him, Why speakest thou unto them in parables? He answered and said unto them, *Because it is given unto you to know the mysteries of the kingdom of heaven, but to them it not given............ Therefore I speak to them in parables: because they seeing see not; and hearing they hear not, neither do they understand.*[2]

"Plainly our Lord desired that the bulk of his hearers should not understand the mysteries of his kingdom."[3]

Jesus was put before the high priest as an accused. He questioned Jesus about his doctrine:—

"Jesus answered him, I spake openly to the world; I ever taught in the synagogue and in the temple, whither the Jews always resort; and in secret have I said nothing."[4]

---

(1) S. B. E. Vol. XI. P. 36.
(2) Matt. 13: 10-13.
(3) Four Gospels by W. W. How D. D.
(4) John 28 : 20.

Let us see what Jesus taught in secret:—

"And when he was alone, they that were about him with the twelve asked of him the parable. And he said unto these, *Unto you it is given to know the mystery of the kingdom of God; but unto them that are without all these things are done in parables; that seeing they may see, and not perceive, and hearing they may hear, and not understand; lest at any time they may be converted, and their sins should be forgiven them.*"[1]

Jesus commanded his disciples not to make his secret doctrine public:—

"Give not that which is holy unto the dogs, neither cast ye your pearls before swine, lest they trample them under their feet, and turn again and rend you."[2]

In public Jesus always spoke in parables:—

"And with many such parables spake he the word unto them. But without a parable spake he not unto them: and when they were alone, he expounded all things unto his disciples."[3]

Thus from the above it is clear that Jesus deliberately made a distinction between the exoteric and esoteric doctrine. In respect of truth he intentionally had a closed fist of a teacher for the majority of his audience. He consciously withheld his real teaching from the bulk of his hearers, whether worthy or unworthy.

---

(1) Mark 4 : 10-12.

(2) Matt. 7 : 6.

(3) Mark 4 : 33-34.

The student of the Bible well knows that the ancient Christians had a number of secret Gospels, Acts and Epistles. Fragments of some of these are still found.

"An apocryphal book was-originally-too sacred and secret to be in every one's hand."[1]

The existence of scriptures, other than Canonical ones, is clearly hinted in Luke:—

"For as much as many **have taken in hand a declaration of those things which are most surely believed amongst us............"[2]**

" 'Many'. This does not refer to the Gospels of St. Matthew and Saint Mark........"[3]

It is therefore apparent from the above that Jesus cannot be the Buddha Maitreya. Shankaracharya not being an inspired teacher we leave him out of question.

On the other hand, Mohammed in obedience to the command of God, published his doctrine completely, without making any distinction between exoteric and esoteric:—

"O apostle, publish (the whole of) that which hath been sent down unto thee from thy Lord: for if thou do not, thou dost not (in effect) publish any part thereof."[4]

---

(1) Apocryphal New Testament by M. R. James P. XIV.

(2) Luke 1: 1.

(3) W. W. How D. D. The Four Gospels.

(4) The Koran V. P. 109.

The Koran was recited in public in the days of the prophet. It is recited in the same way even now. The prophet had strictly forbidden Muslims from hiding his doctrine:—

1. "Abu Hurera relates that the apostle of God said: **Whosoever is asked anything concerning knowledge and if he does not tell, he shall be bridled with the bridle of fire (on the day of resurrection.)"**[1]

2. "Abu Hurera relates:—The apostle of God said, **'None is such that he learnt knowledge and hid it, but shall come on the day of resurrection bridled with the bridle of hell-fire.' "**[2]

3. "Anas relates: I heard the apostle of God saying, **'If a man is questioned about knowledge and if he hides it he will be bridled with the bridle of fire.' "**[3]

4. "Abu Hurera relates:—The apostle of God said, **'If a man is questioned about knowledge that he knows, and if he hides it, he shall be bridled with the bridle of fire.' "**[4]

It is clear, therefore, that Mohammed is the Buddha Maitreya and not Jesus.

DEVOTED SERVITORS OF THE BUDDHAS.

"Then the Blessed one addressed the brethren, and said, '*Whosoever, brethren, have been Arahat-Buddhas*

---

(1) Ta. Vol. IV. P. 248, quotes A and T.
(2) I. Vol. I. P. 117.
(3) *Ibid* P. 118.
(4) *Ibid.*

through the long ages of the past, there were servitors just as devoted to those Blessed ones as Ananda has been to me. And whosoever, brethren, shall be the Arahat-Buddhas of the future, there shall be servitors as devoted to those Blessed ones as Ananda has been to me.'"[1]

"And Ananda remained always near the Blessed Master of truth, until the Tathagata made his final entry into Nirvana."[2]

Ananda was really devoted to the Buddha Gautama. His true devotion distinguishes him from other disciples. Once when a maddened elephant approached the Buddha Gautama *"the Bhikshus all deserted him, Ananda only remained by his side."*[3]

If Jesus was the Buddha Maitreya he should have a servitor like Ananda. We search for such a servitor of Jesus in the Gospels:—

We consider Judas Iscariot was this servitor of Jesus, for "Judas was with our saviour in public and private,"[4] "and had the bag and bare what was put therein."[5] Judas Iscariot, however, was wanting in devotion towards his master:—

"Then one of the twelve, called Judas Iscariot, went unto the chief priests, and said unto them, What will ye give me, I will deliver him unto you? And they

---

(1) S. B. E. Vol. XI. P. 97.

(2) The Gospel of Buddha by Carus P. 69.

(3) S. B. E. Vol. 19, P. 247.

(4) Eadie P. 392.

(5) John 12 : 6.

covenanted with him for 30 pieces of silver. And from that time he sought opportunity to betray him."[1]

And Judas betrayed Jesus.[2] Therefore Judas cannot be the true servitor of Jesus.

Perhaps Peter was this servitor of Jesus. Jesus, in his life time, entertained a good opinion of Peter:—

"And Jesus answered and said unto him, Blessed art thou Simon Barjona..............I say unto thee, *That thou art Peter, and upon this rock I will build my church and the gates of hell shall not prevail against it. And I will give unto thee keys of the kingdom of heaven; and whatsoever thou shalt bind on earth shall be bound in heaven and whatsoever thou shalt loose in earth shall be loosed in heaven.*"[3]

Peter himself expressed that his devotion towards Jesus was sincere:—

(*a*) **"I will lay down my life for thy sake."**[4]

(*b*) "Peter answered and said unto him, **Though all men shall be offended because of thee, yet will I never be offended. Peter said unto him. Though I should die with thee, yet will I not deny thee** LIKE-WISE ALSO SAID ALL THE DISCIPLES."[5]

Peter said to Jesus:—

(*c*) **"Lord I am ready to go with thee, both in prison and to death."**[6]

---

(1) Matt. 26 : 14-16
(2) Matt. 26 : 50.
(3) Matt. 16 : 17-19.
(4) John 13: 37.
(5) Matt. 26. 33-35.
(6) Luke 22 : 33.

(*d*) "But he spake the more vehemently, **If I should die with thee, I will not deny thee in any wise.** LIKEWISE ALSO SAID THEY ALL."[1]

A time for the true test of devotion soon arrives, and the disciples of Jesus fail one and all. Jesus is captured by the enemy and the disciples desert him:—

"ALL THE DISCIPLES FORSOOK HIM AND FLED."[2]

Peter, the rock of Jesus, proves an utter failure. He deserts Jesus, trembles even at the questioning of a damsel, the gates of hell prevail against him in the very lifetime of Jesus and he denies Jesus repeatedly and most emphatically:—

"Now Peter sat without in the place: and a damsel came unto him, saying, Thou wast also with Jesus of Galilee. **But he denied before them all, saying, I know not what thou sayest.** And when he was gone out into the porch, another maid saw him, and said unto them that were there, This fellow was also with Jesus of Nazareth. **And again he denied with an oath, I do not know the man.** After a while came unto him they that stood by and said to Peter, Surely thou also art one of them; for thy speech betrayeth thee. **Then he began to curse and to swear, saying, I know not the man...........**"[3]

---

(1) Mark 14 : 31.

(2) Matt. 26 : 56.

(3) Matt. 26 : 69-74.

It is therefore apparent that in the life-time of Jesus none of his disciples showed the constant devotion of Ananda towards their master. Hence Jesus cannot be the Buddha Maitreya.

Mohammed had a servitor named Anas who never left the service of the prophet in his lifetime. Anas was presented to the prophet by his parents:—

"Anas relates: The apostle of God came to our house............my mother said to him, 'O apostle of God, here is your little servant.' "[1]

" 'I served him from the time I was 8 years old,' said his servant Anas, 'and he never scolded me for any thing, though things were spoiled by me.' "[2]

The prophet loved Anas and called him his son,[3] and his "little beloved."[4] Anas was devoted to the prophet like Ananda. The prophet himself, like the Buddha Gautama, bore testimony to this effect by calling Anas,

"Onais."[5]

The word Onais means the devoted young one. The word Anas itself is from the root Ons which means devotion. Anas was really the incarnation of

---

(1) M. Vol. II. P. 719.

(2) Irving P. 232.

(3) T. Vol. II. P. 247.

(4) M. Vol. VI. P. 2330.

(5) T. Vol. I. P. 449.

true devotion. He stuck to the prophet in station and out station, in peace and in war, in safety as well as in danger, upto the end of the life of the prophet. We point out only two events of the life of Anas showing his undaunted devotion to the prophet:—

(1) Anas when only about 11 years old, was near the person of the prophet at the battle of Ohod[1] where the prophet "was very near loosing his life, being struck down by a shower of stones, and wounded in the face by two arrows,"[2] and he depicts the scene of the spot vividly.

(2) Anas was near the person of the prophet at the battle of Honain, and gives a graphic account of it. In the Muslim army there were mostly recent converts and idolaters,[3] unprotected by coats of mail and "unarmed,"[4] and they got panic-stricken at the fury of sudden and unexpected onslaught of the enemy, and fled in disorder. "They were assailed by a shower of darts, stones and arrows, which left two or three of Mahomet's soldiers dead at his feet, and wounded several others."[5] "The enemy then surrounded the apostle of God"[6] who was left "alone"[7] "with some few of his family."[8] The enemy, the tribe of Hawazin

---

(1) Ta. Vol. IV. P. 290. M. & T. quoted.

(2) Sale's Koran P. 60. Foot Note.

(3) Rahmat-lil-alimina Vol. I. P. 162.

(4) M. Vol. V. P. 1898.

(5) Irving P. 182.

(6) M. Vol. V. PP. 1899-2000.

(7) Ta. Vol. V. P. 61 B. M. T. quoted.

(8) Sale's Koran P. 183 Foot Note.

"were archers and they shot volleys of arrows (as thick as) the swarm of locusts."[1] The Muslim army "had to face such archers none of whose arrows missed."[2] The presence of Anas, a lad of about 16 years, near the person of the prophet, is a sure proof of his admirable devotion towards Mohammed and undoubtedly stands a decent parallel to Ananda's devotion towards the Buddha Gautama when the maddened elephant approached him.

Therefore it is clear that Mohammed is the Buddha Maitreya and not Jesus; Shankaracharya not being an inspired teacher we leave him out of consideration.

---

(1) M. Vol. V. P. 1898.
(2) *Ibid* P. 1891.

SIX CRITERIA

"And the Tathagata's body appeared like a flame, and he was beautiful above all expression."

"And venerable Ananda said to the blessed one: 'How wonderful thing is it, Lord, and how marvellous that the colour of the skin of the blessed one should be so clear, so exceedingly bright! When I placed this robe of burnished cloth of gold on the body of the blessed one, lo! it seemed as if it had lost its splendour!'"

"The blessed one said, '*There are two occasions on which a Tathagata's appearance becomes clear and exceedingly bright. In the night, Ananda, in which a Tathagata attains to the supreme and perfect insight, and in the night in which he passes finally away in that utter passing which leaves nothing whatever of his earthly existence to remain.*'"[1]

From the above quoted words of the Buddha Gautama we have the following 6 criteria for indentifying a Buddha:—

(1) A Buddha attains to supreme and perfect insight at **night time.**

(2) On the occasion of his complete enlightenment he **looks exceedingly bright.**

(3) A Buddha dies a **natural death.**

(4) He dies at **night time.**

(5) He **looks exceedingly bright before his death.**

---

(1) The Gospel of Buddha by Carus P. 214.

(6) After his death a Buddha ceases to exist on earth.

If Jesus was the Buddha Maitreya these six criteria should hold good in his case.

(1)

Jesus attained to supreme insight after being baptised of John the Baptist:—

"And Jesus, when he was baptised, went up straightway out of water: and, lo, **the heavens were opened unto him**, and he saw the spirit of God descending like a dove, and lighting upon him, and lo a voice from heaven, saying, This is my beloved son, in whom I am well pleased."[1]

This was "**day**" **time**[2] and not **night time**. Therefore Jesus cannot be the Buddha Maitreya.

(2)

There is no record in the gospels to show that Jesus looked exceedingly bright at the time of his baptism. The gospel version of his life again fails to support him.

(3)

According to the gospels Jesus did not die a natural death but was deprived of his life by his

---

(1) Matt. 3 : 16-7.
(2) John 1 : 29.

enemies in the prime of life. This is impossible according to the Buddha's words:—

"This, O Bhikkhus, is an impossible thing, one that cannot occur that one should deprive a Tathagata of life by violence. The Tathagatas, O Bhikkhus, are extinguished (in death) in due and natural course..............."[1]

Thus the Christian and the Buddhist scriptures both do not permit us to consider the advertised claim of Jesus for the Buddhahood in question.

(4)

According to the gospels Jesus was killed not at night time but at day time:—

"It was the third hour that they crucified him,[2] 'that is, 9 o'clock in the morning. Thus the whole crucifixion occupied 6 hours, as our Lord died at 3 o'clock,' 'the Jews reckoning the hours from 6 in the morning."[3]

Thus the version of the crucifixion story of the gospels again stands in the way of Jesus if we want to consider his claim for the Buddhahood in question.

(5)

The four gospels very clearly and minutely depict

---

(1) Vinaya Text Part III. by Max Muller PP. 246-7.
(2) Mark 15 : 25.
(3) The Four Gospels by Right Rev. W. W. How. D. D.

the scenes of the night preceding the crucifixion day of Jesus. There is no mention that Jesus looked "exceedingly bright" and "beautiful above expression" in this night. Thus the gospels again fail to support the claim of Jesus for the Buddhahood in question.

(6)

It is a settled doctrine of Christians that Jesus rose from the dead on the third day after his death on the cross. The four gospels are unanimous on the point.[1] According to the gospels his resurrection was no vision[2] but a reality. They touched him.[3] He dined with them.[4] Jesus "shewed himself alive after his passion by many infalliable proofs, being seen of them for forty days and speaking of the things pertaining to the kingdom of God";[5] "he rose again the third day ....and he was seen of Cephas, then one of the twelve: after that he was seen of above five hundred brethren at once, of whom the greater part remain unto this present, but some are fallen asleep; after that he was seen of James, then of all the disciples. And last of all he was seen of me also."[6]

There is another settled doctrine of Christians

---

(1) Matt. 28 : 6; Mark 16 : 6, Luke 24 : 6; John 20 : 9.

(2) Luke 24 : 39.

(3) Matt. 28 : 9.

(4) Luke 24 : 30 : John 21 : 12.

(5) Acts, 1 : 3.

(6) 1 Cor. 15 : 4-6.

that the very same Jesus is again coming upon earth. It is based on the following words of Jesus.

(1) "A little while, and ye shall not see me: and again, a little while, and ye shall see me."[1]

(2) "But I will see you again, and your heart shall rejoice."[2]

(3) "I will not leave you comfortless: I will come to you."[3]

(4) "I will come again, and receive you unto myself."[4]

(5) "I said unto you, I go away, and come again unto you."[5]

(6) "The son of man shall come in the glory of his Father with his angels."[6]

(7) "They shall see the son of man coming in the clouds of heaven with power and great glory."[7]

. . . .

According to the Buddhist scriptures quoted above the Buddhas are extinguished in death. They do not remain on earth after their death. If the Christian world wants a Buddhist to consider the claim of Jesus as the Buddha Maitreya, they should deny the story of the resurrection of Jesus after his death

---

(1) John. 16 : 16.
(2) John. 16 : 22.
(3) John. 14 : 18.
(4) John. 14 : 3.
(5) John. 14 : 28.
(6) Matt. 16 : 27
(7) Matt. 24 : 30.

on the cross, and also the doctrine of his second advent upon earth. Therefore Jesus cannot be the Buddha Maitreya.

The six criteria do not hold in the case of Shankaracharya as in the case of Jesus, but they hold remarkably in the case of Mohammed:—

1

Mohammed attained to supreme insight at night time. We quote the Koran:—

(*a*) "By the perspicuous book (of the Koran); verily We have sent down the same on a blessed night."[1]

(*b*) "Verily We sent down (the Koran) in the night of Alkadra."[2]

"On this night Mohammed received his first revelation."[3]

"Alkadra signifies, power, and honour, or dignity and also the Divine decree."[4]

"Lailat-ul-qadra.............literally means the night of majesty or grandeur or greatness ....it is called the blessed night."[5]

According to Badger's English Arabic Lexicon "Grand," "Glorious," and "Beautiful" are synonyms. Therefore Lailat-ul-Qadra expresses the idea of the night of glory or brightness.

---

(1) XLIV. P. 478.
(2) XCVII: P. 586.
(3) Sale's Translation of the Koran; P. 586 Foot Note.
(4) *Ibid.*
(5) Mohammed Ali's Translation of the Koran. Foot Note. 2777.

(2)

Mohammed was "the brightest face;" "it was as though the sun-light beamed in his countenance."[1] "There was a glow or radiance in his countenance," "the supernatural light of prophecy."[2] The couplet of Abu Beker, the first Caliph, aptly describes him:—

"As there is no darkness in the moonlit night,
So is Mustafa, the well-wisher, the bright."[3]

"Monzir-bin-Jareer relates: 'I saw the face of the apostle of God, it was shining like gold........' "[4]

"Abe Is-hak relates: 'A man asked Bara, Was the face of the apostle of God shining as a sword?; he replied, 'Nay (but) like the moon.' "[5]

In fact the prophet was the brightest of the bright, and we see no exaggeration in the words of Ibn Abbas who said.

"The prophet never sat opposite the sun or a light, without outshining them by his own light."[6]

Well the Buddhist scripture says:—

"The sun is bright by day, the moon shines by night, the warrior is bright in his armour; thinkers are bright in their meditation; but among all the

---

(1) The Life of Mohammad by Muir, P. 510

(2) Irving P. 230.

(3) The Ideal Prophet by Kamal-ud-din P. XXXIV.

(4) M. Vol. III P. 35.

(5) T. Vol. II. P. 552.

(6) Koelle P. 377.

brightest with the splendour of day and night is Buddha the Awakened, the Holy, the Blessed."[1]

No wonder if Mohammed looked "exceedingly bright" and "beautiful above expression" in the night of Alkadra when the Divine light burst upon him in a flood:—

"It was the fortieth year of his age when the famous revelation took place. Accounts are given of it by Muslim writers as if received from his own lips, and it is alluded in a certain part of the Koran. **It was on the night called by Arabs Alkader........a flood of light broke upon him of...........intolerable splendour..........Mahomet instantly felt his understanding illumined with celestial light."**[2]

3

Mohammed died a natural death unlike Jesus.

4

According to the version of Aisha Mohammed died at **night time.** When he was expiring "there was no oil in the lamp,"[3] "and his wife had to borrow oil for the lamp."[4]

---

(1) The Gospel of Buddha by Carus, P. 117. Dhammapada quoted.
(2) Irving PP. 36-7.
(3) Maulud by Ghulam Imam Shahid P. 63.
(4) Mohammed, Buddha, and Christ by M. Dods D. D. P. 94.

5

Mohammed looked "exceedingly bright" and "beautiful above expression" in the night of his death. Anas son of Malik was the servitor of the prophet just as Ananda was to the Buddha Gautama. This Ananda of the Buddha Maitreya Mohammed relates:—

"Abu Beker used to conduct prayer during the illness in which the apostle of God died. When it was Monday and people were standing in rows in prayer, he lifted up the curtain of his room and looked towards us while standing, *his face being a page of the book* (*of the Koran*), and he smiled as he found people firm in religion and constant in prayer. We got maddened (for joy) even during the prayer in the expectation that he intended to come out. And Abu Beker fell back in order to join the rank, with the idea that the apostle of God was coming out for prayer. In the meanwhile he made a token with his hand for completing the prayer, he then got inside the room and dropped the curtain, and he died the same day.[1]

Comparing the face of a man with "a page of the book of the Koran" is an Arab way of expressing the brightness, beauty, and glory of the person. The Koran is called "*glorious*".[2] Another report of Anas

(1) M. Vol. 2 PP. 561-2.

(2) The Koran L. P. 499 : LXXXV. P. 573.

makes the matter clear:—

"The apostle of God did not come out for three days. Abu Beker advanced to conduct the prayer. In the meantime the apostle of God lifted up the curtain. *When his face was unveiled it appeared to us so very beautiful that throughout our lives we never saw a thing so very beautiful.* He made a sign with his hand to Abu Beker to advance (for conducting the prayer of the congregation) and he dropped the curtain. *Ever afterwards we did not see him.*"[1]

6

After his burial, Mohammed, in his bodily form, was never seen of any one upon the earth.

Therefore Mohammed is the Buddha Maitreya and not Jesus or Shankaracharya.

---

(1) M. Vol. II. P. 562.

THE PERSONAL BEAUTY OF MAITREYA.

(1) "*His (Maitreya's) body shall be of pure gold, bright, glistening and pure.*"[1]

(2) "Asanga answered, 'That is settled; but with respect to Maitreya what is his appearance........?' He said, '*No words can describe the marks and signs, (the personal) beauty of Maitreya..........*' "[2]

(3) "*No words can describe the personal beauty of Maitreya.*"[3]

In the eyes of the white Christian dweller of Europe the Jew is "swarthy". Jesus was himself a Jew of the Jews, and unless he was an exception, he too must have possessed the characteristic swarthy colour of his race. **In the person of Jesus "the Jews could find no form** or **comeliness."**[4] The ancient Christian Fathers considered that Jesus had no beauty of person:—

"Justin Martyr. Clemens Alexandrinus, Tertullian, and others of the ancient fathers, concluded our savior's person to have been deformed."[5]

There is no evidence in the gospels to show that Jesus had an uncommon beauty of person. Hence

---

(1) Si-Yu-Ki. Vol. II. PP. 46-7.

(2) *Ibid.* Vol. I. P. 229.

(3) Buddhism by Monier William P. 82.

(4) The Holy Bible Commentary by Thomas Scott. Vol. V. Foot Note on Chapter LIII of Isaiah.

(5) Comprehensive Commentary on the Holy Bible by Rev. W. Jenks D. D. and Rev. Joseph A. Warne A. M. Psalms—Malachi, P. 457 Foot Note.

Jesus cannot be the Buddha Maitreya. Shankar-acharya too, did not possess an extraordinary beauty of person.

Mohammed possessed a very beautiful and lovely person. "In the dicta which are ascribed to him he (prophet) declared himself to be **the best in character and the most perfect in beauty among mankind.**"[1]

"Mottalib-bin-Abu Vidaah relates:—............ the apostle of God said, '................ **(God)** .... **made me** .... **the best** ....'"[2]

Mohammed was a unique assemblage of graces, and **he is described as possessing an extraordinary beauty of person by his contemporaries:—**

(1) "Anas relates:— **'The apostle of God was the most beautiful of all people**........"[3]

(2) "Jabir-bin-Samorah relates:—'I saw the apostle of God in the moon-light, so I began to look towards him and the moon (for comparing), he was wearing a red suit: I came to the conclusion that **in my opinion he was more beautiful than the moon.**"[4]

(3) "Kaab-bin-Malik relates:—'.........I came to the apostle of God and saw him sitting in the mosque, and round him were Muslims, and **he was shining like the splendour of the moon**.........'"[5]

---

(1) Mohammed by S. D. Margoliouth P. 82.

(2) T. Vol. II. P. 543.

(3) T. Vol. I. P. 529.

(4) *Ibid.* Vol. II. B. 281.

(5) *Ibid.* P. 374.

(4) "Bara relates:—'*I never saw a man, having locks and wearing a red suit, more beautiful than the apostle of God.* His locks were flowing down his shoulders. His breast was broad. *He was neither very stunted nor very tall.*"[1]

(5) "Ali relates:—'..........*I never saw a man like him* (*the prophet*) *among those who were before or after him.*' "[2]

....

(6) "........Jabir-bin-Abdullah relates:—'.... ....**like him (the prophet) there was none among those who were before or after him.**' "[3]

(7) "Abu Hurera relates:— **The apostle of God was................a beautiful person, so very beautiful a man I never saw among those who were before or after him.**' "[4]

(8) "Jabir-bin-Samorah relates:—'I said the afternoon prayer with the apostle of God when he walked out to go home; I too went with him; in the way were seen some children; he touched the cheeks of every child, and mine too; **I felt a coolness and scent in his hand as if it was just being drawn out from a casket of a perfumer.**' "[5]

(9) "Anas relates:—'**I never smelt amber or musk or any other scent sweeter than the smell of the body of the apostle of God: I never touched silk**

(1) T. Vol. II B. P. 551.

(2) Ta. Vol. VI. P. 99.

(3) B. Vol. III. P. 117.

(4) *Ibid.*

(5) M. Vol. VI. PP. 2338-9.

or any thing softer than the body of the apostle of God.'"[1]

(10) "Anas relates:— '**The apostle of God was white and shining** and his perspiration was (white) like pearls; when he would walk, he would do so inclining with force onward (or leaning this side and that side.)'"[2]

(11) "Anas-bin-Malik relates:—'The apostle of God came to my house and slept; he perspired very much. My mother brought a phial and collected the perspiration, rubbing it down (from the leather pillow.) This awoke him and he said, O Omme Solaim, what are you at? She said: **It is your sweat that we mix with scent: it is in itself the best scent.'"**[3]

(12) "Bara-bin-Azib relates:— '**The apostle of God was of middle size** and the distance between his two shoulders was great."[4]

(13) "Bara relates:—'The face of the apostle of God was the most beautiful of all and his manners were the best. He was neither too tall nor too stunted.'"[5]

(14) "Abu-Tofail relates:— '**He (prophet) was of a bright white colour.'"**[6]

(15) "Anas relates:—'His (prophet's) colour was neither perfectly white nor wheatlike.'"[7]

(1) M. Vol. VI. P. 2339.
(2) *Ibid* P. 2339.
(3) *Ibid* P. 2339.
(4) *Ibid* P. 2342.
(5) *Ibid.*
(6) *Ibid* 2343.
(7) *Ibid.*

(16) "Anas son of Malik relates:— **'The apostle of God was neither too tall nor too dwarfish, neither too white like lime nor too wheaten in colour, his fair neither too curly nor too straight, ... in his head and beard there were not even twenty white hair at the time of his death.'** "[1]

(17) "Monzir-bin-Jareer relates:—'I saw the face of the apostle of God, IT WAS SHINING LIKE GOLD............' "[2]

(18) "Abu Hurera relates:—'Once the apostle of God was sitting with his companions when a dweller of the desert came and asked: Who is the son of Abdul Mottalib? It was replied: **This man of white and red colour who is sitting**............' "[3]

(19) "Abu Hojaifa relates:—'Once the apostle of God went to Bat-ha and then he made ablution and offered two prostrations of prayer at the decline of the sun..........people began to rub his hand on their *faces. I too put his hand on my face and I found it cooler than ice and more sweet-smelling than musk.'* "[4]

(20) *"They affirmed that a marvellous fragrance which, according to the evidence of his wives and daughters, emanated from his person during life, still continued after his death."*[5]

---

(1) Mauta P. 422.

(2) M. Vol. III. P. 35.

(3) N. Vol. I. P. 491.

(4) B. Vol. II. P. 130.

(5) Irving. P. 227.

(21) "Ibrahim relates:—'During the night time *the apostle of God could be identified by the sweet scent (of his body)*.'"[1]

(22) "Jabir relates:—'If the apostle of God would go one way, and if a way-farer would go the same way, he (the way-farer) *could find out which way he (prophet) had gone, by the sweet scent of his (body)*, (or, the narrator said), *by the sweet scent of his perspiration*.'"[2]

(23) "A ruler (of the tribe) of Bani Harish relates:—'When the apostle of God stoned Maiz-bin-Malik I was present (on the scene) with my father. When the stones were rained on him (Maiz) I got terror stricken. On this *the apostle of God hugged me to his breast, and his musklike (sweet-smelling) perspiration began to flow over me*.'"[3]

(24) "Abu Obaida-bin-Mohammed............ relates:—'O child, *if thou hadst seen the apostle of God thou wouldst have thought (him to be like) the risen sun*.'"[4]

(25) "Son of Abbas relates:—'Between the two teeth of the apostle of God was (some) space. **When he would talk light seemed to emanate from between his teeth.**'"[5]

(1) D. P. 23.
(2) D. P. 23.
(3) *Ibid.*
(4) D. P. 2?
(5) *Ibid.*

(26) "Son of Omar relates:—'I never saw a man braver, more charitable, more valiant, more beautiful, and more decent than the apostle of God.' "[1]

(27) "Abu Hurera relates:—'I never saw any one more beautiful than the apostle of God.' "[2]

"Mohammed was distinguished by the beauty of his person, an outward gift which is seldom despised, except by those to whom it has been refused."[3] Mohammed being the "handsomest"[4] the comeliest, and the loveliest person, it is clear that he was the Buddha Maitreya, and not Jesus or Shankara-charya.

---

(1) D. P. 23.
(2) Ta. Vol. VI. P. 101.
(3) An Apology for Mohammed and the Koran by Davenport PP. 11-12. Gibbon quoted.
(4) The Life of Mohammed by Muir P. 510.

THE VOICE OF MAITREYA.

"Asanga answered, '.............. **The exquisite voice of the Bodhisattva (Maitreya) is soft and pure and refined; those who hear can never tire; those who listen are never satiated.'**"[1]

If Jesus was the Buddha Maitreya he should possess such an exquisite voice. There is no evidence in the gospels to show that Jesus had a voice soft, pure, and refined. Hence Jesus cannot be the Buddha Maitreya. Shankaracharya too did not possess such a voice.

Mohammed had such a voice. His contemporaries bore witness to this effect:—

1. "Bara relates:—'I heard the apostle of God reciting (the chapter) The Fig and Olive, during the night (prayer), and **I never saw a man more sweet-voiced or better reciter than he.'**"[2]

2. "Abu Hurera relates:—'The apostle of God said, **God listens to nothing with so much love as He listens to the prophet of sweet voice who reads the Koran with a sonorous voice.'**"

3. "Aisha relates:—'The apostle of God would talk in such a manner that *a counter if he liked, could count (his) words.'*"[4]

---

(1) Si-Yu-Ki Vol. I. P. 229.
(2) B. Vol. I. P. 107.
(3) M. Vol. II. P. 816.
(4) B. Vol. II. P. 131.

4. "Aisha relates:—'*The apostle of God would not talk hastily as you do, but would speak such a decisive and clear speech that a man sitting close by could learn it by heart.*' "[1]

5. "Anas son of Malik relates:—'*The apostle of God was not a sayer of evil words, or a talker of indecencies, or a curser.*' "[2]

6. "Aisha relates:—'......he (the prophet) said to me, *O Aisha, have you ever seen me talking in an unpolite manner? Assuredly, of all men lowest in the rank in the eyes of God, shall be the man whose company people avoid on account of the fear of the evil of his tongue and abuses.*' "[3]

7. "Abdallah son of Amr relates:—*The apostle of God had not the habit of talking in an ungentlemanly manner, and neither he spoke indecent words intentionally, and he used to say, I am the best in manners among you.*' "[4]

8. "Ibn Abbas relates:—'........Zemad said, *This man* (*the prophet*) *has reached the bottom of the ocean of eloquence.*' "[5]

The prophet was under Divine command in using a polite language throughout his whole career:—

"**Invite men unto the way of thy Lord, by wisdom**

---

(1) T. Vol. II. P. 553.

(2) B. Vol. III. P. 129.

(3) Ta. Vol. VI. P. 209. B. and M. quoted.

(4) B. Vol. II. P. 131.

(5) M. Vol. II. P. 874.

and mild exhortation; and dispute with them in the most condescending manner."[1]

"His ordinary discourse was grave and sententious, abounding with those aphorisms and apologues so popular among the Arabs; at times he was excited and eloquent, and his **eloquence was aided by a voice musical and sonorous."[2]** There is evidence in the Koran that the prophet was under Divine command to recite the Koran with a pure and sonorous voice:—

"And *repeat the Koran with a distinct sonorous voice.*"[3]

"Voice" is sometimes synonymous with "language." There is no evidence in the gospels to show that Jesus ever wrote his teachings. Of his teachings what is available to us are not the very words of Jesus, but what a sect of Christians considered to be the teachings of the master.[4] That too is a very small fraction of what Jesus taught and did.[5] And this too is not available in the language that Jesus spoke "St. Matthew wrote his gospel in Hebrew."[6] Scholars know that Hebrew was not the language spoken by Jews in the time of Jesus. However, "the original Hebrew Gospel was lost in early times."[7] "St. Mark

---

(1) The Koran XVI. P. 270.

(2) Irving. P. 231.

(3) LXXIII P. 557.

(4) Luke 1: 1-4.

(5) John 21: 25; Luke. 1: 1-4.

(6) The Four Gospels by W. W. How. D. D.

(7) *Ibid.*

wrote his gospel in Greek,"[1] "St. Luke wrote his gospel in Greek,"[2] and St. John's gospel was written in Greek."[3] There is no evidence in the gospels that Jesus taught in Greek. Therefore it is not possible to pass judgment on the purity and refineness of the language used by Jesus.

Shankaracharya wrote his works in Sanskrit. What he taught must have been in the language spoken by the people of India at that time, and is lost for ever. Certainly Sanskrit was not the spoken language of the people of India at that time.

Mohammed on the other hand, spoke Arabic, and taught in Arabic which was the language of the people at that time. He got his teachings recorded in his life-time in Arabic. The Koran claims that it was revealed in perspicuous Arabic:—

1. *"This wherein the Koran is written is the perspicuous Arabic tongue."*[4]

2. "Thus have We sent down (this book, being) *a Koran in the Arabic tongue."*[5]

3. "This is a revelation from the *most Merciful (Maitreya), a book the verses whereof are distinctly explained, an Arabic Koran."*[6]

4. "H. M. By the perspicuous book; verily We have ordained the same an Arabic Koran, that ye may

(1) The Four Gospels by W. W. How, D. P.

(2) *Ibid.*

(3) *Ibid.*

(4) XVI. P. 267.

(5) XX P. 313.

(6) XLI. P. 463.

understand; it (is) certainly (written) in the original book, (kept) with Us, (being) **sublime and full of wisdom.**"[1]

5. "Whereas the book of Moses (was revealed) before (the Koran, to be) a guide and a mercy; and this (is) a book confirming (the same, delivered) in the **Arabic tongue**; to denounce threats unto those who act unjustly. and to bear good tidings unto the righteous doers."[2]

From the above passages it is clear that the Koran was delivered in Arabic. The word Arabic means "**pure and refined**":—

(*a*)

1. The word Arabic is connected with "Araba. **He spoke without incorrectness.** A-rabun, signifies, **committing no error in speech,** (K, T, A :) and **expressing the meanings clearly, plainly distinctly or perspicuously, by words.**"[3]

2. "Katadah says that the **tribe of Kuresh used to cull or select what was most excellent in the dialects of the Arabs, so that their dialect became the most excellent of all and the Kuran was therefore revealed in that dialect.**"[4]

---

(1) XLIII. P. 473.

(2) XLVI. P. 485.

(3) Arabic English Lexicon by Lane Book I. P. 1992.

(4) *Ibid* P. 1994.

The Koran distinctly gives out that it was not delivered in an unrifined or barbarous tongue:—

1. "We (also) know that they say, verily. a (certain) man teacheth him (to compose the Koran.) The tongue of (the person) unto whom they incline, is a foreign (tongue); but this, (wherein the Koran is written) is the perspicuous Arabic tongue."[1]

2 "If we had revealed (the Koran) in a foreign language, they had surely said, Unless the signs thereof be distinctly explained, (we will not receive the same:) (is the book written in) a foreign tongue, and (the person unto whom it is directed) an Arabian?"[2]

The word "foreign" is the translation of the word "Ajami". "The word Ajami which is here used signifies any foreign or barbarous language in general."[3] The word Ajami is connected with "Ajamatun" which signifies "he had an impotence or impediment, or a difficulty in his speech, or utterance............a want of clearness, perspicuousness, distinctness, chasteness ....therein (Msb)."[4]

The word in the original for Arabic is "Urbean"[5] which is nothing but "Urbane" which means "courteous; civil; polite." The word Arabic is from "Al-arab" which signifies "the inhabitants of the cities, or large towns, (S. A. O. K.)."[6]

---

(1) XVI. P. 267.

(2) XLI. P. 467.

(3) Sale's Translation of the Koran P. 268 Foot Note.

(4) Arabic English Lexicon by Lane. Book I. P. 1966.

(5) XLIII-3.

(6) The Arabic English Lexicon by Lane. Book I. P. 1993.

The language of the Koran is easy, without any crookedness, and is perspicuous. The Koran itself gives this out:—

(*a*) "Verily We have rendered the Koran easy for thy tongue."[1]

(b) "These are the signs of the perspicuous book."[2]

(*c*) 1. "Praise be unto God who hath sent down unto His servant the book (of the Koran), and hath not inserted therein any crookedness."[3]

2. "An Arabic Koran; wherein there is no crookerness."[4]

The Koran very clearly gives out what is required by the words of Asanga is all fulfilled in the book:—

"Verily (the Koran) is an admonition—and he who is willing retaineth the same—(written) on volumes, honourable exalted and pure."[5]

It is worth pointing out that the word Koran signifies "no more than a reading or a recitation."[6]

Now we turn to the other point mentioned in the words of Asanga. There is evidence in the Koran that those who heard the prophet reciting the Koran were charmed to an extraordinary degree. This led the unbelievers to declare it a piece of sorcery.

---

(1) XIX P. 304.

(2) XII. P. 324.

(3) XVIII. P. 244.

(4) XXXIX. P. 451.

(5) LXXX. P. 570.

(6) Sale's Translation of the Koran P. 224. Foot Note.

"The unbelievers say, **This is manifest sorcery.**"[1]

It is a fact that those who heard the prophet reciting the Koran were never satiated. The Muslim world still feels delighted and unsatiated whenever the Koran is properly recited. It is a significant fact that of the scriptures of the world it is the Koran alone, the very original Koran, that is recited by the largest number of human beings. No scripture in the original is recited by such a large number of human beings as the Koran. The Muslims and the unbelievers both were aware that the reading of the Koran by the prophet delighted people very much. The unbelievers had a reason of their own to explain this, for according to them the Koran was a poetical composition and the prophet was a poet. The Koran denies this:—

"We have not taught (Mohammed) the art of poetry, nor is it expedient for him (to be a poet). This book is no other than an admonition (from God) and a perspicuous Koran, that he may warn him who is living.[2]

We now quote a few opinions of some of the eminent scholars about the beauty and refinement of the language used in the Koran, and the style of the delivery of the prophet:—.

1. *"The Koran is universally allowed to be written with the utmost elegance and purity of language, in the dialect of the tribe of Koreish, the most noble and polite of Arabians,* but with some mixture, though

---

(1) X. P. 199.

(2) XXVI, P. 35.

very rarely, of other dialects. *It is confessedly the standard of the Arabic tongue, and as the more orthodox believe, and are taught by the book itself, inimitable by any human pen*........and *therefore insisted on as a permanent miracle, greater than the raising of the dead, and alone sufficient to convince the world of its Divine original.*

"And to this miracle did Mohammed appeal for the confirmation of his mission, publicly challenging the most eloquent men in Arabia, which was at that time stocked with thousands whose sole study and ambition it was to excel in the elegance of style and composition, to produce a single chapter that might be compared with it. I will mention but one instance, out of several to show that this book was really admired for the beauty of its composition by those who must be allowed to have been competent judges. A poem of Labid Ebn Rabia, one of the greatest wits in Arabia in Mohammed's time, being fixed upon the gates of the temple of Mecca, an honour allowed to none but the most esteemed performances, none of other poets durst offer any thing of their own in competition with it. But the second chapter of the Koran being fixed up by it soon after, Labid himself (then an idolator) on reading the first verses only, was struck with admiration and immediately professed the religion taught thereby, declaring that such words could proceed from an inspired person only. This Labid was afterwards of great service to Mohammed, in writing answers to satires and invectives that were made on him and on his religion by infidels..........

"The style of the Koran is generally beautiful and fluent, especially when it imitates the prophetic manner and scripture phrases. It is concise and often obscure, adorned with bold figures after the eastern taste, and enlivened with sententious expressions, and in many places, especially when the majesty and attributes of God are described, sublime and magnificent, of which the reader cannot but observe several instances, though he must not imagine the translation comes up the original, notwithstanding my endeavours to do it justice.

"Though it be written in prose yet the sentences generally conclude in a long continued rhyme, for the sake of which the sense is often interrupted, and unnecessary repetitions too frequently made, which appear more ridiculous in a translation, where the ornament, such as it is, for whose sake they were made, cannot be perceived. *However, the Arabians are so mightily delighted with this jingling, that they employ it in their most elaborate compositions, which they also embellish with frequent passages of, and allusions to the Koran, so that it is next to impossible to understand them without being well versed in the book.*

"It is probable the harmony of expression which the Arabians find in the Koran, which might contribute not a little to make them relish the doctrine therein taught, and give an efficacy to their arguments which, had they been nakedly proposed without this rhetorical dress, might not have so easily prevailed. Very extraordinary effects are related of the power of words well chosen and artfully placed, which are no less

powerful either to ravish or amaze than music itself; therefore as much has been ascribed by the best orators to this part of rhetoric as to any others. He must have a very bad ear who is not uncommonly moved with the very cadence of a well-turned sentence; and Mohammed seems not to have been ignorant of the enthusiastic operation of rhetoric on the minds of men; for which reason he has not only employed his utmost skill in these his pretended revelations, to preserve that dignity of style, which might seem not unworthy of the majesty of that Being, whom he gave out the Author of them; and to imitate the prophetic manner of the Old Testament; but he has not neglected even the other arts of oratory; wherein *he succeeded so well, and so strangely captivated the minds of his audience that several of his most opponents thought it the effect of witch-craft and enchantment.*"[1]

"It must be acknowledged too, that *the Koran deserves the highest praise for its conception of the Divine nature,* in reference to the attributes of Power, Knowledge, and Universal Providence and Unity—that its belief and trust in One God of Heaven and Earth is deep and fervent............. *it embodies much of noble and deep moral earnestness and sententious wisdom, and has proved that there are elements in it on which mighty nations and conquering............. empires be built.*"[2]

(1) The Preliminary Discourse to the Koran by Sale. PP. 65-67

(2) Rodwell's Preface to the Koran P. 15.

"In the Suras as far as the 24th................ **we cannot but notice the entire pre-dominance of the poetical element, a deep appreciation............of the beauty of natural objects, brief fragmentary and impassioned utterances, denunciation of woe and punishment, expressed for the most part in lines of extreme brevity............the poetical ornament of rhyme is preserved throughout."**

"In a literary point of view, the Koran is the most poetical work of the East. The greater portion of it is a rhymed prose, confirmably to the taste which has, from remotest time, prevailed in the above portion of the globe........ **It is confessedly, the standard of the Arabic tongue, and abounds with splendid imagery and the boldest metaphors; and, notwithstanding that it is sometimes obscure and verging upon timidity, is generally vigorous and sublime,** so as to justify the observation of the celebrated Goethe, that the Koran is a work with whose dulness the reader is at first disgusted, and afterwards **attracted by its charms and finally, irresistably ravished by its many beauties."**[1] "In order to estimate the merits of the Koran, it should be considered that when the prophet arose eloquence of expression and purity of diction were much cultivated, and that poetry and oratory were held in the highest estimation." *"It was to the Koran so considered as a permanent miracle that Mohammed appealed as the chief confirmation of his mission, publicly challenging the most eloquent men in Arabia, then abounding with persons whose sole study it was to excel in the*

(1) Rodwell's Preface to the Koran, P. 15.

eloquence of style and composition to produce one single chapter that might compete therewith." "The admiration with which the reading of the Koran inspires the Arabs is due to the magic of its style, and to the care with which Mohammed embellished his prose by the introduction of poetical ornaments; by his giving it a cadenced march and by making the verses rhyme; its variety is also striking, for sometimes, quitting ordinary language, he points in majestic verses the Eternal, seated on His throne, dispensing laws to the universe; **his verses become melodious and thrilling when he describes the everlasting delights of paradise; they are vigorous and harrowing when he depicts the flames of hell."**[1]

"Before he spoke, the orator engaged on his side the affections whether of a public or of a private audience. They applauded his commanding presence, his majestic aspect his piercing eye, his flowing beard, his countenance which pointed every sensation of his soul, and the gestures that enforced each expression of his tongue. In the familiar offices of life, he scrupulously adhered to the grave and ceremonious politeness of his country; his respectful attention to the rich and the powerful was dignified by his condescension and affability to the poorest citizens of Mecca; the frankness of his manner concealed the artifice of his views, and the habits of courtesy were imputed to personal friendship or universal benevolence; his memory was capacious and retentive, his wit easy and social, his imagination

(1) An Apology for Mohammed and the Koran by John Davenport. PP 64-67.

sublime, his judgment clear, rapid and decisive. He possessed the courage both of thought and action; although his designs might gradually expand with success, the first idea which he entertained of his Divine mission bears the stamp of an original and superior genius. *The son of Abadallah was brought up in the bosom of the noblest race, in the use of the purest dialect of Arabia, and the fluency of his speech was corrected and enhanced by the practice of discreet seasonable silence.*"[1]

"At this time Mohammed was in the prime of manhood: his figure was commanding, his aspect majestic, his features regular and most expressive, his black and piercing eye, his nose slightly acquiline, his mouth wellformed, furnished with pearly teeth, while his cheeks were ruddy with robust health. Art had imparted his naturally black hair and beard a lighter chestnut hue. *His captivating smile, his rich and sonorous voice, the graceful dignity of his manners, gained him the favourable attention of all whom he addressed.* He possessed talents of a superior order—his perception was quick and active, his memory capacious and retentive, his imagination lively and daring, his judgment clear and perspicuous, his courage dauntless, and whatever may be the opinion of some as to the sincerity of his convictions, his tenacity of purpose in the pursuit of the great object of his life, and his patience and endurance, cannot but extort the admiration of all, *His natural eloquence was enhanced by the use of the*

(1) Gibbon quoted by Davenport, P.P. 11-12.

purest dialect of Arabia and adorned by the charm of a graceful elocution."[1]

"On the graces and intellectual gifts of nature to the son of Abdoollah, the Arabian writers dwell with the proudest and the fondest satisfaction. His politeness to the great, his affability to the humble, and his dignified bearing to the presumptuous, procured him respect, admiration, and applause. His talents were equally fitted for persuasion or command. Deeply read in the volume of nature, though entirely ignorant of letters, his mind could expand into controversy, with the acutest of his enemies, or contract itself to the apprehensions of the meanest of his disciples. **His simple eloquence, rendered impressive by the expression of a countenance wherein awfulness of majesty was tempered by an amiable sweetness, excited emotions of veneration and love; and was gifted with the authoritative air of genius which alike influences the learned and commands the illiterate.**"[2] "He expressed himself in pregnant sentences, using neither too few nor too many words."[3]

Hence it is clear that Mohammed is the Buddha Maitreya, and not Jesus or Shankaracharya.

---

(1) Davenport P. 11.

(2) Davenport P. 52.

(3) *Ibid.* P. 14. Foot Note.

BUDDHAS

I

A Buddha is a human being.

Buddhist scriptures have defined the characteristics of Buddhas. We shall consider some of these:—

"It is only a human being"[1] that can be a Buddha, *"a deity cannot."*[2]

A Buddhist can consider the claims of Mohammed as the Buddha Maitreya, for he was a human being. The Koran, like the Buddhist scriptures, declares that apostles of God, peace be on them all, were human beings:—

"We have not sent (any) before thee (as Our apostles), other than men, unto whom We spake by revelation. Enquire therefore of those who have the custody of scriptures if ye know not (this to be truth)."[3]

The Koran very clearly gives out that Mohammed was a human being:—

(1) "Say, *Verily I am only a man like unto you.*"[4]

(2) "And *now is an apostle come unto the (inhabitants of Mecca) from among themselves.*"[5]

(3) "Now hath God been gracious unto the be-

(1) Warren. pp. 14-15.
(2) *Ibid.*
(3) XVI. P. 260.
(4) XLI. P. 463.
(5) XVI. P. 269.

lievers when *He raised up among them an apostle of their own nation.*"[1]

(4) "*Now hath an apostle come unto you of your own nation.*"[2]

(5) "It is a strange thing unto the *men* (*of Mecca*), *that We have revealed* (*Our will*) *unto a man from among them.*"[3]

(6) "Say, *Verily I am only a man as ye are.*"[4]

(7) "Answer, My Lord be praised! *Am I other than a man?*"[5]

* * * * * *

By some of the Hindus Shankaracharya is not considered a human being on account of his birth which was without the agency of a male:—

(1) "The writer of Manimanjari states......... that a young widow once went to the temple of Siva, along with the girls of her own age, and that, as some among them prayed for children, she also did so, *that the Lord granted her request and that she bore Sankara in consequence*..............."[6]

(2) "......the wife continued for a long time to serve the Lord of Chidambaram, and that as a reward of her devotion, *the Lord was pleased to make her conceive in some mysterious and miraculous manner*...."[7]

---

(1) III. P. 65.
(2) IX. P. 198.
(3) X. P. 199.
(4) XVIII. P. 296.
(5) XVII. P. 281.
(6) Sri Shankarcharya by C. N. Krishna Swami Aiyer and S. N. Tattvabhusan, P. 14.
(7) *Ibid.* P. 13.

Jesus, too, is not considered a human being by majority of Christians on account of his birth which was without the agency of a male:—

"Now the birth of Jesus was on this wise: When his mother, Mary was espoused to Joseph, *before they came together, she was found with child of the Holy Ghost.* Then Joseph her husband, being a just man, and not willing to make her a public example, was minded to put her away, privily. But while he thought on these things, behold, the angel of the Lord appeared unto him in a dream, saying, Joseph, thou son of David, fear not to take unto thee, Mary thy wife: *for that which is conceived in her is of the Holy Ghost.*"[1]

A section of the Hindus have deified Shankaracharya:—

"......his followers like those of Jesus Christ, invented the story of his having been born without a human father, *in order to establish his divinity on a miraculous basis.*"[2]

Majority of Christians claim divinity for Jesus The idea is based on some such passages of the scripture:—

(1) "Behold, a virgin shall be with child, and shall bring forth a son, and they shall call his name Emmanuel, which being interpreted is, **God with us.**"[3]

---

(1) Matt. 1 : 18-20.

(2) Sankaracharya by S. N. Dutta, pp. 2-3.

(3) Matt. 1 : 23

(2) "In the beginning was the Word, the Word was with God, and the Word was God."[1]

By this verse a large number of Christian divines understand that Jesus was, "the very and eternal God."[2]

(3) "I and My Father are one."[3]

(4) "Jesus saith unto him, Have I been so long time with you, yet hast thou not known Me, Philip? He that hath seen Me hath seen the Father; and how sayest thou then, Shew us the Father?"[4]

* * * * * *

According to some divines Jesus was accepted as God by his disciples:—

"Thomas answered and said unto him (Christ), My Lord and my God."[5]

Some of the contemporary Jews of Jesus considered that Jesus claimed divinity for himself:—

(1) "Therefore the Jews sought the more to kill him, because he not only had broken the sabbath, but said also that God was His Father, making Himself equal with God."[6]

(2) "The Jews answered him (Christ), saying, For a good work we stone thee not; but for blasphemy; because thou, being a man, makest thyself God."[7]

---

(1) John. 1 : 1.

(2) The Four Gospels by W. W. How D. D.

(3) John. 10 : 30.

(4) John. 14 : 9.

(5) John. 20 : 28.

(6) John. 5 : 18.

(7) John. 10 : 33.

The doctors of the Jewish religion declared Jesus "guilty of death"[1] because he claimed divinity for himself. "The divinity of Christ", writes Eadie,[2] "is the corner-stone of our faith". "Some in the early ages doubted or denied Christ's humanity."[3]

Hence from the Buddhist point of view neither Jesus nor Shankaracharya can be the Buddha Maitreya, for they were deities, and not human beings. On the other hand, a Buddhist can consider the claim of Mohammed as the Buddha Maitreya, for he was a human being.

(1) Matt. 26 : 66.

(2) The Bible Ency. P. 135.

(3) *Ibid.*

II

Buddhas are males.

"Of human beings it is only the male sex"[1] that can be Buddhas. "A woman or a eunuch or a neuter or a hermaphrodite,"[2] cannot be a Buddha:—

"They're never of the female sex
Nor as hermaphrodites appear,
As eunuch are they never classed,
Those destined for Buddhaship."[3]

The Koran, like the Buddhist scriptures, declares that all the apostles of God, peace be on them all, were males:—

"We have not sent (any apostles) before thee except men."[4]

"Men" is the translation of the word "Rejal" which means "Males."

That Jesus and Shankaracharya were not eunuchs but males is uncertain. The lives of both these personages do not furnish evidence of unimpeachable character to prove that these were really males.

One incident of the life of Shankaracharya is worthy of notice. One woman, Bharti by name, tries to defeat him in a controversy by putting him ques-

---

(1) Warren. pp. 14-15.

(2) *Ibid.*

(3) *Ibid.* P. 34.

(4) XII. P. 239.

(5) The Persian Gem Dictionary P. 175.

tions on the science of sexual love. He is unable to reply her, but promises to reply after a month. He then transfers his soul from his body into the body of a dead king, enjoys the wives of the king, and learns the sexual science practically. "And in the midst of these lovely women and their blandishments he forgot his promise."[1]

If this incident is true, it shows that Shankaracharya was a eunuch, for he was incapable of learning the science of sexual love in his body, and therefore he had to transfer his soul into another body for learning the science of sexual love practically. Whether the incident be correct or incorrect, this much is a fact that the life of Shankaracharya does not furnish a positive proof that he had the male power.

"The Hebrews married early, about the fourteenth year."[2] Why Jesus remained a bachelor upto the age of 33, seems strange. Probably he had become a eunuch for the kingdom of heaven's sake. He taught his elect disciples to follow his example:—

"There are some eunuchs, which were so born from their mother's womb: there are some eunuchs, which were made eunuchs of men: and there be eunuchs, **which have made themselves eunuch for the kingdom of heaven's sake. He that is able to receive it, let him receive it.**"

---

(1) Shankaracharya by C. N. K. Aiyer and S. Tattavabhusan pp. 46-8.

(2) The Holy Bible by Wordsworth. Vol. I. P. 244. Foot Note.

(3) Matt. 19 : 12.

In order to follow the example and precept of the master, in letter and spirit, a number of zealous Christians have castrated themselves for the kingdom of heaven's sake. Their conduct is justified by the precept of the master:—

"And if thy hand offend thee, cut it off........if thy foot offend thee, cut it off......if thine eye offend thee, pluck it out; it is better for thee to enter into the kingdom of God with one eye, than having two eyes, to be cast into hell-fire; where their worm dieth not, and the fire is not quenched."[1]

The sexual organ being a cause of many sins, some of the zealous Christians, in the light of the above, have thought it fit to cut it off.

On the other hand, Mohammed was a male Thanks to the propaganda of the Christian missionaries, the world knows it full well that he had many wives. He had daughters and sons. His posterity exists upto the present.

In view of what is given above, a Buddhist can consider the claim of Mohammed for being the Buddha Maitreya. About the claims of Jesus and of Shankaracharya, a Buddhist shall ever remain in doubt, until he receives a positive proof that they were males, and not eunuchs.

---

(1) Mark. 9 : 43-48.

III

A Buddha is a gifted being.

"These are the five donations great,
The gift of treasure,
Gift of child,
The gift of wife, of royal rule,
And last, the **gift of life and limb,**"[1]

We shall consider these gifts one by one.

GIFT I

The gift of treasure:—Shankaracharya was the son of a poor widow. He was born in poverty, and never acquired treasure in his life by following any profession.

Jesus was the son of a poor "carpenter"[2] After his birth he was laid "in a manger; because there was no room for them in the inn."[3] "Had they been rich and great", writes W. W. How. D. D., "they would doubtless have been received into the inn. Room would have been found for them then." Jesus was himself a "carpenter,"[4] and could never acquire riches in his life-time.

Hence from the Buddhist point of view the claims

---

(1) Warren. P. 79.
(2) Matt. 13 : 55.
(3) Luke. 2 : 7.
(4) Mark. 6 : 3.

of Jesus and of Shankaracharya cannot be considered for the Buddhahood.

Mohammed belonged to a family who were rich. The prophet acquired riches in his lifetime, and even before his call he was an "affluent merchant."[1] "The marriage with Cadijah placed Mahomet among the most wealthy of his native city."[2]

The Koran declares that the prophet was gifted with riches:—

"And did He not find thee needy, and hath He not enriched thee."[3]

It being not the pleasure of God to favour Jesus or Shankaracharya with riches, it is a mistake to consider either of them as the Buddha Maitreya. Mohammed was gifted with riches, and hence his claim for the Buddhahood can be considered.

GIFT II

Gift of child.

"We have formerly sent apostles before thee and bestowed on them wives and children."

Jesus and Shankaracharya both died bachelors. The Christian scriptures and the Hindu works inform us thus. We take their testimony to be true.

---

(1) Mohammed, Buddha and Christ by M. Dods. D. D. P. 19.

(2) Irving. P. 3.

(3) XCIII, P. 583.

(4) The Koran. XIII. P. 244.

Therefore from the Buddhist point of view the claim of Jesus and of Shankaracharya cannot be considered for the Buddhahood, because God had not gifted them with children. On the other hand, Mohammed was gifted with several children, and therefore his claim for the Buddhahood can be considered.

The name of a son of the Buddha Maitreya is given out as "Brahmi Wardene Maitri."[1]

We identify "Brahmi Wardene Maitri" with Kasim, the son of the prophet.[2] The correct spelling of "Brahmi Wardene Maitri" should be Brahm Wardhan Maitreya.

(a) Brahmi is connected with Brahma or Brahman of Sanskrit, both of which mean:—

"God; the Maker; the First Cause,"

"The Creator."[3]

(b) Wardhan means:—

"Increasing, a granter of prosperity, an epithet of Shiva, increase, growth, elevation, animation; educating, rearing, cutting and dividing."[4]

(c) Maitreya means "the Merciful."

God, the Merciful, has "the most excellent names." **His name is Kasim, because He divides His bounties among His creatures. He alone is the Granter of prosperity. It is He alone who elevates, animates, and educates all creatures.** "Kasim" is among the 99

---

(1) Asiatick Researches, 1802, Vol. VII. P. 415.
(2) Irving. P. 34.
(3) Hindi English Dictionary by R. N. Lal.
(4) S. E. Dictionary by L. R. Vaidya.
(5) The Koran. LIX. P. 530.

names of Mohammed.[1] The prophet himself was often called "Abul-Kasim,"[2] "the father of Kasim." The word Kasim means "the divider and the cutter."[3]

Hence in view of the gift of child, and the remarkable coincidence of the name of the son of the prophet with the predicted name of the son of the Buddha Maitreya, it is apparent that Mohammed is the Buddha Maitreya, and not Jesus or Shankaracharya.

GIFT III

Gift of wife.

"We have formerly sent apostles before thee and bestowed on them wives and children."[4]

"Whose findeth a wife, findeth a good thing, and obtaineth favour of the Lord."[5]

God had not favoured Jesus and Shankaracharya with wives. As far as this blessing is concerned, they did not receive this "good thing", the "favour of the Lord." Hence a Buddhist, in guidance of his scriptures, cannot consider their claims for the Buddhaship.

---

(1) Panjsurah. P. 69.

(2) Irving. P. 34.

(3) The Persian Gem Dictionary.

(4) The Koran. XII. p. 224.

(5) Proverbs. 18 : 22.

On the other hand, Mohammed was gifted with several wives. If the ideal of the Old Testament and the Buddhist scriptures given above is correct, he was gifted with much good.

The Koran declares that the prophet was highly favoured of God:—

(1) **"The favour of God hath been great towards thee."**[1]

(2) "........**His favour towards thee hath been great.**"[2]

One of his wives was Khadijah, may God be pleased with her. We identify her with "Chandre-Mukhi (Moon-face)",[3] the predicted wife of the Buddha Maitreya. The correct spelling of Chandre Mukhi is Chandra Mukhi which means, "having a countenance beautiful as the moon," or a woman with "a face bright and beautiful as the moon."[4] The word "mukh" in Sanskrit means "mouth, the face; *first,* chief; principal."[5]

The *first wife* of the prophet was Khadijah. She was "handsome and of high birth."[6] I think it was she whom the prophet loved most. As such she was the principal wife. After her death the prophet married several wives, and of all these he loved Aisha

(1) IV. p. 89.

(2) XVII. p. 281.

(3) Asiatick Researches. 1802. Vol. VII. p. 415.

(4) H. E. Dictionary by R. N. Lal.

(5) *Ibid.*

(6) Irving. pp. 30-1.

most. Then she became the chief wife. Aisha says:—

"I was never jealous of any of the prophet's wives except Khadija, although she was dead long since and I had not even seen her.....sometimes I used to ask the prophet wondering whether *Khadija was a unique woman in the world.* To this the prophet used to reply that really such was Khadija......"[1]

There are several words for the moon in Sanskrit, such as Soma, Indu......The moon is an emblem of *all purity or chastity*:—

(a) The Buddha Gautama says:—

"He who like the moon is chaste, pure,......"[2]

(b) *"All pure* art thou like Mitra, the beloved, adorable like Aryaman, O Soma."[3]

(c) "....the drinkers *of pure* (Soma)."[4]

"Even in the days of ignorance the title of Khadijah was *Tahirah*."[5] The word Tahirah in Arabic means "the *pure woman*," or "the *chaste woman*." "Tahir" means "pure."[6]

It is therefore clear that Khadijah was Chandra Mukhi, the predicted wife of the Buddha Maitreya Mohammed.

---

(1) B. M. quoted in The Ideal of Womanhood in Islam by Q. Abdul Haq. pp. 33-4.

(2) Rockhill. p. 192.

(3) Rigveda Book I. 93 : 3.

(4) S. B. E. Vol. XXVI. Satpath-Brahmana. p. 234.

(5) The Rahmat-ul-lil-alamina by Q. M. Soliman. Vol. II. p. 185.

(6) Persian Gem Dictionary.

GIFT IV.

THE GIFT OF ROYAL RULE. Shankaracharya was not gifted with a royal rule in his life.

Jesus, too, was not gifted with an earthly kingdom, and he never ruled any kingdom in his life. He says:—

"Foxes have holes, and the birds of heaven have nests: but *the son of man hath not where to lay his head.*"[1]

From the above mentioned words it is clear that Jesus had not even a square inch of ground which he could call his own.

Some of the immediate disciples of Jesus and some of his countrymen believed that Jesus was a king:—

(*a*) "On the next day much people that were come to the feast, when they heard that Jesus was coming to Jerusalem, took branches of palm trees, and went forth to meet him, and cried, Hosanna: blessed is the *King of Israel* that cometh in the name of Lord."[2]

(*b*) "We trusted," said Cleopas, *"it was he* (Christ) *which should have redeemed Israel."*[3]

(*c*) "When they (Apostles) therefore were come together, they asked him, saying, *Lord, wilt thou at this time restore again the kingdom to Israel?*"[4]

---

(1) Matt. 8 : 20.

(2) John. 12 : 12-13.

(3) Luke. 24 : 21.

(4) Acts. 1 : 6.

Some of the Christian divines consider Satan as *"the prince of this world."*[1] In spite of this some of the Christians believe that *"the same Jesus"* shall return to this world and then he shall establish a kingdom upon the earth. This belief is very old, and is said to have come down to the modern Christians from the days of the twelve disciples.[2] Jesus is called "king of kings, and lord of lords."[3] We maintain that even if Jesus at all returns to the word he shall never establish a kingdom. Jesus was tried for blasphemy and for preaching insurrection in a Roman Law Court. What he gave out in the course of his trial clearly indicates that he was not gifted with a royal rule, and he shall never rule any kingdom in future also:—

"Then Pilate entered into the judgement hall again, and called Jesus, and said unto him, *Art thou the king of the Jews?* Jesus answered him, Sayest thou this thing of thyself, or did others tell it thee of me? Pilate answered, Am I a Jew? Thine own nation and the chief priests delivered thee unto me: what hast thou done? Jesus answered him. *My kingdom is not of this world: if my kingdom were of this world, then would my servants fight, that I should not be delivered to the Jews; but now is my kingdom not from hence.* Pilate therefore said unto him, *Art thou a king*

---

(1) John. 14 : 30.

(2) Acts. 1 : 6.

(3) I. Tim. 6 : 15. Rev. 17 : 14.

then? Jesus answered, *Thou sayest that I am a king*.........."[1]

Jesus and Shankaracharya not being gifted with a royal rule, a Buddhist, on account of the guidance of his scriptures, cannot consider their claims for the Buddhahood in question.

Mohammed was the Buddha Maitreya for he was "a victorious king."[2]

GIFT V.

LIFE AND LIMB.

Mohammed lived more than 60 years in this world, and died a natural death. He took part in several battles. In the battle of Ohod he was "very near losing his life."[3] Providence saved his life at the battle of Honain.[4] Several attempts on his life ended in failure. Some of these are alluded to in the Koran:—

(1) **"And (call to mind) when the unbelievers plotted against thee, that they might either detain thee (in bonds), or put thee to death, or expel thee (from the city); and they plotted (against thee:)"[5]**

(2) "Mohammed and some of his followers...... performing their noon devotions, a company of the

---

(1) John. 18 : 33-7.

(2) Historian's History of the World. Vol. VIII. p. 130.

(3) Sale. P. 60, Foot note.

(4) *Ibid*. p. 181. Foot note.

(5) VII. p. 170.

idolaters, who were in view, repented they had not taken that opportunity of attacking them, and therefore waited till the hour of evening prayer, intending to fall upon them then: but God defeated their design.........."[1]

(3) "........the prophet going to the tribe of Koreidha (who were Jews) to levy a fine for the blood of two Moslems, who had been killed by mistake by Amru Ebn Ommeya al Dimri, and they desired him to sit down and eat with them, and they would pay the fine; Mohammed complying with their request, while he was sitting they laid a design against his life, one Amru Ebn Jahash undertaking to throw a mill-stone upon him; but God withheld his hand, and Gabriel immediately descended to acquaint the prophet with their treachery, upon which he rose up and went away."[2]

(4) "........fifteen men conspired to kill Mohammed in his return journey from Tabuc by pushing him from his camel into a precipice, as he rode by night over the highest part of Al Akaba. But when they were going to execute their design, Hodheifa, who followed and drove the prophet's camel which was led by Ammer Ebn Yaser, hearing the tread of camels and the clashing of arms, gave the alarm, upon which they fled."[3]

(5) "........the Koreish, in pursuance of a reso-

---

(1) Sale. p. 99. Foot note.

(2) *Ibid.*

(3) *Ibid.* p. 189.

lution they had taken, had sent a select number to beset Mohammed's house, and to kill him........the prophet having caused Ali to lie down on his bed to deceive the assassins, went out........they could not see him."[1]

(6) The prophet was poisoned by a "Jewess of Khaiber,"[2] but this could not terminate his life. The prophet lived several years after the event.

....

The prophet was conscious that none could deprive him of his life. The Koran runs thus:—

"God will defend thee against (wicked) men."[3]

"Until this verse was revealed, Mohammed entertained a guard of armed men for his security, but on his receiving this assurance of God's protection, he immediately dismissed them."[4]

Jesus cannot be the Buddha Maitreya for, according to the Bible version he was "crucified,"[5] in the prime of life, about the age of 33. Shankaracharya, too, cannot be the Buddha Maitreya, for he died at the age of "32",[6] and could not attain the average life of the people of the time. Mohammed is the Buddha Maitreya, for he was gifted with the gift of life and limb, and he died a natural death, over 60 years of age.

---

(1) Sale. p. 431.
(2) Ency. Br. XVII.
(3) V. p. 109.
(4) *Ibid.* p. 109. Foot note.
(5) Mark. 15 : 25.
(6) Ency. Br. Vol. XXIV.

IV.

THE PLAN OF SALVATION.

According to the teachings of Buddhism, a man is his own saviour, and is to work out his salvation:—

"You yourself must make an effort,
The Tathagatas (Buddhas) are only preachers,
The thoughtful who enter the way are freed from the bondage of Mara."[1]

The last words of the Buddha Gautama to his followers were:—

"Work out your salvation with deligence."[2]

The Koran very clearly gives out the same plan of salvation as taught by the Buddha Gautama:—

(1) "Dread the day wherein (one) soul shall not make satisfaction for (another) soul, neither shall any compensation be accepted from them, nor shall any intercession avail, neither shall they be helped."[3]

(2) "By the soul, and Him who completely formed it, and inspired into the same its (faculty of distinguishing, and power of choosing,) wickedness and piety; now is he who purifies the same, happy; but he who hath corrupted the same, is miserable."[4]

The explanation of the above as given in Mohammed Ali's translation of the Koran:—"Note the

---

(1) The Dhammapada. S. B. E. Vol. X. P. 67.

(2) Carus. p. 211. Narasu p. 22.

(3) II. p. 18.

(4) XCI. p. 582.

Quranic law of salvation; it is the purification of the soul from all dross that makes the man attain the goal, and its corruption by indulging in evil that makes him fail in attaining the true object of his life."[1]

(3) "*And whosoever shall have wrought good of the weight of an ant, shall behold the same. And whosoever shall have wrought evil of the weight of an ant, shall behold the same.*"[2]

. . . .

A number of traditions from the prophet point to the same plan of salvation, the prophet being only a warner:—

(1) "Abu Hurera relates:—

When this verse was revealed, Warn your relations, the apostle of God sent for the Koreish, and they all gathered (to hear him). He warned them in general, and (then) in particular, and said, 'O children of Kaabbin-Looee, **deliver yourself from hell,** O children of Morrah-bin-Kaab, **deliver yourself from hell,** O children of Abd-Shams, **deliver yourself from hell,** O children of Abd Manaf, **deliver yourself from hell,** O children of Abd-al-Mottalib, **deliver yourself from hell,** O Fatema **deliver thyself from hell, for I have no authority before God** (if He wants to punish you). Certainly I have relation ship with you, and I shall try to maintain it (by doing good to you).' "[3]

---

(1) Foot Note. 2746.

(2) XCIX. p. 587.

(3) M. Vol. I. p. 354.

(2) "Aisha relates:—

When this verse was sent down, Warn your relations, the apostle of God stood up on the mount Safa and said, O Fateha, the daughter of Mohammed, O Safiah, the daughter of Abd-al-Mottalib, and O ye children of Abd-al-Mottalib, I cannot save you from (being punished by) God, (if He wants to punish you). Certainly if you like you can take any thing from my property.' "[1]

(3) "Abu Hurera relates:—

When this verse was sent down upon the apostle of God, Warn your near relations, he said, 'O Koreish, *purchase your lives from God (in return of good actions); before God I cannot be of any use to you. O children of Abd-al-Mottalib, I cannot be of any use to you'*........."[2]

....

According to Christian divines the following is the plan of salvation:—

"Christ came into the world to offer himself a sacrifice for sin."[3]

"It has been well said that the *sum and substance of the Bible is, 'Jesus Christ crucified to save lost sinners'.........Its great theme is salvation by the 'woman's seed', and its great object is to summon attention to the 'lamb of God which taketh away the sin of the world.'* "[4]

---

(1) M. Vol. I. p. 355.
(2) *Ibid.*
(3) Eadie. p. 133
(4) *Ibid.* p. 134.

This Christian view of salvation is based upon some such passages of the Bible:—

(1) **"Lord hath laid on him the iniquity of us all."**[1]

(2) **"Behold the lamb of God that taketh away the sin of the world."**[2]

. . . .

It being plain from the above that according to Christian divines every individual is not his own saviour, but Jesus is the saviour of all humanity. Therefore Jesus cannot be the Buddha Maitreya.

Shankaracharya, according to majority of Hindus, was not an inspired teacher, and had not taught a plan of salvation of his own, different from what the Hindus believed to be correct, and therefore we leave him out of consideration.

Mohammed is the Buddha Maitreya, for he preached the same plan of salvation as the Buddha Gautama.

---

(1) Is 43 : 6.

(2) John 1 : 29.

V

BUDDHAS ARE ONLY PREACHERS.

The Tathagatas (Buddhas) are only preachers."[1]

"You yourself must make a effort,
The Tathagatas (Buddhas) are only preachers.

The Koran very clearly gives out the same plan of salvation as the Buddhist scriptures, and declares in most unambiguous terms that *Mohammed is only a preacher*:—

(1) *"Say, O men, verily I am only a public preacher unto you. And they who believe and do good works shall obtain forgiveness and an honourable provision. But those who endeavour to make Our signs of none effect (shall be) the inhabitants of hell."*[2]

(2) *"The duty of (Our) apostle is only public preaching."*[3]

(3) "Answer, Signs are in the power of God alone, and *I am (no more than) a public preacher."*[4]

(4) *"Thou art (commissioned to be) a preacher only."*[5]

(5) "Verily, *I am no more than a denouncer of threats, and a messenger of good tidings unto people who believe."*[6]

---

(1) The Dhammapada. S. B. E. Vol. X. p. 67.
(2) XXII. p. 332.
(3) XXIV. p. 351.
(4) XXIX. p. 392.
(5) XIII. p. 240.
(6) VIII. p. 164.

(6) *"He is no other than a public preacher."*[1]

(7) "Say, O Mohammed, unto the idolaters, Verily *I am no other than a warner."*[2]

(8) "Verily We have revealed unto thee the book (of the Koran) for (the instruction of) mankind, with truth. Whoso shall be directed (thereby), (shall be directed) to the advantage of his own soul; and whoso shall err, shall err only against the same; and *thou (art) not a guardian over them."*[3]

(9) "But if (those to whom thou preachest) turn aside (from thy admonitions), verily We have not sent thee (to be) a guardian over them; *thy duty is preaching only."*[4]

(10) *"Thy duty is preaching only."*[5]

(11) *"Say, I am a public preacher."*[6]

(12) *"Verily unto thee (belongeth) preaching (only)."*[7]

(13) *"Verily thou art a preacher (only)*, and God is the Governor of all things."[8]

....

Christians consider Jesus as the "saviour of

---

(1) VIII. p. 164

(2) XXXVIII. p. 448.

(3) XXXIX. p. 453.

(4) XLII. p. 472.

(5) XVI. p. 264.

(6) XV. p. 255.

(7) XIII. p. 244.

(8) XI. p. 211.

the world,"[1] and Jesus never gave out in his life-time that he was "only a preacher," and hence he cannot be the Buddha Maitreya.

According to majority of the Hindus Shankaracharya was an uninspired teacher. Hence we leave him out of consideration.

Mohammed is the Buddha Maitreya, because he preached that he was only a preacher.

---

(1) John. 4 : 42.

VI

BUDDHAS ARE IDEAL PREACHERS.

All Buddhas are preachers, but every preacher cannot be a Buddha. The Buddhist scripture, Saddharma-Pundrika, fixes the character of an ideal preacher:—

"The strength of charity is my abode; the apparel of forbearance is my robe; and voidness (selflessness) is my seat: let (the preacher) take his stand on this and preach. When clods, sticks, or pikes, or abusive words, or threats fall to the lot of the preacher, let him be patient and thinking of me."[1]

Elsewhere we have shown in details that Mohammed is a matchless model of charity and forbearance. Here we only refer to the prophet's preaching at the town of Tayef:—

"Mahomet remained about a month in Tayef, seeking in vain to make proselytes among its inhabitants. *When he attempted to preach his doctrine, his* voice was *drowned by clamours. More than once he was wounded by stones thrown at him,* and which the faithful Zeid endeavoured to ward off. So violent did the popular fury become at last that *he was driven from the city, and even pursued for some distance beyond the walls by an insulting rabble of slaves and children."*[2]

---

(1) Narasu. p. 56. S. B. E. Vol. XXI. p. 222.

(2) Irving. p. 72.

"Stirred to hasten the departure of the unwelcome visitor, the *people hooted him through the streets, pelted him, and at last obliged him to flee from the city, pursued by a relentless rabble. Blood flowed from both his legs;* and Zeid, endeavouring to shield him, was wounded in the head. *The mob did not desist until they had chased him two or three miles across the sandy plain to the foot of the surrounding hills.* There wearied and mortified, he took refuge in one of the numerous orchards and rested under a vine."[1] "How intense was the faith which sustained the prophet even in this hour of humiliation can best be seen from the touching prayer ....uttered at this time:—

"O Lord, I make my complaint unto Thee, of my helplessness and insignificance. But Thou art the Lord of the poor and the feeble, and Thou art my Lord. To whom wilt Thou abandon me? If Thy wrath be not upon me, I have no concern, but rather Thy favour compasseth me about the more. I seek for refuge in the light of Thy countenance. It is Thine to show anger until Thou art pleased. It is Thine to chase away the darkness. There is none other power, nor is there any resource but in Thee.'"[2]

After a time the town of Tayef wanted to submit to the prophet, and sent a delegation. Contrary to their expectation, and much to their surprise, "the delegates were graciously received."[3] It is a laudable example

(1) Life of Mohammed by S. W. Muir. p. 109.

(2) Islam as a Missionary Religion by Haines. pp. 27-28.

(3) Haines. p. 46..

of the forbearance and selflessness of the prophet that when the town surrendered to him, no general massacre of the inhabitants took place, and even no vengeance was taken for the personal injuries. His forbearance reaches the glorious climax. No indemnity, no fine, and no tribute from the surrendered! At the same time his spirit of goodwill and charity manifests itself. "All the spoils taken" from the enemy are returned. Over and above the other favours, the prophet makes "a present of 100 camels" to the people of the town.

In the light of what is given above, it is evident that the ideal of a preacher mentioned in Saddharma-Pundrika finds a literal fulfilment in the person of Mohammed. Such a real instance of goodwill, charity, forbearance, and selflessness, and the literal fulfilment of the predicted ideal is not found in the life of Jesus or of Shankaracharya. Hence Mohammed is the Buddha Maitreya, and not Jesus or Shankaracharya.

VII

PREACHER'S COMPANIONS IN LONELINESS.

The Buddhist scripture, Saddharma-Pundrika, gives another important characteristic of the ideal preacher:—

"While he is living lonely in the wilderness I will send him gods and goblins in great number to keep him company."[1]

The above passage makes mention of two kinds of spiritual intelligencies, one kind are called gods, or the **righteous spirits**, the other kind are called goblins, or **evil spirits**. These come to the ideal preacher when he is alone. The Koran gives it out that these two kinds of spirits approached the prophet in great number when he was alone in wilderness:—

(1) **"When the servant of God (the prophet) stood up to invoke Him, it wanted but little that (the genii) had pressed on him in crowds (to hear him to rehearse the Koran.)"**[2]

(2) "Say, It hath been revealed to me that a company of genii attentively heard (me reading the Koran) and said, Verily we have heard a discourse which directeth unto the right institution: wherefore we believe therein..........**there are some amongst us who are upright; and there are some others who are otherwise: we are of different ways........(there are**

(1) S. B. E. Vol. XXI. p. 225.

(2) LXXII. p. 556.

some) Moslems amongst us; and (there are others) of us who swerve from righteousness."[1]

The observations of some of non-Muslims are worth quoting here:—

(1) "Thus driven ignominiously from his hoped for place of refuge, and not daring to return openly to his native city, he remained in the desert until Zeid should procure a secret asylum for him among his friends in Mecca. In this extremity, he had one of those visions or supernatural visitations which appear always to have occurred in lonely or agitated moments, when we may suppose him to have been in a statement of mental excitement. It was after the evening prayer, he says, in a solitary place in the valley of Naklah between Mecca and Tayef. He was reading the Koran, when he was overheard by a passing company of Gins or Genii. **These are spiritual beings, some good, others bad, and liable like men to future rewards and punishments.** Hark! give ear! said the Genii one to the other. They paused and listened as Mahomet continued to read. 'Verily', said they at the end, 'we have heard an admirable discourse, which directeth to the right institution; wherefore we believe therein."

This spiritual visitation consoled Mahomet for his expulsion from Tayef, showing that though he and his doctrines might be rejected by men, they were held in reverence by spiritual agencies."[2]

---

(1) LXXII. p. 555-6.

(2) Irving. pp. 72-3.

(2) **"In an empty room he (the prophet) professed to be unable to find a sitting place..........all the seats being occupied by angels."**[1]

The characteristic of an ideal preacher mentioned in Saddharma-Pundrika is not fulfilled in case of Jesus or Shankaracharya. Hence neither of them can be the Buddha Maitreya.

The characteristic is literally fulfilled in the case of Mohammed, and hence he is the Buddha Maitreya.

---

(1) Mohammed by S. D. Margoliouth. p. 68.

VIII

THE TRUE FOLLOWERS OF BUDDHAS.

The Buddhist scripture, Dhammapada, gives a characteristic of the true followers of Buddhas:—

"You yourself must make an effort,
The Tathagatas (Buddhas) are only preachers,
*The thoughtful who enter the way
are freed from the bondage of Mara.*"[1]

The word Mara means
"the evil one, the tempter, the destroyer."[2]
Therefore Mara is Satan or Devil.

According to the Koran Mohammed taught that Satan has no power over true servants of God:—

(1) "(The devil) said, O Lord......I will surely tempt them (to disobedience) in the earth: I will seduce them all, *except (such) of them as shall be Thy chosen servants.*"[3]

(2) "*Verily (as to) My servants, thou shalt have no power over them;* but (over) those only who shall be seduced, and who shall follow thee, And hell is surely denounced unto them all."[4]

(3) "*(as to) My servants, thou devil shalt have no power over them; for thy Lord is a sufficient Pro-*

---

(1) S. B. E. Vol. X. p. 67.

(2) Carus. p. 251.

(3) XV. p. 253.

(4) *Ibid.*

tector (of those who trust in Him)."[1]

Hence according to the teachings of Mohammed it is clear that all those who submit to God entirely, are free from the bondage of Mara, and he has no dominion over them.

Jesus, the Christian scriptures inform us, has acknowledged Satan.

"THE PRINCE OF THIS WORLD."[2]

Saint Paul, like Jesus, considers Satan as

"THE GOD OF THIS WORLD."[3]

If what is given above is correct, it is clear, that from the point of view of the teachings of Jesus all men are in the bondage of Mara in this world. None can be free from the bondage of Mara so long as he is in this world:—

"*Man, since his fall, is under the tyranny and slavery of Satan.*"[4]

Hence Jesus cannot be the Buddha Maitreya.

Shankaracharya, too, cannot be the Buddha Maitreya as he did not preach the gospel of freedom from the bondage of Mara.

Mohammed is the Buddha Maitreya, for he preached the glad tidings of the freedom from the bondage of Mara to all the righteous servants of God.

---

(1) XVII. p. 278.

(2) John. 12 : 31.

(3) 2. Cor. 4 ; 4.

(4) Bible Concordance by Cruder. p. 130.

IX

ONLY ONE BUDDHA IN THE WORLD AT A TIME.

(1) *"Two absolutely holy and perfectly enlightened Buddhas will not appear in a world simultaneously."*[1]

(2) *"This is an impossibility, an occurrance for which there can be no cause, that is one world two Arahat Buddhas supreme should arise at one and the same time—such a thing can in nowise be."*[2]

(3) *"When a perfect all-enlightened Buddha appears, no two Buddhas appear at the same time."*[3]

From what is quoted above it is apparent that according to the Buddhist scriptures, and the opinion of the Buddhist divines, it is impossible that two fully enlightened and inspired teachers can exist in a country at the same time.

In the days of Jesus, and in the same country of Judea in which Jesus lived and taught, there was another inspired teacher whose name was John the Baptist:—

(1) "And John also was baptizing in Ænon near to Salim, because there was much water there: and they came, and were baptized. For John was not yet cast into prison. Then arose a question between some of John's disciples and the Jews about purifying And

---

(1) Anguttara Nikaya by Gooneratne. p. 39.
(2) S. B. E. Vol. XXXVI. Questions of King Milinda. part II. p. 47.
(3) The Life and Teachings of Buddha by Anagarika Dharmapala p. 84.

they came unto John, and said unto him, Rabbi, he, that was with thee beyond Jordan to whom thou barest witness, behold the same baptizeth, and all men come to him Christ)."[1]

(2) *Pharisees had heard that Jesus made and baptized more disciples than John."*[2]

Jesus himself admitted that John the Baptist was an inspired teacher, and

"more than a prophet."[3]

Contemporary with Shankaracharya, in the country of India, there was a teacher of equal note, named Kumarila Bhatta.

Hence neither Jesus nor Shankaracharya can be the Buddha Maitreya.

Mohammed was an inspired teacher, and he did not recognise any inspired teacher in his days as did Jesus, and hence he is the Buddha Maitreya.

---

(1) John. 3 : 23-6.
(2) John. 4 : 1.
(3) Matt. 11 : 9.

X

BUDDHAS ARE TEACHERLESS.

According to Milindapanha Buddhas are
"self-dependent, teacherless, lonely, as one horn of a rhinoceros."[1]

Buddhas do not acquire spiritual knowledge from any

"HUMAN SOURCE"[2]

or

"traditional instruction."[3]

The Buddha Gautama is reported to have said:—
"I am not to be taught by any in the world."[4]

"Upaka, the naked ascetic"[5] asked the Buddha Gautama who his teacher was, the Buddha replied:—

"Self-taught; whom should I master call?
That which I know I learned of none,
My fellow is not on earth,
Of human or of heavenly birth."[6]

Shankaracharya had a spiritual teacher whose

---

(1) The Manual of Mystic by Woodward. p. 6. Foot Note.

(2) Romantic History of Buddha by Beal. p. 241.

(3) Sutta Nipata by Fausboll. p. 177.

(4) Udanavarga by Rockhill. p. 91.

(5) Mejhima Nikaya by Silacara. p. 153.

(6) *Ibid.* p. 154.

name was *"Govind Swami."*[1]

Jesus became enlightend after being baptized of John the Baptist:—

"It came to pass in those days, that Jesus came from Nazareth of Galilee, and *was baptized of John in Jordan.* And straight-way coming out of water, he saw the heavens opened, and the spirit like a dove descending upon him: and there came a voice from heaven, saying, Thou art My beloved son, in whom I am well pleased."[2]

It shall not, therefore, be wrong if we consider John the Baptist the spiritual teacher of Jesus. Jesus called him "more than a prophet."[3] The respect and honour of Jesus for John the Baptist can be very well gathered from the following words of Jesus:—

"Verily I say unto you, Among them that are born of women there hath not arisen a greater than John the Baptist."[4]

It is written in the Gospel of Infancy that Jesus had a

"SCHOOL-MASTER, ZACCHÆUS."[5]

Mohammed had no creature for his teacher.

(1) Bharetyacharitambudhi. p. 453.
(2) Mark. 1 : 9-11.
(3) Matt. 11 : 9.
(4) Matt. 11 : 11.
(5) The Popular Life of Buddha by Lillie. p. 30.

The Koran is explicit on the point:—

"Believed therefore in God and His apostle, the illiterate prophet."[1]

"Illiterate" is the translation of the Arabic word "Omme," or "Ummi." According to Mr. Mohammed Ali, the translator of the Koran, "the Ummi Prophet conveys any one of the following three significances, viz.

(1) one who knows not reading or writing;
(2) one from among the Arabs; and
(3) one coming from Mecca."[2]

The word Ummi is from "Um" which means *"mother."*[3]

Therefore the word, Ummi, means one who is as *"teacherless"* as a new born child from his mother's womb.

There is evidence in the Koran that the prophet was unable to read and write before his call:—

"Thou couldst not read any book before this; neither couldst thou write it with thy right hand: then had the gain-sayers (justly) doubted (of the Divine original thereof)."[4]

There is evidence in the Koran that Mohammed did not receive any help from any creature in composing the Koran:—

(1) *"And the unbelievers say, This (Koran) is no other than a forgery which he hath contrived, and*

---

(1) VII. p. 160.
(2) Foot note. 950.
(3) Javahar-al-lughat. p. 37 ; and others.
(4) XXXIX. p. 391-2.

other people have assisted him therein: but they utter an unjust thing and a falsehood."[1]

(2) *"We (also) know that they say, Verily a (certain) man teacheth him (to compose the Koran). The tongue of (the person) unto whom they incline, is a foreign (tongue); but this, (wherein the Koran is written,) is the perspicuous Arabic tongue."*[2]

(3) *"But the Jews will not be pleased with thee, neither the Christians, until thou follow their religion: say, The direction of God is the (true) direction. And verily if thou follow their desires, after the knowledge which hath been given thee, thou shalt find no patron or protector against God."*[3]

(4) *"If thou follow their (Jews', Christians' and of others) desires, after the knowledge which hath been given thee, verily thou wilt become (one) of the ungodly."*[4]

. . . .

What is given above is sufficient to refute the view that Mohammed followed the instructions of the Jews or Christians, or other people, in composing the Koran.

In view of what is given above it is clear that neither Jesus nor Shankaracharya can be the Buddha Maitreya, as they were not *teacherless*. Mohammed is the Buddha Maitreya for he had no creature for his teacher.

---

(1) XXV. p. 353-4.
(2) XVI. p. 267.
(3) II. p. 18.
(4) II. p. 21.

XI.

A BO-TREE FOR EVERY BUDDHA.

According to Buddhist scriptures for every fully enlightened Buddha there is a terrestrial Bo-tree or Bodhi-tree:—

"I give a list of 7 Buddhas and their trees:—

Vipasi, Patala (Bignonia); Sikki, Pundrika (Lotus); Visvabhu, Sala (Shoria robusta); Karakchch 'handa, Saresha (Accaciasirisa); Kanakamuni, Udambra; Kasyapa, Nyagrodha (Banian tree); Sakyamuni, Asvatha (Ficus religiosa.)"[1]

The Bo-tree for the Buddha Maitreya is

"The tree of Dragon flower."[2]

According to Sanskrit English Dictionary by L. R. Vaidya the dragon flower is

"The Champak tree".

According to Watters this tree is

"Champac."[3]

I-tsing calls the Bo-tree of the Buddha Maitreya

"Naga tree."[4]

According to Sanskrit English Dictionary by L. R. Vaidya, the Naga Tree is

"Naga kesser tree."

According to some of the modern Buddhist scho-

---

(1) The Popular Life of Buddha by Lillie. p. 232.

(2) I-tsing by Takakusu. p. 213.

(3) Vol. II. p. 52.

(4) Takakusu. p. 213. foot note.

lars, the Bo-tree of the Buddha Maitreya is the
"Iron-wood tree."[1]

Iron-wood tree is the name "applied to a wide variety of trees."[2] *"Any tree with unusually hard or heavy wood,"*[3] can be called the Ironwood tree. Thus we cannot tell with certainly the name of the Bodhi tree of the Buddha Maitreya.

The name of the Bodhi tree of Mohammed at Hodebeyya also cannot be stated with certainty:—

(1) Sale, on the authority of several Arabic works considers it, *"an Egyptian thorn"*, or *"a kind of lote tree."*[4]

(2) According to Muslim it is
"Samorah," or "Shajar-Rizwan."

(3) According to Munjid it is
"Irak."

. . . .

The Koran gives this tree the name,
"Shajar."[5]

According to Arabic English Lexicon by Lane the word, Shajar, stands for *"any tree with a hard stem;"* hence we can say that the tree at Hodebeyya was a species of *Iron-wood tree.*

The view of Wahid-ul-zaman Khan, the translator

---

(1) M. B. J. 1929. p. 280.
(2) Webster.
(3) Chamber's Ency.
(4) P. 494. Foot note.
(5) XLVIII.

of Muslim, about this tree is:—

"The tree is now no more, as it was cut down by Omar, on learning that people used to gather round about it."[1].

In my opinion Mr. Wahid-ul-zaman is wrong in his opinion. The reason is easy to deduce from the following traditions:—

(1) "Saeed-bin-Mosaib relates:—My father was one of those who took **the oath of allegiance to the apostle of God under the tree**; he said, "When we came to pilgrimage next year, we could not identify the place of the tree; if you can, you know more (than I do)."[2]

(2) "Saeed-bin-Mosaib relates from his father '............next year the companions (of the prophet) forgot (the tree, and could not identify it.)' "[3]

(3) "Saeed-bin-Mosaib relates:—I had seen the tree (of allegiance); when I came again there I could not identify it."[4]

Shankaracharya had no Bo-tree. There is no mention of the Bo-tree of Jesus in the Gospels. Hence neither Jesus nor Shankaracharya can be the Buddha Maitreya. As Mohammed had a tree which for some reasons given here and elsewhere, we call the Bo-tree, hence he is the Buddha Maitreya.

---

(1) M. Vol. V. pp. 2000-1.

(2) M. Vol. V. pp. 2000-2.

(3) *Ibid.* p. 2002.

(4) *Ibid.* p. 2002.

XII

THE MEETING UNDER THE BO-TREE.

According to some Buddhist works the Buddha Maitreya is to preach with great success under the Bo-tree.[1] Some of the pious Buddhists have expressed a wish to hear the Buddha Maitreya under this tree. I-tsing once expressed this desire:—

"Let me look for the first meeting under the tree of Dragon-flower to hear the deep rippling voice of the Buddha Maitreya."[2]

This meeting is clearly mentioned in the Koran:—

"Now God was well pleased with true believers when they sware fidelity unto thee under the tree, and He knew that which (was) in their hearts: wherefore He sent down on them tranquillity of mind."[3]

"Tranquillity of mind" is nothing else but Nirvana.

We now give a description of the Bo-tree meeting according to some of the individuals who were present there:—

(1) "Abe Zobair relates.........'We took the oath of fidelity to him (the prophet). (At this time) Omar was holding him by the hand under the Samorah tree, we all took the oath of allegiance to him except

---

(1) Watters. Vol. II. p. 52.

(2) Takakusu. p. 213.

(3) XLVIII. pp. 494-5.

Jad bin Kais Ansari who hid himself under the stomach of his camel.' "[1]

(2) "Jabir relates:—On the day of Hodebeyya ....the apostle of God said, 'This day you are the best of all the people of the world.' If I had my eye-sight I would have pointed out this spot to you."[2]

(3) "Jabir relates:—The apostle of God said, 'None of those shall enter hell who sware fidelity to me under the tree.' "[3]

(4) "Mikal bin Yasar relates:—On the day (of the meeting under the tree) I myself saw the apostle of God receiving allegiance, and I was with-holding the branch of the tree from over his head............ We did not take the oath of allegiance (for fighting) unto death, but (we took the oath) for not deserting him."[4]

As no Bo-tree is known for Jesus and for Shankaracharya, hence the Bo-tree meeting for these is out of question. As a Bo-tree is known for Mohammed, and the meeting under this tree is famous in the history of Islam, hence he is the Buddha Maitreya.

---

(1) M. Vol. V. P. 2000.

(2) *Ibid.* pp. 2000-1.

(3) Ta. Vol. V. p. 85. A. T. & M. quoted.

(4) M. Vol. V. p. 2001.

XIII

THE VICTORY UNDER THE BO-TREE.

According to Buddhist scriptures Buddhas gain victory over the Evil under the Bo-trees. The Buddha Gautama gained victory over Mara, the Satan, under Ficus Religiosa, at Bodh-Gaya.

We read in the Gospels that Jesus was tempted of the Devil for "40 days."[1] From the account given in Luke it is clear that Jesus did not gain victory over the Devil. The Devil only "departed from him for a season"[2] after the struggle, unconquered.

We now come to the last scene of struggle between Jesus and the Devil, Mara. Jesus says to his disciples a little before his death:—

"Hereafter I will not talk much with you, for **the prince of this world cometh**, and hath nothing in me."[3]

According to Christian divines here Jesus calls Devil

'THE PRINCE OF THIS WORLD."

To avoid the ambiguity I give the interpretation of this passage, quoted above, by the Right Rev. W. Walsham. How D. D. :—

"The whole passage is as follows: Satan cometh

(1) Luke. 4 : 2.
(2) Luke. 4 : 13.
(3) John. XIV-30.

to put forth his strength against me, he cannot prevail against me, for he can find no sin in me. Nevertheless I shall suffer him to effect the death of my body in obedience to the will of the Father that I should die for the world, thus the whole world shall know that I love the Father."[1]

If the above interpretation is correct this conclusion is apparent:—

In his final struggle Jesus could not gain victory over Satan, but suffered martyrdom, and Mara remained the prince of this world as he was before.

St. Paul writes thus of the Devil:—

(1) **"the god of this world hath blinded the minds of them which believe not."[2]**

(2) **"the prince of the power of the air, the spirit that now worketh in the children of disobedience."[3]**

The victory of Mohammed, under the tree at Hodebeyya, is mentioned in the Koran:—

"Verily We have granted thee a manifest victory that God May forgive thee thy preceding and thy subsequent sin, and may complete His favour on thee and direct thee in the right way."[4]

This passage of the Koran breathes of the same spirit as the following words of the Buddha Gautama:

"Here have I loosed myself from the concourse of sorrows and have cast away the burden of them."[5]

---

(1) The Four Gospels.

(2) II. Cor. 4 : 4.

(3) Eph. 2 : 2.

(4) XLVII. pp. 492-3.

(5) Romantic History of Buddhu Beal. p. 237.

The victory of the prophet over Mara is very clearly mentioned in the Hadis literature:—

(1) The prophet. "Do not go to women when (their) husbands are absent, (and they are alone), for **Satan moves in the veins (or blood) of every mortal."** The companions. "In your veins as well?"

The prophet. **"In my veins as well, but God's help has made me a conqueror over him, and he has submitted to me."**[1]

(2) "Aisha relates:—............The apostle of God said, 'With every man there is a Satan.' I said, 'Is there one with you also?' (He replied), 'With me also there is one, **but God has made me victorious over him, and so he has submitted to me** ....' "[2]

There is no evidence to show that Shankaracharya was a conqueror of Mara. We have shown that Jesus could not conquer Mara. Hence neither Jesus nor Shankaracharya can be the Buddha Maitreya. Mohammed is the Buddha Maitreya for he is the conqueror of Mara, the victory being gained under the tree at Hodebeyya.

---

(1) Ta. Vol. III. p. 91.

(2) Ta. Vol. V. p. 21. A. and N quoted.

XIV

THE CELESTIAL BO-TREE.

Some works on Buddhism give an account of a Celestial Bo-tree.

(a) This tree is of huge dimensions.

(b) For every Buddha this Bo-tree is common.

(c) By this Bo-tree a Buddha is visited by the archangel. Brahma.

(d) After his enlightenment a Buddha looks at this Bo-tree with a fixed gaze.

(a)

HUGE DIMENSIONS.

"The night Buddha entered his mother's womb on the same night a huge white lotus, springing up from the waters and parting the earth 68 *millions of Yojanas* (a Yojana is the day's march of an army, 7 miles) rose up in the middle of the world of Brahma. *This Lotus only the Guide of men and Brahma are able to see.*"[1]

(1) "Mahomet was suddenly transported aloft to the Lotus tree called Sadaret, which flourishes on the right hand of the invisible throne of Allah. *The branches of this tree extend wider than the distance be-*

---

(1) Lalitvistara quoted in the Popular Life of Buddha by Lillie.

tween the sun and the earth."[1]

(2) "Abu Hurera relates:—

The apostle of God said, *'In paradise there is a tree under the shade of which a rider can travel for a hundred years.'*"[2]

(3) "Abu Saeed Khudri relates:—The apostle of God said, 'In paradise there is a tree (such) that a rider *can not cross its shade even in hundred years.*"[3]

(b)

THE COMMON BO-TREE.

"Bo-tree, the throne of the victories of all Buddhas . . . . where all the Buddhas have crushed the desire of the flesh and beyond this none can pass. no, not even if he were a Sakka himself."[4]

According to the Koran this is the *tree of the farthest limit,*

"BEYOND WHICH THERE IS NO PASSING."[5]

Sale gives this note:—

"This tree, say the commentators, stands in the 7th heaven, on the right hand side of the throne of

---

(1) Irving. p. 81.

(2) T. Vol. II. p. 199.

(3) *Ibid.*

(4) Jataka by Francis and Thomas. Vol. IV. p. 146-47.

(5) LIII. p. 508.

God, and is *the utmost bound beyond which the angels must not pass.*"[1]

"Ibn Abbas relates:—It is called *the tree of the farthest limit* for the knowledge of the angels ends there and none has passed beyond it save the apostle of God."[2]

(c)

THE VISIT OF BRAHMA.

Immediately after his enlightenment the archangel Brahma visited the Buddha Gautama by the Bo-tree.[3] The same thing happened to Mohammed, exactly like the Buddha Gautama.

The Koran runs thus:—

"He (the prophet) also saw him (archangel Gabriel) by the lote-tree beyond which there is no passing."[4]

(d)

THE BO-TREE GAZE.

"Then the World Honoured One, having risen from his lion throne, and gone out a short distance from the Bodhi tree, and sitting down with his legs crossed, re-

---

(1) P. 508 foot note.
(2) M. Vol. 1. p. 280.
(3) Majjhima Nikaya by Silacara. p. 151.
(4) LIII. p. 508.

mained immovable during other 7 days, **beholding the Bodhi tree without removing his eyes,** .... in after times a tower was erected on this spot, and called 'Not lifting the eyes.'"[1]

The Koran also speaks of the same thing of Mohammed:—

"He saw him another time by the lote-tree, beyond which there is no passing: near it is the garden of (eternal) abode. When the lote-tree covered that which it covered, (his) *eye-sight turned not aside, neither did it wander*: and he beheld (some) of the greatest signs of his Lord."[2]

The Bo-tree gaze of the prophet is mentioned in the Hadis literature:—

"Anas relates:—

The apostle of God said, *'When the command of God covered that tree, it became such that no creature can describe its beauty.'*"[3]

There being no celestial Bo-tree known for Shankaracharya, and for Jesus, hence neither of them can be the Buddha Maitreya. Mohammed is the Buddha Maitreya for the description of his celestial Bo-tree coincides with what is mentioned about this tree in the Buddhist scriptures.

---

(1) Romantic History of Buddha by Beal. p. 237.

(2) LIII. p. 508.

(3) M. Vol. I. P. 281.

XV

BUDDHAS AND SIGNS.

"After this, Bhagvat spoke to the venerable Subhuti, '*Wherever there is, O Subhuti, the possession of signs, there is falsehood; wherever there is no possession of signs, there is no falsehood. Hence the Tathagata is to be seen (known) from no signs as signs.*' "

"The Vagrakkhedika or Diamond Cutter."[1]

"Jesus had often appealed to the witness of his works in arguing with the unbelieving Jews,"[2] and was in "possession of signs":—

(1) "If I do not the works of my Father, believe me not. But if I do, though ye believe not me, believe the works."[3]

(2) "..........*the same works that I do, bear witness of me.*"[4]

(3) ".....*believe me for the very works' sake.*"[5]

"Jesus wrought his miracles with surprising frequency. The miracles as performed by Jesus, exceed thirty in number."[6] The signs that Jesus showed were a convincing proof to some of the Jews of his time that he was sent of God:—

(1) "There was a man of the Pharisees, named

(1) S. B. E. Vol. XLIX. p. 115.
(2) The Four Gospels by Rt. Rev. W. W. How. D. D.
(3) John. 10 : 37-38.
(4) John. 5 : 36.
(5) John. 14 : 11.
(6) Eadie. p. 440.

Nicodemus, a ruler of the Jews: the same came to Jesus by night, and said unto him, Rabbi, we know thou art a teacher come from God: ***for no man can do these miracles that thou doest, except God be with him.*****"[1]**

(2) *"How can a man that is a sinner do such miracles?"*[2]

(3) *"If this man were not of God, he could do nothing."*[3]

(4) "Ye men of Israel, hear these words; Jesus of Nazareth, a man approved of God among you, by *miracles and wonders and signs..........*"[4]

(5) *"God also bearing them witness, both with signs and wonders, and with diverse miracles."*[5]

Some of the modern Christians have a belief like some of the Jews of the time of Jesus:—

"The working of a miracle proves that the man who performed it is God's messenger, and speaks God's truth; for God works by him, and would not so lend His power to an impostor."[6]

In view of what the Buddha had said, the wonders, miracles, or signs that Jesus possessed, and performed in public to convince people of his Divine mission, are, in the opinion of a devout Buddhist quite sufficient to disqualify him from being the Buddha Maitreya.

---

(1) John. 3 : 1-2.
(2) John. 9 : 16.
(3) John. 9 : 33.
(4) Acts. 2 : 22.
(5) Hebrews. 2 : 4.
(6) Eadie. p. 440.

The attitude of Shankaracharya towards signs is not definitely known. It is said he had performed some wonderful supernatural works to convince his opponents. However we are leaving him out of consideration chiefly because "we know very little of Sankara's life story."[1]

I give two instances which clear up the position of Mohammed regarding miracles:—

(1) "The following miracles were demanded of Mohammed by Koreish as proofs of his mission,"[2] whereupon this passage is said to have been revealed:—

"And they say, We will by no means believe on thee, until thou cause a spring of water to gush forth for us out of the earth; or thou hast a garden of palm trees and vines, and thou cause rivers to spring forth from midst thereof in abundance; or thou cause the heaven to fall down upon us, as thou hast given out, in pieces; or thou bring down God and the angels to vouch (for thee); or thou hast a house of gold; or thou ascend by a ladder to heaven: neither will we believe thy ascending (thither alone); until thou cause a book to descend unto us, (bearing witness of thee), which we may read. Answer, **My Lord be praised! Am I (other) than a man, sent (as an apostle)?**"[3]

(2) "........the Meccans required that Mohammed should either show them an angel descending from

---

(1) Sankara the Sublime by Dhirendra Pal. p. III.

(2) Saie. p. 281.

(3) XVII. p. 281.

heaven in their sight, or raise their dead fathers, that they might discourse with them, or prevail on God and His angels to appear to them in a body,"[1] whereupon this passage is said to have been revealed:—

"And though We had sent down angels unto them, and the dead had spoken unto them, and We had gathered together before them all things in one view; they would not have believed unless God had so pleased: but the greater part of them know (it) not."[2]

From the Koran it is clear that Mohammed was not in "possession of signs":—

(1) "They have sworn by God, by the most solemn oath, that if a sign came unto them they would certainly believe therein; Say, Verily signs are in the power of God alone."[3]

(2) "They say, Unless a sign be sent down unto him from his Lord, (we will not believe). Answer, Signs are in the power of God alone; and I am (no more than) a public preacher."[4]

(3) "The infidels say, Unless a sign be sent down unto him from his Lord we will not believe. Thou art (commissioned to be) a preacher only, (and not a worker of miracles)."[5]

Like the words of Buddha the Koran declares that none of the apostles had the power to work miracles:—

(1) "We have formerly sent apostles before thee

---

(1) Sale. p. 131.

(2) VI. p. 131.

(3) VI. p. 131.

(4) XXIX. p. 392.

(5) XIII. p. 240.

............and no apostle had (the power) to come with a sign, unless by the permission of God."[1]

(2) "Their apostles replied unto them, We are no more than men like unto you; but God is bountiful unto such of His servants as He pleaseth: and *it is not in our (power) to give you a miraculous demonstration (of our mission), unless by the permission of God.*"[2]

(3) "We have sent (a great number of) apostles before thee; (the histories of some) of whom We have related unto thee, and (the histories of others) of them We have not related unto thee; *but no apostle had the power to produce a sign, unless by the permission of God.*"[3]

The Koran gives the reason why Mohammed was not in "*possession of signs*":—

"*Nothing hindered Us from sending thee with miracles, except that the former (nations) have charged them with imposture.*"[4]

The Koran gives several instances of what is stated above. We quote a few of them:—

(*a*) "We gave unto the tribe of Thamud, (at their demand), the she-camel visible (to their sight); *yet they dealt unjustly with her*: and We send not a prophet with miracles, but to strike terror."[5]

(*b*) "We heretofore gave unto Moses (the power

---

(1) XIII. p. 244.

(2) XIV. p. 246.

(3) XL. p. 762.

(4) XVII. p. 277.

(5) XVIII. p. 277.

of working) nine evident signs. And do thou ask the children of Israel (as to the story of Moses); when he had come unto them, and Pharaoh said unto him, Verily I esteem thee, O Moses, to be deluded by sorcery."[1]

(*c*) "And when Jesus the son of Mary said, O children of Israel, verily I (am) the apostle of God (sent) unto you..........and when he produced unto them evident miracles, they said, This (is) manifest sorcery."[2]

We do not wonder when we come across the remark of Bosworth Smith who wrote: "Mohammedanism is a system in many respects unique, but in none more so than in this, that of the great religions of the world, it does not, in its authoritative documents rests its claims to reception upon miracles."[3] "There are some 17 places in the Koran in which Mohammed is challenged to work a sign, and he answers them all to the same effect,"[4] i.e. in the negative. Hence in view of what is stated above it is clear that Mohammed is the Buddha Maitreya, and not Jesus or Shankaracharya.

---

(1) XVII. pp. 2823.

(2) LXI. p. 534.

(3) Mohammed and Mohammedanism. p. 156.

(4) *Ibid.* p. 158.

XVI.

THE TRUE MIRACLE.

(a) "And the Blessed One replied: **Is it not a wonderful thing, mysterious and miraculous to the worldling, that a sinner can become a saint, that he who attains to true enlightenment will find the path of truth and abandon the evil ways of selfishness? The Bhikshu who renounces the transient pleasures of the world for the eternal bliss of holiness, performs the only miracle that can truly be called a miracle.**"

(*b*) "On one occasion some of his adherents entreated the Buddha to permit his missionaries to work wonders, as that would elevate them in the eyes of others. The Buddha replied as follows: 'There are three kinds of miracles. The first is the miracle of power, in which extraordinary power is manifested. as in walking on water, exorcising devils, raising the dead, and so forth. When the believer sees such things his faith may become deepened, but it would not convince the unbeliever, who might think these things are done by the aid of magic. I therefore see danger in such miracles, and I regard them as shameful and repulsive. The second is the miracle of prophecy, such as thought-reading, sooth-saying, fortune-telling, etc. Here also there would be disappointment, for these too in the eyes of the unbeliever would be no better than extraordinary magic. **The last is the miracle of instruc-**

---

(1) The Gospel of Buddha by Carus. p. 151.

tion. When any of my disciples brings round a man by instruction to rightly employ his intellectual and ethical powers, that is the true miracle.' "[1]

Mohammed was conscious that he was given the true miracle, the miracle of instruction. His instruction is the Koran, and it speaks of itself:—

(1) *"Say, Verily, if men and genii were purposely assembled, that they might produce* (*a book*) *like this Koran, they could not produce* (*one*) *like unto it, although the one of them assisted the other."*[2]

(2) "If ye be in doubt concerning the revelation which We have sent down to Our servant, produce a chapter like unto it, and call upon your witnesses besides God, if ye say truth. *But if ye do* (*it*) *not, nor shall* (*ever be able to*) *do* (*it*), justly fear the fire whose fuel is men and stones, prepared for the unbelievers."[3]

The Koran calls its verses *signs*:—

(1) When Our evident *signs* are recited unto them they who hope not to meet Us (at resurrection), say, Bring a different Koran from this or make some change therein."[4]

(2) "(The unbelievers) say, Unless he comes unto us with a sign from his Lord, (we will not believe on him). *Hath not a plain declaration come unto them of that which* (*is contained*) *in the former volumes* (*of*

---

(1) The Essence of Buddhism by Narasu. pp. 51-2. Kevadda Sutta quoted.

(2) XVII. p. 281.

(3) II. p. 4.

(4) X. p. 200.

scripture, by the revelation of the Koran) ?"[1]

(3) "*Thus do We send down* (*the Koran*) *being evident signs.*"[2]

(4) "The same (the Koran is) *evident signs.*"[3]

. . . .

"*Mohammed's opponents answered this by requiring him to work a miracle in proof of his Divine mission, but he refused saying that he was sent to preach the truth, and not to work miracles, appealing at the same time, to the Koran, he challenged his adversaries to produce any work that could rival it in beauty and sublimity. No proof has been adduced that Mohammed at any time descended to any artifices or pseudo miracles to enforce his doctrines or to establish his apostolic claims. He appears on the contrary to have relied entirely upon reason*. . . . ."[4]

The prophet himself gave out that he was given the Koran as a sign:—

(1) "Abu Hurera relates:—The apostle of God said, 'Every apostle was given the same signs tha were given to the apostle before him, and people believed on them. *But the sign given to me is the Koran* that God of power and glory has revealed to me. . . .' "[5]

(2) "Abu Hurera relates:—The apostle of God

---

(1) XX. p. 315.

(2) XXII. p. 328.

(3) XXIX. p. 392.

(4) The Apology for Mohammed and Koran by Davenport. p. 19.

(5) M. Vol. 1. P. 256.

said, *'Among the apostles there is none who is not given miracles in order to make people believe on him, and I am being given the revelation sent down by God..............'* "[1]

Neither Jesus nor Shankaracharya calls his instruction a sign, but Mohammed who is the Buddha Maitreya, calls his instruction a sign.

---

(1) Ta. Vol. V. p. 24. B. and M. quoted.

XVII.

THE NECK-BONE OF BUDDHAS.

"........the Blessed One........gazed at Vesali **with an elephant look.**"[1]

"The Buddhas were accustomed, says Buddha-Ghosha, on looking backwards **to turn the whole body round** as an **elephant does;** because the bones in their neck were firmly fixed, more so than those of ordinary men."[2]

"The neck-bone of all Buddhas is not like the links of a chain but consists of one single solid bone; hence when they wish to consider some object lying behind them, they cannot turn their heads backward, but the whole body, like that of an elephant, must follow the same motion."[3]

There is clear evidence that Mohammed had such a neck-bone, and behaved like Buddhas:—

"If he turned in conversation towards a friend, he turned not partially, but with his full face, and his whole body."[4]

Ali, the fourth Caliph, describes the prophet:

"..........When he would look this side or that side he would turn his whole body round."[5]

---

(1) S. B. E. Vol. XI. p. 64.

(2) *Ibid.* P. 64. foot note.

(3) The Legend of Gaudama by Bigandet. Vol. II. p. 35.

(4) The Life of Mohammad by Sir William Muir. pp. 511-12.

(5) Ta. Vol. VI. p. 99. T, quoted,

Once Ibn Abbas was going with the prophet, and they passed by a graveyard, and he relates:—

"The apostle of God.............. turned round towards them (the buried) with his face, and said. 'O ye dwellers of the tombs........"[1]

There is an evidence of another kind. If a man possessing a neckbone like that of Buddhas were to bend down, his neck, back, and head must be in one straight line. The prophet was observed bending down during the prayer by his companions, and his head, the neck, and the back were found colinear. One of his companions, Abu Homaid Saaidi, relates that during the kneeling position in prayer the prophet "kept his neck in mid-position, he would neither lower down his head, nor keep it raised up (above the neck.)"[2]

Mr. Abul Hasan Mohammed Mohi-Uddin, the Judge of the High Court, of His Exalted Highness the Nizam of Hyderabad, considers by these words that during the kneeling position the head of the prophet remained *"in one straight line with his back."*[3]

There is no evidence to show that Jesus or Shankaracharya had neck-bones like those of Buddhas, and hence neither can be the Buddha Maitreya. Mohammed had his neckbone like those of Buddhas, and hence he is the Buddha Maitreya.

---

(1) Ta. Vol. VI. p. 84. T. quoted.

(2) Ta Vol. III. p. 196-7 B. T. and A. quoted.

(3) Ta. Vol. III. p. 197. foot note.

"नराशंस और अन्तिम ऋषि"

(ऐतिहासिक शोध)

डॉ॰ वेदप्रकाश उपाध्याय

नराशंस और अन्तिम ऋषि

(ऐतिहासिक शोध)

लेखक

डॉ॰ वेदप्रकाश उपाध्याय

एम॰ ए॰ (इलाहाबाद), एम॰ ए॰ (जे॰ एन॰ यू॰, अमृतसर)
एल॰ एल॰ बी॰ डी॰ फ़िल॰ डी॰ लिट॰ (इलाहाबाद आचार्य)
वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र, डिप॰ इन जर्मन, स्वर्ण पदक-प्राप्त,
रीडर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़

प्रकाशक

ख़ालिद बुक डिपो, कोटा (राज॰)

विषय-सूची

मूल्य : 20.00

भूमिका

ऐतिहासिक विषयों पर शोध करने की मेरी उत्कट अभिलाषा सदैव रहती है। वेदों में, बाइबिल में तथा बौद्ध ग्रन्थों में अन्तिम ऋषि के रूप में जिसके आने की घोषणा की गई थी, वह मोहम्मद साहब ही सिद्ध होते थे, अतः मेरे अन्तःकरण ने मुझे यह प्रेरणा दी, कि सत्य को खोलना आवश्यक है, भले ही वह लोगों को बुरा लगने वाला हो। मोहम्मद साहब के पूर्व भारत तथा अरब के निवासियों का धर्म एक था, इस विषय से सम्बद्ध अनेक प्रमाण हैं, जिन्हें यहाँ निर्दिष्ट करना उपयुक्त नहीं। धर्म की संकुचित भावना का मैं पक्षपाती नहीं। कोई भी बात किसी भी स्थल में यदि उपयुक्त एवं उचित कही गई है, तो उसका बहिष्कार करने का मैं साहस नहीं करता। वेदों में बारह पत्नी वाले एक उष्ट्रारोही व्यक्ति के होने की भविष्यवाणी है, जिसका नाम 'नराशंस' है। 'नराशंस' का अर्थ सायण ने किया है, कि जो मनुष्यों द्वारा प्रशंसित हो।[1] मेरे विचार इस स्थल में सायण से सहमत नहीं, क्योंकि मेरे मत से 'नराशंस' शब्द ऐसे 'नर' अर्थात् व्यक्ति का सूचक है, जो प्रशंसित हो। 'मोहम्मद' शब्द 'नराशंस' का अरबी अनुवाद है। प्रस्तुत पुस्तक में मैंने यथाशक्ति सत्य को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया है। पाठकों से निवेदन है, कि पुस्तक पर अपने विचार अवश्य भेजें।

वेदप्रकाश उपाध्याय

माधव मास,
शुक्ल पक्ष द्वादशी,
तिथि, सं. 2027

---

1. 'नराशंसः यो नरैः प्रशस्यते।'

—सायण भाष्य, ऋग्वेद संहिता, 5/5/1

प्रथम अध्याय

नराशंस शब्द का अर्थ

'नराशंस' शब्द 'नर' और 'आशंस' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'नर' का अर्थ होता है मनुष्य और 'आशंस' का अर्थ होता है, 'प्रशंसित' (Praised)। यह स्मरणीय है, कि 'आशंस' शब्द वैदिक भाषा का शब्द है, न कि लौकिक भाषा का। 'नराशंस' शब्द का कुछ लोग अर्थ करते हैं—'मनुष्य की प्रशंसा' तथा कुछ लोगों के अनुसार 'नराशंस' शब्द का अर्थ होता है—'मनुष्यों द्वारा प्रशंसित'। प्रथम अर्थ षष्ठी तत्पुरुष समास से निकलता है तथा दूसरा अर्थ तृतीया तत्पुरुष समाज से निकलता है। विचारणीय यह है, कि वास्तव में 'नराशंस' शब्द का क्या अर्थ होगा? तृतीया तत्पुरुष या षष्ठी तत्पुरुष से निष्पन्न अर्थ संगत नहीं हैं क्योंकि 'नराशंस' के सूक्तों में किसी विशेष व्यक्ति की प्रशंसा है, अतः जिसकी प्रशंसा 'नराशंस' विषयक वर्णन में है, 'नराशंस' शब्द से उसी व्यक्ति का बोध होगा। 'नराशंस' शब्द कर्मधारय समास है, जिसका विच्छेद 'नरश्चासौ आशंसः' अर्थात् 'प्रशंसित मनुष्य' होगा, इसलिये 'नराशंस' शब्द से किसी देवता को भी न समझना चाहिये। 'नराशंस' शब्द स्वतः ही इस बात को स्पष्ट कर देता है, कि 'प्रशंसित' शब्द जिसका विशेषण है, वह मनुष्य है। यदि कोई 'नर' शब्द को देववाचक माने, तो उसके समाधान में इतना स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि 'नर' शब्द न तो देवता का पर्यायवाची शब्द ही है, और न तो देवयोनियों के अन्तर्गत कोई विशेष जाति।

देवजाति—देवताओं की दस जाति हैं—

विद्याधर, अप्सरस्, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध और भूत।[1]

1. विद्याधर—दवताओं की यह जाति अधिक विद्वान् होती है। विद्या को धारण करने के ही कारण तो इनका नाम विद्याधर पड़ा है।[1]

2. अप्सरस्—जल पर से विचरण करने के कारण इन्हें 'अप्सरस्'

---

1. विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नरः।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः॥
—अमरकोश स्वर्ग-वर्ग 11वाँ श्लोक

कहा जाता है।[2]

3. **यक्ष**—जिनकी पूजा की जाती है, वे यक्ष कहे जाते हैं।

4. **राक्षस**—जो लोग इन्हें मानते हैं, उनकी ये अन्य देवों से रक्षा करते हैं।

5. **गन्धर्व**—ये केवल गन्ध को ही पसन्द करते हैं।[3]

6. **किन्नर**—ये मनुष्यों के आकार में सदा रहते हैं, परन्तु जब चाहते हैं, तब अपना रूप भी बदल लेते हैं। ये बहुत ही बुरे देव हैं।[4]

7. **पिशाच**—ये अन्य प्राणियों को मारकर उनका माँस खा जाते हैं, इसीलिए इन्हें पिशाच कहा जाता है।

8. **गुह्यक**—ये बहुत सी निधियों को रखते हैं, और उनकी रक्षा करते हैं। इनके अधिकार में बहुत से कोषागार रहते हैं, जो पृथ्वी या पर्वतों में छिपे रहते हैं।

9. **सिद्ध**—ये परमेश्वर के समीप सदा रहते हैं। इन्हें परमेश्वर की सिद्धि प्राप्त होती है। ये जो कुछ कह देते हैं, सब सत्य हो जाता है। ये कभी असत्य नहीं बोलते। ये बहुत ही अच्छे देव हैं। इन्हें सिद्धियाँ प्राप्त रहती हैं। ये कभी बहुत छोटा रूप बना लेते हैं, कभी ये पर्याप्त भार से युक्त हो जाते हैं तथा कभी बिल्कुल ही हल्के हो जाते हैं।[5]

10. **भूत**—ये कल्याणकारी होते हैं तथा अपने कल्याण के लिये प्रयत्न भी करते रहते हैं। इन्हें भूति (ऐश्वर्य, विभूति, कल्याण) की आकांक्षा एवं प्राप्ति होती है।

नराशंस का मनुष्यत्व—'नराशंस' शब्द देवजातियों में न होकर मनुष्य जाति में 'प्रशंसित' (Praised) के लिये है। 'नर' शब्द का अर्थ मनुष्य

1. 'धरतीति धरो विद्याया धरो विद्याधरः।'

—'रसाला', अमर. 1/12

2. 'अद्‌भ्यः सरन्तीत्यप्सरसः'

—'रसाला', अमर० स्वर्ग—वर्ग 11

3. 'यक्ष्यते पूज्यते यक्षः' रक्षन्त्येभ्यो रक्षांसि, गन्धं सौरभमर्वतीति गन्धर्वः।'

—'रसाला' अमर०, स्वर्ग, 11 वाँ श्लोक'

4. 'कुत्सिता नराः किन्नराः।'

—'रसाला', अमर० स्वर्ग, 11 वाँ श्लोक

5. 'पिशितमश्नातीति पिशाचः गूहति निधिं रक्षतीति गुह्यक', सिद्धिरस्यास्तीति सिद्धः।'

—'रसाला', अमर., स्वर्ग., श्लोक 11

होता है, क्योंकि 'नर' शब्द मनुष्य के पर्यायवाची शब्दों में एक है।[2]

नराशंस की व्यापकता

'नराशंस' के विषय में लौकिक संस्कृत ग्रन्थों में कुछ भी सामग्री उपलब्ध नहीं होती। वैदिक ग्रन्थों में ही 'नराशंस' के विषय में स्थान-स्थान पर मन्त्र आये हैं। 'नराशंस' के विषय में संहिता ग्रंथों में पर्याप्त मन्त्र उपलब्ध हैं। अथर्ववेद संहिता के बीसवें काण्ड के एक सौ सत्ताइसवें सूक्त में 'नराशंस' की प्रशस्ति पर चौदह मन्त्र निर्दिष्ट हैं। ऋग्वेद सभी वेदों में प्राचीनतम वेद है। ऋग्वेद में भी अनेक स्थानों पर 'नराशंस' विषयक मन्त्र है। ऋग्वेद के अन्तर्गत 'नराशंस' शब्द से प्रारम्भ होने वाले मन्त्रों की संख्या आठ है। ऋग्वेद प्रथम मण्डल, तेरहवें सूक्त, तीसरे मन्त्र और अठारहवें सूक्त, नवें मन्त्र तथा एक सौ छः सूक्त चौथे मन्त्र में 'नराशंस' का वर्णन आया है। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के तीसरे सूक्त, दूसरे मन्त्र, पाँचवें मण्डल के पाँचवें सूक्त, दूसरे मन्त्र, सातवें मण्डल के दूसरे सूक्त, दूसरे मन्त्र, दसवें चौसठवें सूक्त, तीसरे मन्त्र और एक सौ बयालिसवें सूक्त, दूसरे मन्त्र में भी 'नराशंस' विषयक वर्णन आये हैं। सामवेद संहिता के तेरह सौ उन्चासवें मन्त्र में तथा वाजसनेयी संहिता के उन्तीसवें अध्याय के सत्ताइसवें मन्त्र में भी 'नराशंस' विषयक वर्णन उपलब्ध होता है। 'नराशंस विषयक वर्णन तैत्तिरीय आरण्यक (3/6/3/1) में भी मिलता है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम काण्ड के अन्तर्गत दर्शपौर्णमासेष्टि के अनुष्ठान के अवसर पर पंच प्रयाजों में 'नराशंसप्रयाजयाग' का भी उल्लेख है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है। 'नराशंस' केवल एक वेद तक सीमित नहीं, अपितु ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी व्याप्त है।

नराशंस का काल निर्धारण

किसी व्यक्ति विशेष को अधिकृत करके जब किसी ग्रंथ में उसका वर्णन किया जाता है, तब वह व्यक्ति विशेष ग्रंथ रचना के पूर्वकाल में रहता है, अन्यथा ग्रंथ में व्यक्ति विशेष का वर्णन आने की सम्भावना नहीं, यदि

---

2. 'मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः।
स्युः पुमांसः पंचजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः।।'
—अमरकोश, मनुष्य वर्ग, श्लोक 1

उपर्युक्त सिद्धान्त से कोई विद्वान यह निष्कर्ष निकाले कि नराशंस का स्थिति काल वेदों के अवतरण के भी पूर्व था तो यह निष्कर्ष अथर्ववेद के बीसवें काण्ड के अन्तर्गत एक सौ सत्ताइसवें सूक्त के प्रथम मन्त्र से ही अवरुद्ध हो जाता है, कि नराशंस वेदावतरण के पूर्व नहीं, अपितु वेदावतरण के बाद की स्थिति में स्तुत्य होता है।[1] ब्रह्म वाक्य में कहा गया है कि हे लोगो सुनो—नराशंस की प्रशंसा की जायगी। उपर्युक्त ब्रह्म वाक्त अथर्ववेद का है, और अथर्ववेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद से बहुत बाद का वेद है, अतः अथर्ववेद के काल के बाद तो 'नराशंस' की उत्पत्ति का होना निश्चित हुआ। 'नराशंस' के वाहन के रूप में ऊँट का प्रयोग उल्लिखित है,[2] अतः नराशंस की उत्पत्ति का होना उस समय निश्चित है, जब ऊँटों का सवारी के रूप में प्रयोग हो।

स्थान निर्धारण—नराशंस के स्थान—निर्धारण करने के विषय में न तो बाह्य प्रमाण उपलब्ध होते हैं और न तो कोई अन्तरङ्गप्रमाण। स्थान—निर्धारण के बिना नराशंस के उत्पत्ति—स्थान का ज्ञान भी असम्भव है, इसलिए नराशंस के स्थान के विषय में कुछ न कुछ विचार प्रस्तुत करना आवश्यक ही है। जब नराशंस का स्थान—निर्णय किया जा रहा है। नराशंस सवारी के रूप में ऊँट का प्रयोग करेगा। कोई भी व्यक्ति सिद्धान्त रूप में जिस देश, काल या वातावरण में जन्म लेता है, उस देश की भाषा, वेशभूषा तथा सवारी का प्रयोग भी करता है। ऊँट की सवारी करने का तात्पर्य यह है, कि नराशंस जिस स्थान में पैदा होगा, वहाँ ऊँटों की प्रचुरता रहेगी। ऊँटों की प्रचुरता प्रायः उन्हीं स्थानों में होती है, जो रेगिस्तानी भू—भाग होते हैं। इस प्रकार स्थान—निर्णय का निरूपण करते हुए हम इस तथ्य पर पहुँचते हैं, कि नराशंस रेगिस्तानी भू—भाग में उत्पन्न होगा, जहाँ ऊँट प्रचुर मात्रा में उपयोगी हों।

●

---

1. 'इदंजना उपश्रुत नराशंसः स्तविष्यते।'

—अथर्ववेद संहिता 20/127/1

2. 'उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो.........................।'

—अथर्व. 20/127/2

द्वितीय अध्याय

नराशंस के गुण और महत्त्व

वेदों में जितने भी मन्त्र आए हैं, सभी प्रायः परमेश्वर के गुणों पर प्रकाश डालते हैं। कुछ ही मन्त्र ऐसे हैं, जो अन्य विषयों से सम्बन्धित हैं। नराशंस की महत्ता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि उसकी स्तुति की जायेगी। ऋग्वेद काल में भी यज्ञों को करते समय नराशंस का आह्वान किया जाता रहा है। आह्वान किए जाते समय उसे 'प्रिय' (beloved) शब्द से युक्त किया गया है। नराशंस की वाणी की मधुरता को लक्षित करके उसे ऋग्वेद में साक्षात् 'मधुजिह्व' भी कहा गया है।[1]

परोक्ष ज्ञान—मधुजिह्व अर्थात् मधुरभाषिता के अतिरिक्त नराशंस का सर्वाधिक विशेष गुण परोक्ष ज्ञान बताया गया है। परोक्ष ज्ञान से युक्त व्यक्ति को कवि कहा जाता है। कवि की प्रतिमा विलक्षण होती है। जहाँ पर सूर्य और चन्द्र की तथा देवताओं की भी पहुँच नहीं होती, वहाँ तक जो पहुँच जाता है और आध्यात्मिक जगत् का जो सम्राट् होता है, उसे कवि कहा जाता है। 'क' का अर्थ ईश्वर होता है। 'क' अर्थात् ईश्वर से जिसका सम्बन्ध होता है, ईश्वर को जो विशेष रूप से जानता है, उसे भी कवि कहा जाता है। शब्द–कोशों में कवि के अर्थ बहुत से दिए गए हैं—प्रतिभावान्, चतुर, बुद्धिमान, विचारयुक्त, प्रशंसनीय और सन्त आदि[2]। ऋग्वेद में नराशंस को कवि बताया गया है।[3] 'कवि' का एक अर्थ 'कविता करने वाला' भी होता है।

सुन्दर कान्ति—नराशंस के विषय में उसके महत्व का प्रतिपादक 'स्वर्चि' शब्द ऋग्वेद में प्रयुक्त हुआ है।[4] स्वर्चि शब्द का विच्छेद है—'शोभना

1. 'नराशंसमिहप्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम्।।'
—ऋग्वेदसंहिता

2. 'कविः......Inteligent, clever, wise, thinking, thoughtful, praiseworthy—वि- A wise man, a Thinker, a sage.
—The Student's Sanskrit-English Dictionary.
—V. S. Apte, Page 140

3. 'नराशंसः सुषदातीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः।।'
—ऋग्वेद संहित। 5151211

4. 'नराशंसः प्रतिधामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः।।'
—ऋग्वेद संहिता 2131211

अर्चिर्यस्य यः' अर्थात् सुन्दर दीप्ति या कान्ति से युक्त। 'अर्चि' शब्द का अर्थ होता है—दीप्ति', और 'सु' का अर्थ होता है—सुन्दर। 'स्वर्चि' शब्द का अभिप्राय यह है, कि इतने सुन्दर स्वरूप का व्यक्ति, जिसके आनन से रश्मि सी भासित हो रही हो। ऋग्वेद के जिस मन्त्र में नराशंस को स्वर्चि कहा गया है, उसी स्थान में उसके विषय में यह भी स्पष्ट रूप से बता दिया गया है, कि वह अपने महत्व से घर—घर को प्रकाशित करेगा।[2] अर्थात् ऐसा कोई घर नहीं होगा, जहाँ नराशंस की प्रशंसा न की जाय। ऐसी स्थिति में नराशंस नाम का अर्थ भी घटित हो जाएगा, क्योंकि 'नराशंस' शब्द का अर्थ ही यह होता है—ऐसा मनुष्य जो प्रशंसित हो। नराशंस के विषय में जो 'प्रतिघामान्यअन्' आया है, उसमें 'अञ्जन्' शब्द प्रकाशन अर्थ वाली 'अञ्ज' धातु में 'शतृ' प्रत्यय के संयोग से बना है। 'प्रतिधामानि' का अर्थ स्पष्ट ही है—'प्रत्येक धरों को'। यदि कोई यह शङ्का करे, कि 'अग्नि' शब्द भी तो 'अन' धातु से बना है, जो प्रकाशक होने के साथ ही साथ जला देने वाला भी है, तो 'नराशंस' के विषय में 'अञ्ज' धातु से निष्पन्न 'अञ्जन्' शब्द का प्रयोग करना यह स्पष्ट करता है, कि नराशंस प्रत्येक घरों को जलाकर भस्म कर देगा तो यह शङ्का अनुपयुक्त है, क्योंकि जो शब्द जिस स्थल में प्रयुक्त होता है, उस स्थल के अनुरूप ही अपने अर्थ को भी अभिव्यक्त करता है। यदि शब्दों के प्रयोग के विषय में स्थल का औचित्य न देखा जाय, तो महान् अनर्थ की प्राप्ति होगी। जैसे—भोजन करते समय कोई कहे 'सैन्धव लताओं' तो स्थल के अनुरूप 'सैन्धव' के 'नमक' अर्थ को ही ग्रहण करना चाहिए, न कि 'घोड़े' अर्थ को और यात्रा करते समय 'सैन्धव' शब्द से 'घोड़े' अर्थ को समझना चाहिए, न कि 'नमक' अर्थ को। प्रकाश अन्धकार को दूर करने के लिए होता है। आध्यात्मिक रूप में 'प्रकाश' शब्द 'ज्ञान' के लिए और 'अन्धकार' शब्द 'अज्ञान' के लिए प्रयुक्त होते हैं। नराशंस के विषय में उसकी आध्यात्मिकता को 'कवि' शब्द से सूचित किया गया है, इसलिए प्रकाश का तात्पर्य नराशंस के विषय में ज्ञान से है। 'घर—घर को प्रकाशित

---

1. (ज्वालाभासोर्नपुंस्य) र्चिज्योति (र्भद्योतदृष्टिषु)।

—अमरकोश 3123911

2. 'नराशंसः प्रतिधामान्यअन् तिस्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः।'

—ऋग्वेद संहिता 2131211

करने' का तात्पर्य घर–घर में ज्ञान को प्रसारित करने से है। इस प्रकार नरशंस को ऋग्वेद में 'ज्ञान का प्रसारक' कहा गया है।

पापों का निवारक—नराशंस को 'सम्पूर्ण पापों से लोगों को अलग करने वाला' बताया गया है।[1] जिसके अन्दर जो गुण होता है, उससे उसी गुण को अन्यों को प्रदान करने के लिए कहा जाता है। मन्त्रों का साक्षात्कार करने वाले कुत्स आङ्गिरस ऋषि नराशंस से यह अनुनय करते हैं, कि वह आकर सम्पूर्ण लोगों को पापों से अलग करें। उक्त मन्त्र से यह सूचित होता है, कि पुरातन काल के ऋषियों के अन्तःकरण में नराशंस के प्रति कितना अनुराग था, कि वे इस बात की अपने अन्दर तीव्र अभिलाषा करते थे कि नराशंस आकर लोगों को पापों से निवारित करे। यदि कोई उक्त मन्त्र में यह शङ्का करे, कि 'विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन' का अर्थ तो होता है कि 'सम्पूर्ण पापों से हमें फिर पार उतारो' लोगों को पापों से अलग करने की बात को क्यों अर्थ के रूप में व्यक्त किया जा रहा है', तो इसका समाधान यह है कि वेदों में जो मन्त्र हैं, वे लोगों द्वारा किए जाने वाले प्रार्थना मन्त्र या पाठ–मन्त्र हैं, न कि ऋषियों द्वारा स्वयं अपने कल्याण के लिए बनाए गए मन्त्र क्योंकि वेद अपौरुषेय हैं और वेदों को कोई बना नहीं सकता, किन्तु वेद लोगों का कल्याण करने के लिए ईश्वर द्वारा ऋषियों के माध्यम से अभिव्यक्त किए गए हैं, इसलिए 'नो अंहसो निष्पिपर्तन' का अर्थ लोगों को पापों से निवारण करने को सूचित करता है।

नराशंस प्रयाजयाग—सन्तान और पशु आदि की सम्पत्ति के प्रपित्सु लोगों द्वारा तनूनपात्प्रयाज के स्थान में नराशंस का प्रयाजयाग करना चाहिए।[2] नराशंसप्रयाज का अर्थ है—उसके लिए प्रयाजयाग जो लोगों में प्रशंसित है।[3] नराशंस प्रयाजयाग में आज्य अग्नि में 'ये यजामहे' नराशंसो अग्न आज्य वेतु 3 वो 3 षट' मन्त्र पढ़कर छोड़ा जाता है।[4]

---

1. 'नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
   रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।।''—
   ऋग्वेद 1/106/4
2. 'प्रजापशुकामानां तनूनपात्स्थाने नराशं सप्रयाजोयज्ञः।'
   —कातीयेष्टिदीपक, पृ० 55
3. दर्शपूर्णमासेष्टि का विस्तृत अध्ययन (शोध प्रबन्ध), पृ० 161
4. दर्शपूर्णमासेष्टि का विस्तृत अध्ययन (शोध प्रबन्ध), पृ० 161

उपर्युक्त मन्त्र में नराशंस को लोगों में प्रशंसित, कीर्ति की ज्योति से युक्त तथा आज्य का प्रेमी कहा गया है।

नराशंस का स्वरूप—कोई मनुष्य जब प्रशंसित होता है, तो उसकी प्रशंसा का कारण उस व्यक्ति में निहित गुणों का समुदाय है, जिसके कारण वह प्रशंसा का पात्र बनता है। दुष्टों की प्रशंसा उनको प्रसन्न करके कुछ स्वार्थ—साधन के लिए भले ही कोई कर दे, परन्तु स्वाभाविक रूप में दुष्ट व्यक्ति प्रशंसा के पात्र न होकर निन्दा के ही पात्र होते हैं। यह अवश्य ही कहा जा सकता है कि 'दुष्टों की दुष्टता की प्रशंसा जहाँ तक की जाये, वह कम ही है', उपर्युक्त वाक्य में "प्रशंसा" शब्द भी निन्दा के अर्थ में अभिव्यक्त हुआ है। पुरुष को प्रशंसित करने के लिए आठ गुण होते हैं जो क्रमशः प्रज्ञा, कुलीनता, इन्द्रिय दमन, श्रुति ज्ञान, पराक्रम, अबहुभाषिता, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता है। लोगों के अन्तःकरण में वास्तव में वही स्थान प्राप्त कर सकता है, जो जन—विद्वेषी न हो, धर्म का अनुरागी हो, प्रशंसनीय कर्म करे, निन्दित कर्मों को न करे, नास्तिक न हो और क्रोध, हर्ष, दर्प, लज्जा, जड़ता, एवं अपने को बड़ा समझने की भावना जिसके ऊपर अपना अधिकार न कर सके। नराशंस को पहचानने के लिए अथर्ववेद में कुछ निश्चित बातें बताई गई हैं, जो प्रस्तुत हैं।

1. **सवारी के रूप में ऊँट का प्रयोग करने वाला**—अथर्ववेद में नराशंस के होने की भविष्यवाणी के अनन्तर उसके द्वारा सवारी के रूप में ऊँटों के उपयोग की बात अभिव्यक्त की गई है।[1]

2. **बारह पत्नियों वाला**—नराशंस के पास बारह पत्नियाँ होंगी, इस बात की पुष्टि भी अथर्ववेद के उसी मन्त्र से होती है, जिस मन्त्र में उसके द्वारा सवारी के रूप में ऊँट के प्रयोग करने की बात का उल्लेख है।[2]

3. **सौ निष्कों से युक्त**—निष्क का अर्थ होता है—स्वर्ण मुद्रा। स्वर्ण मुद्राएँ आपत्ति काल में मनुष्य को बहुत सहयोग देती हैं। नराशंस को ईश्वर

---

1. 'उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो.... —अथर्ववेद 20/127/2
2. '.........वधूमन्तो द्विर्दश' —अथर्ववेद 20/127/2
3. 'एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दशस्रजः।
   त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम्।।'
   —अथर्ववेद 20/127/3

की ओर से सौ निष्क प्रदान किए जाने का उल्लेख है।[3]

4. **दस मालाओं वाला**—मालाएँ गले का हार रहती हैं। 'गले का हार' का अर्थ अत्यधिक प्रिय के लिए प्रयुक्त किया जाता है। नराशंस के लिए दस मालाएँ ईश्वर की प्रेरणा से प्रदान किए जाने का उल्लेख अथर्ववेद के बीसवें काण्ड के एक सौ सत्ताइसवें सूक्त, तीसरे मन्त्र में हुआ है।

5. **तीन सौ अर्वन् से युक्त**—नराशंस को तीन सौ अर्वन् की प्राप्ति होगी, इस बात का उल्लेख भी अथर्ववेद के उपर्युक्त मन्त्र में हुआ है।

6. **दस हजार गो से युक्त**—ईश्वर की ओर से नराशंस को दस हजार गो प्रदान किए जाएँगे।

अब हम अगले अध्याय में यह प्रमाणित करेंगे कि नराशंस की उत्पत्ति हुई या नहीं। यदि उत्पत्ति हुई, तो नरशंस कौन थे।

तृतीय अध्याय

नराशंस की सिद्धि

1. नामगत सिद्धि—'नराशंस' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ प्रथम अध्याय में बतलाया जा चुका है। अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट है, कि 'नराशंस' शब्द व्युत्पत्तिजन्य अर्थ से निर्दिष्ट किसी व्यक्ति विशेष के लिए आया है जो यह स्पष्ट करता है कि वह उत्पन्न होने वाला व्यक्ति, जिसके विषय में वेदों में भविष्यवाणी की गई है, नर = मनुष्य होगा और साथ ही साथ आशंस = प्रशंसित भी होगा। उपर्युक्त कारण से हमें ऐसे व्यक्ति को प्रमाणित करना है, जो मनुष्य भी हो और वह प्रशंसित भी हो। 'मुहम्मद' शब्द 'हम्द्' = 'प्रशंसा करना', धातु से बना हुआ है, जिसका अर्थ 'प्रशंसित' होता है। मुहम्मद साहब मनुष्य भी थे, अतः उनमें नरत्व और आशंसत्व दोनों गुण घटित हो जाते हैं। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि 'नराशंस' शब्द अरबी में 'मोहम्मद' शब्द से अभिहित व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिस प्रकार 'जल' शब्द जिस विशेष पदार्थ का बोध कराता है और वाटर (water) तथा 'आब' व 'वास्सेर' (wasser) शब्द भी उसी पदार्थ का बोध कराते हैं, परन्तु अन्तर केवल यही है कि 'जल' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है और 'वाटर' अंग्रेजी भाषा का, 'आब' फारसी भाषा का तथा 'वास्सेर' जर्मन भाषा का शब्द है, जो एक ही पदार्थ का बोध कराते हैं, उसी प्रकार 'नराशंस' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है और 'मोहम्मद' अरबी भाषा का शब्द है, जो एक ही व्यक्ति विशेष के बोधक हैं। अब देखना यह है कि क्या नराशंस के विषय में जो बातें कही गई हैं, वे मोहम्मद साहब पर घटित होती हैं, अथवा नहीं।

2. **कालगत सिद्धि**—नराशंस की उत्पत्ति का होना उस समय बताया गया है, जबकि ऊँटों का सवारी के रूप में उपयोग हो। मोहम्मद साहब भी उसी समय उत्पन्न हुए थे, जबकि ऊँटों का सवारी के रूप में प्रचुर मात्रा में उपयोग हो रहा था। स्वयं मोहम्मद साहब ऊँट की सवारी के अत्यधिक प्रेमी थे। मोहम्मद साहब ऊँट में चढ़कर मदीना पहुँचे थे।[1]

1. "Around the camels of Mahomet and his immediate followers, rode the chief men of the city, clad in their best raiment and in glittering armour."
—Life of Mahomet, by Sir William Muir, Abridge Edition, Page 180.

3. **स्थानगत साम्य**—नराशंस का जन्म—स्थान ऐसे स्थल में बताया गया है, जो रेगिस्तानी भू—भाग हो। मोहम्मद साहब मक्का में उत्पन्न हुए थे।[1] मक्का ऐसा स्थान है, जो रेगिस्तानी भू—भाग है।

4. **गुणगत साम्य**—(क) नराशंस के लिए ऋग्वेद में प्रिय शब्द का प्रयोग हुआ है। मोहम्मद साहब भी सभी को प्रिय थे।[2]

(ख) नराशंस को परोक्ष ज्ञाता भी बताया गया है। मुहम्मद साहब को भी परोक्ष की बातों का ज्ञान होता था। इस विषय में एक ऐतिहासिक प्रमाण इनायत अहमद की 'अलकलामुल्मुबीन' नामक पुस्तक में है, कि रोमियों और ईरानियों के युद्ध में रोमियों के पराजित हो जाने की घटना अपनी परोक्ष—दर्शिता से मुहम्मद साहब ने अपने मित्रों से बताई थी तथा पुनः एक फ़रिश्ते से नव वर्ष के अन्दर ही रोमियों को होने वाली विषय का समाचार जानकर उसे बतलाया था। इस भविष्यवाणी के बाद नव वर्ष के अन्दर ही नैनवा की लड़ाई में रोमियों की विजय 627 ई. में हुई थी। इसी विषय से सम्बन्धित 'सूरे रूम' नाम कुरआन की 30वीं सूरत उतरी है।[3] इसी बात को कुरआन की सूरःरूम की दूसरी से लेकर चौथी आयत तक में इस प्रकार कहा गया है कि रोमियों की जाति पराजित हो गई। इस अरब की भूमि के निकट ही वे लोग अपने पराजित हो जाने के बाद भी वास्तव में नव वर्षो के अन्दर—अन्दर विजयी होंगे। ईश्वर के हाथ में सारा कृत्य पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों है।[4] यह मुहम्मद साहब की परोक्ष—दर्शिता का स्वतः प्रमाण है।

(ग) नराशंस को वेदों में 'कवि' = कविता करने वाला भी बताया गया है, और कवि = ईश्वर को जानने वाला भी। मोहम्मद साहब को भी 'शायर' कहा जाता था। 'शायर' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ

---

1. **"He was the posthumous son of Abdulla of the Hashimite sept of Mecca."**

—An Encyclopedia of world History, by W.L. Langer, Page 184.

2. **Those who saw him, were suddenly filled with reverence, those who came near him loved him, they who described him, would say. I have never seen him like either before of after."**

—Speeches of Mohammad—Stanley Lane, Poole, Macmillan and Co., Page XXIX 1882.

3. कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब पृष्ठ 43

4. 'गुलि बतिर्रूमुधी अदनल् अर्जि व हुम् मिम्बादि गलबि हिम् सयग लिबून फी बिर्रए सिनीन लिल्लाहिल् अम्रु मिन्कब्लु व मिन् बादु।'

—कुरआन सूरःरूम, आयत 2—4

होता है—ज्ञाता।[1] ईश्वर को जानने वाले मुहम्मद साहब थे, क्योंकि ये ऋषि थे। ईश्वर का सन्देशवाहक होने के ही कारण तो इन्हें 'नबी' कहा जाता था। 'नबी' शब्द अरबी का शब्द है, जो नबा धातु से बना है। 'नबा' का अर्थ होता है—सन्देश, और उस धातु से निष्पन्न शब्द 'नबी' का अर्थ होता है—सन्देश देने वाला।

(घ) ऋग्वेद में नराशंस को अधिक सुन्दर स्वरूप वाला और घर—घर में ज्ञान की ज्योति जलाने वाला बताया गया है। मोहम्मद साहब भी अत्यधिक सुन्दर थे। उनकी सुन्दरता को देखकर लोग उनकी ओर खिंच जाते थे। उनकी आकर्षक शक्ति के विषय में रेवरेंट बासवर्थ स्मिथ ने 'मोहम्मद एण्ड मोहामेडनिज्म' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ में उल्लेख किया है, कि मोहम्मद साहब के विरोधी भी उनकी आकर्षण शक्ति तथा उनकी गरिमा से प्रभावित होकर उनका सम्मान करने को बाध्य हो जाते थे।[2] विरोधियों की अत्यधिक संख्या एवं प्रबलता के होने पर भी मोहम्मद साहब ने ज्ञान के प्रकाश को घर—घर में फैलाने का प्रयत्न किया। डा. ताराचन्द ने 'इन्फ्लुएन्स आफ़ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर' नामक ग्रन्थ की भूमिका में लिखा है, कि मोहम्मद साहब के पास ईश्वरीय वाक्य आने लगा, और वह पृथ्वी पर ईश्वर के सन्देष्टा बन गए और अरब के लोगों के धार्मिक गुरु बन गए।[3]

(ड.) नराशंस को पापों से हटाने वाला भी कहा गया है। सामान्यतया कुछ लोग अधर्म को भी धर्म समझ कर उसका पालन करते हुए देखें जाते

1. 'व यकूलून अइन्ना ल तारिकू आलिहतिना लिशाइरिन् मजनून बल्जाअ बिल्कक़्क़ व मद्दकल् मुर्सबीन' —कुरआन सूरः साफ़्फ़ात आयत 27—28

(और ये लोग कहते हैं क्या हम अपने— अपने देवताओं को एक शायर और पागल की वजह से छोड़ बैठें, नहीं—नहीं यह नबी तो एक सच्चा दीन लाए है और तमाम ही रसूलों को सच्चा बतातें हैं)

2. "The most noteworthy of his external characteristics were a sweet gravity and a quiet dignity, which drew involuntary respect, and which was the best, and often the only, protection he enjoyed from insult."

—Mohammed and mohammedanism,
by R. Bosworth Smith, Page 111.

3. 'Mohammad became the recipient of God's command, his messenger on earth, and his apostle to the people of Arabis.'

—Influence of Islam on Indian culture,
by Dr. Tarachand, Preface.

हैं। ऐसे अधार्मिक लोगों को नराशंस उनके द्वारा किए जाते हुए पापों से रोकेगा, तथा भविष्य में पाप न करने के लिए प्रेरित करेगा। जो लोग पाप किए रहते हैं, यदि वे उसकी क्षमा ईश्वर से नहीं मांगते हैं, तो भविष्य में पुनः पाप करने की आशङ्का रहती हैं। मोहम्मद साहब ने केवल लोगों को पापों से दूर रहने के लिए ही नहीं प्रेरित किया, अपितु ईश्वर से क्षमा याचना करने के लिए भी उत्साहित किया, ताकि लोगों को अपने किए हुए पापों के कारण नरकगामी न होना पड़े। यह मोहम्मद साहब की शिक्षा का ही प्रभाव है, कि लोगों में जो मोहम्मद साहब के अनुयायी हैं, आज भी शराब का पीना, ब्याज लेना आदि निषिद्ध है। दूसरों की सम्पत्ति का लोभ न करने का भी उपदेश मोहम्मद साहब ने दिया है। कुरआन मे धन आदि को महत्त्व न देकर आध्यात्मिकता को महत्व दिया गया है।[1]

5. **पत्नीगत साम्य**—अथर्ववेद में नराशंस को बारह पत्नियों वाला बताया गया है। मोहम्मद साहब के भी बारह पत्नियाँ थीं। उनकी बारह पत्नियों में पहली का नाम खदीजा था। खदीजा खुवैलिद की पुत्री थी। मुहम्मद साहब की दूसरी पत्नी का नाम 'सौदः' था, जो 'जमअः' की पुत्री थीं। तीसरी पत्नी का नाम 'आयशः' था जो अबूबक्र की पुत्री थीं। चौथी पत्नी 'हफ़्शः' थी, जो उमर की पुत्री थीं। पाँचवीं पत्नी का नाम 'जैनब' था, जो 'खज़ीमः' की पुत्री थीं। छठीं पत्नी का नाम 'उम्मे सलमः' था जो 'अबीउमय्यः' की पुत्री थीं। सातवीं पत्नी का नाम भी 'जैनव' था, जो 'हजश' की पुत्री थी। आठवीं पत्नी का 'जुबैरियः' नाम था, जो 'हारिस' की पुत्री थीं। नवीं पत्नी का नाम 'रैहानः' था, जो 'यज़ीद' की लड़की थीं। दसवीं पत्नी का नाम 'उम्मे हबीबः' था, जो 'अबीसुफ़ियान' की पुत्री थीं। ग्यारहवीं पत्नी का नाम 'सफ़ियः' था, जो 'हैबी' की पुत्री थीं। 'मैमूनः' मोहम्मद साहब की बारहवीं पत्नी थी, जो 'हारिस' की पुत्री थीं। इस प्रकार नराशंस के विषय में कही गई बात, जो उनकी पत्नियों के विषय में थी, मोहम्मद साहब के ऊपर पूर्ण–रूपेण घटित हुई। किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति, जो धार्मिक प्रकृति का रहा हो, के बारह पत्नियाँ नहीं थीं। मोहम्मद साहब

---

1. 'फ़मा ऊतीतुम्मिन्शैइन्फ़मताउल्हयातिद्दुनिया'

—कुरआन 42/36

(जो कुछ माल तुम लोगों को दिया गया है, वह सिर्फ दुनिया की चन्द रोज़ की जिन्दगी का सामान है।)

ही ऐसे व्यक्ति हुए थे, जिनकी पत्नियों की संख्या बारह थी। इस प्रकार नराशंस के विषय में कहीं गई बात मोहम्मद साहब के ही ऊपर घटित होती है।

अन्य बातों में साम्य—अवर्थवेद में अन्योक्ति अलङ्कार के माध्यम से नराशंस के विषय में कुछ बातें बताई गई हैं, जिनकी तुलना मोहम्मद साहब से दी जा रही है। नराशंस के लिए दस हजार गो ईश्वर द्वारा प्रदान किए जाने का उल्लेख अवर्थवेद में हैं। 'गो' अलङ्कारिक शब्द है। गो शब्द सामान्यतया अच्छे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है। उदाहरणस्वरूप 'नरपुङ्गव' शब्द 'मनुष्यों में अच्छे' व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है।' पुङ्गव' शब्द का विग्रह है 'पुंक्षु गौः' अर्थात् मनुष्यों में गौ अर्थात् श्रेष्ठ या अच्छा। मोहम्मद साहब द्वारा दी जाने वाली शिक्षाओं के पालनकर्त्ता उसके जीवन काल के अन्तिम भाग में दस हजार थे। वे मोहम्मद साहब के अनन्य सहयोगी थे। मक्का को जीतने के उद्देश्य से जब मुहम्मद साहब मक्का की ओर मदीने से प्रस्थान कर रहे थे, तो उनके साथ रहने वाले सहायकों की संख्या दस हजार थी।[1] मुहम्मद साहब के दस हजार शिष्य जब मक्का में पहुँचे, तो न तो वहाँ किसी प्रकार का युद्ध हुआ और न तो मुहम्मद साहब के किसी शिष्य ने किसी को कष्ट ही दिया, इसी कारण से उन दस हजार शिष्यों को 'गौ' कहा गया।[2]

नराशंस के विषय में यह भी वेदों में उल्लेख है, कि नराशंस को तीन सौ 'अर्वन्' की प्राप्ति होगी। 'अर्वन्' भी अलङ्कारिक शब्द है। 'अर्वन्' का अर्थ घोड़ा होता है। घोड़ा बहुत ही तेज गमन करने वाला तथा युद्ध में अत्यधिक उपयोगी होता है। तीन सौ अर्वन् का तात्पर्य यह है कि तीन सौ से अधिक और चार सौ से कम संख्या में अर्वन् का होना। जिस प्रकार 'सत्पतशी' शब्द का अर्थ होता है ऐसा ग्रन्थ, जिसमें सात सौ या उससे

---

1. "But the final keystone was set in the 8th year of the flight A. D. 630, when a body of the koreysh broke the truce by attacking an ally of the Muslims, and Mohammad forthwith marched upon Mecca with ten thousand men."

—Speeches & table talk on the Prophet Mohammed,
by—Stanley Lane poole, Page-XLVL
Macmillan & Co. (London) 1882

2. Speeches and Table Talk of Prophet Mohammad.
—Page XIVI to XvLII.

अधिक, परन्तु आठ सौ से कम पद्यों का संग्रह हो, उसी प्रकार 'तीन सौ अर्वन्' का अर्थ तीन सौ या उससे अधिक, परन्तु चार सौ से कम संख्या में अर्वन् का होना निश्चित है। 'अर्वन्' शब्द वीर योद्धाओं के लिए प्रयुक्त शब्द है। मोहम्मद साहब के सहयोगियों की संख्या तीन सौ थी।'

अथर्ववेद में नराशंस के लिए दस स्रक् प्रदान किए जाने का उल्लेख है। दस मालाएँ भी अन्योक्ति के माध्यम से दस ऐसे प्रिय व्यक्तियों की ओर संकेत करती हैं, जो नराशंस के गले के हार के समान हों और नराशंस उन्हें बहुत चाहता हो। मोहम्मद साहब के भी दस ऐसे व्यक्ति थे, जो उन पर अपने प्राणों को भी समर्पित करने में तुले थे। मुहम्मद साहब के चारों ओर वे दसों व्यक्ति सदैव रहते थे, इसलिए वे मोहम्मद साहब के गले के हार थे। उन दसों व्यक्तियों के नाम ये हैं—अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली, तल्हा, जुबैर, अबू इसहाक़, अबुल आवर, अबू मोहम्मद अब्दुर्रहमान, अबू उबैदः।

1. **अबूबक्र**—ये उस्मान के पुत्र थे, और मोहम्मद साहब के पहले खलीफ़ा थे।

2. **उमर**—द्वितीय खलीफ़ा के रूप में हमारे समक्ष उमर का नाम आता है, जो ख़त्ताब के पुत्र थे।

3. **उस्मान**—अफ़फ़ान के पुत्र उस्मान तीसरे खलीफ़ा थे।

4. **अली**—ये अबी तालिब के पुत्र थे और चौथे खलीफ़ा थे।

5. **तल्हा**—युद्ध में बड़े वीर थे। इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह था।

6. **जुबैर**—इनके पिता का नाम अव्वाम था। ये भी बहुत बड़े योद्धा थे।

7. **अबू इसहाक़**—इनके पिता का नाम अबी वुक़्क़ास था। यह भी बहुत बड़े वीर थे।

8. **अबुल् आवर**—ये अब्दुर्रहमान के पुत्र थे।

---

1. 'A froce of seven hundred men had come out from Mecca convoy home and other caravan, and they encountered a large raiding party of three hundred. There was a fight the battle of Badr, and the Meccans got the worst of it.'

-The out line of History, Page 605 by
H. G. Wells, Garden Cky, Newyork, 1949

9. **अबू मोहमद अब्दुर्रहमान**—इनके पिता का नाम 'औफ़' था।

10. **अबू उवैद**—इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह था।

उपर्युक्त दसों व्यक्ति सभी युद्धों में मोहम्मद साहब की सहायता करते थे, एवं विरोधियों के प्रहारों से उनकी रक्षा करते थे। इस प्रकार दस की माला के रूप में ये दसों व्यक्ति 'अशरः—मुवश्शरः' कहे जाते थे, इन्हें मोहम्मद साहब स्वर्गीय कहा करते थे।

अथर्ववेद में नराशंस के लिए सौ निष्क ईश्वर द्वारा प्रदान किए जाने का उल्लेख है। निष्क स्वर्ण मुद्राओं को कहा जाता है। स्वर्ण—मुद्राएँ या निष्क शब्द उन श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त है, जो रत्नवत् महत्त्वशाली हों। ईश्वरीय धर्म के प्रचारकों को एवं मूल धर्म के सुरक्षकों को भी 'निष्क' शब्द से व्यवहृत किया जाता है। इसका कारण यह है, कि 'निष्क' बहुत ही मूल्यवान् होता है, और मूलधर्म के संरक्षक या गुरु द्वारा उपदेशित शिक्षाओं के संरक्षक का भी अत्यधिक महत्व होता है। मुहम्मद साहब जिन शिक्षाओं को लोगों के लिए प्रदान कराते थे, उनकी सुरक्षा का कार्य सौ व्यक्ति करते थे मुहम्मद साहब द्वारा दी जाने वाली शिक्षा की रक्षा भी करते थे, तथा अन्यों को भी इन शिक्षाओं से अवगत करते थे। ये असहाबि सुफ़्फ़ः कहलाते थे।

इस प्रकार यह सिद्ध हो गया, कि वेदों में जिस नराशंस के होने की भविष्यवाणी की गई है, वह मुहम्मद साहब की हैं।

अध्याय 4

अभारतीय धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार नराशंस

पहले के तीन अध्यायों में वेदों के अनुसार नराशंस का स्वरूप प्रतिपादित किया गया है, अब अभारतीय धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार जिस ऋषि की ओर संकेत दिया गया है, उसका स्वरूप प्रस्तुत है–

मूसा की पाँचवीं पुस्तक के अनुसार–मूसा के ऊपर अवतरित 'व्यवस्था–विवरण' नामक पुस्तक में एक ऐसे ऋषि के होने की भविष्यवाणी की गई है जो मूसा के ही समान हो और उसके भाइयों के मध्य से हो। उस ऋषि के मुख में ईश्वरीय वचन के प्रवेश की बात सौंने के अतिरिक्त ईश्वरीय आदेश को प्रसारित करने की बात का प्रतिष्ठापन भी मूसा की पुस्तक में हुआ है।[1]

उपर्युक्त भविष्यवाणी से होने वाले ऋषि के विषय में अधोलिखित बातें ज्ञात होती हैं–

1. मूसा के समान होना
2. मूसा के भाइयों के मध्य से होना
3. ईश्वरीय वचनों को प्राप्त करके उन्हें प्रसारित करना

1. मूसा के समान कौन और क्यों?–अब यह देखना है कि कौन ऐसा ऋषि हुआ जो मूसा के समान रहा हो। कुछ ईसाइयों के अनुसार उपर्युक्त भविष्यवाणी ईसा मसीह के लिए हुई थी परन्तु इस मत को स्वीकृति करने में अधोलिखित बाधाएँ हैं–

(क) मूसा ने धर्म प्रचार में व्याधात करने वाले मिस्र–सम्राट् फ़िरौन के पक्ष के एक मनुष्य को मार डाला था, इसका तात्पर्य यह है कि धर्म–व्याधातकारियों का दमन करना मूसा को अभीष्ट था। ईसा ने किसी भी विरोधी का दमन नहीं किया, अपितु यह विरोधियों द्वारा ही शूली में चढ़वा दिए गए।

---

1. 'I will raise them up a prophet from among their bretheren, like unto thee, and will put my words in his mouth, and he shall speak unto them all that I shall command him.' -Deuteronomy, 18-18.

The Books of Old and New Tefsament
Printed in Great Britain.

दूसरी बात यह है कि मूसा की जाति के लोग मूसा के ऋषि होने के पहले उनके जीवन काल में मूर्ति पूजा आदि में फँसे हुए थे। ईसा की जाति वाले ईसा के ऋषि होने के पहले उनके जीवन काल में मूर्ति–पूजा में नहीं फँसे थे।

तीसरी बात यह है कि अपने जीवन काल में मूसा ने जिस प्रकार अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की, उस प्रकार ईसा ने स्व–जीवन काल में विरोधियों पर विजय नहीं पाई, अपितु वे विरोधियों द्वारा ही पराभूत हो गए।

चौथी बात यह है कि मूसा को अपने अनुयायियों द्वारा धोखा नहीं दिया गया, जबकि ईसा मसीह को उनके अनुयायियों में से एक ने धोखा दे दिया।

पाँचवी बात अन्तर की यह है कि मूसा माता–पिता से उत्पन्न हुए थे। स्त्री एवं सन्तान से युक्त थे। ईसा मसीह तो बिना पिता के ही उत्पन्न हुए थे[1] तथा उनके न तो कोई स्त्री थी और न तो कोई पुत्र ही था।

छठीं बात अन्तर की यह है कि मूसा अपने जाति वालों को और अपने अनुयायियों को फ़िरौन की परतन्त्रता से मुक्त कराकर, उन्हें लेकर अपना देश छोड़कर अन्य देश को चले गए, परन्तु ईसा मसीह अपने जीवन में रोमन सरकार से अपने अनुयायियों व जाति वालों को नहीं मुक्त करा सके।

सातवीं बात अन्तर की यह है, कि मूसा ने अपनी जाति के लोगों को एवं अनुयायियों को पैलेस्टाइन पर अधिकार करने के लिए लड़ने का आदेश दिया था, जिसके फलस्वरूप मूसा के अनुयायियों के पैलेस्टाइन पर अधिकार हो गया था, परन्तु ईसा मसीह ने अपने अनुयायियों को युद्ध करने के लिए कभी भी आदेश नहीं दिया।

आठवीं बात अन्तर की यह है कि मूसा को ईश्वरीय विधान प्राप्त हुआ था। मूसा के विधान का नाम 'लेविटिकस' है। ईसा मसीह ने किसी भी नई व्यवस्था को नहीं स्थापित किया, अपितु उन्होंने स्पष्ट कह दिया था

---

1. 'Now the birth of Jesus Christ was on this wise when as his mother Mary was espoused to Joseph, before they came together, she was found with child of the Holy Ghost.'

–New Testament, Saint Mathew, 1.18.

कि वह पुरातन विधान की पुष्टि के लिए आए थे और कोई नया विधान लेकर नहीं आये थे।[1]

नवीं बात अन्तर की यह है कि मूसा बनी इस्राइल के नेता थे तथा बहुत ही उत्कृष्ट जीवन बिताते थे। ईसा मसीह तो अपने जीवन काल में अपनी जाति के नेता नहीं थे। ईसा को केवल बारह मनुष्यों ने अपना धर्म–गुरु तथा धर्म–नेता माना था, जिनमें से एक ने इन्हें धोखा देकर गिरफ़्तार भी करा दिया था, इससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि ईसा मसीह के अनुयायी भी उनके प्रति श्रद्धा नहीं रखते थे।

दसवीं बात अन्तर की यह है कि मूसा दीर्घायु में मरे थे। ईसा मसीह तो अल्पायु में ही मर गए थे।

अन्तर की ग्यारहवीं बात यह है कि मूसा की मृत्यु के बाद उनसे पूर्व आदिष्ट खलीफ़ा ने पैलेस्टाइन और सीरिया पर विजय प्राप्त की थी परन्तु ईसा मसीह के विषय में ऐसी कोई भी बात नहीं घटित हुई। इस प्रकार ईसा मसीह उस ऋषि के पद पर खरे नहीं उतरते हैं जिसके लिए मूसा ने भविष्यवाणी की थी। ईसा मसीह मूसा के समान नहीं थे, यह बात उपर्युक्त ग्यारह तर्कों से पुष्ट हुई।

अब देखना यह है कि क्या मोहम्मद साहब मूसा के समान थे? धर्मप्रसार में विघ्न उपस्थित करने वालों का दमन करने में मोहम्मद साहब मूसा के ही समान थे।

दूसरी समता यह थी कि मोहम्मद साहब के जन्म लेने से पहले उनके देश के लोग मूर्ति–पूजा में बहुत ही बुरी तरह से उसी प्रकार फँसे थे, जिस प्रकार मूसा के जन्म लेने से पहले मूर्ति–पूजा का आधिपत्य था।

समता की तीसरी बात यह है कि जिस प्रकार मूसा ने अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की, उसी प्रकार मोहम्मद साहब को भी अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की।

समता की चौथी बात यह है कि जिस प्रकार मूसा को अनुयायियों द्वारा धोखा नहीं दिया गया, उसी प्रकार मोहम्मद साहब को भी उनके अनुयायियों द्वारा धोखा नहीं दिया गया।

---

1. "Think not that I am come to destroy the law or the prophets, I am not come to destroy but to fulful."

—New Testament, Saint Mathew, 5.17

समता की पाँचवीं बात यह है कि जिस प्रकार मूसा अपने माता–पिता से उत्पन्न हुए थे और सन्तान तथा स्त्री से युक्त थे, उसी प्रकार मोहम्मद साहब भी अपने माता–पिता से उत्पन्न हुए थे। मोहम्मद साहब ईसा मसीह की तरह कुमारी के गर्भ से नहीं उत्पन्न हुए थे। मोहम्मद साहब के भी पास मूसा की तरह पत्नी व सन्तान थीं। ईसा मसीह की तरह मोहम्मद साहब विवाह के बन्धन से मुक्त न थे।

समता की छठी बात यह है कि जिस प्रकार मूसा ने अपने जाति वालों को और अनुयायियों को फिरौन के कारागार से मुक्त किया था, उसी प्रकार मोहम्मद साहब ने भी अपने जाति वालों और अनुयायियों को विपक्षियों के पञ्जे से मुक्त किया था।

समता की सातवीं बात यह है कि जिस प्रकार मूसा की आज्ञा से उनके अनुयायियों ने उनकी मृत्यु के बाद पैलेस्टाइन और सीरिया को मूसा के खलीफ़ा के निर्देशन में विजित किया, उसी प्रकार मोहम्मद साहब की आज्ञा से पैलेस्टाइन और सीरिया को उनके अनुयायियों ने उनके खलीफ़ा उमर के निर्देशन में जीता।

आठवीं बात समता की यह है कि जिस प्रकार मूसा को ईश्वरीय विधान प्राप्त हुआ था, उसी प्रकार मोहम्मद साहब को भी एक नई व्यवस्था प्राप्त हुई थी।

नवीं बात साम्य की यह है कि मूसा जिस प्रकार अपने जाति के धार्मिक नेता थे, उसी प्रकार मोहम्मद साहब भी अपनी जाति के नेता थे। मोहम्मद साहब ईसा मसीह की तरह नेतृत्वहीन नहीं थे।

दसवीं बात समता की यह है कि मूसा दीर्घायु में मरे थे। ठीक मूसा की ही तरह मोहम्मद साहब भी दीर्घायु में ही मरे थे।

इस प्रकार मूसा की तुलना में मोहम्मद साहब ही उपयुक्त हैं, ईसा मसीह नहीं।

मूसा के भाईयों में से होना– मूसा के ऊपर अवतरित ईश्वर वाक्य के अनुसार वह ऋषि, जो अन्त में आने वाला था, मूसा के भाइयों में से होगा, इस बात की पुष्टि भी मूसा की पाँचवीं पुस्तक से होती है। मूसा के भाइयों में से होने का तात्पर्य यह है, कि मूसा की संतान–परम्परा से न होकर वह उसके बन्धु वर्गों की वंश–परम्परा में से होगा। बाइबिल के पुराने

नियम के अन्तर्गत मूसा की पाँचवीं पुस्तक ड्यूटेरानोमी के अनुसार यह सिद्ध होता है कि इस्राइल में मूसा की तरह पुनः कोई ऋषि नहीं होगा, जिसको ईश्वर के समक्ष अभिमुख होकर बात करने की सामर्थ्य प्राप्त हो।[1] यद्यपि बाइबिल के अनुसार अन्तिम ऋषि के विषय में भूतकाल का प्रयोग हुआ है, परन्तु वह भविष्य काल का द्योतक है। इस प्रकार वैदिक संस्कृत में 'लुड़्. लड़्. लिटः' सूत्र से भूतकाल सभी कालों में प्रयुक्त किए जा सकते हैं, उसी प्रकार कुरान की भाषा का भी यही नियम है कि भविष्य में आने वाली बातों को भूतकाल में रखा गया है। बाइबिल के अनुसार भी इस स्थल पर भविष्य काल की बात का उल्लेख भूतकाल मे हुआ है। यदि इस सिद्धान्त को न माना जाये तो सबसे बड़ी आपत्ति यह होगी कि मूसा के जीवित रहते हुए उसके ऊपर अवतरित ग्रन्थ में यह किसी भी प्रकार से नहीं कहा जा सकता, कि मूसा के समान कोई नहीं हुआ।

मूसा के भाइयों में से मोहम्मद साहब जिस सम्बन्ध से घटित होते हैं, उसका वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है। अब्राम, जो पितामह कहे जाते हैं, उनकी दो प्रधान सन्तानें थीं। इब्राहिम की पहली पत्नी का नाम सारै था, जिसके कोई भी संतान न थी। सारै की अनुनय पर अब्राम ने मिस्रदेशीया हाजिरा को पत्नी रूप में स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद उससे इस्माइल नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। जिस समय इस्माइल का जन्म हुआ, उस समय अब्राम की आयु छियासी वर्ष की थी। सारै के जब इसहाक नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, उस समय सारै की आयु नब्बे वर्ष की, और अब्राम की आयु सौ वर्ष की थी।[2] निन्यानवे वर्ष की आयु में परमेश्वर ने अब्राम को यह वचन दिया कि वह अब्राम के वंश की पर्याप्त उन्नति करेगा।[3] ईश्वर की वाणी सुनकर अब्राम ने ईश्वर को प्रणिपात किया,[4] जिसे 'इस्लाम धर्म' के अन्तर्गत सजदः कहा जाता है। परमेश्वर से अब्राम का वार्तालाप

---

1. **'And there arose not a prophet since in Israel like unto Moses, whom the Lord knew face to face.'**

-Deuteronomy, chapter 34, Verse 10, Old Testament.

2. धर्मशास्त्र, उत्पत्ति, 17/17.
3. धर्मशास्त्र, उत्पत्ति, 17/2.
4. धर्मशास्त्र, उत्पत्ति, 17/4.

कनान देश में हो रहा था, जहाँ अब्राम (इब्राहीम) परदेशी होकर रहता था। कनान को आजकल 'पैलेस्टाइन' कहा जाता है। परमेश्वर ने अब्राम को यह वचन दिया कि मैं तुझको और तेरे बाद तेरे वंश को भी यह सारा कनान देश जिसमें तू परदेशी होकर रहता है, इस रीति से दूँगा कि वह युग–युग उनकी निज भूमि रहेगी।[1] बाईबिल के पुरातन नियम के अनुसार यह सिद्ध होता है कि पैलेस्टाइन में अब्राम की सन्तानों का सर्वदा अधिकार रहेगा। स्मरणीय है कि अब्राम को भविष्य पुराण में अविराम कहा गया है, तथा कुरआन में इब्राहीम। अब्राम का इब्राहीम नाम तब से पड़ा, जब से ईश्वर ने अब्राम को जातियों के समूह का मूल पिता होने का वर दिया।[2] पैलेस्टाइन में इब्राहीम की संतानों का अधिकार सर्वदा रहेगा। इस ईश्वरीय वाक्य से इतना तो स्पष्ट ही है, कि पैलेस्टाइन में रहेगा अधिकार तो इब्राहिम की संतानों का ही, चाहे वह जिस वर्ग की हों। इब्राहीम के इस्माइल नामक पुत्र की परम्परा के अन्तर्गत अरब की निवासियों का वर्ग आता है, और इस्माइल के सौतेले भाई इसहाक के वंश परम्परा में यहूदी लोग आते हैं। सौतेले भाइयों का पारस्परिक द्वेष ही अशान्तिमय होता है, तो फिर सौतेले भाइयों की वंश–परम्परा में उत्पन्न होने वाले लोगों के पारस्परिक द्वेष–भाव का क्या कहना? यही कारण है, कि पैलेस्टाइल में अपना प्रभुत्व स्थापित रखने के उद्देश्य से अरब के लोग और यहूदी लोग परस्पर लड़ते रहते हैं। यह सौतेले भाइयों की वंश परम्परा में उत्पन्न हुए लोगों के पारस्परिक वैमनस्य की आग तब तक ठंडी नहीं हो सकती, जब तक कि वे परस्पर यह न समझ लें, कि पैलेस्टाइन पर उन सभी का अधिकार है, जो इब्राहीम की वंश परम्परा में आते हैं।

इब्राहीम के प्रथम पुत्र इस्माइल की वंश–परम्परा संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है—

इस्माइल के पुत्र का नाम कीदार था। कीदार की कई पीढ़ी बाद

---

1. "And I will give unto thee, and to thy seed after thee, the land wherein thou art a stranger, all the land of Canaan, for an everlasting possession, and I will be their God.'

—Old Testament, Genesis, P. 17.8.

2. 'Neither shall thy name anymore be called Abram, but thy name shall be Abraham for a farther of many nations have I made thee.'

—Old Testament, Genesis, 17.5

अदनान हुये। अदनान की कई पीढ़ी बाद कुरैश हुए, और उनकी कई पीढ़ी बाद अब्दिमनाफ़ हुए। अब्दिमनाफ़ के बाद हाशिम, उनके बाद अब्दुल्मुत्तलिब, और अब्दुल्मुत्तलिब के बाद अब्दुल्लाह हुए, जिनके पुत्र मोहम्द साहब थे।

इब्राहीम के द्वितीय पुत्र इसहाक की वंश–परम्परा का क्रम इस प्रकार है—

इसहाक के बाद याकूब (इस्राइल), याकूब के बाद यहूदा तथा यहूदा की कई पीढ़ी के बाद मूसा हुए।

इस प्रकार यह स्पष्ट है, कि इब्राहिम के दो पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्र की वंश परम्परा में मुहम्मद साहब आते हैं, और छोटे पुत्र इसहाक की वंश परंम्परा में मूसा आते हैं। मुहम्मद साहब मूसा के बन्धुओं में से थे, अतः मूसा पर अवतरित ब्रह्म वाक्य मुहम्मद साहब पर भी घटित होता है। यद्यपि मुहम्मद साहब यहूदियों में से नहीं थे, परन्तु इस्माइल के वंश में से थे। इस्माइल के छोटे भाई इसहाक के वंश में से मूसा थे। इस प्रकार मुहम्द साहब का मूसा के बन्धु वर्ग में से होना तर्क संगत एवं उपयुक्त सिद्ध हुआ।

3. मूसा के ऊपर उवतरित ईश्वरीय वाणी के अनुसार जिसके भविष्य में होने को सूचना मूसा की पाँचवीं पुस्तक ड्यूटेरानामी में दी गई है, वह मोहम्मद साहब ही थे। इस बात की पुष्टि भावी ऋषि पर ईश्वरीय वाक्यों के अवतरण से सम्बद्ध सिद्धान्त से होती है। मुहम्मद साहब पर ईश्वरीय वाक्यों का अवतरण पवित्र आत्मा के सन्निकर्ष से हुआ। भावी ऋषि के विषय में मूसा का धर्मग्रन्थ यह कहता है कि वह ईश्वरीय आज्ञाओं का प्रसारक होगा। रेवरेण्ट बासवर्थ स्मिथ की पुस्तक 'मोइम्मद एण्ड मोहम्मेडेनिज्म' में इस बात का स्पष्ट उल्लेख, कि मोहम्मद साहब पर ईश्वरीय वाक्य अवतरित होता था, जिसको उन्होंने 'कुरान' नामक ग्रन्थ के रूप में संकलित करके लोगों में प्रसारित किया है।[1] मुहम्मद साहब ने वास्तव में ईश्वरीय आदेशों को ही प्रसारित किया। यदि मोहम्मद साहब

1. 'Upon this Mohammed feit the heavenly inspiration and read, as he believed, the decrees of God, which he afterwards promulgated in the Koran.'

—Mohammed and Mohammedenism, P. 98.

मिथ्या ही ऋषि बने होते और असत्य का प्रसार ईश्वर को साक्षी देकर किये होते तो मोहम्मद साहब जीवित न रहते, जैसा कि मूसा की पाँचवीं पुस्तक में कहा गया है, कि जिसके विषय में भविष्यवाणी की जा रही है, यदि उसके स्थान में कोई अन्य व्यक्ति ही अपने को ईशदूत बताकर लोगों को भ्रम में डालने का प्रयास करेगा, और असत्य बातों को प्रसारित करेगा तथा उसकी प्रसारित बातें असत्य सिद्ध होंगी, तो वह वास्तव में लोगों द्वारा मार डाला जाएगा, तथा भावी महर्षि न माना जाएगा।[1] महर्षि को पहचानने के लिये सबसे बडा साधन यह है कि यदि कोई अपने को ऋषि बताये और उसकी बात पूर्णरूपेण सत्य सिद्ध हो, तो उसे ऋषि मानना चाहिये, अन्यथा उसे ऋषि न मानना चाहिये और न ऐसे मिथ्याडम्बर युक्त व्यक्ति से भयभीत ही होना चाहिये।[2]

मोहम्मद साहब पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि न तो मोहम्मद साहब ने अल्पायु में ही मृत्यु का आलङ्गिन किया और न तो वे लोगों द्वारा अकाल मृत्यु के ग्रास बनाये गये। ईश्वरीय बातों का प्रसार करने के उपलक्ष्य में मोहम्मद साहब के ऊपर दुष्ट लोगों द्वारा अनेकों आपत्तियों का प्रहार किया गया, परन्तु फिर भी मोहम्मद साहब सत्य के प्रसार से विचलित नहीं हुए। कुछ परिस्थितियों में मोहम्मद साहब पर प्राण संकट भी आ गया, परन्तु ईश्वर ने उनकी रक्षा की। मोहम्मद साहब के लिए ईश्वर की ओर से यह प्रेरणा भी हुई कि वह किसी बात की चिन्ता न करें, क्योंकि ईश्वर उनका रक्षक है, अतः उन्हें धर्म प्रसार के व्याघातकारियों द्वारा दिये जा सकने वाले मृत्यु का भय नहीं है।[3] यही कारण था कि

---

1. 'But the prophet, which shall presume to speak a word in my name which I have not commanded him to speak, or that shall speak in the name of other Gods, even that prophet shall die.'

—Deuteronomy, chaper 18, Verse 20.

2. When a prophet speaketh in the name of Lord, if the thing follow not, nor come to pass, that is the thing, which the Lord hath not spoken, but the prophet hath spoken it presumptuously : thou shalt not be afraid of him.'

—Deuteronomy, 18-22.

3. 'वल्लाहु यास्सिमोक मिनन्नास'
(ईश्वर तुमको लोगों से बचाये रखेगा)
कुरान सूरः 5, आयत 67.

मोहम्मद साहब निर्भयता–पूर्वक ईश्वरीय आदेशों को, जो ब्रह्म के रूप में उनके ऊपर अवतरिल होते थे, प्रसारित करना प्रारम्भ कर दिया।'[1]

अब मोहम्मद साहब की बातों की सत्यता का प्रमाण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मोहम्मद साहब ने जब धार्मिक प्रसार में अग्रसर होने का कर्म प्रारम्भ किया, तो मक्के के लोग विरोधी हो गये, और परस्पर उन्होंने यह प्रतिज्ञापत्र लिखा, कि वे मोहम्मद साहब को अपनी जाति से बहिष्कृत कर देंगे। प्रतिज्ञापत्र में सभी वर्ग के लोगों के हस्ताक्षर हुए। प्रतिज्ञापत्र मक्का के शिवालय में लटका दिया गया था। मोहम्मद साहब अबूतालिब की घाटी में रहते थे, जो दो पहाड़ियों के बीच में थी। जिस स्थान में मोहम्मद साहब बहिष्कृत होने की अवस्था में रहते थे, वह स्थान शिवालय से तीन मील की दूरी पर था। तीन वर्ष जब मोहम्मद साहब को वहाँ रहते हुए व्यतीत हो गये, तब उन्होंने अपने पितृव्य अबूतालिब से मक्का वालों को कहला भेजा, कि प्रतिज्ञापत्र को तो अब दीमक चाट गये हैं, इसलिए प्रतिज्ञापत्र निरर्थक हो गया। अबूतालिब ने मक्का वालों से कहा कि अब मोहम्मद साहब को अपने वर्ग में सम्मिलित कर लेना चाहिये, क्योंकि प्रतिज्ञापत्र भी नष्ट हो चुका है, और मोहम्मद साहब को बहिष्कृत करना भी बहुत बुरी बात है। लोगों ने स्वीकार कर लियां, कि यदि प्रतिज्ञापत्र नष्ट हो चुका होगा, तो अवश्य मोहम्मद साहब को बहिष्कृत नहीं किया जायेगा, अन्यथा उन्हें इसी स्थिति में रहना पड़ेगा। जब प्रतिज्ञापत्र देखा गया, तो परमेश्वर के नाम को छोड़कर शेष भाग लुप्त हो चुका था, इसलिए मोहम्मद साहब को मिला लिया गया। यह मोहम्मद साहब के बात की सत्यता का ही प्रमाण है, कि तीन वर्ष तक लोगों से बहिष्कृत रहकर भी उन्होंने प्रतिज्ञापत्र के दीपक द्वारा चाट जाने की बात बता दी।'[2]

दूसरी घटना यह है, कि मोहम्मद साहब ने यह एक भविष्यवाणी

---

1. 'Muhammad became the recipient of God's commands, his messenger on earth and his apostle to the people of Arabia.'

—The Influence of Islam on Indian Culture,
Preface, Dr. Tarachand M. A., D. Phil,
(Oxford)

2. 'तवारीख हबीब इलाह'

—मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 20

की थी कि अरब के हिजाज़ प्रान्त में एक ऐसी अग्नि प्रज्जवलित होगी, जिसके प्रकाश में बसरा नगर की पहाड़ियाँ दृष्टिगत होंगी। मोहम्मद साहब के देहान्त के तैंतालिस वर्ष बाद सन् 54 हिजरी में मदीना से कुछ दूरी पर यह अग्नि प्रज्जवलित हुई, और काफी समय तक रही।[1] तीसरी घटना की सत्यता का भी निरीक्षण करें—मोहम्मद साहब ने उस्मान को देखकर एक दिन कहा, कि यह लोगों द्वारा प्रहार किये जाने पर वीरगति को प्राप्त होंगे, इस बात का उल्लेख बुखारी की हदीस में है। मोहम्मद साहब के देहान्त के चौबीस वर्ष बाद यह घटना सत्य प्रमाणित हुई।[2] एक बार मोहम्मद साहब ने अली से यह बताया था, कि तुम एक व्यक्ति के द्वारा सिर में प्रहार खाकर मारे जाओगे, और रक्त तुम्हारी दाढ़ी को सिक्त कर देगा। मोहम्मद साहब की मृत्यु के तीस वर्ष बाद इब्नि मुल्जिम खारिजी ने अली के सर के ऊपर प्रहार किया जिससे रक्त बहकर उनकी दाढ़ी को भिगोने में समर्थ हुआ।[4] एक बार मोहम्मद साहब प्रवचन कर रहे थे। उसी समय उनके बड़े नाती हसन भी उसी मंच पर चढ़कर बैठ गये। मोहम्मद साहब ने बताया, कि मेरा यह बालक एक दिन बहुत बड़ा नायक बनेगा, और मुसलमानों के दो बड़े विरोधी वर्गों में मेल करा देगा। मोहम्मद साहब की मृत्यु के तीस वर्ष बाद सन् 40 हिजरी में जब हसन स्वयं खलीफा थे, और अमीर मोआवियः से लड़ रहे थे, आपने उनसे मेल कर लिया, जिससे मुसलमानों में अपार आनन्द छा गया, और हर्षातिरेक से यह स्वयं भी प्रफुल्लित हो गये।[5]

उनकी सत्यता से सम्बन्धित एक और घटना पर दृष्टिपात करना उचित है, जब मोहम्मद साहब मदीना जा रहे थे, तो क़ुरैश ने इनको पकड़ने के लिये पुरस्कार निर्धारित किया।

जिससे पुरस्कार के लोभ में आकर सुराका नामक एक व्यक्ति घोड़े पर सवार होकर उन्हें खोजता हुआ पीछा करने लगा। मोहम्मद साहब ने सुराका को देखकर भूमि से कहा कि 'ऐ भूमि इसे पकड़ ले।' इतने पर सुराका के घोड़े के पैर भूमि में घुटने तक धँस गये। घबड़ाकर सुराका ने मोहम्मद साहब की अनुनय की, तब घोड़ा मुहम्मद साहब की इच्छा के

1. तवारीख हबीब इलाह —मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 162
2. तवारीख हबीब इलाह —मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 162
3. तवारीख हबीब इलाह —मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 162

अनुसार भूमि में धँसने की स्थिति से बाहर हो गया। इसी प्रकार तीन बार होने के बाद सुराका ने प्रतिज्ञा की कि वह मोहम्मद साहब की बात किसी से भी नहीं कहेगा, और न मोहम्मद साहब को धोखा देगा। मोहम्मद साहब के चमत्कारों को देखकर सुराका बहुत ही प्रभावित हुआ, और मोहम्मद साहब से अनुनय की कि मुझे आप एक वचन दें, जिससे मैं आपके राज्य होने पर सभी प्रकार की हानियों से परिवार सहित बचा रहूँ। मोहम्मद साहब ने स्वीकृति देते हुये उससे यह कहा, कि ऐ सुराका! तुम्हारी उस दिन क्या गति होगी, जिस दिन ईरान के सम्राट् किसरा के स्वर्णमय कंकड़ तुम्हारे हाथों में पहनाये जाएंगे। मोहम्मद साहब के देहान्त के पाँच ही वर्ष के अन्दर सन् 16 हिजरी में दूसरे खलीफा उमर के समय में साद सेनापति के द्वारा ईरान का सम्राट् मारा गया, और वहाँ का बहुत सा सामान लूटा जाकर मदीना में लाया गया। उमर ने सब सामान स्ववर्गों में वितरित कर दिया, और कंकड़ को देखकर सुराका ने कहा, कि मोहम्मद साहब की वह भविष्यवाणी, जो उन्होंने मेरे विषय में की थी, आज पूर्ण हुई, जिसे सुनकर उमर को भी मोहम्मद साहब की बात का स्मरण हुआ।[1]

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि मोहम्मद साहब जो कुछ बताते थे, वह दैनिक जीवन में भी सत्य सिद्ध होता था, अतः जिसके विषय में मूसा ने भविष्यवाणी की है, वह मोहम्मद साहब ही थे, कोई अन्य नहीं, क्योंकि मूसा के समान मोहम्मद साहब थे, मूसा की बिरादरी में भी थे, तथा जो बातें बताते थे, सब सत्य हो जाती थीं।

●

1. तवारीख हबीब इलाह —मुफ्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 163

अध्याय 5

वह ऋषि

अन्तिम ऋषि के विषय में अनेक प्रकार से भविष्यवाणियाँ की गई हैं। कहीं अन्तिम ऋषि को किसी नाम से व्याहृत किया गया है, तो कहीं किसी नाम से। इन नामों की विविधरूपता को देखकर व्यक्ति के अन्दर इस संशय का आना असम्भव नहीं, कि यदि एक ही ऋषि को लक्षित करके भविष्यवाणियाँ हुई हैं, तो एक ही नाम सभी भविष्यवाणियों में आना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं है, इसलिए भिन्न–भिन्न नामों से व्याहृत होने वाले भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के आने की सूचना उन भविष्यवाणियों में है। उपर्युक्त संशय का समाधान प्रस्तुत है। व्यक्ति विशेष के गुणों के आधार पर उसे अनेक उपाधियों से विभूषित किया जा सकता है, जो उसके नाम का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। उदाहरणस्वरूप विष्णु को ही लीजिए–वे पीला वस्त्र धारण करते हैं इसलिए उन्हें पीताम्बर कहा जाता है। वे लक्ष्मी के पति हैं, इसलिए उन्हें लक्ष्मीपति कहा जाता है। वे चक्र धारण करते हैं, इसीलिए उन्हें चक्री कहा जाता है। शंकर जी त्रिशूल धारण करते हैं, इसीलिए उन्हें त्रिशूली कहा जाता है। वे वृषभ अर्थात् बैल की सवारी करते हैं, इसलिए उन्हें वृषभवाहन कहा जाता है। सरस्वती को ही लीजिए–वे वीणा बजाती हैं, इसलिए उन्हें वीणावादिनि कहा जाता है। वह ज्ञान और विद्या के सरोवरों से युक्त हैं, इसलिए उन्हें सरस्वती कहा जाता है। इसी प्रकार अन्तिम ऋषि के विषय में भी जिस स्थल में जो वर्णन हुआ है, वह उस देश की भाषा में हुआ है, जिस देश की भाषा में ग्रन्थ है, अतः उस देश की भाषा के अनुसार व्युत्पत्ति–जन्य अर्थ उस नाम पर घटित होगा, जो नाम ऋषि का दिया हुआ है।

कुछ स्थलों में तो केवल ऋषि को वह कहा गया है। अब देखना यह है, कि जिस ऋषि को वह कहा गया है, वह कौन सा ऋषि है, और उसके विषय में क्या–क्या भविष्यवाणी हुई हैं? पहले हम भविष्यवाणियों को पूर्ववर्ती ऋषियों के मुख से प्रस्तुत कर रहे हैं–

'यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। और मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह

सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।'[1] 'परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा,[2] और ज़ो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।' 'मैं अबसे तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूँगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है।'[3] परन्तु अब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।[4] 'तो भी मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।'[5] परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।[6]

'मैं तो पानी से तुम्हें मन–फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझसे शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के

---

1. 'If you love me, keep my commandments. And I will pray the father and he shall give you another comforter that he may abide with you forever.'

—St. John, 14.15.16.

2. 'But the comforter which is the Holy Ghost, whom the father will send in my name, he shall teach you all things, and bring ali things to your remembrance, whatsoever I have said unto you.'

—St. John, 14. 26.

3. 'Here after I will not talk much with you for the prince of this world cometh, and hath nothing in me.'

—St. John, 14. 30.

4. 'But when the comforter is come whom I will send unto you form the father, even the spirit of the truth, which proceedeth from the father, he shall testiy of me.'

—St. John, 15. 26.

5. 'Nevertheless I tell you the truth, It is expedient for you that I go away for if I go not away, the comforter will not come unto you, but if I depart I will send him unto you.'

—St. John, 16.7.

6. 'Howbeit when he, the spirit of truth, is come, he will guide you into all truth : for he shall not speak of himself, but whatsoever he shall hear, that shall he speak, and he will shew you things to come.'

—St. John, 16.13.

योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'[1] उसका सूत्र उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नही।[2]

भावी भविष्यद्वक्ता किस जाति में पैदा होगा, इस विषय पर भी ईसा–मसीह के वचन ये हैं–'इसलिए जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा? उन्होंने उससे कहा, वह उन लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा, और दाख की बारी का ठीका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।'[3] 'इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा, और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।'[4]

उपर्युक्त भविष्यवाणियों के पहले तीन भविष्यद्वक्ता ऋषियों की प्रतीक्षा थी। प्रताक्षित ऋषियों में प्रथम था एलिय्याह और दूसरा था यीशु मसीहा। तीसरे ऋषि को वह ऋषि नाम से व्यवहृत किया गया है। सर्वप्रथम यह स्पष्ट कर लेना आवश्यक है, कि प्रथम दो ऋषि हुए अथवा नहीं, क्योंकि दोनों के बाद 'वह ऋषि' का आविर्भाव निश्चित है।

1. **एलिय्याह**–ईसामसीह के पहले एलिय्याह के आने की भविष्यवाणी की गई थी। एलिय्याह ही यूहन्ना के रूप में प्रकट हुआ था, जैसा कि ईसा–मसीह ने स्वयं कहा है, कि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि एलिय्याह आ

---

1. 'I indeed baptize you with water unto repentance : but he that cometh after me is mightier than I, whose shoes I am not worthy to bear : he shall baptize you with the Holy Ghost and with the fire.'

—St. Mathew, 3.11.

2. 'Whose fan is in his hand and he will throughly purge his floor, and gather his wheat into the garner, but he will burn up the chaff with unquenchable fire.'

—St. Mathew, 3.12.

3. 'When the lord therefore of the wineyard cometh, what will he do undo those husbandmen? They say unto him, he will miserably destroy those wicked men, and will let out his wineyard unto other husbandmen, which shall render him the fruit in their seasons.'

—Mathew, 21.40-41.

4. 'Therefore, say I unto you, the kingdom of God shall be taken from you', and given to a nation bringing forth the fruits thereof.'

—St. Mathew, 21.43

चुका, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना, परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया।'[1] एलिय्याह के जीवनकाल में भी ईसा मसीह ने लोगों को सचेत किया था, कि यूहन्ना ही एलिय्याह है। ईसा मसीह के शब्दों के अनुसार एलिय्याह से सम्बन्धित भविष्यवाणी यह है—

'यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यवाणी करते रहे। और चाहो तो मानो, एलिय्याह जो आने वाला था, वह यही है। जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले।'[2]

यूहन्ना ने राजा हेरोदोस को इस बात के लिए कहा था, कि हेरोदोस अपने भाई फिलिप्पूस की पत्नी को अपनी पत्नी के रूप में न प्रयुक्त करे। हेरोदियास जो पहले फिलिप्पुस की पत्नी थी, उसकी अनुमति से उसके तत्काल नियुक्त पति महोदय हेरोदोस ने यूहन्ना को कारागार में डाल दिया था। यूहन्ना ने राजा को हेरोदियास से विवाह करने के लिए मना किया था, अतएव हेरोदियास यूहन्ना को मरवा डालने की चिन्ता में सदा कोई न कोई उपाय खोजती रहती थी। यूहन्ना की धार्मिकता और पवित्रता से प्रभावित होने के कारण राजा हेरोदोस उससे भयभीत था, और उसे सुरक्षित रखे हुए था, तथा यूहन्ना के प्रवचन सुन—सुनकर आनन्दित होता था। अपने जन्म दिन के उत्सव को मनाने की उत्कण्ठा से राजा हेरोदोस ने अपने प्रधानों को एवं विशिष्ट लोगों को भोजनार्थ निमन्त्रित किया। उसी दिन हेरोदियास की पुत्री ने अपनी नृत्यकला से राजा हेरोदोस को मुग्ध कर लिया, जिससे विवश होकर राजा हेरोदोस ने लड़की से कहा, कि मेरे आधो राज्य तक भी जो कुछ तू माँगेगी, उसे प्रदान करने के लिए मैं सहर्ष उद्यत हूँ। लड़की ने अपनी माँ से पूछ कर यूहन्ना के सिर को राजा से थाल में रखकर लाने का वर माँगा। राजा वचनबद्ध था, अतएव न चाहते हुए भी उसे ऐसा करना पड़ा। यह सत्य ही है, कि कुछ स्त्रियाँ अपने प्रेम के मार्ग की दीवार को भी गिरा देती हैं, तथा इतनी निर्दय होती हैं, कि महात्माओं

---

1. 'But I say un to you, that Elias is come already, and they knew him not, but have done unto him whatsoever they listed.'

—Mathew, 17.12.

2. 'For all the prophets and the law prophesied until John. And if ye will receive it, this is Elias, which was for to come. He that hath ears to hear, let him hear.

—Mathew, 11.13-15.

के जीवन को भी तृण के समान नगण्य समझती है।[1] इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है, कि यूहन्ना हीं एलिय्याह था, जिसके तत्काल बाद ईसा मसीह हुए। वैसे तो दोनों समकालीन थे, परन्तु जीवन–यात्रा के प्रसङ्ग में परवर्ती ईसा–मसीह ही घटित होते हैं।

(2) **यीशु मसीह**—इन्होंने ही इस बात की साक्षी दी थी, कि यूहन्ना ही एलिय्याह है। ये मरियम के पुत्र थे। इनकी माँ ने इन्हें कुमारावस्था में ही जन्म दिया था। इनके कोई पिता न थे। ईश्वर ने इन्हें वह शक्ति प्रदान की थी, जिसके प्रभाव के कारण वे रोगियों का स्पर्श करके भी उन्हें स्वस्थ कर देते थे। इनके उपदेश इतने प्रभावोत्पादक होते थे, कि सुनने वाले भय से घबड़ा जाते थे। इनकी महत्ता को हूण देशवासियों ने नहीं समझा। भारत के राजा शकराज जो विक्रमादित्य के पौत्र थे, जब हूण देश के मध्य भाग में पहुँचे, तो पर्वत में बैठे हुए, श्वेतवस्त्रों से अलंकृत एक पुरुष को देखा। उनसे शकराज ने पूछा, कि आप कौन हैं, और आपका धर्म क्या है? तब इन्होंने बताया कि मैं ईसा मसीह हूँ, और मेरा धर्म वैदिक जप को आश्रित करके निर्मलान्तःकरण होकर परमेश्वर का ध्यान करना है।[2] उक्त स्थान में अपने आने का कारण भी ईसा मसीह यह बताते हैं, कि सत्य के नष्ट हो जाने पर तथा म्लेच्छदेश के मर्यादा से हीन हो जाने पर मैं मसीह यहाँ आया हूँ।[3] अपने नामकरण के विषय में ईसा मसीह यह बतलाते हैं, कि नित्य शुद्ध, कल्याण करने वाले परमेश्वर का ध्यान मैं सदैव करता हूँ, इसलिए मेरा नाम ईसा मसीह है।[4] इतने बड़े माहत्मा एवं धर्मोपदेशक के

---

1. बाइबिल (धर्मशास्त्र), मरकुस, छठा अध्याय
2. 'म्लेच्छेषु स्थापितोधर्मो मया तच्छृणु भूपते।
   मानसं निमलं कृत्वा मल देहे शुभाशुभम्।
   नैगमं जपमास्थाय जपेत निर्मल परम्।
   न्यायेन् सत्यवचसा मनसैक्यैन मानवः।।'
   —भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृतीय खण्ड, द्वितीय अध्याय, श्लोक 27–28
3. श्रुत्वोवाच महाराज प्राप्ते सत्यस्य संक्षये।
   निर्मर्यादे म्लेच्छदेशे मसीहोऽहं समागतः।।
   —भविष्यपुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृ० ख०, 2/25
4. 'ईशमूर्तिर्हृदिप्राप्ता नित्यशुद्धा शिवङ्करी।
   ईशा मसीह इति च मम नाम प्रतिष्ठितम्।।'
   —भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृ० ख० 2/31

संहार के लिए तद्देश्वासियों ने इतने भीषण प्रयास किए, कि दुःख है इस बात का, कि वे राक्षसों से भी बढ़कर दुष्कर्मी थे।

(3) **वह ऋषि**—एलिय्याह और ईशा मसीह के हो जाने के बाद 'वह ऋषि' के उत्पन्न होने का अवसर आता है, जिसके विषय में ईसा मसीह ने भविष्यवाणी की थी। वह ऋषि, जिसे ग्रीक भाषा लिखे गए बाइबिल में 'पेराक्लीट' (फ़ारकलीत) कहा गया है, उसके विषय में विवरण प्रस्तुत किया जाएगा, कि वह कौन है?

वह ऋषि पेराक्लीट नाम से व्यवहृत किया गया है। 'पेराक्लीट' शब्द के अर्थ पर विचार कर लेना आवश्यक है, कि उसका क्या अर्थ है?

पेराक्लीट का अर्थ—'पेराक्लीट' शब्द का अर्थ बाइबिल के आजकल के अंग्रेजी अनुवाद में 'कम्फ़ोर्टर' आराम पहुँचाने वाला' तथा हिन्दी अनुवाद में 'सहायक' दिया गया है। 'संसार गुरु' नामक पुस्तक में बाबा अलीमदास ने 'पेराक्लीट' को यूनानी भाषा में 'फारकलीत' नाम से व्यवहृत किया है, जिसका अर्थ उन्होंने "प्रशंसा योग्य' बताया है।[1] सर विलियम म्योर ने मुहम्मद साहब की जीवन–कथा लिखते समय अपने ग्रन्थ के संक्षिप्त संस्करण में उल्लेख किया है, कि अरब के लोगों के मध्य किसी लड़के का नाम 'मोहम्मद' पड़ जाये, यह एक नवीन एवं विचित्र बात है। यद्यपि यह नाम अरब के लोगों को अज्ञात नहीं था, परन्तु नवीन अवश्य था। 'मोहम्मद' शब्द, अरबिक की प्रशंसा अर्थ वाली हम्द धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ 'प्रशसित' होता है। हम्द धातु से निष्पन्न दूसरा शब्द 'अहमद' बनता है। बाइबिल के न्यू टेस्टामेण्ट के अरबी में अनूदित कुछ संस्करणों में 'पेराक्लीट' का अर्थ 'अहमद' दिया हुआ है, जो मुसलमानों के धर्म की दृष्टि से मान्य तथा उनका समर्थक रहा। इसी कारण से मुसलमानों ने जूज और क्रिश्चियन को सम्बोधित करते हुए कहा, कि हमारे ऋषि का उल्लेख आप

---

1. 'उन्हीं महर्षि का नाम फारकलीत अर्थात् 'प्रशंसा योग्य' है। फारकलीत, अहमद तथा मोहम्मद का यूनानी अनुवाद है।'

संसारगुरु, पृ० 5—बाबा अलीमदास

लोगों की धर्म पुस्तकों में भी है।[1] जिस पेराक्लीट के विषय में बाइबिल में वर्णन आया है, उसकी सिद्धि मोहम्मद साहब पर होती है। सर विलियम म्योर ने इस बात का उल्लेख किया है, कि मरियम के पुत्र ईसा मसीह ने इस बात की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है, कि मैं पुरातन विधान की पुष्टि एवं समर्थन के लिए भेजा गया ऋषि हूँ, परन्तु मेरे बाद भी एक होगा, जिसका नाम 'अहमद' होगा।[2] यहाँ 'अहमद' नाम 'पेराक्लीट' के लिए प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि बाइबिल में ईसा मसीह ने अपने बाद आने वाले ऋषि को 'पेराक्लीट' शब्द से व्यवहृत करते हुए, उसकी बातों के मानने के लिए भी लोगों को उत्साहित किया है।[3] इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है, कि 'पेराक्लीट' का अर्थ प्रशंसक होता है, जिसका अरबी अनुवाद 'अहमद' होता है।

बाइबिल के 'न्यू टेस्टामेण्ट' में जिसके आने की भविष्यवाणी की गई है, उसमें क्या–क्या विशेष बातें होंगी, जिससे वह पहचाना जाएगा, इस बात पर विवरण प्रस्तुत है—

(क) **ईसा मसीह द्वारा कही गई बातों का स्मरण कराने वाला**—ईसा मसीह ने इस बात का स्पष्ट निर्देश किया है, कि वह नया विधान लेकर

---

1. 'The child was Called Mahomet. This name was rare among the Arabs, but not unknown. It is derived from the root Hamd and signifies, 'The praised.' Another from is Ahmad, which having been erroneusly employed as a translation of 'The Paraclete' in some Arabic Version of the New Testament, became a favourite term with Mohametans, specially in addressing Jews and Christians, for it was they said, 'The title under which the prophet had been in their books predicted.'

—Life of Mahomet (Abridge Edition)
—Sir William Muir, P. 5. (London 1871)

2. That the promise of the paraclete was capaple of perversion, we see in the heresy of Montanus : and it is probable that a garbled version of the same promise communicated to Mahomet may have given rise to the following passage (सूर : 61 रूफ़). And calll to mind when Jesus, son of Mary said :-O' children of Israeli verily I am apostle of God unto you, attesting the Book of the Law revealed before me land giving good tidings of a prophet that shall come after me, whose name is AHMAD.'

—Life of Mahomet. (A bribge Edition), Page 164.

3. Bible, John 14.16.

नहीं, अपितु पुरातन विधान की पुष्टि के लिए आए थे।[1] ईसा मसीह जिस विधान की पुष्टि के लिए आए थे, वह विधान था—मूसा का विधान।

(ख) **ईसा मसीह के पश्चात् आना**—वह ऋषि जिसके आने की भविष्यवाणी की गई है, वह संसार से ईसा मसीह के प्रस्थान के बाद आएगा।

(ग) **संसार के नायक के रूप में आगमन**—वह ऋषि जब आएगा, तो संसार के नायक के रूप में आएगा।

(घ) **सत्य का मार्ग-प्रदर्शक**—वह ऋषि संसार को सत्य का मार्ग दिखाएगा।

(ड.) **पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देने वाला**—वह ऋषि पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा, इस बात की ओर संकेत बाइबिल के सेण्ट मैथ्यू (3/11) से मिलता है। इस भविष्यवाणी से कुछ लोग ईसा मसीह का ग्रहण करते हैं, परन्तु ईसा मसीह ने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा तो दिया, परन्तु आग से बपतिस्मा नहीं दिया। आग से बपतिस्मा देने का तात्पर्य है, कि दुष्टों को मार्ग दिखाने के लिए उनके साथ युद्ध करके उन्हें पराजित करना और उन्हें ईश्वरीय मार्ग पर लाना। ईसा मसीह तो कोई भी युद्ध नहीं किये, अतः उक्त भविष्यवाणी 'वह ऋषि' को अधिकृत करके कही गई है।

(च) **हाथ में सूप रखने वाला तथा खलिहान साफ करने वाला**—बाइबिल में उल्लेख है, कि भावी ऋषि हाथ में सूप रखेगा और खलिहान साफ करेगा। इतना ही नहीं, वह गेहूँ को तो खत्ते मे इकट्ठा करेगा, और भूसी को गेहूँ से अलग करके आग में जला देगा। बाईबिल के उक्त कथन से कुछ लोग यह समझते हैं, कि भावी ऋषि सदा अपने हाथ में सूप लिए हुए घूमा करेगा और खलिहान साफ किया करेगा, तथा गेहूँ को खत्ते में एकत्र करके भूसी को आग में जलाया करेगा। ऐसा समझने वालों की बुद्धि में जड़ता का पत्थर पड़ा हुआ है, जिससे वे ऋषि के काम—सूप लेना तथा खलिहान साफ करना समझते हैं। बाइबिल में जो बताया गया है, वह अलङ्कारिक शैली में कहा, गया है, जिसका अभिप्राय यह है, कि भावी

---

1. 'Think not that I am come to destroy the Law, or the prophets, I am not come to destroy, but to fulfil.'

—Saint Mathew, 5.17.

ऋषि की बुद्धि सदसत् का विवेक करने वाली होगी। 'सार–सार को गहि रहे, थोथा देइ उड़ाय' के सिद्धान्त से भावी ऋषि तत्व की बातों को ग्रहण करेगा, और तत्त्वहीन बातों को वान की आग में जला देगा। खलिहान साफ करने का अर्थ यह है, कि जिस व्यक्ति को तत्त्व की बातें बताएगा, पहले उसका अन्तःकरण साफ करेगा।' 'खलिहान्' शब्द 'अन्तःकरण' के लिए प्रयुक्त हुआ है, जिसमें कुछ रखने के पहले उसकी सफाई आवश्यक है।

(छ) **अन्य जाति में आने वाला**—भावी ऋषि अन्य जाति में आएगा, इस बात का उल्लेख बाइबिल में स्पष्ट रूप से किया गया है। ईसा मसीह ने (मैथ्यू–21, 43) स्पष्ट रूप से घोषित किया है, कि इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, कि परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को, जो उसका फल लाए, दिया जाएगा। इससे स्पष्ट है कि भावी ऋषि उस जाति में पैदा होगा, जिससे भिन्न वे लोग हैं, जिन्हें सम्बोधित करके ईसा मसीह ने कहा था। इसीलिए ईसाइयों एवं जूजों को यह आशा छोड़ देनी चाहिए कि भावी ऋषि उनकी जाति में पैदा होगा।

अब हम प्रत्येक विशेषता के आधार पर उस व्यक्ति को प्रमाणित कर रहे हैं, जो 'वह ऋषि' होने की योग्यता रखता है।

अन्तिम ऋषि की सिद्धि—'पेराक्लीट' का अर्थ 'प्रशंसक' होता है, जिसे अरबी भाषा में 'अहमद' कहते हैं। पहले इस बात को हम दिखा चुके हैं, कि अरबी में बाइबिल के अनुवाद में 'पेराक्लीट' का अर्थ 'अहमद' बताया गया है। उपर्युक्त अर्थ मुसलमानों के समर्थन में था और ईसाई लोग स्वाभाविक रूप से मुसलमानों से द्वेषभाव रखते हैं, इसलिए उन्होंने उपर्युक्त अनुवाद को गलत सिद्ध किया।

आज जो अनुवाद बाइबिल के मिलते हैं, उनमें 'पेराक्लीट' का अनुवाद 'कम्फ़ोर्टर' (अंग्रेजी में) और 'सहायक' (हिन्दी में) दिया हुआ है। यदि हम 'पेराक्लीट' का अर्थ सहायक या कम्फ़ोर्टर ही मानें तो भी उपर्युक्त दोनों बातें मोहम्मद साहब के पक्ष में पूर्ण रूपेण घटित होती हैं।

सर्वप्रथम हम इस बात की पुष्टि कर रहे हैं, कि मोहम्मद साहब 'सहायक' थे। चादर ओढ़े हुए एक दिन मोहम्मद साहब नमाज पढ़ने जा रहे थे, तभी एक अरबी देहाती ने आकर आपकी चद्दर इतनी तेजी से खींची, कि चद्दर की रगड़ से, आपकी गरदन दुखने लगी। मोहम्मद साहब ने प्रश्न

किया, कि तुम क्यों ऐसा कर रहे हो? अरबी देहाती ने उत्तर दिया कि मुझे एक आवश्यकता आ पड़ी है, उसकी आप पूर्ति करें। मोहम्मद साहब ने नमाज पढ़ना रोककर उस देहाती का काम कर दिया।[1] प्रस्तुत उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है, कि मोहम्मद साहब लोगों की सहायता करने में इतना आसक्त रहते थे, कि नमाज पढ़ना बन्द करके भी दूसरों की सहायता करना उचित समझा, परन्तु आज के मुसलमान नमाज के आगे किसी मरते हुए प्यारे को सम्भवतः पानी भी न पिलाएँ।

'कम्फ़ोर्टर' का अर्थ होता है—'आराम देने वाला'।

मोहम्मद साहब सभी को आराम देने वाले थे। केवल मनुष्यों को ही नहीं, उन्होंने पशुओं को भी आराम दिया। मोहम्मद साहब ने पशुओं के कान तथा पूंछ को काटने की परम्परा को बन्द कराया, और पशुओं के दागने का भी निषेध किया। सवारी पर काठी तथा जीन लगाकर देर तक खड़ा रखने का निषेध करने के अतिरिक्त मोहम्मद साहब ने पशुओं के पारस्परिक लड़ाए जाने को भी बुरा बताया।[2] जीवित लड़कियों को मारकर उन्हें भूमि में गाड़ देने को भी मोहम्मद साहब ने बुरा बताया। इस प्रकार यह सिद्ध होता है, कि मोहम्मद साहब 'आराम देने वाले' भी थे।

(क) ईसा मसीह की कही गई बातों का स्मरण कराने वाला—अन्तिम ऋषि को ईसा की कही गई बातों का स्मरण कराने वाला कहा गया है। मोहम्मद साहब ने अपने पहले आने वाले सभी ऋषियों का समर्थन किया है और प्रत्येक मुसलमान के लिए यह आवश्यक बताया है कि वह कुरान एव इससे पूर्व उतारे गए सभी ईश्वरीय ग्रन्थों पर विश्वास रखें। इस प्रकार वेद, बाइबिल एवं कुरआन तीनों ही ग्रन्थ प्रत्येक मुसलमान (आस्तिक) के लिए श्रद्धेय और मान्य सिद्ध होते हैं। इस प्रकार ईसा मसीह का समर्थन भी मोहम्मद साहब करते हैं। क्योंकि ईसा मसीह मोहम्मद साहब के पूर्ववर्ती ऋषि हैं। ईसा मसीह मूसा के विधान की पुष्टि के लिए आए थे, और मूसा के विधान का समर्थन अत्यधिक प्राबल्य के साथ मोहम्मद साहब ने किया है।

(ख) ईसा मसीह के पश्चात् आना—मोहम्मद साहब ईसा मसीह के

1. संसारगुरु, पृ० 60—'बाबा अलीमदास'
2. संसारगुरु, पृ० 60—'बाबा अलीमदास'

परवर्ती थे।

(ग) **संसार के नायक के रूप में आमगन**—बाइबिल में अन्तिम ऋषि के लिए कहा गया है, कि वह संसार का नायक होगा। मोहम्मद साहब ने जिस धर्म का प्रचार एवं प्रसार किया उसे सनातन धर्म और सार्वभौम धर्म कहा। कुछ लोग यह ग़लत समझते हैं कि मोहम्मद साहब इस्लाम धर्म के संस्थापक थे, और इस्लाम धर्म तभी से इस जगतीतल में प्रसारित हुआ, जब से मोहम्मद साहब ने इसका प्रसार किया। 'इस्लाम' का अर्थ 'ईश्वरीय' होता है। इसे मोहम्मद साहब ने कहा है, कि यह सनातन धर्म है। सनातन का अर्थ होता है—सब दिन से चला आने वाला। अपने जीवन काल में ही मोहम्मद साहब ने बहुसंख्यक लोगों का नेतृत्व प्राप्त कर लिया था। अरब में रहने वाले लोगों को और पिशाचों को अपने वश में कर लिया।

(घ) **सत्य का मार्ग-प्रदर्शक**—मोहम्मद साहब ने सत्य का मार्ग प्रदर्शित किया, और ईश्वर से पराड्.मुख लोगों को सत्य का ब्रह्म—मन्त्र सिखाया—'लाइलाह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।' 'लाइलाह इल्लल्लाह' को वेदान्त में 'एकं ब्रह्म दितीयं नास्ति' कहा गया है।

(ड.) **पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देने वाला**—'पवित्र आत्मा' शब्द जिब्रील के लिए आया हुआ है। जिब्रील को ही सरस्वती कहा जाता है, जो ईश्वरीय ज्ञान को ऋषियों तक पहुँचाती हैं। मोहम्मद साहब को ईश्वरीय ग्रन्थ अध्ययन सरस्वती ने ही आकर पर्वतीय गुफा में कराया और मोहम्मद साहब ने उस ग्रन्थ का ज्ञान लोगों तक पहुँचाया।। दुष्टों को मार्ग दिखाने के लिए मोहम्मद साहब ने पहले तो शान्ति का आश्रय लिया, परन्तु जब शान्ति से वे लोग न माने और उद्दण्डता करते रहे, तो मोहम्मद साहब ने उनका दमन करने के लिए आग (उष्णता) अर्थात् युद्ध का आश्रय लिया।

(च) **हाथ में सूप रखने वाला तथा खलिहान साफ करने वाला**—हाथ में सूप रखने तथा खलिहान साफ करने का अर्थ तो पहले स्पष्ट किया जा चुका है, कि लोगों के अन्तःकरण को साफ करके उनमें यथार्थ बातों का समावेश करने वाला, तथा अपने अन्दर सत्य और असत्य का विवेचन करने वाला वह ऋषि होगा। सरस्वती के माध्यम से मोहम्मद साहब पर अवतीर्ण ग्रन्थ 'कुरान' को 'फुरकान' भी कहा जाता है।

'फुरकान' का अर्थ होता है—सत्य और असत्य का विवेचन करने वाला।

(छ) **अन्य जाति में आने वाला**—अन्तिम ऋषि के रूप में मोहम्मद साहब ही पूर्ण–रूपेण सिद्ध होते हैं, क्योंकि वह ईसा एवं उनके द्वारा उपदिष्ट जूजों एवं यहूदियों की जाति में नहीं पैदा हुए थे। ईसा का सम्बन्ध इसहाक की वंश–परम्परा से है, और मोहम्मद साहब का सम्बन्ध इस्माइल की वंश परम्परा से है।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है, कि जिस ऋषि के होने की भविष्यवाणी बाइबिल के न्यू टेस्टामेण्ट में दी गई है, वह मोहम्मद साहब ही हैं।

अध्याय 6

अन्तिम बुद्ध-मैत्रेय

'ऋषि' को बौद्ध धर्म की भाषा में 'बुद्ध' कहा जाता है। अन्तिम बुद्ध के विषय में भविष्यवाणी का स्वरूप प्रस्तुत है, जिसे गौतम बुद्ध ने अपने मृत्यु काल के समय अपने प्रिय शिष्य नन्दा से बताया था। "नन्दा! इस संसार में मैं न तो प्रथम बुद्ध हूँ और न तो अन्तिम बुद्ध हूँ। इस जगत् में सत्य तथा परोपकार की शिक्षा देने के लिए अपने समय पर एक और 'बुद्ध' आएगा। वह पवित्र अन्तःकरण वाला होगा। उसका हृदय शुद्ध होगा। ज्ञान और बुद्धि से सम्पन्न तथा समस्त लोगों का नायक होगा। जिस प्रकार मैंने जगत् को अनश्वर सत्य की शिक्षा प्रदान की है, उसी प्रकार वह भी जगत् को सत्य की शिक्षा देगा। जगत् को वह ऐसा जीवन मार्ग दिखाएगा, जो शुद्ध (अमिश्रित) तथा पूर्ण भी होगा। नन्दा! उसका नाम मैत्रेय होगा।"[1]

'बुद्ध' का अर्थ 'बुद्धि से युक्त' होता है। बुद्ध मनुष्य ही होते हैं, देवता आदि नहीं।[2]

बुद्ध की विशेषताएँ

बुद्ध ऐश्वर्यवान् एवं धनवान् होता है।

बुद्ध सन्तान से युक्त होता है।

बुद्ध स्त्री तथा शासन से युक्त होता है।

बुद्ध अपनी पूर्ण आयु तक जीवित्त रहता है।[3]

बुद्ध पद को प्राप्त व्यक्ति का यह सिद्धान्त होता है, कि अपनी सिद्धि के लिए अपना कार्य स्वयं करना चाहिए।[4] बुद्ध केवल धर्म प्रचारक होते हैं।[5] 'बुद्ध' को 'तथागत' भी कहा जाता है। जिस समय बुद्ध एकान्त

---

1. Gospel of Buddha, by Carus, P. 217
2. 'It is only a human being that can be a Buddha, 'a deity can not.' —Mohammed in The Buddhist Scriptures, P. 1
3. Warren, P. 79.
4. The Dhammapada, S. B. E. Vol X. P. 67.
5. The Tatha gatas (Buddhas) are only preachers'. —The Dhammapada, S. B. E. Vol. X. P. 67.

में रहता है, उस समय ईश्वर उसके साथियों के रूप में देवताओं और राक्षसों को भेजता है।[1] प्रत्येक बुद्ध अपने पूर्ववर्ती बुद्ध का स्मरण कराता है और अपने अनुयायियों को 'मार' से बचने की चेतावनी देता है। 'मार' का अर्थ बुराई एवं विनाश को फैलाने वाला होता है।[2] जिसे उर्दू भाषा में 'शैतान' तथा अंग्रेजी में 'डेविल' कहा जा सकता है। बुद्ध के अनुयायी पक्के अनुयायी होते हैं, जिन्हें कोई भी उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता।[3] संसार में एक समय में केवल एक ही बुद्ध रहता है।[4]

बुद्ध के लिए सबसे आवश्यक इस बात का होना है, कि संसार का कोई भी व्यक्ति उसका गुरु न हो।[5]

प्रत्येक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष का होना आवश्यक है। हर एक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष के रूप में अलग-अलग वृक्ष निश्चित रहे हैं।

बुद्ध मैत्रेय की विशेषताएँ

मैत्रेय का अर्थ होता है—दया से युक्त।

बुद्ध होने के कारण अन्तिम बुद्ध मैत्रेय में भी बुद्ध की सभी विशेषताएँ पाई जाएँगी।

मैत्रेय बोधिवृक्ष के नीचे सभा का आयोजन करेगा।[7]

बोधिवृक्ष के दो प्रकार हैं—(1) सांसारिक वृक्ष, (2) स्वर्गीय वृक्ष।

बोधिवृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति होती है।

इस समय हम स्वर्गीय बोधिवृक्ष के विषय में कुछ विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. स्वर्गीय बोधिवृक्ष बहुत ही विस्तृत क्षेत्र में है।
2. ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध स्थिर दृष्टि से उस बोधिवृक्ष को देखता

---

1. Saddharma-Pundrika, S. B. E. Vol. XXI. P. 225.
2. Carus, P. 251.
3. Dhammapada, S. B. E. Vol. X. P. 67.
4. The Life and Teachings of Buddha, Anagarika Dhammapada, P. 84.
5. Romantic History of Buddha, by Beal, P. 241.
6. Maitreya means 'the merciful.'
—Mohammed In the Buddhist, Scriptures, P. 15.
7. Takakusu, P. 213.
8. Romantic History of buddha, by Beal, P. 237.

है।[8]

सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा बुद्धों के गर्दन की हड्डी अत्यधिक दृढ़ होती थी, जिससे वे गर्दन मोड़ते समय अपने पूरी शरीर को हाथी की तरह घुमा लेते थे।[1] मैत्रेय में भी उक्त गुण का होना स्वाभाविक है।

अब हम यह सिद्ध करेंगे कि कौन ऐसा व्यक्ति है, जिस पर बुद्धों की सभी विशेषताएँ पूरी उतरती हैं और जो मैत्रेय की कसौटी पर खरा उतरता है।

कुरान में मोहम्मद साहब के ऐश्वर्यवान् और धनवान् होने के विषय में यह ईश्वरीय वाणी है कि तुम पहले निर्धन थे, हमने तुमको धनी बना दिया। मोहम्मद साहब ऋषि पद को प्राप्त करने के बहुत पहले धनी हो गए थे।[2]. मोहम्मद साहब के पास अनेक घोड़े थे। उनकी सवारी के रूप में प्रसिद्ध ऊँट 'अलकसवा' था, जिस पर सवार होकर मक्का से मदीना गए थे और बीस की संख्या में ऊँटनियाँ थीं, जिसका दूध मोहम्मद साहब और उनके बाल–बच्चों के पीने के लिए पर्याप्त था, साथ ही साथ सभी अतिथियों के लिए भी पर्याप्त था। ऊँटनियों का दूध ही मोहम्मद साहब व उनके बाल–बच्चों का प्रमुख आहार था। मोहम्मद साहब के पास 7 बाकरियाँ थीं, जो दूध का साधन थीं। मोहम्मद साहब दूध की प्राप्ति के लिए भैंसें नहीं रखते थे, इसका कारण यह है कि अरब में भैंसें नहीं होतीं।[3] उनके सात बागें खजूर की थीं जो बाद में धार्मिक कार्यों के लिए मोहम्मद साहब द्वारा दे दी गई थीं।[4] मोहम्मद साहब के पास तीन भूमिगत सम्पत्तियाँ थीं, जो कई बीघे के क्षेत्र में थीं। मोहम्मद साहब के अधिकार में कई कुँए भी थे। इतना स्मरणीय है, कि अरब में कुआँ का होना बहुत बड़ी सम्पत्ति

---

1. Dhammapada, S. B. E. Vol. XI P. 64. footnote.
2. 'ववजदक आइलन फअग़ना'
(और तुमको निर्धन पाया, बाद में तुमको धनी कर दिया)
—सूर : 93, आयत–8
3. Life of Mahomet-Sir William Muir, (Abridge Edition), P. 545-546
4. Life of Mahomet-Sir William Muir, (Abridge Edition), P. 547
5. Life of Mahomet-Sir William Muir, (Abridge Edition), P. 548

समझी जाती है, क्योंकि वहाँ रेगिस्तानी भू–भाग हैं।[5] मोहम्मद साहब के बारह पत्नियाँ, चार लड़कियाँ, और 3 लड़के थे। बुद्ध के अन्तर्गत पत्नी और सन्तान का होना द्वितीय गुण है। मोहम्मद साहब के पूर्ववर्ती भारतीय बुद्धों में यह गुण नाममात्र को पाया जाता था, परन्तु मोहम्मद साहब के पास उसका बारह गुना गुण विद्यमान् था। उनकी पत्नियों के नाम हम नराशंस के वैदिक भाग में उल्लिखित कर चुके हैं।

मोहम्मद साहब ने शासन भी किया। अपने जीवन काल में ही उन्होंने बडे–बड़े राजाओं को पराजित करके उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। अरब के सम्राट् होने पर भी उनका भोज्य पदार्थ पूर्ववत् था।[1]

मोहम्मद साहब अपनी पूर्ण आयु तक जीवित रहे। अल्पायु में उनका देहावसान नहीं हुआ और न तो वे किसी के द्वारा मारे गए।

मोहम्मद साहब अपना काम स्वयं कर लेते थे।[2] उन्होंने अपने जीवन भर धर्म का प्रचार किया। उनके धर्म–प्रचारक स्वरूप की पुष्टि अनेक इतिहासकारों ने भी की है।[3] यद्यपि उनके विषय में यह बात तो अत्यधिक प्रसिद्ध है ही।

जिस समय मोहम्मद साहब एकान्त में रहते थे, उस समय कभी–कभी देवता और राक्षस भी उनके पास आ जाया करते थे।[4]

मोहम्मद साहब ने भी अपने पूर्ववर्ती ऋषियों का समर्थन किया, इस बात के लिए आप पूरा कुरआन देख सकते हैं। उदाहरण रूप में कुरआन में दूसरी सूरः में उल्लेख है कि 'ऐ आस्तिको! (मुसलमानो) तुम कहो कि हम ईश्वर पर पूर्ण आस्था रखते हैं और जो पुस्तक हम पर अवतीर्ण हुई, उस पर और जो–जो कुछ एब्राहीम, इस्माइल, इसहाक और

---

1. 'The fare of the desert seemed most congenial to him, even when he was sovereign of Arabia.'

—The Speeches and Table Talk of The Prophet Mohammad, by Lanepoole, P. XXX.

2. '.......mended his own cloths, milked the goats and waited upon himself.'

—Speeches and Table Talk of The Prophet Mohammad, by Lanepoole, P. XXIX.

3. Mohammad and Mohammedenism, by Rev. Bosworth Smith, P. 98

4. कुरआन, सूरः 72, आयत 1–19.

याकूब पर उनकी सन्तान (के ऋषियों) पर और जो कुछ मूसा और ईसा को दी गई, उन पर भी और ज़ो कुछ अनेक ऋषियों को, उनके पालक (ईश्वर) की ओर से उपलब्ध हुई उन पर भी हम आस्था रखते हैं और उन ऋषियों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं मानते और हम उसी एक ईश्वर के मानने वाले हैं।[1]

मोहम्मद साहब ने अपने अनुयायियों को शैतान से बचने की चेतावनी बार—बार दी थी। कुरआन में शैतान से बचने के लिए यह कहा गया है, कि जो शैतान को अपना मित्र बनाएगा, उसे वह भटका देगा और नारकीय कष्टों का मार्ग प्रदर्शित करेगा।[2]

मोहम्मद साहब के अनुयायी कभी भी मोहम्मद साहब के बताए हुए मार्ग से विचलित न होते हुए उनकी पक्की शिष्यता अथवा मैत्री में आबद्ध रहते हैं। मोहम्मद साहब का संग उनके अनुयायियों ने आमरण नहीं छोड़ा, भले ही उन्हें कष्टों का सामना करना पड़ा हो।[3]

संसार में जिस समय मोहम्मद साहब बुद्ध थे, उस समय किसी भी देश में कोई अन्य बुद्ध नहीं था। मोहम्मद साहब के बुद्ध होने के समय सम्पूर्ण संसार की सामाजिक और धार्मिक स्थिति, बहुत ही खराब थी, इस बात की पुष्टि 'कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब' शोध पुस्तक में देख सकते हैं।

मोहम्मद का कोई भी गुरु संसार का व्यक्ति नहीं था। मोहम्मद साहब पढ़े--लिखे भी नहीं थे, इसीलिए उन्हें 'उम्मी' भी कहा जाता है। ईश्वर द्वारा मोहम्मद साहब के अन्तःकरण में उतारी गई आयतों की संहिता कुरआन है।[4] प्रत्येक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष का होना आवश्यक है। किसी

---

1. कुरआन, सूरः 2, आयत 136.
2. कुरआन, सूरः 22, आयत--4.
3. **Mohammed and Mohammedenism,**
   —by Rev. Bosworth Smith, P. 110-111.
4. 'व इन्नहू ल तन्जोलु रब्बिल् आलमीन नजल बिहिरिहुल अमीनु अला कल्बिक लितकून मिनल्मुन्ज़िरीन।

—कुरआन, सूरः 26, आयत 192—194

(हे मोहम्मद! यह कुरआन समस्त लोकों के पालक का उतारा हुआ है, जिसे तुम्हारे दिल पर एक अमानतदार आत्मा लेकर उतरी है ताकि तुम सब लोगों को डराओ।')

बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष के रूप में अश्वत्थ (पीपल), किसी के लिए न्यग्रोध (बरगद) तथा किसी बुद्ध के लिए उदुम्बर (गूलर) प्रयुक्त हुआ है। बुद्ध मैत्रेय के लिए जिस बोधिवृक्ष का होना बताया गया है, वह है—कड़ी और भारयुक्त काष्ठ वाला वृक्ष।[1]

मोहम्मद साहब के लिए बोधिवृक्ष के रूप में हुदेबिया स्थान में एक कड़ी और भारयुक्त काष्ठवाला वृक्ष था, जिसके नीचे मोहम्मद साहब ने सभा भी की थी।

'मैत्रेय' का अर्थ होता है—दया से युक्त। 16 अक्टूबर सन् 1930 लीडर पृ० 7 कालम 3 में एक बौद्ध ने 'मैत्रेय' का अर्थ 'दया' किया है। मोहम्मद साहब दया से युक्त थे। इसी कारण से मुहम्मद साहब को 'रहमतुल्लिल्लोमीन' कहा जाता है।[2] जिसका अर्थ है—'समस्त संसार के लिए दया से युक्त।' बुद्धों के अन्तर्गत पाई जाने वाली सभी विशेषताएँ मोहम्मद साहब में भी विद्यमान थीं।

मोहम्मद साहब ने भी स्वयं में एक वृक्ष को देखा था, जो ईश्वर के सिंहासन के दाहिनी ओर विद्यमान था, जो इतने बड़े क्षेत्र में था, जिसे एक घुड़सवार लगभग सौ वर्षों में भी उसकी छाया को पार नहीं कर सकता था।[3]

मोहम्मद साहब ने भी स्वर्ग में वृक्ष को आँख बिना गिराए हुए देखे थे।[4]

मैत्रेय के विषय में जो यह कहा गया है कि किसी भी तरफ मुड़ते समय वह अपने शरीर को पूरा घुमा लेगा। यही बात मुहम्मद साहब के भी विषय में थी, कि वह बातचीत करने में किसी मित्र की ओर देखते समय अपने शरीर को पूरा घुमा लेते थे।[5]

इस प्रकार यह सिद्ध होता है, कि बौद्ध ग्रन्थों में जिस मैत्रेय के होने की भविष्यवाणी की गई है, वह अन्तिम ऋषि ही हैं।

---

1. 'According to some of the modern Buddhist scholars the Bo-tree of the Buddha Maitreya is the 'Ironwood tree.'

—Mohammed in the Buddhist scriptures, Page 64.

2. 'वमा अर्सल्नाक इल्ला रहमतल्लिल्आलमीन,

—कुरआन, सूरः 11, आयत 107.

(हे मोहम्मद! हमने तुमको समस्त लोकों के लिए दया बनाकर भेजा)

3. 'In paradise there is a tree (Such) that a rider can not cross its shade even in hundred years.'

—Mohammed in the Buddhist Scriptures, Page 79

4. 'मा जाग़ल् बसरुवमा तग़ा', —कुरआन, 53.17.

(आँख न मुड़ी न बढ़ी।)

5. 'If he turned in conversation towards a friend, he turned not partially, but with his full face, and his whole body.'

—The Life of Mohammat, by Sir William Muir Page 511-512.

प्रकाशक :

ख़ालिद बुक डिपो, कोटा

पवित्र वेद

और

इस्लाम धर्म

कल्कि अवतार कौन हैं?

मक्का या मक्तेश्वर?

हज़रत नूह या मनू?

नराशंस कौन हैं?

पुरूष मेधा या बकरी-ईद?

कुरआन और वेदों में क्या समानता है?

पवित्र वेद
और
इस्लाम धर्म

लेखक : क्यू. एस. ख़ान
B.E (Mech)
(ई.मेलः hydelect@vsnl.com)

Printed by
Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
2158-59, M.P Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phone-011-23289786, 23280786, Fax- 011-23279998
E-mail- farid@ndf.vsnl.net.in
Website:- faridexport.com. / faridbook.com

Mr. Q.S. Khan is also author of following books

1. Law of Success for both the Worlds
2. How to prosper Islamic way
3. Yashachi Gurukilli
   (Marathi Translation of "Law of Success for both the Worlds")
4. Introduction to Hydraulic Presses.
5. Design and Manufacturing of Hydraulic cylinders.
6. Study of Hydraulic Valves, Pumps and Accumulators.
7. Study of Hydraulic Accessories
8. Study of Hydraulic Circuit
9. Study of Hydraulic Seals, Fluid Conductor, and Hydraulic Oil.
10. Essential knowledge required for Design and Manufacturing of Hydraulic Presses.
11. Teachings of Vedas and Quran
12. Hajj. Journey Problems and their easy Solutions.

(This book is translated in Urdu, Hindi, Gujarati, and Bengali languages)

पवित्र वेद और इस्लाम धर्म

ISBN No. 978-93-80778-09-9

प्रकाशक

तनवीर पब्लिकेशन

हायड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी प्रिमाइसेस

ए-13, राम-रहीम उद्योग नगर, बस स्टॉप लेन,

एल.बी.एस. मार्ग, सोनापूर, भांडुप (पश्चिम), मुंबई 400078

फोनः 022-2596 5930

मोबाइलः 932006 4026/ 9842064026

फैक्सः 0091-22-25961682

ई-मेलः hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in

वेब-साइटः www.freeeducation.co.in,

www.tanveerpublication.com

Fifth Edition 2013

कीमतः 25 रु.

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

इस पुस्तक के लिखने का उद्‌देश्य मुस्लिम और हिंदू भाइयों के बीच राजनीतिक पार्टियों के द्वारा जो द्वेष (नफरत) पैदा की जा रही है उसे कम करना है।

इस पुस्तक में मैंने ऐसे विषयों के बारे में जानकारी देने का प्रयत्न किया है जो दोनों धर्मों में समान हैं।

अगर हम किसी दूर देश में जाऐं और यदि हमें पता चले की हमारे देश का कोई व्यक्ति वहाँ मौजूद है तो उस से बिना परिचय के भी एक अपना पन, सहानुभूति या दोस्ती का एहसास होता है। और यह एहसास एक समान (common) देश से होने के कारण होता है।

समान (common) चीज़ें दोस्ती बढ़ाती हैं। इसी लिए मैं ने दोनों धर्मों के समान विषयों (common topics) की जानकारी देने की कोशिश की है। मुझे आशा है कि यह समानताएं दोनों समुदायों के बीच नफ़रत (द्वेष) कम करने और भाई-चारा बढ़ाने का ज़रिया बनेंगे।

में इस विषय में तज्ञ (Specialist) व्यक्ति नहीं हुँ। इस पुस्तक को पढ़णे के बाद अगर इसमें कुछ गलतियां आपको नजर आएं तो कृपा करके मुझे अवश्य सुचित किजीएगा।

मुझे आशा है कि शांतता-प्रेमी लोग इस पुस्तक को पसंद करेंगे।

क्यू. एस. खान
hydelect@vsnl.com

हिन्दू धर्म के ईश्वरीय ग्रंथ

- हिन्दुस्तानी लोग सारी दुनिया में अपनी मेहनत, ईमानदारी, उच्च शिक्षा, और शराफत के लिए जाने जाते हैं। इसलिए अमेरीका के नासा (National aeronautic & Space organisation of America) में ३५ प्रतिशत वैज्ञानिक हिन्दुस्तानी हैं। और यही कारण है कि अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड इत्यादी में नये शहरी के रूप में हिंदुस्तानियों को प्राथमिकता दी जाती हैं।

लेकिन इस महान देश के महान नागरिक धर्म के मामले में सारी दुनिया से बिल्कुल अलग क्यों हैं? हर प्रदेश में या हर मज़हब में एक पैगम्बर और एक धार्मिक ग्रन्थ है। लेकिन हिन्दुस्तानी लोग यह विस्तार से बता नहीं पाते कि उनके पैगम्बर कौन है और उनके ईश्वरी ग्रंथ कौनसे हैं। ऐसा क्यों?

- लेकिन यह सत्य नहीं है। इस महान देश में भी अनेक पैगम्बर आए और उनके पवित्र ग्रंथ भी हैं। लेकिन दुर्भाग्य से उनका धार्मिक ज्ञान आम लोगों तक पहुँचने में बहोत सारी बाधाएं आती रही। इसलिए जैसे-जैसे काल में गुजरते गया आम लोगों का दोनों से (पैगम्बर और ईश्वरी ग्रंथ) संबध टुट गया और वे उनकी पहचान भूल गए।

इस पुस्तक में हम पैगंबर और ईश्वरी ग्रंथों कि जानकारी लेंगे।

- सन् १८०० ई. तक वेद लिखित रूप में न थे। इसे पंडितों ने ज़बानी (Memorise) याद कर रखा था। धार्मिक ज्ञानपर पुरोहित समाज का पुरा नियंत्रण था। इस कारण सिर्फ उन्हींको धार्मिक ज्ञान सिखने का अधिकार था। उनके व्यतिरिक्त समाज के अन्य लोगों को धार्मिक ज्ञान सिखने का अधिकार नहीं था।

भारत में पुरोहित समाज कि संख्या केवल ५ प्रतिशत हैं। लेकिन इन पुरोहित समाज कि स्व-संरक्षण प्रणाली (Social Security System) इतनी जबरदस्त और परिणामकारक थी कि ३००० सालों तक हर धार्मिक बातों पर उनका पुरा नियंत्रण था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि 'पुरोहित समाज' को इससे मजबुत आर्थिक और सामाजिक संरक्षण मिल गया। लेकिन ६५ प्रतिशत आम लोग जो उनके उपर निर्भर थी, वह धार्मिक ज्ञान से वंचित हो गए। और अपने धार्मिक ग्रंथ और पैगम्बरों कि पहचान भुल गए। इस कारण पवित्र ग्रंथ उनको याद नहीं रहे। यह बात तो एक विशाल देश की भारी मात्रा में होनेवाली हानी हैं।

अब जब इस नए युग में 'पुरोहित समाज' आर्थिक रूप से पूजा पाठ पर निर्भर नहीं हैं। तो अब इन्होंने धर्म का सत्य ज्ञान लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

हम हिन्दु धर्म की ईश्वरीय ग्रन्थ को कैसे पहचानें ?

- तीन ग्रन्थों को उनके मानने वाले ईश्वरीय ग्रन्थ स्वीकार करते हैं। वह है; पवित्र कुरान, बाइबल और तौरात। इन तीन ग्रन्थों में ईश्वर व्दारा स्वर्ग-नर्क, प्रलय (कयामत) तथा मरने के बाद के जीवन का एक समान विवरण हैं। और इन सभी ग्रन्थों में ७० प्रतिशत एक समान धार्मिक शिक्षा हैं।

इसी आधार पर यदि हम हिन्दू धर्म के ग्रन्थों का अध्ययन करें, तो ऋग्वेद और अन्य वेदों में भी हमें ईश्वर, स्वर्ग-नर्क, प्रलय (कयामत) तथा मरने के बाद के जीवन का वर्णन भी मिलता है। और भारतीय लोग भी वेदों को आदिज्ञान, आदिग्रंथ, अपुरूषी मानते हैं इसलिए हम ऋग्वेद को ईश्वरी ग्रंथ मान सकते हैं।

उदाहरणतयः

ईश्वर के बारे में ऋग्वेद में है कि, :-

(१) ईश्वर ही पृथ्वी और आकाश का निर्माण कर्ता (मालिक) है। (ऋग्वेद १:१६:७)

(२) हे ईश्वर! तू ही, पहला है और तू ही आखरी है तथा सर्वज्ञानी है। (ऋग्वेद २:३१:१)

(३) हे ईश्वर! तेरा ही प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण है। (ऋग्वेद २:१६:१०)

स्वर्ग-नर्क के बारे में ऋग्वेद में है कि:-

(१) पापियों के लिए अत्यन्त गहरी खाई (नर्क) बनाई गयी है। (ऋग्वेद ४:५:५) आचार्य सयान के अनुसार अत्यन्त गहरी खाई का अर्थ नर्क है।

(२) पाक (शुद्ध) और निष्पाप लोगों के लिए स्वर्ग हैं। शुद्ध होने के बाद जो (नया) शरीर उन्हे प्राप्त होगा उसमे हड्डीया नहीं रहेगी, उनके शरीर को आग नहीं जलाती और ज्ञान प्राप्ती के पश्चात वह प्रकाशमयी दुनीया में प्रवेश करेंगे। स्वर्ग की दुनिया में उनके लिए बहुत आनंद (Pleasure) हैं। (अथर्ववेद ४:३४:२)

(३) तुम्हारे अनुयायी ईश्वर की प्रार्थना उदार हृदय से करेंगे और तुम्हें स्वर्ग में आनंद प्राप्त होगा। (ऋग्वेद १०:६५:१८)

(४) अपनी सत्यनिष्ठा और करूणामय स्वभाव के कारण तुम वह स्थान देखोगे, जो अत्यन्त विस्तृत स्थल है। (ऋग्वेद १:२१:६)। आचार्य सयान के अनुसार अत्यन्त विस्तृत स्थल का अर्थ स्वर्ग है।

मरने के पश्चात के विषय में ऋग्वेद में है कि :-

(१) जैसे शैतान पुराने जमानेसे हैं उसी प्रकार पुर्नजन्म की बात भी पुराने जमाने से कहते आएं है। पुर्नजन्म जैसे गलत श्रद्धा (Wrong belief) रखनेवाले गुन्हगार लोगों पर हावी हो, उनको (मगलुब) (Supress) करो। मृत्यु की देवी उम्र कम कर रही है। (यानी आवागवन पर लोगों का विश्वास प्राचीन काल से है, मगर यह गलत है। इसे रोको और जल्दी करो, जिंदगी का वक्त खत्म होते जा रहा है।)

(मासिक पत्रिका कांती ८-७-१६६६, ऋग्वेद१:६२:१०)

(२) वह कयामत को भुलाकर और ज्ञान और बुद्धी को हकारात से ठुकराकर (Neglect as useless thing) हमारे तय किए हुए हद (Boundry) को फलांग रहें है। (ऋग्वेद १-४-३) (यानी कयामत को और मरने के बाद के जीवन को गलत कहना ईश्वर के कानून को तोड़ने के बराबर है।)

(३) अपने दिल के लिए मीठी जबान हासिल करके लोग अपने शक को गिनते है। (अर्थात लोग ईश्वर का ज्ञान पाकर अपने गुनाहों को गिनते है या पाप न हो इससे बचने कि कोशिश करते है) देवताओं का इन्कार करनेवाले लोगों से कहो, तुम्हें अमर जीवन मिलना यकीनी है। (ऋग्वेद १-४४-६)

तो इस तरह साबित हुआ कि वेदों में भी एक ईश्वर, स्वर्ग, नर्क, मरने के बाद के जीवन का वर्णन है।

- हिन्दू धर्म के माननेवाले भी वेदों को आदि ज्ञान, श्रुतिज्ञान अथवा अपुरूषि कहते हैं। अपुरूषि यानी जिसे किसी पुरूष ने नहीं लिखा है। इसलिए हम वेदों को ईश्वर व्दारा अवतरित ग्रन्थ कह सकते हैं।

लेकिन वेदों में ऐसे भी कुछ से श्लोक हैं, जो दुसरे ईश्वरीय ग्रन्थों में नहीं है और ना ही ऐसे श्लोक ईश्वर कि महानता के बराबर है। इसलिए ऐसे श्लोक को हम ईश्वरीय नहीं कह सकते हैं। उदाहरण के तौर पर ऋग्वेद का एक श्लोक है कि 'एक शुद्र को अच्छी सलाह नहीं देनी चाहिए।' (ऋग्वेद १४:५३:३)

इसलिए सामान्यतः(आम तौर पर) हम वेदों को हिन्दू धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ कह सकते हैं, लेकिन इन ग्रन्थों में भी खास करके उन श्लोको को ही हम ईश्वर व्दारा प्रगट किए गए श्लोक कहेंगे, जिसमें एक ईश्वर, स्वर्ग नर्क, मरने के बाद के जीवन, प्रलय (कयामत) और सत्कर्म करने का वर्णन है।

ऐसे श्लोक जो ईश्वरीय नहीं लगते हैं, उन श्लोकों के बारे में विद्वानों का मत है, कि जब स्मरण शक्ति से वेदों को ग्रन्थ की शक्ल में लिखा जा रहा था, तो उस समय पुरोहितों के भुल (Confusion) के कारण वेदों के असली श्लोक के साथ पुरोहितों के व्यक्तिगत विचार और नियम भी सम्मिलित हो गए।

(Ref. Griffth in his book "Hymns of Rig Ved" Volume-1)

पवित्र वेद एक ज्ञान का सागर है। इस में हजारो ऐसे उपदेश हैं जिस को समझने और अमल करने से जीवन बदल सकता है। आइये, इस महान सागर से कुछ मोती हम भी चुन लें।

१. (उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम)

यह मेरा है, यह तेरा है ऐसी सोच तुच्छ (नीच) लोग रखते है, 'यह दुनिया मेरा परिवार है' ऐसी सोच केवल उच्च्य विचारों से प्रेरित लोग ही करते हैं।

२. सत्य मार्ग बिल्कुल आसान है। (ऋग्वेद १३/३/८)

३. हर सांस जुआरी को श्राप देती है। उसकी पत्नी उसका त्याग करती है। और कोई भी जुआरी को पैसा नहीं देता। (ऋग्वेद १०/३४/३)

४. ऐ जुआंरियों! खेती करो और जुआं खेलना बंद करो और खेत से जो भी आप कमाऐंगे उस पर संतोष करो। (ऋग्वेद १०/३४/१३)

५. दारू पीने वाले शराबी स्वयं अपने पर नियंत्रण खो देते हैं। वे ऐसे कार्य करते हैं जिससे हे ईश्वर! आपको क्रोध आता है इसलिए आप भी ऐसे लोगों की सहायता नहीं करते। (ऋग्वेद ०८/२१/१४)

६. हे ईश्वर! जो लोग ज्यादा सूद प्राप्त करने के उद्‌देश्य से दुसरों को कर्ज़ देते हैं, उन कर्ज़ देने वालों की सारी संपत्ती आप जप्त कर लेते हैं।

(ऋग्वेद ०३/५३/१४)

७. (ऐ मनुष्यों) तुम अपने से बड़ों का आदर करों और अपने मन में अच्छे विचार उत्पन्न करो। आपस में मतभेद मत करो, दोस्ती करो और एक साथ रहो। अच्छे कर्म करते हुए मेरे पास आओ, मैं तुम में समझ और अच्छे विचार पैदा करूंगा। (ऋग्वेद १०/१६१/३)

८. ईश्वर ने तुम्हें स्त्री बनाया है, इसलिए ध्यान रहे कि तुम्हारी नज़र हमेशा नीची रहें। पांव नज़दीक-नज़दीक रखो और ऐसे कपड़े पहनो जिस से कोई तुम्हारा शरीर ना देख पाए।

(ऋग्वेद ०८/३३/१९)

९. बेटे को अपने पिता का सहयोगी होना चाहिए और माँ का आज्ञाकारी होना चाहिए।

(अथर्ववेद ०३/३०/०२)

१०. दान करनेवाले दानी लोग अमर हो जाते हैं। उन्हें ना किसी चीज़ का ड़र होता है ना दुःख। विनाश से उनको संरक्षण मिल जाएगा। दान करने से ये दानी लोग दुनिया में सफल होते हैं और मृत्यु के पश्चात स्वर्ग प्राप्ति करते हैं।

(अथर्ववेद १०/१९७/०८)

११. ऐ दोस्तों! एक ईश्वर के सिवा अन्य किसी की भी भक्ति न करें, तो आप की हिंसा से रक्षा होगी। (ऋग्वेद ०८/०१/०१)

१२. जो अपनी से मेहनत कमाया हुआ खाना अकेले ही खाते हैं (दुसरों को दान नहीं करते) तब वे गलत मार्ग से कमाया हुआ खाना खाने जैसा ही है। (ऋग्वेद १०/११७/०६)

१३. हे ईश्वर! आप सत्कर्म आचरण करनेवालों को अच्छा उपहार देते है और यही आपकी विषेशता है। (ऋग्वेद ०१/०१/०६)

१४. हे ईश्वर! यह दुनिया आपकी महानता के कारण थर थर कांपती हैं। गलत कर्म करनेवाले मनुष्य तेरे ही प्रकोप के कारण शिक्षा प्राप्त करते है। सदाचारी मनुष्य की आपके आशीर्वाद से प्रशंसा होती है। (अथर्ववेद ०१/८०/११)

१५. ऋग्वेद कहता है, "ऐ माननेवालो, ईश्वर के अलावा किसी की भी भक्ति मत करो।"

(ऋग्वेद ०८/०१/०१)

१६. अथर्ववेद कहता है, "ईश्वर एक ही है।"

(अथर्ववेद१०/६/२६)

१७. "सारे मानवप्राणी मनु की संतान हैं।"

(ऋग्वेद ०१/४५/११)

१८. "मनुष्य को सत्य के मार्ग पर नम्रतापूर्वक चलना चाहिए।" (ऋग्वेद १०/३१/०२)

१९. परिश्रम के बिना देवताओं को भी ईश्वर का आशीर्वाद नहीं मिलता। (ऋग्वेद ०४/३३/११)

२०. ईश्वर मानवजात को सुमधुर विचार, सहनशक्ति और द्वेषरहित भावना से पुरस्कृत करेंगे। जैसे गाय अपने बछड़े पर प्रेम करती है वैसा ही प्यार एक दूसरे पर करने की सूचना ईश्वर देता है। (अथर्ववेद ०३/३०/०१)

२१. पत्नी को हमेशा पति से मधुर वाणी में बात करनी चाहिए। (अथर्ववेद०३/३०/०२)

इस पुस्तक में हम पवित्र वेदों के ८० ऐसे श्लोक का अध्ययन करेंगे, जो बिल्कुल कुरआन के श्लोक जैसे है, या समान हैं।

हिन्दू धर्म के पैगम्बर कौन हैं?

हजरत आदम (अलैहिस्सलाम) के विषय में :

भविष्य-पुराण में कहा गया है कि आदम और हव्वा को विष्णु ने गीली मिट्टी से पैदा किया। प्रदान नगर (जन्नत) के पुर्व हिस्से में, ईश्वर द्वारा बनाया गया ४ स्केवर कौस का एक बहुत बड़ा जगंल था।(कौस किलोमिटर से बड़ा होता है) अपनी पत्नी (हव्वा) को देखने की बेताबी से आदम गुनाहवाले वृक्ष के नीचे गए। तभी सांप की शक्ल बनाकर वहाँ कली (शैतान) प्रकट हुआ। उस चालाक दुश्मन के ज़रिए आदम और हव्वावती ठग लिए गए और उस विषवृक्ष के फल को आदम ने खा लिया और उन्होंने विष्णु के हुक्म को तोड़ डाला परिणाम स्वरूप उनको पृथ्वीपर भेज दिया गया। उन दोनों को बहुत सी औलादें हुई। आदम की उम्र ६३० साल थी। (भविष्य पुराण)

यही बात कुरआन में भी लिखी है और बाइबिल में भी। इस लिए हम यह कह सकते हैं, कि हज़रत आदम हिन्दू धर्म के भी पैगम्बर हैं।

हजरत नूह (मनु) के विषय में :

मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण में है, कि मनु के काल (युग) में एक बहुत बड़ा बाढ़ (Flood) आया था। जिस में केवल मनु और एक ईश्वर को मानने वाले लोगों को छोड़कर सभी लोग इस बाढ़ में डूबकर मर गए थे।

नूह (मनु) ने अपने हाथों से एक नाव बनायी थी और उसमें वह खुद सवार हुए और एक-ईश्वर को मानने वालों को सवार कर लिया और हर जात के प्राणियों के दो-दो जोड़ों को सवार किया। यही लोग जिंदा बचे और सारी दुनिया इस सैलाब में डूब गयी।

यही बात कुरआन में भी लिखी है (पवित्र कुरआन ११-२५-४८) यही बात बायबल में भी लिखी है (जेनिसिस ६-८)

इसलिए हम कह सकते हैं कि कुरआन में उसी पैगम्बर(मनु) को हज़रत 'नूह' कहा गया है। बायबल में जिसको Prophet Noah कहा गया है और भविष्य पुराण में जिसे नूह कहा गया है, वह एक ही इन्सान हैं और इन्हीं को हिन्दू धर्म की अन्य ग्रन्थों में 'मनु' के नाम से जाना जाता है।

A.J.A. Dubois ने अपनी किताब (Hindu Manners, customs & ceremonies) में कहा है, कि जैसे मुसलमान हज़रत मुहम्मद (स.अ.) के अनुयायी (मानने वाले) हैं और जैसे, इसाई हज़रत ईसा के अनुयायी हैं, वैसे ही हिन्दू धर्म के माननेवाले हज़रत नूह या मनु के अनुयायी हैं।

अपनी बात को साबित करने के लिए वो कहते हैं, हर धर्म के लोग जिस पैगम्बर को मानते हैं वह उनके बनाये हुए नियम को भी मानते हैं। इसाई बाइबल को मानते हैं, मुसलमान कुरआन और हदीस शरीफ को मानते हैं। (हदीस में हज़रत मुहम्मद (स.अ.) के आदेश और उनके जीवन गुज़ारने का तरीका बयान किया गया है।) इसी तरह हिन्दु धर्म में 'मनु स्मृति' ही धार्मिक कानून की ग्रन्थ है और यह मनु द्वारा लिखीत है।

और दूसरा सबूत यह है कि हर धर्म के अनुयायी जिस पैगम्बर को मानते हैं, वह महत्वपूर्ण घटनाओं को उन पैगम्बरों के समय से गिनते हैं, जैसे कि इसाई अपना साल हज़रत ईसा (स.अ.) की जन्मतिथि (पैदाईश) से गिनते हैं। मुसलमान अपना साल हज़रत मुहम्मद (स.अ.) के मक्का से मदीना शहर में हिजरत (प्रवासन, Migration) के समय से गिनते है। इसी तरह हिन्दू धर्म में मनु के समय आये हुए बाढ़ का बहुत महत्व है। वह अपने महत्वपूर्ण घटनाओं को इसी

बाढ़ के बाद से गिनते हैं। उदाहरण के रूप में वह कहते हैं, कि 'कलयुग' की शुरूआ़त इसी बाढ़ के समाप्त हो जाने के बाद से शुरू हुई।

हजरत इब्राहीम (अ.स.) के विषय में :

- "पुरूष मेधा और बकरा ईद" इस पाठ में हम पढेंगे कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.), हज़रत इस्माईल (अ.स.) और हज़रत इसहाक (अ.स.) के बारे में अथर्ववेद में लिखा हुआ है। इस लिए इन तीनों को भी हिन्दू धर्म के मानने वाले अपना पैगम्बर कह सकते हैं।

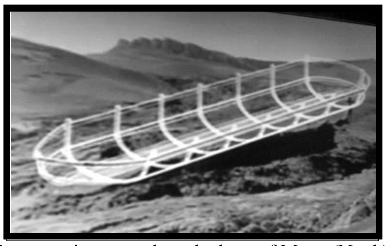
एक स्पष्टीकरण: -

इस्लाम धर्म में पैगंबरोंको 'नबी' कहा जाता हैं उसी प्रकार हिंदु धर्म के ईश्वरी ग्रंथों में पैगंबरोंको 'मनु' कहा जाता हैं। हिंदु धर्म के ईश्वरी ग्रंथों में १४ व्यक्तियों को 'मनु' कहा गया है। हजरत आदम को भी मनु कहा हैं। (श्लोक १-४५-११) हज़रत आदम प्रथम मनु थे उसके बाद बाढ़ के काल के मनु सातवे मनु थे। दुनीया के सभी धर्मां के ईश्वरी ग्रंथों में एकही बाढ़ का वर्णन है और उस बाढ़ में एकही नांव का वर्णन है जिसमें एक ईश्वर को माननेवाले (अनुयायी) अपने एक पैगम्बर के साथ बच गए थे।

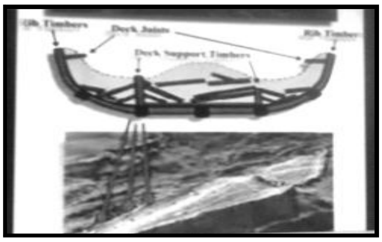
तो इस महान भारत देश के महान लोग भी दुनिया के अन्य लोगों से अलग नहीं हैं, अन्य धर्मों की तरह इस धर्म में भी पैगम्बर हैं और उनकी भी धार्मिक ईश्वरीय ग्रन्थ हैं। मगर यह भी सत्य है, यह लोग इसे स्वयं भी नहीं पहचानते और केवल देवमलाई कथाओं में मग्न हैं।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

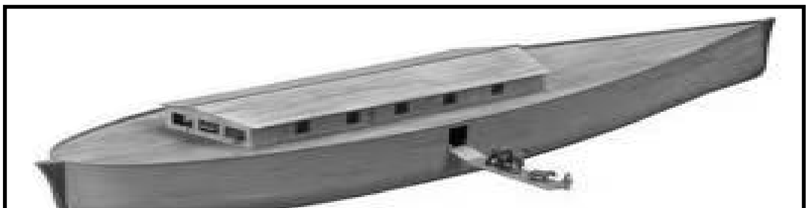
"Hindu manners, customs and ceremonies"
Written by: Abbe. J.A. Dubois
Publisher: Low Price Publications
B-2, Wardhaman Palace,
Nimri Commercial Centre, Ashok Vihar, Phase-IV,
Delhi - 110052



Expert trying to analyse the boat of Manu (Noah)



Analysing the boat impression



Analysing the boat.

पुरूष-मेधा या बकरी-ईद

एक ईश्वर को लोग अनेक नामों से याद करते हैं जैसे; अल्लाह, मालिक, रहीम, रहमान, इत्यादि। वास्तव में ईश्वर के कुल ६६ नाम हैं। इस में से कुछ नाम उसके विशेष गुणों के लिए हैं। जैसे; 'ख़ालिक़' अर्थात पैदा करने वाला (ईश्वर)। क्योंकि ईश्वर के सिवाय और कोई दुसरा पैदा करने वाला नहीं है। 'मालिक' यानी ईश्वर के सिवाय इस संसार का और कोई मालिक नहीं है।

लेकिन ईश्वर के कुछ ऐसे नाम भी हैं, जो उसकी स्वभाव (Features) के अनुसार हैं जैसे; 'रहीम' अर्थात अत्याधिक दया करने वाला। 'ग़फ़ूर' अर्थात क्षमा करने वाला।

कभी कभी ईश्वर अपने उन नामों से जो उसके गुणों के अनुसार है, उन पैगंबरोंको भी याद करता है, जिनमें वह गुण है। जैसा कि पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.अ.) को 'रहीम' और 'ग़फ़ूर' के नाम से याद किया है। (पवित्र कुरान १०:१२८) क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत ही दयालू और क्षमा करनेवाले थे।

इसी प्रकार हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में ईश्वर ने बहुत से पैगंबरों को अपने ही नामों से याद किया है, उदाहरणतः हरिवंश पुराण में उल्लेख है कि ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो भाग किए। एक भाग पुरूष का तथा दूसरा भाग स्त्री का बन गया।

यही बात हदिस और बाइबल में भी है, कि हज़रत आदम (अ.स.) के शरीर के बायीं ओर (Left Side) से हज़रत हव्वा को पैदा किया गया।

तो हरिवंश पुराण में जिसे ब्रम्हा कहा गया है, वह वास्तव में ईश्वर स्वयं नहीं, हज़रत आदम (अ.स.) हैं।

इ सी प्रकार अथर्ववेद में हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को ब्रह्मा कहा गया है और लिखा है कि ब्रम्हा (अ.स.) ने अपने पुत्र अथर्वा की बलि (क़ुर्बानी) दी। यही बात पवित्र कुरान में है, कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अ.स.) की क़ुर्बानी दी थी।(पवित्र कुरान ३७:१०५) और इसी प्रकार बाइबल में भी हज़रत इब्राहीम (अ.स.) के व्दारा किए गए कुर्बानी का वर्णन है (Genesis-22)। तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा कहा गया है वह स्वयं ईश्वर नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम(अ.स.) हैं।

आपको यह पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ होगा इसलिए हम इस प्रसंग पर कुछ और वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को सभी धर्म के लोग हज़रत आदम और हज़रत नूह के पश्चात बहुत से पैगंबरों के पिता मानते हैं और बहुत आदर करते हैं।

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) एक मूर्तिकार के पुत्र थे। बचपन से ही वह एक ईश्वर को मानते थे। एक बार जब शहर के सारे लोग शहर से बाहर मेले में गये हुए थे, तो उस समय हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने सभी देवी, देवताओं की मूर्तियों को तोड़ डाला। इस घटना से क्रोधित होकर राजा ने उन्हें कठोर दण्ड देने का निश्चय किया, तथा एक विशालकाय अग्निकुंड में फेंकने की आज्ञा दी लेकिन ईश्वर ने अपने इस सत्यवान पैगंबर को अग्नि में जलने से बचा लिया और अग्नि उनका कुछ न बिगाड़ सकी।

इस घटना के पश्चात वह फिलिस्तीन शहर में जाकर बस गये। और एक ईश्वर को मानने और उसके बनाये हुए नियम पर चलने का उपदेश लोगों को देने लगे। ८० वर्ष की आयु में, ईश्वर द्वारा उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई। जिसका नाम उन्होंने इस्माईल रखा।

जब हज़रत इस्माईल (अ.स.) बहुत छोटे थे, तब

ईश्वर के आदेश के अनुसार हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज़रत इस्माईल (अ.स.) और अपनी पत्नी हज़रत हाजरा (अ.स.) को मक्का शहर में ले जाकर छोड़ दिया। जब हज़रत इस्माईल (अ.स.) कुछ बड़े हुए, तो आप (हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने एक स्वप्न देखा कि आप अपने सबसे प्रिय चीज़ की कुर्बानी ईश्वर की राह में कर रहे हैं। पैगम्बर का स्वप्न कभी झूठा नहीं होता है, इसलिए वह समझ गये कि उन्हें अपनी सबसे प्रिय चीज़ की कुर्बानी करनी ही है और उन की सब से प्रिय चीज़ उन का पुत्र है।

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने स्वप्न के बारे में हज़रत इस्माईल को कह सुनाया और उनकी राय पूछी। हज़रत इस्माईल ने अपने पिता को उत्तर दिया, ‘‘जो आज्ञा, ईश्वर ने आपको दि है, उसे अवश्य करिये और आप मुझे धैर्य (सब्र) रखने वालों में पाऐंगे। (पवित्र कुरआन ३७:१०२)

जब हज़रत इब्राहीम (अ.स.) अपने साथ हज़रत इस्माईल (अ.स.) को मक्का शहर के बाहर मिना की पहाड़ी पर ले कर चले, तो शैतान ने तीन बार उन्हें भटकाने (बहकाने) की भरपूर कोशिश की, तब तीनों बार हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने उस शैतान को पत्थर मार कर भगा दिया। मिना पहुंचकर हजरत इस्माइल ने कहा की आप मेरे हाथ-पैर बांध दो। वरना मेरे तडपने से आप को मुश्किल होगी। फिर उन्होंने अपने प्रिय पुत्र हजरत इस्माइल (अ.स) के हाथ-पैर को बांध दिया। फिर उन्होंने अपनी आँख पर पट्टी बांध दी क्योंकी वह चाहते थे के पुत्र मोह से उनका हाथ न कांपे। फिर उन्होंने हज़रत इस्माईल के गले पर छुरी चलाने की भरपूर कोशिश की। किन्तु ईश्वर को हज़रत इब्राहीम (अ.स.) और हज़रत इस्माईल की केवल परीक्षा लेनी थी, जान नहीं लेनी थी। इसलीए ईश्वर के आदेश से हज़रत जिब्रील (अ.स.) ने स्वर्ग से एक दुम्बा (मेंढ़ा) लाकर हज़रत इस्माईल की जगह पर लेटा दिया और हज़रत इस्माईल(अ.स.) के बदले दुम्बे की कुर्बानी हो गयी।

इस पूरे घटना क्रम को अथर्ववेद में ‘पुरूष मेधा’ के नाम से याद किया जाता हैं। इस छोटी सी पुस्तक मैं हम सारे श्लोक नहीं लिख सकते है उसमें से एक श्लोक हम यहाँ लिखते है। इस घटना में हजरत इस्माईल (अ.स.) (अथर्व) ने हजरत इब्राहीम(अ.स.) (ब्रम्हा) की जो बात मान ली थी। वह श्लोक इस प्रकार है।

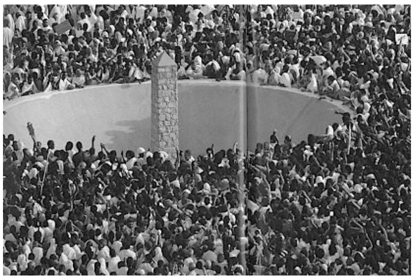
> मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हदयं च यत्।
> मस्तिश्कादूर्ध्व पैरयत् पवमानोधि शीर्शतः
> (अथर्ववेद १०:२:२६)

अर्थात अथर्वा ने अपने पिता ब्रह्मा की बात दिल और जान से मान लिया और पवित्रता उनके चेहरे पर झलक रही है।

तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा के नाम से याद किया गया है वह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हैं। अथर्वा के नाम से जिसे याद किया गया है वह हज़रत इस्माईल(अ.स.) हैं। अंगिरा के नाम से जिसे याद किया गया है वह हज़रत इस्हाक़ (अ.स.) हैं। इसलिए जैसे यह तीनों पैगंम्बर ईसाई, यहूदी और मुसलमानों के पैगम्बर हैं, उसी तरह यह तीनों पैगंम्बर हिंदू धर्म के पैगंम्बर भी हुए। “पुरूष मेधा” अर्थात मनुष्य की कुर्बानी है। इसी को आज मुस्लिम समाज ‘बकरा ईद’ के नाम से मनाते हैं।

जिस जगह यह घटना घटित हुई वह स्थान मिना (मक्का शहर के नज़दीक) है, जहाँ हाजी हज के लिए जाते हैं और वहॉ पर तीन दिन खैमे (Tent) में रहते हैं और ईश्वर कि प्रार्थना करते है। जिस जगह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने शैतान को पत्थर मारा था, उसी स्थान पर हाजी आज भी कंकरी (छोटे पत्थर) मारते हैं।

(अधिक जानकारी के लिए A.H. Vidyarthi की पुस्तक Muhammad in Hindu Scripture (Adam Publications) का अध्ययन करें ।)



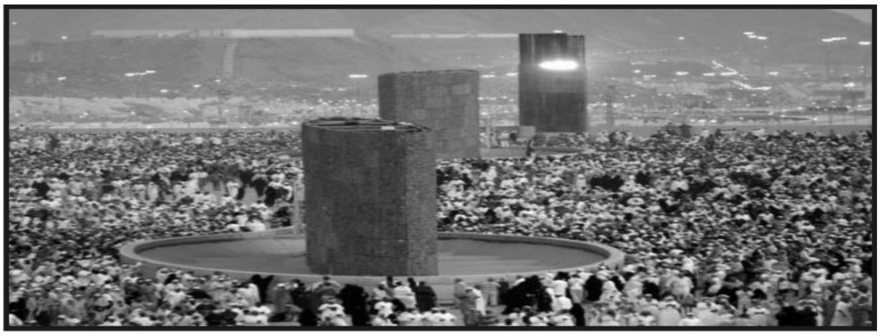
हज यात्री इस विशेष खंभे को पत्थर मारते हुए (इसी जगह शैतान ने हजरत इब्राहीम (अ.स.) को गुमराह करने की कोशिश की थी।)



मीना जिसका वर्णन अथर्ववेद में है और इसी जगह इब्राहीम (अ.स.) ने इस्माईल अथवा अथर्व की कुर्बानी देने की कोशिश की थी।

इसी जगह हज यात्री तीन दिन तंबु में रहकर प्रार्थना करते हैं।





▼▼▼▼▼▼▼

मक्का या मक्तेश्वर

सनातन धर्म (हिंदू धर्म) की धार्मिक किताबों में मक्का शहर और काबा शरीफ को कई नामों से याद किया गया है। इन में से कुछ इस तरह हैं:

१. इलास्पद:

एल, एलिया, इला, इलाया, अल्लाह आदि यह सब नाम अलग-अलग धर्मों में ईश्वर के लिए बोले जाते है। पद यानी जगह (place)। इलास्पद यानी ईश्वर की जगह.

२. इलायास्पद:

इसका अर्थ भी ईश्वर की जगह है। पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या ने वेदों के अपने हिंदी अनुवाद में इस का अनुवाद 'पृथ्वी का पवित्र स्थान' किया है।

३. नाभा प्रथिव्या:

नाभि का अर्थ है नाफ (Centre/Naval) और प्रथिव्या यानी धरती। नाभा प्रथिव्या यानी धरती की नाफ या धरती का केंद्र या Centre of earth.

- इलायास्पद पढेवयं नाभा प्रथिव्या अधि ।।

(ऋग्वेद ३-२९-४)

इस का अर्थ है कि धरती का पवित्र स्थान यानी ईश्वर का घर, पृथ्वी के केंद्र पर है।

४. नाभि कमल:

परम पुराण में कहा गया है कि नाभि कमल वह तीर्थ स्थान है जहाँ से सृष्टी का निर्माण हुआ।

हरी वंश पुराण (पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या द्वारा अनुवादित, पृष्ठ ४९९-५०१, भाग-२) में भी यही बात कही गई है और यही बात 'हदीस शरीफ' में भी कही गयी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि आकाश और पृथ्वी के निमार्ण के ज़माने में पृथ्वीपर चारों तरफ पानीही-पानी था तो उस पानी की सतह (surface) से सब से पहले काबा का स्थान प्रकट हुआ, फिर धरती उस के नीचे से चारों तरफ फैलती गई। (मअ़रिफते काबा, पृष्ठ-५)

५. आदि पुष्कर तीर्थ:

पदम पुराण में है कि धरती का सब से प्राचीन, सब से पवित्र और सब से लाभदायक तीर्थ स्थान आदि पुष्कर तीर्थ है। पदम पुराण ने इस पवित्र स्थान की यात्रा का महत्व इन शब्दों में उल्लेख किया है।

- जो दिल से आदि पुष्कर तीर्थ जा कर सेवा की चाह करता है उस के तमाम पाप धुल जाते हैं।
- जो आदि पुष्कर तीर्थ की यात्रा करता है वह अनंत पुण्य (Too Much Eternal Blessings) का हक़दार होता है।
- सब तीर्थों में आदि पुष्कर ही प्राचीन तीर्थ स्थान है। आदि पुष्कर तीर्थ जा कर स्नान करने से मुक्ति मिलती है।

(ज़म ज़म का कुआँ काबा शरीफ से ५० फुट की दूरी पर है और रोज़ाना लाखों लीटर पानी सऊदी हुकूमत इस से निकालती है । जिसे हाजी पीते हैं और देश-वापसी के समय अपने साथ ले जाते हैं।)

६. दारूकाबन:

ऋग्वेद में लिखा है कि, "ऐ ईश्वर की प्रार्थना करने वालो! दूर देश में समुद्र-तट के करीब जो दारूकाबन है वह इन्सान का बनाया हुआ नहीं हैं।

इस में ईश्वर की प्रार्थना कर के उस की कृपा से स्वर्ग में दाखिल हो जाओ।"(ऋग्वेद १०-१५५-३)

(पवित्र काबा को पहली बार फ़रिश्तों ने बनाया था। मक्का शहर भारत देश से दूर और समुद्र तट के पास है।)

७. मक्तेश्वर:

Sir M. Monier Willium की संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी में मक्तेश्वर का अर्थ है The city of Makkah/Yagya यानी मक्का शहर और कुर्बानी की जगह।

मक्का में ईश्वर का घर तो है ही, इस जगह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज़रत इस्माईल (अ.स.) की कुर्बानी भी दी थी, जिसे अथर्ववेद में 'पुरूष मेधा' के नाम से लिखा गया है और हर साल हज के दिन लाखों जानवरों की कुर्बानी भी दी जाती है।

- अब तक हम ने अलग अलग ग्रंथों में मक्का शहर और पवित्र काबा को किस नाम से याद किया गया है, इस का अध्ययन किया। अब अथर्ववेद में काबा शरीफ के बारे में क्या लिखा है इस का अध्ययन करते हैं।

अथर्ववेद में काबा शरीफ की प्रशंसा और वर्णन इस प्रकार है।

- ऊर्ध्वो नु सृष्टा ३ स्तिर्यंङः नु सृष्टा ३ः सर्वादिशः पुरूष आ वभूवाँ३।
पूरं यो ब्रह्मणों वेद यस्याः पुरूष उच्यते ।। (अथर्वेद १०:२:२८)

अर्थातः चाहे उस की दीवारें ऊंची और सीधी हों (या ना हों), मगर ईश्वर उस की हर दिशा में नज़र आता है। जो ईश्वर की प्रार्थना करते हैं वह यह जानते हैं।

काबा शरीफ Cubical नज़र आता है। मगर यह perfect cubical नही हैं। इस के हर दिवार का size अलग अलग है। मगर यहाँ ईश्वर की ऐसी कृपा है की जो इसे देखता है वह बस देखते रह जाता है। और उसे इसको देखने में आनंद मिलता है और लोगो का इस के चारों तरफ परिक्रमा करने का मन होता है और उस में भी वह आनंद महसूस करते हैं।

- यो वै तां ब्रह्मणों वेदामृतेनावृतां पुरम।
तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राण प्रजां ददुः
(अथर्वेद १०:२:२६)

अर्थातः जो इस घर को पहचानता है (और इस के पास प्रार्थना करता है) उस पर ईश्वर की कृपा होती है, और हज़रत इब्राहीम (अ.स.) (ब्रम्हा) की दुआ उसके साथ रहती है। उसे ईश्वर ज्ञान, सम्मती, खुश्हाली और संतान देते है।

- अष्टाचक्रा नवव्दारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिररायः कोशः स्वर्गो ज्योतिषवृतः
(अथर्वेद १०:२:३१)

अर्थात फ़रिश्तों के रहने की इस जगह के चारों तरफ़ आठ सर्कल (Circle) हैं और नौ दरवाज़े हैं, इसे कोई विजय नहीं कर सकता। इस में अमर जीवन हैं और दिव्य ज्योती इस से हर तरफ़ फैलती रहती है।

श्लोक में जिसे सर्कल कहा हैं वह वास्तव में पहाड़ है। काबा शरीफ के चारों तरफ आठ पहाड़ हैं। उन के नाम इस तरह हैंः

(१) जबले खलीज, (२) जबले क़ीक़ान, (३) जबले हिंदी, (४) जबले लाला, (५) जबले कादा, (६)जबले अबू-हदीदा, (७) जबले अबी-काबिस, (८) जबले उमर

नोटः- अरबी में 'जबले' का अर्थ पहाड़ है।

काबा शरीफ के चारों तरफ जो इमारत है उस में नौ दरवाज़े थे। उन के नाम इस तरह हैः

(१) बाबे इब्राहीम , (२) बाबे अल-विदा, (३) बाबे सफा, (४) बाबे अली, (५) बाबे अब्बास, (६) बाबे नबी, (७) बाबे सलाम, (८) बाबे ज़ियाद,

(६) बाबे हरम

नोटः- अरबी में 'बाबे' का अर्थ दरवाज़ा है।

काबा शरीफ को विजय नहीं किया जा सकता। एक बार ५३० A.D. में यमन के राजा अब्राहा ने हाथियों का लश्कर ले कर मक्का पर चढ़ाई कर दिया था, ताकि वह काबा शरीफ को ढा दे। जब वह मक्का शहर के क़रीब पहुँचा तो अबाबील नाम की बहुत सी छोटी चिडीयाऐं अपनी चोंच में कंकरी (small stones) ले जा कर उन सैन्निकों पर फेंकने लगी। और कंकरी लगते ही सैन्निक अपने हाथियों समेत भूसा की तरह सड़-गल गये। इस तरह पूरी सेना का विनाश हो गया। इसका पूरा वर्णन आप कुरआन शरीफ़ के 'सूरह फ़ील १०५' में पढ़ सकते हैं। इस लिए इस शहर को विजय करना असम्भव है।

- तस्मिन हिररायये कोशे त्र यरे त्रिप्रतिष्ठते।

  तस्मिन यद यक्षमात्मन्वत तद वै ब्रह्मविदो विदुः

  (अथर्वेद १०:२:३२)

अर्थातः प्रार्थना के लायक उस ईश्वर के घर में तीन स्तंभ (Column) और तीन बीम (Beam) हैं और यह घर अमर जीवन का केंद्र है। ईश्वर की प्रार्थना करने वाले इस बात को जानते हैं।



s w aaba

ऊपर का चित्र काबा शरीफ़ के अंदर का है। इस में आप तीन स्तंभ और तीन बीम (Beam) देख सकते हैं। (इंटरनेट पर भी यह चित्र खोजा और देखा जा सकता है।)



(www.youtube.com पर काबा शरीफ के अन्दर का दृश्य, इसमें तीन स्तंभ (Column) साफ नज़र आते है।)

- प्रभ्राजमानां हरिरीं यशसा संपरीवृताम।

  पुरं हिररायर्यी ब्रह्मा विवेशापराजिताम

  (अथर्वेद १०:२:३३)

अर्थात ब्रह्मा (हज़रत इब्राहीम अ.स.) इस जगह रहे। यहाँ ईश्वर की दिव्य ज्योति (नूर) बरस्ता है। यहाँ की प्रार्थना लागों को अमर बना देती है।

मक्का शहर या काबा शरीफ धरती का केंद्र (Naval of Earth) **कैसे है?**

- इलायास्तवा वयं नाभा प्रार्थव्या आधि।

  (ऋग्वेद ३-२६-४)

ऋग्वेद में कहा गया है कि, ईश्वर का घर धरती के नाभ (केन्द्र) पर है। इसलिए हम इस बात का पता करते है कि धरती का केन्द्र कहा है और इस समय उस केन्द्र पर क्या है।

Equator o° Latitude है। यानी Horizontal Plane या Direction में यह पृथ्वी के मध्य में है।

मगर धरती की वह जगह जहाँ मनुष्य बसते हैं वह Equator से 80° Latitude उत्तर और 40° दक्षिण के बिच में हैं। यानी Equator धरती के मध्य से तो गुजरता है। मगर धरती की वह जगह जहाँ इन्सान बसते है उस मध्य से नही गुज़रता है। अगर हमें बसी हुई धरती के मध्य स्थान से गुज़रना है, जहाँ इन्सान बसते है, तो हमें अंदाज से 20°Latitude उत्तर की तरफ हटना पड़ेगा।

इसी तरह ०° Longitude ग्रीन वीच (एक शहर) से गुज़रता है। मगर यहाँ भी इन्सानों द्वारा बसी हुई धरती के Vertical direction में मध्य से नही गुज़रता। अगर हमें Vertical direction में इन्सानों से बसी हुई धरती के मध्य से गुजरना है तो अंदाज से 40 पूरब की तरफ हटना होगा।

यानी वह धरती जिस पर इन्सान बसते है उस का केन्द्र अंदाज से 20° Latitude and 40° Longitude पर है। अब हम अगर धरती के नक्शे में इस जगह पर कौन सा शहर बसा है इस की तलाश करें तो इस मकाम पर हम मक्का शहर को पाते है।

मक्का शहर 21°Latitude and 39° Longitude पर है।

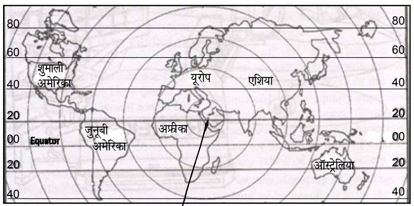
ऋग्वेद में है की धरती के केन्द्र पर ईश्वर का घर है। तो मक्का शहर ही धरती के केन्द्र पर है, और काबा शरीफ ही ईश्वर का घर है।

ऋग्वेद में यह भी लिखा है,

'ऐ ईश्वर कि प्रार्थना करनेवाले लोगों! दूर देशो में समुद्र किनारे द्वारकाबन है जिसका निर्माण किसी मनुष्य ने नहीं किया। वहाँ प्रार्थना करके ईश्वर के आशीर्वाद से स्वर्ग में दाखील हो जाओ। (ऋग्वेद १०-१५५-३)

(इस श्लोक में 'काबा' को दारूकाबन कहा गया है। और काबा शहर समुद्र किनारे से अंदाजन ४० कि.मी. दुरी पर है।)

तो अगर हम स्वर्ग में जाना चाहते है, तो ईश्वर के इस शहर और घर जाकर जरूर प्रार्थना करनी चाहिए।



मक्का (धरती का केंद्र)

एक गलत विश्वास: -

'क्या मुसलमान काबा शरीफ को पूजते हैं'?

'नहीं,! मुसलमान काबा शरीफ को नहीं पूजते।

काबा शरीफ एक पवित्र घर की तरह है। जिसे 'काबातुल्लाह' यानी 'ईश्वर का घर' कहते हैं। आज भी मुस्लिम धर्म के अनुयायी वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं। यह अंदर से बिल्कुल खाली है, इस के अंदर कुछ भी नहीं है। इस के अंदर का भाग आप www.youtube.com पर देख सकते है। इसकी छत पर चढ़ कर हज़रत बिलाल ने अज़ान दी थी। मुसलमान अगर काबा शरीफ को ईश्वर मानते तो इस की छत पर खड़े रहकर कोई अज़ान क्यों देगा? इस से साबित होता है कि मुसलमान काबा शरीफ की पूजा नहीं करते, बल्कि एक अत्यंत पवित्र स्थान की तरह आदर करते है। इस की सिर्फ परिक्रमा की जाती है जिसे 'तवाफ' कहते हैं। पहले नमाज फिलिस्तीन के शहर 'येरूस्लम' की एक मस्जिद 'मस्जिद-ए-अक्सा' की तरफ मुँह करके पढ़ी जाती थी। लगभग **624 A.D.** के बाद से पवित्र कुरआन के आदेशानुसार नमाज़ 'काबा शरीफ' की तरफ मुँह करके पढ़ी जाने लगी। (पवित्र कुरआन २:१४४) पहली बार काबा शरीफ को फरिश्तों ने बनाया था। उसके बाद हज़रत नुह (मनु) के काल में बाढ में यह गिर गया था। फिर हज़रत इब्राहीम ने (अथर्ववेद में

जिसे ब्रम्हा कहा गया है।) उसे फिर से बनाया था। उसके बाद कई बार इसकि मरम्मत (Repairing) की गई। यदि भविष्य में किसी भुकंप में यह गिर भी जाता है तो इसके गिरने से इस्लाम धर्म खत्म नहीं होगा। ईश्वर हमेशा था, है, और रहेगा। और मुसलमान सिर्फ एक ही निराकार ईश्वर की पूजा करते हैं, और उसके द्वारा भेजी गयी इश-वाणी जो कुरआन के रूप में संग्रहित है उसका अनुकरण करते हैं।

शिवलिंग (Symbol of God)

शिव का अर्थ है, ईश्वर! लिंग का अर्थ है, निशानी या चिन्ह (Symbol) शिव लिंग का अर्थ है ईश्वर का चिन्ह या ईश्वर की निशानी या (Symbol of God).

काबा के पूरबी कोने की दिवार में एक काला पत्थर लगा हुआ हैं। यह पत्थर स्वर्ग से फरिश्तों ने लाकर काबा शरीफ की दिवार में स्थापित किया था। इसे 'हिज्र-ए-अस्वद' कहते हैं। 'हिज्र' यानी पत्थर 'अस्वद' यानी काला। 'हिज्र-ए-अस्वद' यानी काला पत्थर।

काबा शरीफ के चारों तरफ तवाफ (परिक्रमा) इसी पत्थर के चिन्ह से आरंभ कि जाती है और इसके पास पहुँच कर समाप्त हो जाती है।

"इस पत्थर में किसी का भला बुरा करने की शक्ति नहीं है। सिर्फ आदर के तौर पर लोग इसे चूमते हैं।" (कौलः हज़रत उमर)

यह पत्थर स्वर्ग से लाया गया था इसलिए लोग इसे भी ईश्वर की निशानी या चिन्ह या (Symbol of God) मानते हैं।

कुछ विद्वान इसी काले पत्थर को शिव लिंग मानते है। (पुस्तक "अब भी ना जागे तो....." लेखकः शम्स नवेद उस्मानी)

हम किस किस को पूजें ?

- भारत देश में हजारो दर्गाह है। और उर्स के अवसर पर लाखो लोग दरगाह के दर्शन करते है। मगर इस्लाम इस की तालीम (शिक्षा) नहीं देता। यह लोगों की श्रद्धा और इस देश की परंपरा है। मगर श्रद्धा और परंपरा से धर्म नहीं बदलता। जो गलत है वह गलत ही रहेगा।

हज़रत मोहम्मद(स.) ने पक्की मज़ार या कब्र बनाने से मना किया है और इससे भी मना किया है की कब्र पर कोई स्मारक या कमरा बनाया जाए।

(Muslim, Maruful Hadees, Vol.-3, Page-486)

खुद हज़रत मोहम्मद (स.) की कब्र शरीफ भी कच्ची है। यानी ईंट पत्थर से नहीं बनी है और ना मज़ार पर कोई शानदार कमरा या गुम्बद है। हज़रत मुहम्मद की कब्र शरीफ के चारों तरफ बगैर खिड़की दरवाज़े की चारदिवारी है। सीधी(Flat) छत गिर जाया करती थी इसलीए उन पत्थरों की दीवार पर गोल छत है। यह एकदम सादा कमरा है जो पत्थरों से बना है। यह पुरा कमरा मस्जिद के अंदर है। और मस्जीद की छत जो कब्र शरीफ के कमरे के उपर है, उस पर गुम्बद है। *

और कब्र शरीफ के चारो तरफ बगैर खिड़की दरवाजे की इमारत इस लिए बनानी पढ़ी क्योंकि यहुदियों ने कई बार कब्र मुबारक को नुकसान पहुचाने की साज़िशें रची थी।

हजरत मुहम्मद (स.) के कब्र शरीफ का कमरा पिछले ७०० सालों से बंद रखा गया है।

इसलिए हजरत मुहम्मद (स.) के कब्र शरीफ के चारो तरफ एक कमरा और गुम्बद के अलावा जो तुर्की ने अपने राज में बनवाया था, सउदी अरब में आप को और कोई पक्की मज़ार और उस पर शानदार स्मारक या गुम्बद वगैरा कुछ भी नज़र नहीं आऐगा।

तो जो इस्लाम में नहीं हैं वह अगर हिन्दुस्तान के लाखों मुसलमान करने लगें तो भी वह सही नहीं हो जाएगा। बल्कि गलत गलत और गलत ही रहेगा।

- किसी हिन्दु भाई को अगर धन चाहिए, तो वह 'लक्ष्मी देवी' की पूजा करता है, बुद्धी चाहिए तो 'गणेश जी' की पूजा करता है, शिक्षा चाहिए तो 'सरस्वती देवी' की पूजा करता है। भावनिक समस्या (Spritual Problem) है या शनि की तकलीफ से परेशान है तो 'हनुमान जी' को पूजा जाता है।

- हम हिन्दू धर्म के कुछ ग्रंथों का अध्ययन करके देखते है, की उसमें मुर्ती पुजा के बारे में कुछ लिखा है या लोग अपने मन से करते हैं। यानी हिन्दू धर्म के ग्रंथों में मुर्ति पूजा की शिक्षा है या यह भी एक परंपरा है।

- हिन्दू धर्म की किसी भी Authentic ग्रंथ में मुर्ति पूजा की शिक्षा (तालीम) नहीं है। बल्कि उससे रोका गया है। ऐसे कुछ श्लोक निम्नलिखीत है:

१. ईश्वर ना तो लकड़ी में हैं ना पत्थर में ना मिट्टी से बनी मुर्ति में। वह तो एहसासात (Feelings) में मौजूद है। उस का एहसास (Feel) होना ही उस के वजूद (existence) की दलील (Proof) है। (गरूड पुराण धर्म कान्ड परेत खंन्ड ३८-१३)

२. मिट्टी, पत्थर वगैरा की मुर्तियाँ ईश्वर नहीं

---

* "Masjide Nabvi Shareef"
By Dr. Mohammad Ilyas Abdul Gani. Address: 447 Madina Munawwarah K.S.A
Published by: Fahrasat Maktaba Al-Malik Fahadul Wataniya Asna-en-Nashar)

होतीं। (श्रीमद भगवत महापुराण ११:८४:१०)

३. मेरे गुणों (Features) को ना जानने वाले मुर्ख लोग मुझे शरीर वाला समझ कर मेरा अपमान करते है। (गीता ६:११)

४. सभी जानदार मुझ में नहीं रहतें। मेरी कुदरत है की मैंने ही सभी जानदार को पैदा किया और उनको पालता हूँ। फिर भी में उन में रहता नहीं। (गीता ६-५)

५. ईश्वर हर जगह मौजुद रहने वाला नूर (प्रकाश) है। (यजुर्विद ४०:१)

६. ईश्वर की कोई मुर्ति नहीं उस का नाम ही महान है। (यजुर्विद ३:३२)

७. वह लोग अंधेरो की गहराईयों में डुब जाते है जो असमभुती (Material in basic form) जैसे आग, पानी वगैरा की पूजा करते है। वह लोग इस से भी गहरे अंधेरे में डूब जाते है। जो समभुती से बनी चीज़ों की पूजा करते हैं। (जैसे मुर्ति वगैरा) (यजुर्वेद अध्याय-३२:३)

८. पवित्र वेद हिन्दू धर्म के सब से Authentic ग्रंथ है। चारों वेदों में मुर्ति पूजा को सख़्ती से रोका गया है।

९. पवित्र वेदों के बाद उपनिषद को Authentic माना गया है। कुल १०८ उपनिषद है। उन में से दस उपनिषद को सभी आचार्य और विद्वान मानते है उनके नाम इस तरह है।

ऐश, केंसुप, कठ, प्रशन, मंडक, मांडोक्या, एत्रेया, तेत्रया, छांदोग्या और बृहद आर्डिक। यह सब भी मुर्ति पूजा से रोकते है।

१०. वेद और उपनिषद प्राचीन ग्रंथ है। पुराण ऋषियों ने लिखा है। और यह प्राचीन भी नहीं है। कुछ पुराणो में मुर्ति पूजा के लिए कहा गया है। इस की वजह स्वामी विवेकानंद इस तरह बताते है।

"ऋषियों ने मुर्ति पूजा की परंपरा (Tradition) शुरू की। ताकि वह उस मुर्ति को सामने रखकर निरंकार ईश्वर कि कल्पना कर सके" (विष्णु ऋशि पृष्ठ क्र. १४६, विवेकानंद साहीत्य अदोहोत आश्रम, पथ्योरा गढ, दुसरी आवृत्ती १६७३)

११. मगर गीता के इस श्लोक से ईश्वर पर ध्यान लगाने (Concentration) के लिए मुर्ति की जरूरत नहीं है।

इबादत (प्रार्थना) करने वाले को चाहिए कि अपने शरीर, गर्दन और सर को एक सीध में कर ले। और अपनी नाक के अगले सिरे (Tip of Nose) पर निगाह जमा कर ईश्वर का ध्यान करे और किसी भी दिशा पर उनका ध्यान विचलित न हो। (गीता ६:१३)

तो वास्तव में मुर्ति पूजा की शिक्षा हिन्दू धर्म में नहीं है। जो ऐसा करते है शायद उन्हें धर्म का ज्ञान नहीं है।

देवी देवता या वली-अल्लाह, या महापुरूष कौन हैं।

- ऋग्वेद में लिखा है की,

  यो देवष्वधि देव एक आसीत्। (ऋग्वेद १०:१२१:८)

  अर्थातः सभी देवताओं का एक ही ईश्वर है।

- पवित्र कुरआन में लिखा है की,

  "जिनको ये लोग पुकारते हैं (यानी देवी देवता या कोई पैगम्बर या वली-अल्लाह या कोई महापुरूष), वे तो खुद अपने रब के पास पहूँच प्राप्त करने का वसीला ढुंढ रहे है कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।"(पवित्र कुरआन १७:५७)

- यजुर्वेद में लिखा हैः

  "न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देग।।"(यजुर्वेद ३३:११)

अर्थातः बिना परिश्रम के देवताओं को भी ईश्वर की कृपा नहीं मिलती।

तो देवी देवता या पैगम्बर या वली-अल्लाह या कोई भी महापुरूष खुद ईश्वर नहीं है और ना ही वह खुद से अपना और ना किसी और का भला कर सकते है। वह भी एक ईश्वर की प्रार्थना करते है। और वह भी एक ईश्वर को खुश करने के लिए परिश्रम करते है।

अवतार ईश्वर क्यों नहीं?

- यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अद्‌भुतथानाय अर्धमस्य तदात्म्यम् सृजानम्यहम्।
(गीता)

  इस श्लोक में लिखा है की जब जब पृथ्वी पर अधर्म फैलेगा तो अधर्म को खत्म करने के लिए मैं (ईश्वर) जन्म लूँगा। यह श्री कृष्ण जी ने कहा था। तो श्री कृष्ण जी ईश्वर क्यों नहीं?

- पवित्र कुरआन (९:१२८) ने हज़रत मुहम्मद (स) को रऊफ और रहीम कहा है और यह दोनों नाम ईश्वर के है। जिसे कुरआन के साहित्य (Literature) का ज्ञान नहीं होगा। वह यही समझेगा कि मोहम्मद स्वयं ईश्वर है। (ईश्वर ऐसा कहने पर हमें माफ करे।)

- इसी तरह हदीस शरीफ में है कि, "ईश्वर ऐसा कहता है, ''जब कोई व्यक्ति मेरे आदेश का पालन करता है और मेरी बहुत प्रार्थना करता हैं तो में उसके हाथ पांव और आंख बन जाता हूँ।"
(जमा-अल-फवाइद)

  ईश्वर निराकार है, कभी किसी ने किसी वली या महापुरूष को निराकार होते नहीं देखा।

- एक हदीस शरीफ है कि कयामत में ईश्वर एक इन्सान से पुछेगा "में प्यासा था, भूखा था, बीमार था, मगर तू ने मुझे खाना नही खिलाया, पानी नहीं पिलाया, और ना ही मेरी सेवा की।" इन्सान पूछेगा कि "हे ईश्वर, तू ही सब को खिलाता पिलाता है, तो आप भूखे, प्यासे और बीमार कैसे हो सकते हो?" ईश्वर कहेगा की मेरा वह बन्दा भूखा, प्यासा और बीमार था। अगर तू उसकी सेवा करता तो तू मुझे वहीं पाता।
(मुस्लिम, तर्जुमाने हदीस नं.२४५)

- मंदिर और मस्जिद के दरवाजे पर हजारों भूखे प्यासे और बिमार पड़े रहते है। आप उन की सेवा करो और फिर उन के पास ही, उन में किसी व्यक्ति के रूप में ईश्वर को ढूंढोगे तो क्या ईश्वर आप को मिलेगा?

- जब कोई बच्चा परीक्षा में बहुत अच्छे मार्क से पास होता है, तो बाप गर्व से कहता है, 'यह मेरा बेटा है' तब उस बाप का अपने दूसरे बेटे के बारे में क्या खयाल है जो फेल हो गया। क्या वह पड़ोसी का था? (क्षमा याचना)

- जो लोग भाषा के साहित्य (Literature of Language) को समझते है। वह इस वाक्य (Sentence) से कि 'यह मेरा बेटा है' इस से नसल (वंश) का अर्थ नहीं लेंगे बल्कि गुण का अर्थ लेंगे। यानी उस बाप का यह कहना है कि मेरा यह बेटा मेरे जैसा ही बुद्धिमान हैं।

  वैसे ही जो पवित्र कुरआन के साहित्य का ज्ञान रखते है वह पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.) को रऊफ और रहीम कहे जाने पर हज़रत मोहम्मद (स.) को ईश्वर नहीं मानेंगें। बल्कि ईश्वर की तरह 'रऊफ' (क्षमा करनेवाला) और 'रहीम' (दयालू) मानेंगे।

- इसी तरह जब ईश्वर कहता है कि मैं महापुरूष (वली) के हाथ पांव और आँख बन जाता हूँ तो इस का अर्थ है वह महा पुरूष अपने हाथ पांव और आंख वैसे ही इस्तेमाल करता है जैसा में (ईश्वर) चाहता हूँ।

- इसी तरह जब ईश्वर कहता है कि तू मुझे भुखे प्यासे और बिमार के पास पाता, तो इस का अर्थ है उन की सेवा करके तू मुझे पाता, तू मेरा प्रिय

बनता और तुझ पर मेरी कृपा होती।

- इसी तरह से जो पवित्र गीता के श्लोक में है, की अधर्म का नाश करने के लिए मैं जनम लूंगा (तो इसका अर्थ यह नही कि ईश्वर स्वयः जन्म लेगा)। तो इस का अर्थ है की वह पैगम्बर जिसे मैं भेजूंगा वह मेरा प्रतिनीधी (Representative) होगा और मेरे आदेश के अनुसार मेरे धर्म को स्थापित करेगा।

  अतः यहीं मत हिन्दू धर्म के विद्वानों का भी है। जैसे स्वामी विवेकानंद, गुरूनानकजी और हिन्दू धर्म के महान विद्वान पंडित सुन्दरलाल, श्री बलराम सिंग परिहार, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. पी.एच चौबे, डॉ. रमेश प्रसाद गर्ग, पंडीत दुर्गा शंकर सत्यार्थी, श्री केशरी लाल भगत (हज़रत मोहम्मद और भारतीय धर्म ग्रंथ, डॉ. एम.ए. श्रीवास्तव)

- चौदह साल के वनवास में जब हनुमानजी ने श्री रामजी से पूछा कि मैं ईश्वर की प्रार्थना कैसे करू? तो श्री रामजी ने ऐसा उत्तर नहीं दिया कि 'तुम खुद ईश्वर हो। क्योंकि आने वाले ज़माने में लोग तुम को पूजेंगें। ना उन्होंने कहा कि तुम मेरी प्रार्थना करो क्यों कि मैं भी ईश्वर हूँ। बल्कि उन्होंने यह कहाः

  प्रथमः ताराकः चयवादितिय दंड मुच्यते तीतय कुंडला।

  कारम चतुर्थ अर्द्धे चन्द्रक पंच बिन्दु संयुक्त

  ओउ्म मित्यज्योती रूपक। (श्री राम तत्वामृत)

  अर्थातः पहले सीधे खड़े हो जाओ। फिर दंडवत (सजदा) करो, फिर सीधे बैठ जाओ। फिर आधे चांद की तरह सामने झुक जाओ। फिर सीधे बैठ जाओ और ईश्वर के स्मरण में ध्यान लगाओ।

- यानी एक निराकार ईश्वर की प्रार्थना करो। वह ईश्वर महान है। निरंकार है। उस की कोई प्रतिमा नहीं। उस ने सब को पैदा किया और वही सब को एक दिन मौत देगा। वही इस संसार को चलाता है। हर एक को रोज़ी देता है। उस एक के अलावा और कोई प्रार्थना के लायक नहीं।

  ईश्वर के अलावा जो पूजे जाते हैं, वह ईश्वर नहीं। वह फरिश्ते, जिन्न, महापुरूष, पैग़म्बर, वली अल्लाह वगैरह हो सकते हैं।

  अगर हमें मुक्ति चाहिए तो सिर्फ एक ईश्वर को ही पूजना चाहिए। इस के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

कुरआन में हिंदु धर्म का उल्लेख

- क्या कुरआन में हिन्दु धर्म के बारे में कुछ लिखा है?
- हां लिखा है!

• पहली बात तो यह है की इस्लाम धर्म कोई नया धर्म नहीं है। पवित्र कुरआन में है किः

• मुसलमानो कहो कि, 'हम ईमान लाए (हम सच मानते है) अल्लाह और उस मार्गदर्शन (पवित्र कुरआन) पर जो हमारी ओर उतरा है। और जो ईब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, और अय्यूब की सन्तान की ओर उतरा था। और जो मूसा और ईसा और दूसरे सभी पैगम्बरों को उनके रब (प्रभु) की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। (पवित्र कुरआन २:१३६)

- "ऐ मुहम्मद! ईश्वर ने तुम को जिस धर्म का पालन करने का आदेश दिया है, यही आदेश उस ने मनू (हज़रत नूह) को दिया था और यही आदेश उस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा को दिया था। और उस ने सभी को यह भी आदेश दिया था कि धर्म का (अच्छी तरह) पालन करो और एक दूसरे से मतभेद ना रखो।" (पवित्र कुरआन ४२:१३)

• फिर ऐ नबी मुहम्मद! हमने तुम्हारी ओर यह किताब (पवित्र कुरआन) भेजी जो हक (सत्य) लेकर आई है। और मूल किताब (प्राचीन ग्रंथों) में से जो कुछ उसके आगे मौजूद है उसकी पुष्टी करनेवाली और उसकी संरक्षक है। अतः तुम अल्लाह के उतारे हुए कानुन के अनुसार लोगों के मामलों का फेसला करो और जो हक़ (सत्य) तुम्हारे पास आया है उससे मूँह मोड़कर उनकी इच्छाओं का पालन न करों। हमने तुम (इनसानों) में से हर एक के लिए एक धर्म-विधान और कार्य प्रणाली निर्धारित की। यद्यपि तुम्हारा अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक उम्मत (समुदाय) भी बना सकता था, लेकिन उसने यह इसलिए किया कि जो कुछ उसने तुम लोगों को दिया है उसमें तुम्हारी आज़माइश (परीक्षा) करे। अतः भलाइयों में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश करो। आख़िरकार तुम सबको अल्लाह की ओर पलटकर जाना है, फिर वह तुम्हें असल हक़ीकत बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो। (पवित्र कुरआन ५:४८)

उपरोक्त कुराण के तीन श्लोक से यह साबीत होता हैं कि,

- तो इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है। यही धर्म शुरू में हज़रत नुह (मनु) का था। यही धर्म शुरू में हज़रत ईसा और मूसा (Christian & Jews) का था। या हर पैगंबर ने बस इस धर्म को अपने मानने वालों को सिखलाया था। मगर उनके बाद उनके मानने वाले बदल गऐ। उन्होंने एक ईश्वर को छोड़ कर बहुत सारे महापुरूषों को एक ईश्वर के साथ मानना शुरू कर दिया। और अब मुसलमानों के भी कुछ गट (समुदाय) एक ईश्वर के साथ बहुत सारे बाबा और पैगम्बर को भी ईश्वर (अल्लाह) की तरह महत्व देते है। यह सब गलत है। हर युग में इसी वजह से धर्म बदल गए और अब भी बदल रहें हैं। और इसी वजह से बार-बार धरती पर पैगम्बर आए। मगर हज़रत मोहम्मद (स.) के बाद अब कोई पैग़म्बर या प्रेषित नहीं आऐगा। और धर्म सुधार का काम अब साधारण लोगों को ही करना है।

• तो कुरआन के मुताबीक चार हजार साल पहले हज़रत नुह या मनु ने लोगों को जिस धर्म की शिक्षा दी थी वह यही इस्लाम धर्म है और हर युग में यही धर्म ईश्वर का धर्म रहा है। इसलीए आज भी ईश्वर ने पुराने धर्म के मानने वालों को नाम

लेकर कहा है की अगर तुम इस्लाम के मूल श्रद्धा (Basic Concept) को मानोगे तो तुम अब भी सफल हो सकते हो।

कुरआन के वह श्लोक इस तरह है:

- "जो लोग मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई या साबी (हिंदू), अर्थात कोई व्यक्ति किसी भी धर्म और समुदाय का हो जो एक ईश्वर और कयामत के दिन को मानेगा (अर्थात इस बात को मानेगा कि मरने के बाद कयामत के दिन अपने कर्मों का हिसाब किताब देना है) और नेक आमाल करेगा जो ऐसे लोगों को उन के सत्य कामों का बदला ईश्वर के पास मिलेगा। और कयामत के दिन उन को ना किसी तरह का डर होगा और ना ही वह उदास (गमनाक) होंगे। (पवित्र कुरआन २:६२)
- (विश्वास रखो कि हज़रत मोहम्मद (स.) को माननेवाले हो (यानी मुसलमान) या यहूदी, ईसाई हों या साबी(हिंदू), जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएगा और अच्छा कर्म करेगा, उसका बदला उसके रब के पास है और उसके लिए किसी ड़र और रंज का मौका नहीं है।(पवित्र कुरआन ५:६६)
- यानी हर धर्म का Basic Concept तो यही था कि १) ईश्वर एक है २) सत्कर्म करना चाहिए ३) कयामत(अंतिम दिन) को मानना चाहिए (यानी यह मानना चाहिए कि कयामत के दिन हमें अपने कर्मों का हिसाब किताब देना है)। ४) मरने के बाद के जीवन को सत्य मानना चाहिए। ५) ईश्वर द्वारा भेजे गए सारे पैगम्बर और उनके ग्रंथों को सत्य मानना चाहिए। और जो कोई भी मन से ऐसे विश्वास रखेगा, वह धार्मिक रूप से सफल होगा। और वह लोग जो इस Basic Concept पर ऐसी श्रद्धा रखते हैं वह मनु (नुह) के काल से आखरी पैगंबर तक एकही धर्म पर श्रद्धा रखनेवाले हैं यानी मुसलमान हैं।

इन श्लोक (२:६२ और ५:६६) में हिन्दु धर्म के मानने वालों को 'सबाईन' या 'साबी' कहा गया है। इस युग के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.) हैं, और सारे उपदेशों को ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (स.) द्वारा पुनरावृत्त (revise) किया है। इस लिए इस युग में उन को पैग़म्बर मानना और उन के आदेशों को मानना भी मुक्ति के लिए ज़रूरी है।

- पवित्र वेद ई. सन १८०० तक (यानी चार हजार साल तक) लिखीत रूप में न थे। बल्कि पंडीतो ने इसे याद कर रखा था। अलग अलग खंडो को अलग अलग तरह से अलग अलग ऋषियों ने लिख रखा था। वेद पुस्तक के रूप में न थे और ना इन का किसी पुस्तक की तरह नाम था। इसलिए यह जिस हालात में थे उसके अनुसार कुरआन में वेदों को याद किया गया है।
- कुरआन के एक श्लोक ने वेदों को 'सुहफे ऊला' कहा गया है। (पवित्र कुरआन २०:१३३)। जिस का अर्थ है (ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए प्राचीन ग्रंथ या आदि ग्रंथ)। दूसरे श्लोक में वेदों को 'जाबराल अव्वलीन' कहा गया है (पवित्र कुरआन २६:१९६)। इस का अर्थ है प्राचिन ग्रंथ के बिखरे हुए पन्ने (Ancient Scattered divine pages). क्योंकि वेद एक ग्रंथ के रूप में ना थे बल्कि वेदो के सुक्ति और खंड अलग अलग जगह पर अलग अलग ऋषियों के पास था। (आज भी उन ऋषियों के नाम हर सुक्त के शुरूवात में है।) (पुस्तक "अब भी ना जागे तो ....", लेखकः शम्स नवेद उस्मानी)
- कुरआन के ऐसे भी कुछ श्लोक है जिनमे वेदोंको 'सुहफे ऊला' और 'जाबराल अव्वलीन' कहा गया है वह श्लोक निम्नलिखीत हैं।:
- कुरआन के श्लोक (२६:१९६) में कहा गया है कि:

  "और वे कहते हैं कि 'यह (पैग़म्बर) अपने रब (परमेश्वर) की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?' (अपनी पैगंबरी साबीत करने के लिए)

उनके सवालों का जवाब देने के लिए ईश्वरद्वारा निम्नलिखित श्लोक प्रकट हुवा।

"क्या उन के पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ गया, जो कुछ कि सुहफे ऊला (आदिग्रंथो) में उद्लिखित है।" (आदिग्रंथो में हजरत मुहम्मद (स.) इनकि भविष्यवाणी ३१ बार कि गयी है क्या यह ठोस सबुत नहीं है?)

इस आयत (श्लोक) के प्रकट होने की एक वजह यह हो सकती है कि, अरब देश का हज़ारो साल से भारत देश से व्यापार संबध रहा है। और भारतीय लोगों के बहुत सारे कबीले यमन, सउदी अरब, बहरेन इ. में बसे हुए थे। और वहा बसे भारतीय लोगों ने जब यह सवाल मुहम्मद (स.) से किया तो ईश्वरने उपरोक्त श्लोक द्वारा उनको जवाब दिया।
("मुहम्मद (स.) के जमाने का हिन्दूस्तान", लेखकः क़ाज़ी मुहम्मद अतहर मुबारक पूरी)

(वेदो में ३१ बार हज़रत मुहम्मद(स.) के नाम से भविष्यवाणी है। और हिन्दु धर्म में अनेक ग्रंथों में भी मुहम्मद(स.) की भविष्यवाणी अहमद, महामद, महामे ऋषि, नराशंस और कलकी अवतार के नाम से आयी है। उस में से दो श्लोक इस तरह हैं।)

- एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः।।
  महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः।।
  (भ.पू. पर्व-३, खण्ड-३ अध्याय ३, श्लोक-५)

भविष्य पुराण के अनुसार, "किसी दूसरे देश में एक नबी अपने साथियों के साथ आएगा। उसका नाम 'महामद' होगा, और वह एक मरूस्थलीय (desert) जगह पर प्रकट होगा"

- अज्ञान हेतु कृत मोहमदान्धकार नांश विधांय हित दो दयेत विवेक।(श्रीमद भगवत पुराण २:७२)

मोहम्मद के ज़रिए (अज्ञान का) अंधेरा दूर होगा और ज्ञान और spirituality परवान चढ़ेगी।

तो कुरआन में वेदों और हिन्दु धर्म के बारे में भी लिखा हुआ है। मगर वह अरबी भाषा में होने के कारण साधारण लोग जान नहीं पाते है।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

पवित्र वेद और पवित्र कुरआन के एकसमान श्लोक

ईश्वर से प्रार्थना संबन्धि श्लोक

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• होतारं सत्ययजं रोदस्योरूत्तान हस्तो नमसा विवासेत। (ऋगवेद. ६:१६:४६) पुजनीय, आकाश व पृथ्वी को सत्य के मार्ग से चलाने वाले परमेश्वर से विनम्रता पूर्वक हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करो।	• उद्अू रब्बुकुम् त-ज़र्रुअं व्-व ख़ुफ़्य इन्नहू लायुहिब्बुल-मुअ-तदीन (कुरआन ७:५५) अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके, यक़ीनन वह सीमा का उल्लंघन करनेवालों को पसन्द नहीं करता।
• तस्य ते भक्तिवांसः स्याम (अर्थवेद ०६:७८:३) 'हे प्रभू! हम तेरे ही भक्त हों।'	• इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तअीन (कुरआन १:४) हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।
• अवनो वृजिना शिषी हि (ऋगवेद १०:१०५:८) 'हे परमेश्वर आप हमारे पापों को हमसे दूर किजीए।'	• रब्बना फागफिरलना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना सय्यिआतिना (कुरआन ३:१६३) ऐ हमारे मालिक, जो अपराध हमसे हुए हैं उनको क्षमा कर दे, जो बुराइयाँ हममें हैं उन्हें दूर कर दे और हमारा अन्त नेक लोगों के साथ कर।
• अवशसा निःषसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः। (अर्थववेद०६:४५:२) 'जो पाप विश्वासघात, घृणा या अपवाद से और जो पाप जागते या सोते हुए हमने किए हैं। हे परमेश्वर उन सभी अप्रिय दुष्कर्मों को हम से दूर कर दे।'	• रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन् नसीना अव् अख़ताना। रब्बाना वला तह्मिल अलैना इस्रन कमा हमल्तहु अलल् लज़ीना मिन क़ब्लिना, रब्बना वला तुहम्मिल्ना मा ला ता-कता लना बिहि। वअ्फ़ुअन्ना वग़्फ़िर लना वर् हम्ना अन्-त मौलाना (कुरआन २:२८६) ऐ हमारे रब, हमसे भूलचूक में जो ख़ताएँ हो जाएँ, उनपर पकड़ न कर। मालिक, हमपर वह बोझ न डाल, जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाले थे। ऐ हमारे रब, जिस बोझ को उठाने की ताक़त हममें नहीं है, वह हमपर न रख। हमारे साथ नरमी कर, हमें माफ़ कर दे, हमपर दया कर, तू हमारा स्वामी है, इनकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• इन्द्र ऋतु न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा। शिक्षा णो अस्मिन् पुरूहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि।। (अर्थवेद.१८:३:६७) 'परमेश्वर इस मार्ग में हमें शिक्षा (ज्ञान) दे। हम जीते हुए प्रकाश को पायें।	• युअतिल्-हिकम-त मंय्यशा-उ व मंय्युअतल्-हिक्म्-त फ-कद ऊति-य खयरन् कसीरन् व यज्जक्करू इल्ला उलूल-अलबाब (कुरआन २:२६६) जिसको चाहता है हिकमत (तत्वदर्शिता) प्रदान करता है, और जिसे हिकमत (तत्तज्ञान) मिली, उसे वास्तव में बड़ी दौलत मिल गई। इन बातों से सिर्फ़ वही लोग शिक्षा ग्रहण करते है, जो बुद्धिमान हैं।
• शनः कुरू प्रजाभ्यः (यर्जुरवेद. ७:८६:०३) हे प्रभु! हमारी संतान का कल्याण करो।	• व अस्लिह ली फी जुर्रिय्यती (कुरआन ४६:१५) मेरी सन्तान को भी नेक बनाकर मुझे सुख दे
• यत्रानन्दाशूच मोदाषूच मुदः प्रमुद आसते। कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कुधी।। (ऋगवेद. ६:११३:११) हे प्रभु! आनन्द और स्नेह जहां वर्तमान रहते हैं, जहां सभी कामनाएं इच्छा होते ही पूर्ण हो जाती हैं उसी अमर लोक में मुझे निवास दो।	• वफ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज्जुल्-अअ-युनि व अन्तुम् फ़ीहा खालिदून (कुरआन ४३:७१) उनके आगे सोने की थालिआँ और जाम-साग़र फिराए जाएँगे और हर मनभाती और निगाहों को लज़्ज़त देनेवाली चीज़ वहाँ मौजूद होगी। उनसे कहा जाएगा, "तुम अब यहाँ हमेशा रहोगे।
• श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यंदिनं परि। श्रद्धां सूर्यस्य जिम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः।। (ऋग्वेद. १०:१५१:०५) श्रद्धा का हम प्रातः काल में श्रद्धा का दिन के मध्य में, और सूर्य के अस्त होने पर आव्हान करते है। है श्रद्धे हमें लोक में श्रद्धा युक्त करे।	• व सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क कब्-ल तुलअिश-शम्सि व कब्-ल गुरूबिहा व मिन् आनाइल्लयलि फ- सब्बिह व अत-राफन्नहारी ल-अल्लक-क तर्जा। व-ला तमुद्-दन्-न ऐनय-क इला मा मत्तअ-ना बिही अज्वाजम् मिन्हुम् जह्-र-तल्-हयातिददून्या। लिनफतिनहुम् फीहि। (कुरआन २०:१३०-१३१) अतः ऐ नबी, जो बातें ये लोग बनाते हैं उनपर सब्र करो, और अपने रब के गुणगान एरां प्रशंसा के साथ उसकी बड़ाई बयान करो सूरज निकलने से पहले और सूरज डूबने से पहले, और रात की घड़ियों में भी तसबीह करो और दिन के किनारों पर भी, शायद कि तुम राज़ी हो जाओ।
• वयं देंवानां समतौ स्याम (अथर्ववेद. ६:४७:०२) हम सत पुरूषों की शुभ मति में रहें।	• व अद्ख़िल्नी बिरह्मति-क फी अ़िबादिकस्-सालिहीन (कुरआन २७:१६) अपनी दयालुता से मुझको अपने अच्छे बन्दों में दाख़िल कर।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• नय सुपथा राय अस्मान (यर्जुरवेद ४०:१६) 'हमको हमारे कल्याण के लिए सद्मार्ग पर ले चल!'	• इह्दनस-सिरातूल्मुस्क़ीम (क़ुरआन १:५) हमें सीधा मार्ग दिखा,
• इन्द्र ऋतुं न आ भर (अर्थवेद १८:०३:६७) हे परमेश्वर तू हमें तत्वदर्शिता से भर दे।' • सं श्रुतेन गमेमहि (अर्थवेद ०१:०१:४) हे परमेश्वर! हम ब्रम्हज्ञान से युक्त हों!	• रब्बि जिदनी अिल्मा (क़ुरआन २०:११४) ऐ पालनहार! मुझे और अधिक ज्ञान प्रदान कर
• अग्निः प्रातः सवने पात्वस्मान् वैश्चानरो विश्वशंभुः। (अर्थवेद ०६:४७:०१) सब मनुष्यों के प्रिय, जगदुत्पादक, सबके कल्याण कारी परमेश्वर प्रातः काल की उपासना में हमारी रक्षा करें।	• वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अिल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज (क़ुरआन २:२५५) अल्लाह, वह जीवन्त शाश्वत सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत् को सँभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है उसी का है। • व क़ुरआनल्-फजिर इन-न-क़ुरआनंल्-फजिर का-न मश्हूदा (क़ुरआन १७:७८) नमाज़ क़ायम करो सूरज ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक और फ़ज्र के क़ुरआन को भी आवश्यक ठहराओ क्योंकि फ़ज्र का क़ुरआन साक्षात् होता है।
• तस्य वयं हेडिसि मापि भूम सुमृडीके अस्य सुमतो स्याम्। (अर्थवेद ०७:२०:३) हम उस परमेश्वर के क्रोध में कभी न होवें, उसकी करूणा और सुमति में बने रहें।	• रब्बना ला तुजिग़ क़ुटूबना बअ्दा इज़ हदैतना व हब लना मिल् लदुन्का रह्मा। इन्नका अन्तल वहाब (क़ुरआन ३:८) "पालनहार, जब तू हमें सीधे रास्ते पर लगा चुका है, तो फिर कहीं हमारे दिलों में टेढ़न पैदा कर देना। हमें अपने दयानिधि से दयालुता प्रदान कर कि तू ही वास्तविक दाता है।
• ऋत्वः समहदीनता प्रतीपं जगमा शुचे मृला सुक्षत्र मृलय।। (ऋगवेद. ७:८६:०३) हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! हम अपनी अज्ञानता से पथभ्रष्ठ होते हैं। हम पर कृपा करें।	• इन्नल्ला-ह ला यज्लिमुन्ना-स यशअंव्-व ला किन्नन्ना-स अन्फुसहुम् यज्लिमून (क़ुरआन १०:४४) यह है कि अल्लाह लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता, लोग ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं।

ईश्वर की उपासना से संबन्धित श्लोक

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• भुवनस्य यस्पतिके एव नमस्यो विक्ष्वीडयः (अथर्ववेद २:२:१) सब ब्रम्हाण्डका वह एक ही स्वामी सभी प्रजाओं व्दारा सिर झुकाने व उपासना करने योग्य है।	• रब्बुस्समावाति वलूअर्जि व मा बयनहुमा फअ्-बुदहु वस्तबिर् लिअिबादतिही हल् तअ्-लमु लहू समिय्या (कुरआन १६:६५) वह रब है आसमानों का और ज़मीन का और उन सारी चीज़ों का जो आसमानों और ज़मीन के बीच में हैं, अतः तुम उसकी बन्दगी करो और उसी की बन्दगी पर जमे रहो। क्या है कोई हस्ती तुम्हारे ज्ञान में उसकी समकक्ष?
• य एक इ त्तमुष्टु हि कृष्टिनां विचर्षणिः। (ऋग्वेद ६:४५:१६) जो मनुष्यों को देखने वाला एक ही है उसी की स्तुति करो।	• हु-वल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हुव आलिमुल गयबि वश्शहादति (कुरआन ५६:२२) वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अदृश्य और प्रकट हर चीज़ का जाननेवाला, वही सर्वोच्च करुणामय और दयावान् है।
• न भवत्विद्रं ऊती (ऋग्वेद १:१००:१) वह ईश्वर हमारी सहायता करें।	• कबीरूलू-मु-अत-आल (कुरआन १३:६) वह छिपे और खुले हर चीज़ को जानता है। वह महान है और हर हाल में सर्वोच्च रहनेवाला है।
• अध्दा देव महा (अथर्ववेद २०:५८:३) ईश्वर निश्चय ही महान है।	• अ-लम् तअ-लम् अन्नल्ला-ह-लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा लकुम् मिनू दुनिल्लाहि मिव्वलिय्यिंव-व ला नसीर (कुरआन २:१०७) क्या तुम्हें पता नहीं कि धरती और आकाशों का शासन अल्लाह ही के लिए है और उसके सिवा कोई तुम्हारा संरक्षक और तुम्हारा मददगार नाहीं है?
• मही देवस्य सवितः परिष्टुतिः (ऋग्वेद ५:८१:१) इस संसार के बनाने वाले के लिए स्तुति है।	• इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तअीन (कुरआन १:४) हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।
• वसुर्दयामान (ऋग्वेद ३:३४:१) जो देने वाला और दयावान है।	• अलूहम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आ़लमीन अर्रहमानिर्रहीम (कुरआन १:१) प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहान का रब है

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• महेचन त्वामद्रिवः पराशुल्काय देयाम। न सहस्त्राय नायुताय बज्रि वो न शताय शतामध।। (ऋग्वेद ८:१:५) हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तू इतना मूल्यवान है कि में तुझको किसी शुल्क के लिए भी नहीं छोड़ सकता। न हजारों के लिए न अरबों के लिए न सैंकड़ो के लिए।	• व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् कलीलंव् (कुरआन २:४१) अतः सबसे पहले तुम ही उसके इनकार करनेवाले न बनो। थोड़े मूल्य पर मेरी आयतों को न बेच डालो और मेरे प्रकोप से बचो। असत्य का रंग चढ़ाकर सत्य को संदिग्ध न बनाओ और न जनाते-बूढते सत्य को छिपाने का प्रयास करो।
• यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम। (ऋग्वेद १०:१२१:४) हिम से ढके पर्वत जिसकी महिमा कहते हैं, नदियों सहित समुद्र जिसकी महिमा कहते हैं, समस्त दिशाएं जिसकी भुजाएं समान हैं उसके अतिरिक्त हम किस देव की भक्ति पूर्वक उपासना करें।	• अम्मन् ज-अ-लल् अर-ज करांरव-व ज-अ-ल खिलालहा अन्हारंव-व ज-अ-ल लहा खासि-व ज-अ-ल बयनल्-बहरयनि हाजिजन् अ इलाहुम-म अल्लाहि बल् अक्सरूहुम ला यअ-लमून् (कुरआन २७:६१) और वह कौन है जिसने ज़मीन को ठहरने का स्थान बनाया और उसके अन्दर नदियाँ प्रवाहित कीं और उसमें (पहाड़ों की) मेखे गाड़ दीं और पानी के दो भण्डारों के बीच परदे डाल दिए? क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य-प्रभु भी (इन कामों में सहभागी) है? नहीं, बल्कि इनमें से ज़्यादातर लोग नादान हैं।

पवित्र वेद और पवित्र कुरआन के हज़ारों एक समान श्लोक उन ग्रन्थों में तलाश किए जा सकते हैं। मगर हमारा उद्देश्य आप को सारे एक समान श्लोकों से परिचित कराना नहीं है बल्कि केवल आप को इस बात का यकीन दिलाना है कि सभी पवित्र ग्रन्थों में एक ईश्वर की प्रार्थना करने और सत्य के मार्ग पर चलने के आदेश ही हैं। अगर कोई व्यक्ति यह कहता है कि किसी धार्मिक ग्रन्थ में लोगों की हत्या करने और दंगा फसाद फैलाने के आदेश हैं तो उस व्यक्ति को या तो उस ग्रन्थ का सम्पुर्ण ज्ञान नहीं है, या वह व्यक्ति खुद उग्रवादी गुटों से है और समाज में नफरत फैलाना चाहता है।

आप की अधिक जानकारी के लिए हम ५० से अधिक एक समान श्लोक इस पुस्तक के आखरी अध्याय (chapter) में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पवित्र नराशंस कौन हैं ?

• नराशंस के बारे में सभी चार वेदों में भविष्यवाणी है। लेकिन पिछले चार हज़ार साल से यह एक रहस्य था। बीसवीं सदी तक कोई आश्वस्त (Confident) होकर उनके व्यक्तित्व के बारे में नहीं कह सकता था। २० वीं सदी में जब साहित्य और ज्ञान अन्य धर्मों के बारे में आसानी से उपलब्ध होने लगे, और जब संस्कृत के विद्वानों ने अन्य धर्मों के साहित्य का अध्ययन किया। केवल तभी वे सबसे अधिक सम्मानित धार्मिक व्यक्तित्व की पहचान की पहेली को सुलझा सके।
जिन विद्वानों ने यह शोध कार्य किया वे है, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, (शोध विद्वान, संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय), डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, पंडित धर्म वीर उपाध्याय आदि।

• पवित्र वेदों में उपलब्ध पवित्र नराशंस के बारे में लिखीत जानकारी मिलती हैः

• सभी चारों पवित्र वेदों में इस रहस्य में हस्ती को नराशंस नाम से याद किया गया है । उदाहरण के लिएः
नराषंसः सुषूदतीमं यज्ञदाभ्यः । कविर्हि मधुहस्तः ।
(ऋग्वेद हिंदी भाष्य २५, आर्य समाज द्वारा प्रकाशित)

• पवित्र वेदों ने उनके बारे में बहुत-सी बातों की भविष्यवाणी की है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैः

१.पवित्र वेदों का कहना है कि वह मधुर भाषी होगा, या उसका भाषण सम्मोहित करने वाला होगा (His talk will be extremely sweet and mesmerizing)
नराशंसः मिहप्रियम स्मिन्यज्ञ उप ह्ये। मधुजिहं हविष्कृतम् । (ऋग्वेद संहिता १.१३.३)

२.पवित्र वेदों में उल्लेख है कि वह भविष्य का पूर्वानुमान करेगा।

नराशंसः सुदूषूदतीमं यज्ञमदाम्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः। (ऋग्वेद संहिता ५/५/२)

३.पवित्र वेदों का कहना है कि वह अत्यंत सुंदर व्यक्तित्व वाला होगा ।

नराशंसः प्रति धामान्यञन तिस्त्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः।(ऋग्वेद संहिता २/३/२)

४.पवित्र वेदों का कहना है कि नराशंस इंसानों के पापों को धो देगा ।

नराशंसः वाजिनं वायजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वास्मान्नो अहंसो निष्पिपर्तन।। (ऋग्वेद १/१०६/४)

५.पवित्र वेदों में उल्लेख है कि पवित्र नराशंस ऊंट की सवारी करेगा । उसकी १२ पत्नियां होंगी।

उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तो द्विर्दश ।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः।
(अथर्वेद, कुन्ताप सुक्त : २०/१२७/२)

६.पवित्र वेदों का कहना है कि पवित्र नराशंस की लोग (जनता) हर युग में प्रशंसा करेंगे ।

इदं जना उप श्रुत नराषंसः स्तविष्यते ।
(अथर्वेद, हिंदी भाष्य १४०१)

७.पवित्र वेदों में भविष्यवाणी की गई है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को निम्नलिखित चीज़ें देगाः

(१) १० फूल-मालाएँ (२) १०० सोने के सिक्के
(३) ३०० घोड़े और (४) १०,००० गाएं
एश इशाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रादश गोनाम्।।
(अथर्ववेद २०,१२७,३)

८.पवित्र वेदों का कहना है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघानः। त्रैवृष्णों अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानरः त्र्यरूणाश्चिकेत।। (ऋग्वेद म.५, सू.२७, मंत्र १)

- पिछले ४००० वर्षों से उपर दि गई जानकारी के आधारपर विद्वान नराशंस को पहचान में असफल थें।
- वर्तमान समय में जब विद्वानों ने अन्य धर्मों का अध्ययन किया तब उन्हें मालूम हुआ कि इस्लाम के हज़रत मुहम्मद (स.) ही वे पवित्र नराशंस हैं, जिनकी ४००० वर्ष पूर्व वेदों में भविष्यवाणी की गई थी।
- पवित्र वेदों में पवित्र नराशंस के बारे में कि गई भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद (स.) से इस प्रकार मेल खाती हैः

  'नराशंस' दो शब्दों का मिश्रण है, 'नर' और 'आशंस'। 'नर' का अर्थ है 'मनुष्य' और 'आशंस' का अर्थ है 'जिसकी प्रशंसा की जाए'। महान विद्वान सायन जिसने वेदों कि व्याख्या की, कहता है 'नराशंस' का मतलब है जिसकी इंसान प्रशंसा करें। संस्कृत में इसे ऐसे कहेंगेः
  नराशंसः यो नरैः प्रयशस्यते।

  (सायण भाष्य, ऋग्वेद संहिता ५/५/२)

  श्री दयानंद सरस्वती भी इसी अर्थ को सही मानते हैं।

  (ऋग्वेद, हिन्दी भाषा, पेज २५, आर्य समाज द्वारा प्रकाशित)

- डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय कहते हैं, 'नर' शब्द का प्रयोग केवल मनुष्य के लिए किया जाता रहा है। इसे कभी भी देवताओं के लिए प्रयोग नहीं किया गया। इसलिए पवित्र नराशंस को देवता नहीं माना जा सकता। अतः पवित्र नराशंस, मनुष्य ही है।
  अरबी भाषा में 'हम्द' का अर्थ है 'प्रशंसा', तथा 'मुहम्मद' का अर्थ है 'जिसकी प्रशंसा की जाए'। अतः अरबी भाषा में मुहम्मद का अर्थ वही होता है जो संस्कृत में नराशंस का अर्थ होता है।

पवित्र नराशंस के बारे में भविष्यवाणी :

१.वेदों की प्रथम भविष्यवाणी कहती है कि 'पवित्र नराशंस' मधुर (Sweat) भाषी होगा, या उनकी बात मृदुल होगी।

इतिहासकार कहते है कि हज़रत मुहम्मद (स.) की बातचीत की शैली बहुत कोमल और मधुर थी। और अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तकों का अध्यन करें।

a) "Life of Muhammad." By Sir Willan Muir. (Published by: Smith Elder and Co. London)
b) "Introduction to the speeches of Muhammad." By Lane Poole (Published by: MacMillan & co. London)

- दिव्य कुरान भी इसी तथ्य की पुष्टि निम्नलिखित आयत में करता है।
  "(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर से ही बडी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो यह सब तुम्हारे पास से छंट जाते।"

  (पवित्र कुरान ३:१५९)

२.पवित्र वेदों में दूसरा उल्लेख है कि पवित्र नराशंस भविष्यवाणी करेगा।
पैगंबर होने की वजह से ईशदूत जिब्रील समय-समय पर हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आते थे। दिव्य कुरान के सीधे अवतरण के द्वारा या ईशदूत जिब्रील के द्वारा हज़रत मुहम्मद (स.) को भविष्य के बारे में समय-समय पर जानकारी मिला करती थी, जिसे हज़रत मुहम्मद (स.) लोगों तक पहुँचा देते थे।
रोमन लोगों कि ईरानीयोंपर जीत की भविष्यवाणी, उनकी प्रसिद्ध भविष्यवाणियों में से एक है, ६४८ ईसवी में रोमनों ने अपनी हार के बाद ६५७ ईसवी में ईरानियों को नैनवा नामक

स्थान पर हराया, इस तरह हज़रत मुहम्मद (स.) की भविष्यवाणी सत्य साबित हुई।

३.पवित्र वेदों का तीसरा उल्लेख है कि पवित्र नराशंस का व्यक्तित्व अत्यन्त मोहक होगा।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हजरत मुहम्मद (स.) का व्यक्तित्व अत्यंत मोहक था। न केवल हज़रत मुहम्मद (स.) बल्कि सभी पैगंबर और अवतार मोहक व्यक्तित्व के थे, प्रतिष्ठित परिवार से थे, सुचरित्र, धैर्यवान और दूर-दृष्टि वाले थे, आदि। इसलिए ईश्वर को न मानने वाले लोग भी पैगंबर के बारे में व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें बदनाम नहीं कर सकते थे। श्री कृष्ण और श्री राम के बारे में कहा जाता है के वे भी अत्यंत मोहक व्यक्तित्व वाले थे। श्री राम को 'आदर्श पुरुष' (अर्थात पुरूषोत्तम) भी माना जाता है।

४.पवित्र वेदों में चौथा उल्लेख है कि पवित्र नराशंस मनुष्यों को उनके पापों से मुक्त कर देगा।

पैगंबरों का मूल कर्तव्य है कि इंसानों को पाप-मुक्त कर दे, और ऐसा हज़रत मुहम्मद (स.) ने किया भी।
दिव्य कुरान में ईश्वर कहता है किः
हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता (Blessing for mankind) बना कर भेजा है। (पवित्र कुरान २१:१०७)
इसका अर्थ यह है कि उन्हें इसलिए भेजा गया है, ताकि मानव जाति मोक्ष प्राप्त कर सके ।

५. पवित्र वेदों में पाँचवाँ उल्लेख है कि नराशंस की १२ पत्नियां होंगी।

यह उल्लेख केवल हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए ही सही है, क्योंकि किसी भी धर्म के किसी धर्मगुरु की १२ पत्नियाँ नहीं थी। किसी धर्मगुरु को १२ से कम पत्निया थी तो किसी धर्मगुरू को १२ से ज्यादा भी पत्नियाँ थी। उदा. हजरत इब्राहीम को २ पत्नियाँ थी। हजरत सुलेमान को ३०० और श्री कृष्णजी को १६००० से अधिक पत्नियाँ थी। केवल हज़रत मुहम्मद (स.) को १२ पत्नियाँ थी। उनके नाम इस प्रकार हैं:
(१) हज़रत ख़दीजा (र.अ.), (२) हज़रत सौदा (र.अ.),
(३) हज़रत आयशा (र.अ.),(४) हज़रत हफ्सा (र.अ.),
(५) हज़रत उम्मे सलमा (र.अ.),
(६) हज़रत उम्मे हबीबा (र.अ.),
(७) हज़रत जैनब बिन्ते हजश (र.अ.),
(८) हज़रत जैनब बिन्ते खज़ीमा (र.अ.),
(९) हज़रत जुवैरिया (र.अ.),(१०) हज़रत सूफ़िया (र.अ.)
(११) हज़रत रेहाना(र.अ.) और
(१२) हज़रत मैमूना (र.अ.)

६.पवित्र वेदों में छठा उल्लेख है कि नराशंस ऊँट की सवारी करेंगे।

चूँकि हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का/मदीना में रहते थे, जिसके चारों ओर रेगिस्तान है और जैसा कि ऊँट रेगिस्तान में यात्रा करने के लिए सर्वोत्तम साधन है। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी उँटों की सवारी की।
ब्राह्मण को ऊँट की सवारी करने की अनुमति नहीं है। इसलिए इससे यह भी पता चलता है कि पवित्र नराशंस ब्राह्मण नहीं थे और न ही भारत वासी हैं। (राजस्थान प्राचीन काल में रेगीस्तान (Desert) नही था)।

७. पवित्र वेदों में सातवां उल्लेख है कि पवित्र नराशंस की लोग प्रशंसा करेंगे।

माइकल एच. हार्ट द्वारा लिखित पुस्तक "The most 100 influential persons in history." में लेखक ने हज़रत मुहम्मद (स.) को पहले स्थान पर रखा है। अर्थात ऐसी ऐतिहासिक व्यक्ति जिनसे दुनिया के सभी लोग सबसे अधिक प्रभावित हुए वे एकमेव व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) ही हैं।
अज़ान (मस्जिदों में नमाज़ को बुलाने के लिए दी जाने वाली पुकार), में मुसलमान, दिन भर में पाँच निर्धारित समय पर, सारी दुनिया में लाउड

स्पीकर पर बुलंद आवाज़ में हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम लेते हैं।
जैसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर समय धीरे-धीरे परिवर्तन होता है उसी प्रकार नमाज और अजान का समय भी बदलते रहता हैं, इस कारण हर मिनट और हर सेकेंड को विश्व में कही कही अजान दि जाती हैं। और उनका (हज़रत मुहम्मद (स.)) नाम पुकारा जाता है। अतः मानव वंश में हज़रत मुहम्मद (स.) ही सर्वाधिक प्रशंसनीय व्यक्ति हैं।

८.पवित्र वेदों में भविष्यवाणी की गई है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को निम्नलिखित चीजें देगाः
(अ) १० फूल. मालाएँ (ब) १०० सोने के सिक्के
(क) ३०० घोड़े और (ड) १०,००० गाएं

पिछले ४००० वर्ष से वेदों की यह भविष्यवाणी विद्वानों के लिए एक अनबूझ पहेली ही बनी रही। सब इसे समझ पाने में असमर्थ थे। हज़रत मुहम्मद (स.) पर ध्यान केंद्रित करने से इसका हल इस प्रकार से मिला :

अ) हज़रत मुहम्मद (स.) के पास १० समर्पित अनुयायी थे जिन्हें 'अशरए मुबश्शिरह' कहा जाता है। 'अशरा' का अरबी भाषा में अर्थ है १०, और 'मुबश्शिरह' का अर्थ है 'जिन्हे खुश खबरी दे दी गई' (स्वर्ग की)

इन दस भाग्यशाली लोगों के नाम इस प्रकार हैः

(१) हज़रत अबू बक्र (र.अ.), (२) हज़रत उमर (र.अ.), (३) हज़रत उस्मान (र.अ.), (४) हज़रत अली (र.अ.), (५) हज़रत तल्हा (र.अ.), (६) हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास (र.अ.), (७) हज़रत सईद बिन जैद (र.अ.), (८) हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ (र.अ.), (९) हज़रत अबू ओबैदा बिन जर्राह (र.अ.), और (१०) हज़रत जुबैर(र.अ.)

यह १० व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) के अत्यंत समर्पित अनुयायी थे और उनके लिए प्राण त्यागने के लिए उत्सुक रहते थे और हमेशा उनके पास रहने की कोशिश करते थे। इसलिए इनकी तुलना दस फूल-मालाओं से की गई हैं।

ब) हज़रत मुहम्मद (स.) के लगभग १०० अनुयायी ऐसे थे जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया, अपना देश, अपना परिवार, अपना व्यापार आदि, और पैगंबर मुहम्मद (स.) की मस्जिद के निकट बसेरा किया। इन्हें 'असहाबे सुफ्फह' (चबूतरे वाले) कहा जाता है।
इन १०० लोगों ने इस्लाम की शिक्षाओं को सीखने और दूसरों को सिखाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। चुँकि, इस्लाम की शिक्षाओं को फ़ैलाने में यह लोग बहुत महत्वपूर्ण थे इसलिए इनकी 'सोने के सिक्कों' से तुलना की गई।

क) शुरू में मक्का के लोगों ने इस्लाम और मुसलमानों को व्यक्तिगत स्तर पर समाप्त करने का प्रयास किया। अतः हज़रत मुहम्मद (स.) मदीना नामक एक सुरक्षित स्थान को प्रवास कर गये, और वहां से ईश्वर का संदेश फैलाने की ज़िम्मेदारी को पूरा करते रहे। इस चरण में, मुसलमानों और इस्लाम का विनाश करने के लिए मक्का के लगभग एक हजार सैनिकों ने मदीना पर आक्रमण कर दिया । स्वयं का बचाव करने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके ३१३ अनुयायियों ने १००० आक्रमणकारियों का मुकाबला किया और उन्हें परास्त कर दिया।(इस युद्ध में १४ अनुयायी मारे गए थे।) इन ३१३ लोगों के साहस और बहादुरी को देखते हुए इनकी घोड़ों से तुलना की गई है, जो कि साहस और बहादुरी का प्रतीक माना जाता है। इस लिए वेदों के उल्लेख में इनकी ३०० घोड़ों से उपमा दी गई है (यानी तश्बीह दी गई है)।

ड)हज़रत मुहम्मद (स.) के मक्का से मदीना प्रवासन (Migration) के आठ वर्षो के बाद, जब मक्का के लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ की गई अपनी शांति-संधि को तोड़ा तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने १०,००० अनुयायियों को एकत्रित

किया और मक्का की ओर कूच (प्रस्थान) किया। बिना किसी युद्ध या रक्तपात के, उन्होंने मक्का पर जीत प्राप्त कर लिया। चूंकि इन १०,००० अनुयायियों ने कभी भी किसी व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुँचाया जैसा कि गायें किसी को नुकसान नहीं पहुँचाती इसलिए वेदों में इनका गायों के रूप में उल्लेख किया गया है।

- जैसा की पैगंबर सिर्फ सदुपदेश ही दे सकता है, वह इस्लाम की शिक्षाओं को समझने और उन पर नियमित रूप से अनुसरण करने के लिए बुद्धि नहीं दे सकता, परंतु ईश्वर ऐसा कर सकता है। इसलिए जो भी कर्म १० अशरए मुबश्शिरह, १०० असहाबे सुफ्फह, ३१३ रक्षकों और १०,००० अनुयायिओं ने किए, वह सब ईश्वर द्वारा दी गई समझ की ही देन है। इसलिए हम ऐसा कह सकते हैं कि ईश्वर ने उन्हें उपहार के रूप में हज़रत मुहम्मद (स.) या पवित्र नराशंस को दिया।

९.पवित्र वेदों में उल्लेख है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

जब मक्का के लोग इस्लाम के प्रसार को रोकने में असफल रहे, तो उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) की हत्या करने की योजना बनाई। एक रात, चालीस परिवारों से चालीस योद्धाओं ने हज़रत मुहम्मद (स.) के घर को घेराव किया ताकि सुबह के समय जब वह बाहर आते हैं, तो वे उन्हें मार सकें।
उस रात, हज़रत मुहम्मद (स.) अपने घर से बाहर निकले लेकिन दुश्मन उन्हें नहीं देख सके। हज़रत मुहम्मद (स.), उनके बीच से होते हुए निकले और मदीना प्रवासन कर गये।
उस समय मक्का की जनसंख्या लगभग ६०,००० की थी और वे सभी हज़रत मुहम्मद (स.) के शत्रु थे। यह एक चमत्कार ही था के हज़रत मुहम्मद (स.) अपने दुश्मनों के बीच से होते हुए सुरक्षित मदीना पहुँच गये। इसलिए ईश्वर ने यह कहा कि वह पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

- ऊपर दिए गये (Facts & Figure) को देखते हुए, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, पंडित धर्मवीर उपाध्याय और कई अन्य विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पवित्र नराशंस और हज़रत मुहम्मद (स.) एक ही हैं ।

- नराशंस, कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में और विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निम्न पुस्तकों का अध्ययन करें:

1. Kalki Autar and Hazrat Muhammad (pbuh),
   by Dr. Ved Prakash Upadhyay,
   Publisher:-Jamhoor Book Depot,
   DEOBAND.(U.P) Pin: 247554
2. Narashansa aur Antim Rishi,
   by Dr. Ved Prakash Upadhyay
   Publisher:-Jamhoor Book Depot,
   DEOBAND. (U.P) Pin: 247554
3. Muhammad (s) aur Bhartiya Dharm Granth, by Dr. M.A. Shrivastav
   Publisher:- Madhur Sandesh Sangam,
   E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar,
   New Delhi-110025.
   E-mail:
   madhursandeshsangam@yahoo.com
4. Muhammad (pbuh) in World Scripture,
   by A. H. Vidyarthi
   Publisher: Adam Publishers &
   Distributors, 1542, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002.
   www.adambooks.com

इस्लाम क्या है ?

पवित्र कुरआन में ईश्वर, अपने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.) को आदेश देता है कि:

"ए मुहम्मद! ईश्वर ने तुम को जिस धर्म का पालन करने का आदेश दिया है, यही आदेश उस ने मनू (हज़रत नूह) को दिया था और यही आदेश उस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा को दिया था। और उस ने सभी को यह भी आदेश दिया था कि धर्म का (अच्छी तरह) पालन करो और एक दूसरे से मत भेद ना रखो।"

(पवित्र कुरान ४२:१३)

तो इस्लाम धर्म कोई नया धर्म नहीं है। यही धर्म मनु (हजरत नुह) का था, यही धर्म हज़रत इसा और मुसा का था। और यही धर्म हर पैगम्बर का रहा है। तो यह धर्म कोई नया धर्म नहीं है बलके ईश्वर के आदेश के अनुसार है। यह शुरू से था और आखिर तक रहेगा। जब जब इस में परिवर्तन हुआ तो ईश्वर ने नये अवतार (पैगम्बर) भेजे ताकि धर्म के बिगाड़ को दूर कर दें। हज़रत मुहम्मद (स.) इसी सुधार की आखरी कड़ी हैं। अब इस कलयुग के यही कल्कि अवतार हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) के बाद अब कोई पैग़म्बर या अवतार नहीं आएगा।

इस्लाम क्या सिखाता है?

इस्लाम पांच बातों का आदेश देता है।

१. ईश्वर को एक मानो और हज़रत मुहम्मद (स) को ईश्वर का आखरी पैग़म्बर मानो।

२. ईश्वर की दिन में पाच बार भक्ति करो। (नमाज़ पढ़ो।)

३. साल में एक धनवान हैं तो साल में एक बार आप के नफा (Profit) का २.५% ग़रीबों को दान करो।

५. अगर आप धनवान हैं तो जीवन में एक बार मक्का शरीफ की यात्रा करो।

ईश्वर को एक मान कर सिर्फ उसी की भक्ति क्यों की जाए?

हिन्दु धर्म के अनुसार:-

१. अथर्ववेद में है कि,
"स एक एक एकवृदेक एव।"
"ईश्वर एक है, अकेला है, अमर है।"
(अथर्ववेद १:५२:१४)

२. ऋग्वेद में
ईश्वर ही जीवन देता है, मृत्यू देता है और इसी की कृपा से सब प्राणि जीवित हैं।"
(अथर्ववेद १३:०३:०५)

३. उपनिषद में लिखा है,
"एकम् एवम अद्वितीयम्"
"किसी भी साझेदारी के बिना वह अकेला है।"
(चंडोग्य उपनिषद ६:०२:०१)

४. वेदों में लिखा है,
"ऐ (ईश्वर को) माननेवालों, ईश्वर के सिवा किसी और की भक्ति न करों। ईश्वर एक ही है।"(ऋग्वेद ८:०१:०१)

५. वेदान्त के मुताबीक ब्रम्हसुत्र इस तरह है।
"एकम् ब्रम्ह व्दितीय नास्ते नेह ना नास्ते किंचन।"
"ईश्वर एक है, उसके सिवा कोई नहीं है। जरासा भी (पूजने के लायक) नहीं।"

६. अथर्ववेद में कहा हैं,
"ईश्वर एक ही है, जो मणुष्यों के मन कि सारी छुपी बातों को जानता है।" (अथर्ववेद १०:०६:२६)

मुस्लिम धर्म के अनुसार:-

पवित्र कुरआन कहता है, एक ईश्वर के सिवाय कोई भी पुजा के योग्य नही है।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब के पहले खंड में,

सिख धर्म के अनुसारः-

श्री गुरू ग्रंथ साहिब के पहले खंड में, जीपोजीच्या साहब का पहला पद है- एक ही ईश्वर अस्तित्व रखता है, जो वास्तविक रचनाकार है, वह डर और द्वेष रहित है, इसे किसीने जन्म नहीं दिया, वह आदि है और वह (पालता) संभालता है। वह महान तथा दयालु है।"

सिख अपनी प्रार्थना में 'वाह हे गुरू' का पाठ करते हैं। इसका अर्थ है, एक सच्चा ईश्वर।

पारसी धर्म के अनुसारः-

पारसी ईश्वर को अहुरा-मजदा के नाम से पुकारते हैं। उनकी धार्मिक पुस्तक दासातीर कहती है, ईश्वर एक है और कोई भी उसके बराबर नहीं है।

ईसाई और यहूदी धर्म के अनुसारः-

पवित्र बाइबल कहती है;

१. "ओ! इजरॉइल (याकुब पैगम्बर) के बच्चो सुनो, हमारा मालिक ईश्वर है, वह एक है।" (पवित्र बायबल ६:४)

२. "मैं ईश्वर हूँ, मेरे सिवाय कोई भी तुम्हारा बचाव नहीं कर सकता है।" (पवित्र बायबल ४३:११)

३. "मैं ही ईश्वर हूँ, मेरे सिवाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।" (पवित्र बायबल ४६:६)

४."(मालिक) हमारा ईश्वर एक है" (ड्युटरोनोमी ६:४, मार्क १२:२६:३२)

५. "तुम एक ईश्वर की पुजा करो और उसी के आदेश के अनुसार धार्मिक सेवा करो।"(मॅथ्यु ४:१०)

६. "तुम्हें ये वस्तुएँ इसलिए दिखाई गई थी, ताकि तुम्हें मालूम हो कि हमारा मालिक ईश्वर ही है। उसके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं। आज के दिन तुम इस बात को स्वीकार करो (मानलो) की हमारा मालिक ईश्वर ही है। स्वर्ग में ऊपर और पृथ्वी पर नीचे, कोई दूसरा नहीं" (ड्युटरोनोमी ४:३५,३६)

तो ईश्वर एक है उसी ने ही हमें पैदा किया। वही हमें पालता है तो हम उसे क्यों ना मानें? उसे छोड़ कर उन देवी देवताओं की पूजा करना जिन्हों ने ना हमें जीवन दिया ना हमें पालते हैं, यह पाप नहीं तो और क्या है?

नमाज़ क्या है?

- चौदह साल के वनवास के दौरान एक बार श्री हनूमान जी ने श्रीराम जी से पूछा कि मैं ईश्वर की प्रार्थना कैसे करू तो श्रीराम जी ने श्री हनुमान जी को इस तरह ईश्वर की प्रार्थना करने का तरीका सिखाया।

प्रथमः ताराकः चयवादितिय दंड मुच्यते तीतय कुंडला कारमचतुर्थ अर्धे चंन्द्रकः
पंचं बिन्दू संयुक्तः ओम मित्यजयोती रूपक
(श्रीराम तत्व अमृत)

पहले सीधे खड़े हो जाओ। फिर दंडवत (सजदा) करो, फिर सीधे बैठ जाओ, फिर आधे चांद की तरह सामने झुक जाओ। फिर सीधे बैठ जाओ और ईश्वर की याद में ध्यान लगाओ।

वेदों के अनुसार ईश्वर कि भक्ति का सर्वश्रेष्ठ तरीका 'अष्टांग' हैं। अष्ट का अर्थ है आठ। अंग का अर्थ है शरीर के आठ भागों से जमीन को छुकर ईश्वर कि प्रार्थना करना। शरीर के आठ भाग इस प्रकार है। माथा, नाक, दोनों हात, दोनों घुटने, दोनों पैर के पंजे, अष्टांग को अरबी में सजदा कहते है और अंग्रेजी में Postration कहते है। बायबल में भी इस प्रकार कि भक्ति को सर्वोत्तम माना गया है। (जेनीसीस १७:३, नंबर २०:०६, जोशो ५:१४, मॅथ्यु २६:३६)

भक्ति का जो तरीका श्रीरामजीने श्री हनुमानजीं को बताया था और वेदों मे 'अष्टांग' के नाम से जाना जाता है, मुसलमानों कि नमाज इन्हीं दो

भक्ति के तरीकों का मिला जुला रूप है। ऊपर बताए गए तरीके और नमाज़ में सिर्फ इतना फर्क है कि नमाज़ में खड़े होने के बाद पहले झुकते हैं फिर सजदा करते हैं। और श्रीराम जी ने पहले दंडवत (सजदा) करने और फिर झुकने के लिए कहा। बाकी सीधे खड़े होना और धरती पर बैठ कर ईश्वर का ध्यान करना एक जैसा है।

- तो नमाज़ कोई नया इबादत का तरीका नहीं है। यह तो सदियों से ऋषी मुनी करते रहे हैं।
ऋग्वेद में है कि "हे ईश्वर! हम तेरी प्रार्थना सुबह, दोपहर और सूरज डूबने के बाद करते है। तो हमें अपना सच्चा भक्त बना।"
(ऋग्वेद १०-१५१-६५)

वेदों में 'त्रिकालसंध्या' के बारे में लिखा है यानी दिन में तीन बार ईश्वर कि भक्ति करनी चाहिए। सुबह, दोपहर, शाम। तो दिन में तीन बार ईश्वर को याद करने का शताब्दीयों से नियम रहा है। इस्लाम में इसे पांच बार कर दिया है। जो दो वक्त अतिरिक्त हैं वह शाम (ईशा) और रात (असर) का है।

- मेरी अपनी समझ से (जो ग़लत भी हो सकती है) इस के दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि अब प्रार्थना एक दम आसान कर दी गई है। सिर्फ पांच से दस मिनट में यह खतम हो जाती है। जबकि पहले ध्यान लगाने में बहुत समय लग जाता था। और दुसरी वज़ह यह है कि पहले ज़माने में शाम को अंधेरा छाते ही लोग खा-पी कर सो जाते थे। अब लोग आधी रात तक जागते हैं।

- कुरान शरीफ़ में ईश्वर कहता है कि हम नें मनुष्य को सिर्फ अपनी प्रार्थना (इबादत) के लिए ही बनाया है। (पवित्र कुरान ५१:५६) कुरान में यह भी है कि ईश्वर की याद से ही मन को शांति मिलती है (पवित्र कुरान १३:२८)। इसलिए हर मनुष्य को ईश्वर की दिन में पांच बार प्रार्थना जरूर करनी चाहिए।

साल में एक महीने का उपवास क्यों करें?

- लोगों को शराब की लत क्यों होती है? क्योंकि उन का अपने आप पर नियंत्रण (Control) नहीं होता। इसी लिए एक शराबी इस बात को जानता है कि वह ग़लत कर रहा है। फिर भी अपने आप से हार कर शराब पीता है।

शराब, सिगरेट, जुआ और ऐसे बहुत से गलत काम वही छोड सकता है जिसका अपने आप पर और अपनी इच्छाओं पर मज़बूत नियंत्रण (Control) होगा।

- भूख इन्सान कि सबसे बड़ी कमज़ोरी है। भूख से बेताब हो कर लोग चोरी करते है, डाका डालते है, और औरतें भीक मॉंगती है या अपनी इज्ज़त बेचती है। जो इन्सान भूख लगने पर भी अपने आप पर नियंत्रण रख सकता है और साधारण इन्सानों की तरह दिन गुजार सकता है। वह अपनी हर इच्छा पर नियंत्रण कर सकता है।
रोज़ा या उपवास यह विधी अपने आप पर नियंत्रण करने की एक ट्रेनिंग है।

- मनु ने हिन्दू धर्म के मानने वालों को एक महीने का उपवास रखने का आदेश दिया था।
(मनुस्मृती पाठः६-श्लोक क्र. २४)

हज़रत ईसा (स.) ने खुद ४० दिन का उपवास रखा और ईसाइयों को भी उपवास रखने का आदेश दिया था। (Mathew 17:21, Mark 9-29) और हज़रत मुहम्मद (स.) तो खुद बहोत ज्यादा रोजा रखते थे। मगर ईश्वर ने साधारण लोगों के लिए सिर्फ एक महिने का रोजा फर्ज (Compulsory) किया।

मुक्ती पाने और अपने इच्छाओं पर नियंत्रण करने के लिए पहले ज़माने में लोग घोर तपस्या करते थे। और समाज से कट कर सन्यास ले लेते थे। मगर ईश्वर ने अब इसे सरल कर दिया है। समाज में रहते हुए एक महिने का रोजा रखने से हमारे अंदर अपने आप पर नियंत्रण

रखने कि, उतनी ही शक्ति पैदा होती है, जितनी एक तपस्वी घोर तपस्या करके अपने आप में पैदा करता है। इसलीए इस सरल उपाय पर अवश्य अमल करना चाहिए। और अपनी इच्छाशक्ति (Will Power) को मज़बूत बनाने और सत्य के रास्ते पर मज़बूती के साथ चलने के लिए हमें एक महिने का उपवास जरूर रखना चाहिए।

हज क्यों करे?

मनु के युग में भयंकर बाढ़ आया था। इस में मनु और उसके कुछ साथी बच गए थें। और सारी दुनिया के लोग मारे गए थे।

उस के बाद यह दुनीया मनु के बेटों से फिर बसी। हम सब मनु की ही संतान है। मनु कि संतान धरती के चाहे जीस क्षेत्र में बसे हो, उसने उस भयंकर बाढ़ को जरूर याद रखा। आप इंटरनेट पर सर्च करके पता करे तो आप को मालुम होगा के विश्व के हर देश में इस बाढ़ की कथा जरूर मौजूद है। मगर इस बात से आश्चर्य भी होता है की हर देश की कथा में कुछ ना कुछ असमानता (Difference) जरूर है। ऐसा क्यों?

- जब एक पिता के सब संतान है। और बाढ़ भी एक ही था। तो इस कथा में मतभेद क्यो हुआ? इस का कारण है Communication error.
- आप अगर दस लोगों को एक सर्कल के रूप में बैठा दें। फिर एक व्यक्ति के कान में चुपके से कुछ कहें और उसे कहें कि आप कि कहीं हुई बात वह अपने पड़ोसी व्यक्ति के कान में चुपके से कह दे। इस तरह हर व्यक्ति अपने पड़ोसी व्यक्ति के कान में आप कि बात कहता रहें। जब दसवे व्यक्ति तक बात पहुंचेगी और आप उस से वही बात सुनेंगे जो आप ने पहले व्यक्ति के कान में कहा था। तो आप को यह सुनकर बहोत आश्चर्य होगा की दसवाँ व्यक्ति आप की बात बिल्कुल तोड़मरोड कर बताऐगा। और ऐसी बात कहेगा जिस का अर्थ आप की कही हुई बात से बिल्कुल अलग होगा।

यह एक सत्य है, और मैनेजमेंट का नियम भी। इसीलीए मैनेजमेंट में Verbal Communication से मना किया जाता है।

बाढ़ कि कथा के साथ भी यही हुआ और विश्व के अन्य धर्मों के साथ भी यहीं हुआ। हज की एक वजह यह भी है कि इस्लाम धर्म के साथ भी ऐसा न हो।

ईश्वर ने विश्व के सभी लोगों को जिवन में एक बार धरती के केन्द्र (Center of Earth) पर जमा होकर एक साथ इबादत (Prayer) करने का हुक्म दिया है। इसी को हज कहते है। विश्व के लोग जब तक एक जगह जमा होते रहेंगे। और एक दूसरे की गलती तथा धर्म के बिगाड़ को दूर करते रहेंगे तो फिर धर्म के कानून कभी नहीं बदलेंगे।

इसी लिए बायबल में भी हज यात्रा का उल्लेख है।(Pslam 84-1-12).और हमने मक्का और मक्तेश्वर के पाठ में पढ़ा था कि वेदों में भी मक्का, काबा शरीफ का वर्णन है और इस की यात्रा के लिए भी कहा गया है। मगर वह लोग जिन्हें धर्म का ज्ञान था उन्होंने साधारण लोगों को हमेशा देव मालावी कथाओं में बहलाए रक्खा। और पवित्र वेदों के (Basic Concept) को कभी समझने नहीं दिया।

हज के और कई कारण (Reason), लाभ (Benefit) तत्वज्ञान (Philosophy) है। उनका इस छोटी सी पुस्तक में विवरण करना मुश्किल है।

पवित्र कल्कि अवतार कौन हैं ?

कल्कि अवतार का तथ्य क्या हैं ?

- पवित्र पुराण के अनुसार कुल २४ अवतार हैं उनमें गौतम बुद्ध २३ वें अवतार हैं। भगवत पुराण के अनुसार २४ वें अवतार का नाम कल्कि होगा।

- गौतम बुद्ध ने अपने शिष्य 'नन्दा' से कहा, "ऐ नन्दा! न मैं पहला बुद्ध हूँ और न आखरी। मेरे बाद एक और बुद्ध आएगा, उसका नाम 'मैत्रेय' होगा।" (गोस्पेल ऑफ बुद्ध-लेखकः केरस, पृष्ठ-२१७)

- स्वामी विवेकानंद, गुरू नानक जी और हिन्दू धर्म के अनेक बड़े विद्वान, जैसे पंडित सुन्दरलाल, श्री बलराम सिंह परिहार, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. रमेश प्रसाद गर्ग, पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी, श्री. किशोरी लाल भगत यह मानते हैं कि अवतार का अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर खुद धरती पर जन्म लेगा। अवतार का अर्थ है, ईश्वर का प्रतिनिधि (Representative), ईश्वर का संदेशवाहक या पैगम्बर।"
  (हज़रत हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्म ग्रन्थ, लेखकः डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव)

अवतार किस लिए आते हैं?

- यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
  अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृज्याम्यहम् । (गीता)

  गीता के अनुसारः जब पापी लोगों का समाज पर प्रभुत्व हो जाता है, और दुनिया में अराजकता फैल जाती है, उस समय अवतार आ कर पापी शक्तिओं का नाश करता है। और दुनिया में पुनः शांति और भाईचारा स्थापित (establish) करता है, और भक्तों की प्रतिष्ठा को बहाल करता है।

अन्तिम अवतार किस युग में आएगा?

- Osborne द्वारा लिखित "Encyclopedia of history" के अनुसारः धरती की आयु ४५५ करोड़ साल है।

- हिन्दू धर्म के अनुसार काल को 4 युगों में बांटा गया है।

- पहला युग सतयुग है, इसे कृत युग भी कहते हैं। यह 17 लाख 28 हज़ार साल लम्बा है।

- दूसरा युग त्रेता युग है, यह १२ लाख ९६ हज़ार साल लम्बा है।

- तीसरा युग है द्वापर युग। यह ८ लाख ६४ हज़ार साल लम्बा है।

- आखरी युग कलयुग है। यह ४ लाख ३६ हज़ार साल लम्बा है।

- वर्तमान युग कल युग है, और इसके लगभग ५१०० साल बीत चुके हैं।

- इत्थ कलौ गतप्राये जनेषु खर धर्मणि-१
  धर्म त्राणाय सत्वेन भगवानवतरिष्यति-२

  अंतिम अवतार जिनका नाम कल्कि अवतार है, कल युग में जन्म लेंगे। (भगवत पुराण १२:२:२७)

कल्कि अवतार किस साल में जन्म लेगा?

- पणछस्सयं वस्संपण मासजंद गमिय वीर णिवुइ दो
  सगराजो सो कल्कि चतुणवतिय महिप सगमासं
  (त्रिलोक सागर पृष्ठ ३२)

  जैन धर्म के 'त्रिलोक सागर ग्रन्थ' (लेखक नेमी चंद) के अनुसार महावीर स्वामी की मृत्यु के ६०५ साल ५ महीने बाद कल्कि अवतार ने जन्म लिया।
- उत्तर पुराण के अनुसारः महावीर स्वामी के मृत्यु

के १००० साल बाद कल्कि अवतार ने जन्म लिया.
(Gunbhadra Antiquary Vol x UP. 143)

- महावीर स्वामी की मृत्यु की अनुमानित वर्ष ५०० B.C. (इसा पुर्व) है। इसलिए कल्कि अवतार के जन्म की अनुमानित तिथि ५०० A.D (इसवी) है।

कल्कि अवतार किस दिन जन्म लेंगे?

- द्वादश्यां शुक्ल पक्षरस्य माघवे माघवमः-१
  जातो दद्दशुतुः पुत्रं पित्रौहश्टमानसौ-२
  (कल्कि पुरान, २:१५)

कल्कि अवतार का जन्म माधव महीने की १२ तारीख अर्थात पुर्णीमा से दो दिन पहले होगा।

कल्कि अवतार कहाँ जन्म लेंगें?

- शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भविष्याम्यहम्।
  (कल्कि पुराण, २:४)

कल्कि अवतार का जन्म संभल ग्राम में होगा।

कल्कि अवतार का किस परिवार से संम्बन्ध होगा?

- शम्भल ग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः-१
  भवने विष्णुयशसः कल्कि प्रादुर्भाविष्यति-२
  (कल्कि पुराण, १२:१८२)

कल्कि अवतार प्रमुख पुजारी के घर में पैदा होगा। उसके पिता का नाम विष्णुयश होगा।

- सुमत्या विष्णुयशसा गर्भधत्त वैष्णवम् ।
  (कल्कि पुराण २:४ एवं २:११)

कल्कि अवतार के मॉ का नाम सुमति होगा।

कल्कि अवतार की विषेशताएं क्या होंगी?

- अश्वमाशुगमारूमह्य देव दत्तं जगगत्पतिः-१
  असिनासाधु दमनमष्टैश्वर्य गुणान्वितः-२ ।
  (भगवत पुराण, १२ अस्कंध, २:१६)

भागवत पुराण के अनुसारः आठ गुणों से सजा कर ईश्वरदूतों ने उसे एक तेज रफ्तार घोड़ा और तलवार उसके हाथ में दी, ताकि वह दुनिया की रक्षा सभी उपद्रवी तत्वों से कर सके।

- भागवत पुराण के अनुसारः कल्कि अवतार, अंतिम अवतार होगा। (१:३:२४ भागवत पुराण)

- कल्कि पुराण के अनुसारः परशुराम एक पहाड़ी पर कल्कि अवतार को ज्ञान देंगे।

- कल्कि पुराण के अनुसारः कल्कि अवतार उत्तर दिशा की ओर जायेगा और फिर वापस आ जायेगा।

- कल्कि पुराण (२:५) के अनुसारः कल्कि अवतार के चार साथी होंगे, जो शैतानों को काबू करने में कल्कि अवतार की मदद करेंगे।
  चतुर्भिभ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्।
  (कल्कि पुराण, २:५)

- कल्कि पुराण (२:७) कहते हैं कि कल्कि अवतार की ईशदुतों के व्दारा सहायता की जाएगी।

- भागवत पुराण का कहना है कि, कल्कि अवतार अति उत्तम व्यक्तित्व का होगा।
  विचरन्नाशुना क्षोण्यां हयेनाप्रतिमद्युतिः-१
  नृपालिंगप्तछदो दस्युन् कोटिशोनिहनिष्यातिः-२
  (भगवत पुराण १२, अस्कंध २, १:२०)

- अथतेषां भाविष्यन्ति मनांसि विशदानिवै ।
  वसुदेवांगरागति पुण्यगंधा निलस्पृशाम ।
  (भगवत पुराण १२:२:२६)

भगवत पुराण का कहना हैं कि, कल्कि अवतार का शरीर सुगन्धित होगा, और उसके चारों ओर सुगंधित हवा हो जाएगी।

- अष्टा गुणाः पुरूषं दीप्यन्ति
  प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुत च
  पराक्रमश्‍ च बहुभाषिता च
  दानं यथा शक्ति कृतज्ञता च ।।
  (भागवत पुराण १२:२)

भागवत पुराण में यह उल्लेख किया हैं कि कल्कि अवतार आठ निम्न लिखित गुणोंवाला होगाः ज्ञान (knowledge), सम्मानित वंश (honoured family), आत्मसंयम (Self control), दिव्य ज्ञान (Divine knowledge), बहादुरी (Braveness), संयत भाषण (balanced speech), सबसे बड़े दानी (extremely charitable), और अत्याधिक आभारी (great obliged)। कल्कि अवतार वैदिक धर्म की स्थापना करेगा।

अब जब हमें कल्कि अवतार के बारे में बहुत सी जानकारियां हैं, तो आइये हम यह पता करें कि कल्कि अवतार कब आने वाले हैं या आ कर चले भी गए।

विश्लेषण (Analysis):

- जब अमेरिका ने अफग़ानिस्तान पर B-52 बम वर्षक विमानों से हमला किया था तो वे अफग़ानिस्तान की भूमि को बिना छुए वापस लौट गए थे। अमेरिका ने सफलतापूर्वक कई बार पाकिस्तान में तालिबान के ठिकानों पर उपग्रह-निर्देशित प्रक्षेपास्त्रों (Satellite guided missiles) के साथ हमला किया था।

तो हम एक ऐसे युग में हैं, जहाँ एक आदमी दुनिया के दूसरी तरफ हमला कर के धरती पर बगैर कदम रखे वापस आ सकता है। और एक मानव रहित उपग्रह-निर्देशित मिसाइल (Satellite guided missiles) ३००० किलोमीटर की दूरी से सटीकता के साथ दुश्मन के ऊपर गिराया जा सकता है।

अनुसंधान और विकास का काम इतना तेज़ है कि थोड़े समय के बाद लोग आकाश में उपग्रह पर रखे लेज़र बंदूकों के माध्यम से लड़ेगे। क्या हम अभी भी उम्मीद करते हैं कि दुनिया के रक्षक "अंतिम अवतार" जन्म लेंगे और घोड़े और तलवार से दुश्मन से लड़ेंगे?

ऐसा होने के लिए, पहले पूरी मानव जाति को उसकी वैज्ञानिक प्रगती के साथ नष्ट होना होगा। और फिर जो लोग बचेंगे उन्हें अपना जीवन पुनः शुन्य की स्थिति से फिर से आरंभ करना होगा और फिर उन कुछ लोगों में जो बच गए, उन के बीच में यदि कोई दुष्ट व्यक्ति है, तो वह तलवार से समाप्त हो सकता है।

लेकिन क्या अगर ऐसा होता है तो, दुनिया के उद्धारक के आने का क्या फ़ायदा है? इसलिए अगर हम एसा सोचते हैं तो हम ग़लत हैं।

- अरबी लोग ११०० ई. से सोडा और कोयले के मिश्रण से विस्फोटक बनाते और प्रयोग करते आ रहे हैं। विस्फोटक के बनते ही तलवार का महत्व कम हो गया था। इसलिए कल्कि अवतार का जन्म ११०० A.D के पहले ही हुआ होगा।

- उत्तर पुराण और त्रिलोक सागर के अनुसार महावार स्वामी की मौत के १००० वर्षों के बाद कल्कि अवतार को जन्म लेना है, जो कि लगभग ५०० ई. है। अब हमें यह पता करना चाहिए कि किसी संत या प्रसिद्ध धार्मिक व्यक्तित्व ने भारत में ५०० ई. में जन्म लिया या नहीं?

- २४ वां अवतार कोई अज्ञात व्यक्ति नहीं हो सकता, उसे प्रसिद्ध होना ही चाहिए, जैसे गौतम बुद्ध, श्री राम और श्री कृष्ण बहुत प्रसिद्ध हैं, और हर कोई उन्हें जानता है। लेकिन दुर्भाग्य से हम ऐसे किसी प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा अवतार को नहीं जानते जिन्होंने भारत में ५०० ई के आसपास जन्म लिया हो।

- यह एक संयोग है कि कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद साहब के जन्म का समय एक ही है। चलिए पुष्टी के लिए कल्कि अवतार को जानने और हज़रत मुहम्मद साहब की पहचान कल्कि अवतार के रूपमें करने के लिए, हम निम्नलिखित जानकारियां और दिव्य पुराणों में की गई भविष्यवाणियों का मिलाप करते हैं।

- जन्म तिथि
- जन्म स्थान
- पारिवारीक पृष्ठभुमि
- पिता का नाम
- माता का नाम
- उनके शिक्षक या ज्ञान के स्त्रोत
(Their teacher or source of knowledge)
- उनकी जिम्मेदारियां
- उनके सहयोगि
- उनका बुनियादी व्यक्तित्व
- आखरी अवतार होना
- अन्य संम्बधित पूर्वानुमान

जन्म का दिन:

कल्कि पुराण (२:२५) के अनुसार कल्कि अवतार माधव महीने की १२ तारीख अर्थात चौदहवी के (पूर्णिमा) चॉद से दो दिन पहले जन्म लेगा। हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म का दिन १२ रबी उल अव्वल है। यह दिन भी चौदहवीं के चॉद से दो दिन पहले है।

जन्मस्थान:

हिंदुस्तान में संभल नाम का कोई स्थान नहीं है। दो स्थानों के नाम इससे मिलते जुलते हैं जो हैं संभलपुर और संभार झील। लेकिन वहॉं कोई नहीं जानता कि अवतार या पैगंम्बर जैसे किसी बड़े व्यक्ति ने वहॉं जन्म लिया है। डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय (संस्कृत विव्दान प्रयाग विश्वविदयालय) कहते हैं के 'संभल' स्थान की विशेषता है, स्थान का नाम नहीं। वैदिक संस्कृत में 'सम' का अर्थ है 'शांति' अर्थात संभल वह स्थान है जहॉं हर किसी को शांति मिले। हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का में पैदा हुए जिसका नाम 'बलदिल अमीन' है (कुरआन ६५:३)। बलद का अर्थ है शहर और अमीन का अर्थ है शांति। प्रसिद्ध पुस्तक 'Encyclopedia Britanica' एक प्रसिद्ध पुस्तक में भी मक्का को अमन (शांति) का शहर कहा गया है। मक्का शहर में इन्सान और जानवर सब के लिए शांति है। धार्मिक कानून के मुताबिक कोई भी मक्का शहर में इन्सान और जानवर किसी की भी हत्या नहीं कर सकता है, और ना पेड़ -पौधे तोड़ सकता है।

परिवारिक पृष्ठभूमि:

भगवत पुराण के अनुसार कल्कि अवतार का जन्म पुरोहित के घर में होगा। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब जो हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा हैं, मक्का के मुख्य धर्मगुरू और काबा के न्यासी (trusty) भी थे।

माता पिता का नाम:

कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश होगा। जिसका अर्थ है विष्णु या ईश्वर के उपासक। हज़रत मुहम्मद (स.) के पिता का नाम अब्दुल्लाह है, जिसका भी अर्थ है ईश्वर का उपासक या आज्ञाकारी। कल्कि पुराण के अनुसार, कल्कि अवतार की मॉं का नाम 'सुमति' होगा अर्थात शांतिपूर्ण (peaceful) और विचारशील। हज़रत मुहम्मद (स.) की मॉं का नाम था 'आमना', जिस का अर्थ भी शांतिपुर्ण, और विचारशील है।

- कल्कि पुराण के अनुसार, कल्कि अवतार अपने शहर से उत्तर की ओर जाएंगे और फिर वापस आएंगे। हज़रत मुहम्मद (स.) अपने पैतृक शहर 'मक्का' से उत्तर की तरफ 'मदीना' चले गए थे, और आठ साल बाद वह फिर से 'मक्का' विजयी हो कर लौटे।

- कल्कि पुराण का कहना है कि कल्कि अवतार पहाड़ पर जाएंगे वहॉं परशुराम से ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हज़रत मुहम्मद (स.) 'ग़ार-ए-हिरा' नामक गुफा में शांति और चिंतन के लिए जाते थे। ४० साल की उम्र में उन्हें ईश्वरदूत 'हज़रत जिब्रईल' के द्वारा पहाड़ की गुफा में पहली बार कुरआन का ज्ञान

प्राप्त हुआ।

• भगवत पुराण (१२:२:६) का कहना है कि कल्कि अवतार दुनिया के रक्षक होंगे। पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है कि "हमने हज़रत मुहम्मद (स.) को 'रहमत-उल-लिल आलमीन' के रूप में भेजा है।" (कुरआन २१:१०७)। 'रहमत' का अर्थ है 'कृपा (blessing)', और 'आलमीन' का मतलब है 'दुनिया' (सम्पूर्ण सृष्टि)। इस का मतलब है कि हज़रत मुहम्मद (स.) से दुनिया को शांतिपूर्ण जीवन, मुक्ति, मोक्ष, और सफलता के लिए मार्गदर्शन मिलेगा।

• कल्कि पुराण (२:५) के अनुसारः कल्कि अपने चार साथियों की मद्द से 'काली' अर्थात शैतान को परास्त करेंगे। डब्लू. एल. लैंगर (Encyclopedia of world history page :184) का कहना है कि हज़रत मुहम्मद और उनके चार साथियों हज़रत अबू-बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने इस्लाम के संदेश को आम किया और पुरानी अमानवीय परंपरा की समाप्ति की।

• कल्कि पुराण कहते हैं, "कल्कि अवतार की युद्धक्षेत्र में स्वर्गदूतों के द्वारा सहायता की जाएगी।"

हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके साथी बद्र की लड़ाई में ३१३ थे, जबकि दुश्मन के पास १००० सैनिक थे। खंदक की लड़ाई में मुसलमान ३००० थे, जबकि दुश्मन सैनिक २५००० से अधिक थे। इन दोनों ही लड़ाईयों में, और अन्य कई बार दुश्मन पर विजय के लिए स्वर्गदूतों के द्वारा सहायता की गई। पवित्र कुरआन भी इसकी पुष्टि करता है। देखें अध्याय (३:१२३:११५), (८:६), (२३:६) आदि।

• भगवत पुराण (१२:२२१) के अनुसार कल्कि अवतार के शरीर की गंध सुगंधमय होगी, जिस की वजह से उनके चारों ओर हवा सुगंधित हो जाएगी।

हदीस में है कि एक बार जब हज़रत मुहम्मद (स.) सो रहे थे, तब हज़रत उम्मे सलमा (रज़ी) ने आपका पसीना जमा कर लिया। जब हज़रत मुहम्मद (स.) जागे तो उन्हों ने पूछा, मेरे पसीने के साथ तुम क्या करोगी? हज़रत उम्मे सलमा ने कहा, हम इसे एक खुश्बू के रूप में इस्तेमाल करेंगे। जो भी हज़रत मुहम्मद (स.) से हाथ मिलाता था उसका हाथ दिनभर सुगंधित रहता था। (शमाइले तिरमिज़ी पृष्ठः२०८)।

हज़रत मुहम्मद (स.) के दास, हज़रत अनस (रज़ी.) ने कहा, हम हमेशा जान जाते थे, कि हज़रत मुहम्मद (स.) कब अपने कक्ष से निकलते हैं, क्योंकि तब सारी हवा भी सुगन्धित हो जाती थी।

("Life of Mohammad" By Sir William Muir - page No. 342)

भगवत पुराण के अनुसारः (खंड २, अध्याय २) में है कल्कि अवतार आठ विशेष गुण, अर्थात बुध्दिमत्ता (wisdom), सम्मानित वंश (honoured family), स्वंय पर नियंत्रण (Self control), दिव्य ज्ञान (divine knowledge), वीरता (braveness), अत्यंत दानशीलता (extremely charitable), मृदु भाषी (balance/sweet speech) और कृतज्ञता (gratefulness) आदि से सुसज्जित तथा संम्पन्न होंगे।

• गैर मुस्लिम लेखकों के व्दारा लिखित पुस्तकें भी हज़रत मुहम्मद (स.) के आठ गुणों की पुष्टि करती हैं;

1. Life of Mohammad by Sir William Muir.
   Published by Smith elder & co.(London)
2. Introduction of the speeches of Mohammad by Lane Poole.
   Published by MaCmillan & Co. (London)
3. Mohammad and Mohammad by R. Bos Worth Smith.

- भगवत पुराण (१२:२:१६) में है कि कल्कि अवतार को आठ गुणों के साथ तेज रफ्तार घोड़ा और तलवार भी दी जाएगी, जिससे वे दुराचारीयों का नाश करेंगे।
ईश्वर-दूत हज़रत जिब्रईलन (अ.स.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) को बुर्राक नामक तेज़ रफ्तार घोडा दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) के पास ७ घोड़े और ६ तलवारें थीं और उन्हें वह इस्लाम का सन्देश लोगों तक पहुँचाने तथा अत्याचारियों से लढ़ने के लिए इस्तेमाल करते थे।

- भगवत पुराण (१:३:२४) में है कि कल्कि अवतार अंन्तिम अवतार होंगे।
दिव्य कुरआन में भी हजरत हज़रत मुहम्मद (स.) को आखरी पैंगम्बर कहा गया हैं।
(कुरआन ३३:४०)

- पुराण के अनुसारः कल्कि अवतार वैदिक धर्म की स्थापना करेंगे।

- जब मनु (हज़रत नुह) के लोगों ने उनकी बात नहीं मानी तो एक बहुत बडे सैलाब ने सारी दुनिया को घेर लिया और इसमें सिर्फ मनु के अनुयायी ही बच पाए। अगर मनु और उनके अनुयायी बाढ के बाद वैदिक धर्म को मान रहें हैं तो इस्लाम एक वैदिक धर्म ही है और कुरआन की यह आयत इसकी पुष्टि करती हैं:

- ''ए मुहम्मद! ईश्वर ने तुम को जिस धर्म का पालन करने का आदेश दिया है, यही आदेश उस ने मनू (हज़रत नूह) को दिया था और यही आदेश उस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा को दिया था। और उस ने सभी को यह भी आदेश दिया था कि धर्म का (अच्छी तरह) पालन करो और एक दूसरे से मत भेद ना रखो।''
(पवित्र कुरआन ४२:१३)

- कल्कि अवतार के बारे में वर्णित सारी विशेषताएँ हज़रत मुहम्मद (स.) से मेल खाती है, इसलिए संस्कृत विव्दान जैसे डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. एम.ए.श्रीवास्तव और पंडीत धर्मवीर उपाध्याय का कहना है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ही वे कल्कि अवतार हैं जिनकी सभी लोग अब तक प्रतिक्षा कर रहे है। अधिक जानकारी के लिए कृपया निम्न लिखित पुस्तकों का अध्ययन करें।

१. ''कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद''
(डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय)
२. ''नराशंस और अंतिम ऋषि''
(डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय)
३. ''हज़रत मुहम्मद(स.) और भारतीय धर्म ग्रंथ''
(डॉ. एम.ए.श्रीवास्तव)
४. "Muhammed in world scripture"
(ए.एच. विद्यार्थी.)

- हमने जो भी चर्चा यहाँ की वह कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (स.) के बीच का रिश्ता बताती है। लेकिन कोई यह कह सकता है कि हमने जो भी चर्चा की वह हमारी कल्पना मात्र थी, और यह कोई ठोस सबूत नहीं है कि कल्कि अवतार ही हज़रत मुहम्मद (स.) हैं या हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में पवित्र पुराणों में भविष्यवाणी की है।

- अतः कल्कि अवतार की पहचान की पुष्टि करने के लिए और हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में पुराणों की भविष्यवाणी को समझने के लिए हम हिंदू धर्म की और कुछ पुस्तकों का हवाला देते हैं, वह इस तरह है:

१.अज्ञान हेतु कृत मोहमदान्धकार नांश विधांय हित दो दयेत विवेक। (श्रीमद भगवत पुराण २:७२)
अर्थातः मोहम्मद के ज़रिए (अज्ञान का) अंधेरा दूर होगा और ज्ञान और spirituality परवान चढ़ेगी।

२.एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः।।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः।।
(भ.पू. पर्व-३, खण्ड-३ अध्याय ३, श्लोक-५)

अर्थातः भविष्य पुराण के अनुसार, ''किसी दूसरे देश में एक नबी अपने साथियों के साथ आएगा। उसका नाम 'महामद' होगा, और वह एक मरूस्थलीय (desert) जगह पर प्रकट होगा''

३.पंडित धरमवीर ने एक प्रसिद्ध किताब 'अन्तिम ईश दूत' लिखी जो १६३२ में ''नैश्नल प्रिंटिंग प्रेस, दरयागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। अपनी इस पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि काग-बुसंडी और गरुड़, श्री राम के साथ काफी समय तक रहे, और न वह केवल उनकी शिक्षाओं का पालन करते थे बल्कि वह श्री राम की इन शिक्षाओं को आम लोगों तक पहुँचाते भी थे। तुलसी दास जी ने उन्हीं शिक्षाओं का अपने संग्राम पुराण के अनुवाद में उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि शंकर जी ने अपने पुत्र से भविष्य के धर्म के बारे में इन शब्दों में बतायाः

तुलसी दास जी की भविष्यवाणीः

यहां न पक्षपात कछु राखहुं वेद पुराण, संत मत भाखहुं	बिना किसी भेदभाव के में संतों, वेदों और पुराणों की शिक्षाएं बता रहा हुँ।
सवंत विक्रम दोऊ अनङा। महाकोक नस चतुर्पतङा	वह सातवी शताब्दी संवत में जन्म लेगा और उसके साथ चार चमकते सितारे होंगे।
राजनीति भव प्रीती दिखावै आपन मत सबका समझावै	वह तर्क (बुद्धि और प्रेम) के साथ शासन करेगा और अपनी शिक्षाओं से लोगों को सहमत (Convince) करेगा।
सुरन चतुसुदर सतचारी। तिनको वंश भयो अति भारी	उसके चार खलीफा होंगे जिनके द्वारा उसके अनुयायी बहुत बढ़ेंगे।
तब तक सुन्दर मद्दिकोया। बिना महामद पार न होया।	जब तक ईश्वरीय पुस्तक पृथ्वी पर है, बिना
तबसे मानहु जन्तु भिखारी। समस्थ नात एहि व्रतधारी।	महामद का अनुसरण किए कोई सफल ना होगा आम लोग, भिखारी और जीव-जंतु महामद का नाम लेने से ईश्वर को मानने वाले बनेंगे।
हर सुन्दर निर्माण न होई तुलसी वचन सत्य सच होई	तुलसी दास सत्य कहते हैं कि उसके मोहम्मद (स.) बाद

संग्राम पुराण, स्कन्द १२, कांड ६ः पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीदास (हज़रत मुहम्मद (स) और भातीय धर्म ग्रंथ, डॉ.एम.ए.श्रीवास्तव, पेज न. १८)

४.उपनिषदों में भी हज़रत मोहम्मद (स.) के बारे में भविष्यवाणीयाँ हैं। नागेन्द्रनाथ बसू द्वारा संपादित विष्वकोष के द्वितीय खण्ड में उपनिषदों के वे श्लोक दिए गए हैं जिस में इस्लाम और पैगम्बर का ज़िकर (उल्लेख) है। इन में से कुछ प्रमुख श्लोक और उनके अर्थ इस प्रकार हैंः

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरूणा दिव्यानि धत्त।
इल्लल्ले वरूणा राजा पुनर्दुदः।
हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरूणो मित्रस्तेजस्कामः ।।१।।
होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्राः।
अल्लो ज्येष्टं श्रेष्ठं परमं पूर्ण ब्रह्माणं अल्लाम् ।।२।।
अल्लो रसूल महामद रकबरस्य अल्लो अल्लाम् ।।३।।
(अल्लोपनिषद १,२,३)

अर्थात, "इस देवता का नाम अल्लाह है। वह एक है। मित्रा और वरूण आदि उसकी विशेषताएँ हैं। वास्तव में अल्लाह वरूण है जो तमाम सृष्टि का बादशाह है। मित्रो! उस अल्लाह को अपना पूज्य समजो। वह वरूण है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों के काम सँवारता है। अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा पवित्र है। मुहम्मद (स.) अल्लाह के श्रेष्ठतर रसुल हैं। अल्लाह आदि, अंत और सारे

संसार का पालनहार है। तमाम अच्छे नाम अल्लाह के लिए ही हैं। वास्तव में अल्लाह ही ने सुरज, चाँद और सितारे पैदा किए हैं।"

आदल्ला बूक मेककम अल्लबूक निखादम ।।४।।	इस श्लोक का अनुवाद नहीं हो सका।
अला यज्ञन हुत हुत्वा अल्ला सुर्य्य चंद्र सर्व नक्षत्रा ।।५।।	अल्लाह की युगों युगों से पूजा हो रही है, सूरज, चाँद और तारे सब अल्लाह की रचना है।
अल्लो ऋषीणां सर्व दिव्यां इन्द्रायपूर्व माया परमन्तरिक्षा ।।६।।	अल्लाह संतों का रक्षक है, वह सबसे महान है, अल्लाह सब वस्तुओं से पहले है और सारे ब्रह्माण्ड से अधिक विलक्षण है।
अल्लः पृथिव्या अन्तरिक्ष्जं विश्वरूपम् ।।७।।	अल्लाह का (उसकी शक्तिओं का) दर्शन पृथ्वी, आकाश और सौर्य मंडल की सभी वस्तुओं को होता है।
इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला ।।८।।	अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उस जैसा कोई नहीं।
ओम अल्ला इल्लल्ला अनदि	ऊँ अर्थात अल्लाह। हम उसका आरंभ और उसका अंत नहीं पता कर सकते। सारी बुराइयों से रक्षा करने के लिए हम ऐसे अल्लाह से प्रार्थना करते हैं।
दे स्वरूपाय अथर्वण श्यामा हुही जनान पशून सिद्धान जलवरान् अदृश्टं कुरू कुरू फट	ऐ अल्लाह! बुरे, गुनाहगार, और लागों को गुमराह करने वाले धार्मिक लोगों(पुरोहितों) का नाश कर, और पानी के नुकसान पहुँचाने वाले किटाणुओं (Virous & Bacterious) से हमारी रक्षा कर।
असुरसंहारिणी हुं हीं अल्लो रसुल महमदरकबरस्य अल्लो	अल्लाह दानव शक्ति का नाश करने वाला है, मुहम्मद (स.), अल्लाह के पैगंबर हैं।
अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला	अल्लाह तो अल्लाह ही है, उस जैसा कोई नहीं। (अल्लोपनिषद ४-१०)

गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित "कल्याण" पत्रिका के विषेशांक "उपनिषद् अंक" में २२० उपनिषदों का वर्णन है। इन २२० उपनिषदों में अल्लोपनिषद १५ वे स्थान पर है। डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी अल्लोपनिषद का वर्णन अपनी पुस्तक "वैदिक साहित्य-एक विवेचना" में किया है, जो प्रदीप प्रकाशन से १६८६ में प्रकाशित हुई।

- हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में भविष्यवाणीयां केवल हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में ही नहीं है बल्कि हर धर्म में हैं। अन्य धर्मों के ग्रन्थों की भविष्यवाणीयां इस प्रकार हैं:

यहूदी धर्म में भविष्यवाणी:

- में उनके लिए उनके भाईयों के बीच में से (मूसा की तरह) एक नबी को उत्पन्न करूँगा; और मैं अपना वचन उसके मुंह में डालूँगा; और जिस बात की उसे मैं आज्ञा दुंगा, वही वह उनको (मनुष्य-जाती को) कह सुनाएगा।

(Old Testament, Deuteronomy 18:18)

ईसाई धर्म में भविष्यवाणी:

येशु मसीह पवित्र बाइबिल में कहते हैं;

- मैं तो तुम्हें पाप से प्रायश्चित करने (Baptism) के लिए पानी से बपतिस्मा देता हुँ। परंन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझसे शक्तिषाली है, मैं उसकी जूती उठाने योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग (by force) से बप्तिसमा देगा। (St. Matthew 3:11)
- मूल हिब्रु बाइबिल (Old Testament), के सुलेमान (Solomon) की किताब (अध्याय५, श्लोक १६) कहते है:

  हिक्को मुमिताकीम वे कुल्लो मुहम्मदीम जेहदूदेह व जेहरई बयना जेरूसलेम

  (Old Testament, book Solomon, Ch. No.5, Verse No.16)

  अर्थात "उसके बोल कितने मीठे हैं, वह बहूत प्यारा है। ऐ जेरूसलेम की बेटिओं, हज़रत मुहम्मद मेरा प्यारा और मेरा दोस्त है" (हिब्रु भाषा में नाम के साथ इम आदर के लिए लगाया जाता है, इसलिए यहॉ पर नाम मुहम्मदिम आया है।)

बौध्द धर्म में भविष्यवाणी:

- दिव्य पुराण में है कि गौतम बुध ईश्वर के २३ वें अवतार हैं। बुध ने अपने भक्त नंदा से कहा 'हे नंदा!, इस दुनिया में मैं पहला बुद्ध नहीं हूँ और ना ही मैं आखरी हूँ। आने वाले समय में, इस दुनिया में एक और बुद्ध आएगा, जो सच्चाई और दानता सिखाएगा। शुद्ध और पवित्र शिक्षाएं देगा। उसका दिल निर्मल होगा। वह ज्ञानी होगा। वह लोगों का नेतृत्व करेगा और सभी लोग उससे मार्गदर्शन लेंगे। वह सत्य सिखाएगा। वह दुनिया को जीवन का सरस रास्ता देगा, जो शुद्ध और पूर्ण होगा। हे नंदा, उसका नाम मैत्रेय होगा।'

  (Gospel of Buddha by Carus, page 217)

- डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय अपनी किताबें (दो पुस्तकें जिनका पहले उल्लेख हुआ है) सिद्ध कर चुके है कि इन पवित्र धार्मिक पुस्तकों में सभी भविष्यवाणियाँ हज़रत मुहम्मद के लिए ही हैं।

• यह सब लिखने का उद्देश क्या है?

यदि हम विदेश जाएँ जहाँ पर हर एक नया और अपरिचित हो, ऐसे में हमें यदि मालूम हो के उन्ही में से एक व्यक्ति हमारे देश का है तो उसके विषय में बिना कुछ जाने ही दोस्ती, सहानभुति और आकर्षण का एहसास होता है। क्योंकि उस व्यक्ति और हमारे बीच समानता है, और वह है मातृभूमि।

- यह समानता का विचार दो अपरिचितों के बीच की दूरी को कम करता है। ऐसा ही उस समय भी होता है जब हम अपने और दूसरे धर्मों के बीच समान बातों को जानें। अब हमने जाना के हिन्दू धर्म के पवित्र नराशंस/कल्कि अवतार और इस्लाम के हज़रत मुहम्मद (स.) एक ही हैं। यह समानता का एहसास हिन्दु-मुस्लिम के बीच के द्वेष को कम कर देगा। यह जानकारी हमें आम लोगों के बीच फैलाना चाहिए। जिससे उनके बीच भेद भाव कम हो और मानव जीवन में शांति आए और संसार के लोग समृद्ध जीवन व्यतित करें।

पुस्तक का सारांश
Summery of the Book

१. ईश्वर एक है। निराकार है। हमें बस उसकी ही भक्ति व उपासना करनी चाहीए।

२. लोगों को धर्म का ज्ञान देने ईश्वर ने हर देश और हर युग में पैगम्बर भेजे, जिन की कुल संख्या लगभाग १,२४,००० है। उन में से कुछ नाम इस तरह हैं।

१. हज़रत आदम (अ.स.)
(जिन्हें ब्रम्हा भी कहा गया।)
२. हज़रत नूह (अ.स.)(जिन्हें मनु भी कहा गया।)
३. हज़रत इब्राहीम (अ.स.)
(जिन्हें अबिराम और ब्रम्हा भी कहा गया।)
४. हज़रत इस्माईल (अ.स.)
(जिन्हें अथर्ववेद में अथर्वा कहा गया।)
५. हज़रत इस्हाक (अ.स.)
(जिन्हें अथर्ववेद में अंगरिका कहा गया।)
६. हज़रत मुहम्मद (स.)
(जिन्हें वेद और पुराणों में नराशंस, कल्कि अवतार, महामे ऋषी, महामद, अदम इत्यादि कहा गया।)
७. हज़रत ईसा (अ.स.)
८. हज़रत मूसा (अ.स)
(भविष्य पुराण में हज़रत ईसा (अ.स.) और हज़रत मूसा (अ.स.) का विवरण है।

इन सब पैगम्बरों का उल्लेख बाइबल, कुरआन वेद और पुराणों में है। इस लिए हमें इन सब को सच मानना चाहिए और इन का आदर करना चाहिए।

३. हमारा जनम एक बार हुआ है। अब जो हमारी मृत्यु होगी वह भी एक बार ही होगी। फिर दूसरा जन्म नहीं होगा। हाँ मरने के बाद परलोक में ईश्वर हमें फिर ज़िंदा करेगा।

४. मरने के बाद इन्सान के कर्मों के अनुसार कयामत तक आराम या तकलीफ होगी।

५. कयामत में कर्मों का हिसाब किताब होगा। एक ईश्वर को माना और अच्छे कर्म किए तो स्वर्ग मिलेगा। एक ईश्वर को माना और बुरे कर्म किए तो कुछ समय के लिए नरक की सजा होगी मगर सज़ा पूरी होने पर स्वर्ग मिलेगा।

६. अगर एक ईश्वर के साथ और बहुत सारे पैगम्बर, वली-अल्लाह, महापुरूष या देवी देवता को ईश्वर माना या ईश्वर कि तरह धन और मुक्ती देने वाला माना और उन की पूजा की, और अच्छे कर्म भी किए तो इसी संसार में उसका फल मिलेगा। मरने के बाद एक ईश्वर को ना मानने वालों के लिए सिर्फ नरक ही हैं।

७. सभी धार्मिक ग्रंथो का आदर करना चाहिए।

८. हज़रत मोहम्मद (स.) आखरी नबी या पैगम्बर या अवतार है। उनके बाद अब कोई पैगम्बर या अवतार नहीं आऐगा। हज़रत इसा और हज़रत मेहदी अगर धरती पर आए तो भी हज़रत मुहम्मद (स.) को ही मानने वाले होंगे।

९. पवित्र कुरान में ईश्वर ने कहा है कि मैं ने (ईश्वर ने) जो धर्म की शिक्षा हज़रत मोहम्मद को दी है वही उस ने हज़रत इब्राहीम और सभी पैगम्बरों को दिया था। तो इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है।

१०. हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा है कि ईश्वर ने मुझे सर्व श्रेष्ठ आचरण धरती के सभी लोगों को सिखाने के लिए भेजा है। इस लिए वह जो हज़रत मुहम्मद (स.) को पैग़म्बर मानते हैं उनके आचरण भी सर्व श्रेष्ठ होने चाहिऐं।
(हदीस मोत्ता)

११. ईश्वर ने कहा है कि यह संसार मेरा परिवार है इसलिए ईश्वर की उपासना का एक तरीका उस के परिवार की सेवा करना भी है। (हदीस)

पवित्र वेद और पवित्र कुरआन के एकसमान श्लोक

(ईश्वर कि कृपा के श्लोक)

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• न भोजा मम्रुनं न्यर्थमीयुनं रष्यिन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः। इदं यिव्दश्चं भुवनं स्वश्चैतत्सर्व दक्षिणैभ्यो द्दाति। (ऋग्वेद १०:१६७:८) दानशील लोग अमर हो जाते हैं, वे न तो बर्बाद होतें हैं और न दुःख, क्लेश, भय से पीड़ित होते हैं। दान इन दाताओं को इस विश्व एवं स्वर्ग लोक की सुविधाएं प्रदान करता है।	• अल्लजी-न युन्फिक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लयलि वन्नहारि सिर्रवं-व अलानि-यतन् फ लहुम् अजूरूहुम् अिन-द रब्बिहिम् व ला खवफुन् अलयहिम् व ला हुम् यहजनून (कुरआन २:२७४) जो लोग अपने माल रात-दिन खुले और छिपे ख़र्च करते हैं उनका बदला उनके रब के पास है और उनके लिए किसी ख़ौफ और रंज की बात नहीं।
• सइद् भोगो यो गृहवे ददात्यन्न कामाय चरते कृशाय। अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम।। (ऋग्वेद १०:११७:३) जो निर्धनों और अभाव से पीड़ितों की सहायता के लिए दान करता है उसका भला होता है, उसके शत्रु भी उसके मित्र बन जाते हैं।	• वज्ज़रा-इ वल काज़िमीनल-गयज वलूआफ़ि-न अनिन्नासि वल्लाहु युहिब्बुल-मुहसिनीन (कुरआन ३:१३४) जो प्रत्येक दशा में अपने माल ख़र्च करते हैं चाहे बुरे हाल में हों या अच्छे हाल में, जो ग़ुस्से को पी जाते हैं और दूसरों के कुसूर को माफ़ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत प्रिय है
• यह एक इद् विद्यतेवसुं मर्ताय दाशुषे (ऋग्वेद १:८४:७) जो परमेश्वर एक है वही दानशील मनुष्य को बहुत प्रकार जीविका देती है।	• व अन्फिक़ू खयरल्-लिअन्फ़ुसिकुम् (कुरआन ६४:१६) अपने माल ख़र्च करो, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। • इन् तुक्रिज़ुल्ला-ह कर्-जन् ह-स-नंय्युज़ाअिफ़हु लकुम् व यग्फिर् लकुम् (कुरआन ६४:१७) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ाकर देगा और तुम्हारे क़ुसूरों को माफ़ करेगा।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• पवमान ऋतं बृहच्छुं ज्योतिरजीजनत्। (ऋग्वेद ९:६६:२४) पावक विधान ने अति उज्जवल ज्योति को जन्म दिया और काले अंधकार को नष्ट किया।	• किताबुन् अन्जल्नाहु इलय-क लितुख्रिजन्ना-स मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि (कुरआन १४:१) ऐ मुहम्मद! यह एक किताब है जिसको हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है ताकि तुम लोगों को अँधेरों से निकालकर प्रकाश में लाओ, उनके रब की मेहरबानी से, उस ईश्वर के मार्ग पर जो प्रभुत्वशाली और अपने-आप में प्रशंसनीय है
• स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व (यजुर्वेद.३:१५) तू ही कर्म कर और तू ही उसका फल भोग।	• अल्ला तंजिरू वाजिरतु वविज्-र उखरा (कुरआन ५३:३८) वहाँ कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।

पापियों को चेतावनी

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति (ऋग्वेद १:१६४:३६) जो उस ब्रहम को नहीं जानता वह वेद से क्या करेगा।	• युज़िल्लु बिही कसीरंव-व यह्दी बीही कसीरन् - वमा युज़िल्लु बिही इल्लल्-फ़ासिक़िन इस प्रकार अल्लाह एक ही बात से बहुतों को गुमराही में डाल देता है और बहुतों को सीधा मार्ग दिखा देता है। और उससे गुमराही में वह उन्हीं को डालता है जो फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं। (कुरआन २:२६)
• उत त्व पश्यन्त ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रुणोत्ये नाम। (ऋग्वेद १०:७१:४) बुद्धि हीन लोग ग्रंथ देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते।	• वलहुम् अअ्-युनुल-ला-युब्सिरू-न बिहा व लहुमूआजानुल्-ला-यस्मअू-नबिहा-उलाइ-क-कँल् अन्आमि बल हुम अजल्लु (कुरआन ७:१७६) उनके पास दिल है मगर वे उनसे सोचते नहीं। उनके पास आँखे हैं मगर वे उनसे देखते नहीं। उनके पास कान हैं मगर वे उनसे सुनते नहीं। वे जानवरों के समान हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गए-गुज़रे, ये वे लोग हैं जो ग़फ़लत में खोए गए हैं।
• मा चिदन्यद्वि शसंत सखायो मा रिषण्य। (ऋग्वेद ०८:०१:०१) हे मित्रों परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना न करो तो तुम्हारी हिंसा न होगी।	• अल्ला तअ-बुदू इल्लल्ला-ह इन्नी अखाफु अलयकुम्-ब- यवमिन् अलीम (कुरआन ११:२६) कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो नहीं तो मुझे आशंका है कि तुमपर एक दिन दर्दनाक अज़ाब आएगा।''
• अन्धंतमः प्र विशन्ति येअसंभूतिमुपासते। ततो भुय अइव ते तमो य अ उ अम्भूत्यां रताः।। (यर्जुरवेद ४०:०६) जो असंभूति(अर्थात प्रकृति रूप जड पदार्थ) की उपासना करते हैं वे घोर अंधकार (अन्धन्तम नामक नरक) में प्रविष्ट होते हैं। और जो सम्भूति (जड पदार्थ व प्रकृति से भिन्न सृष्टि) में स्मरण करते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकारमें पड़ते हैं।	• कुलू अ-तअ-बुदू-न मिन् दुनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् जर्रंव-व ला नफअन् वल्लाहु हुवस्समीअुल-अलीम। (कुरआन ५:७६) इनसे कहो, क्या तुम अल्लाह को छोड़कर उसकी इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का अधिकार रखता है न नफ़ा का? हालाँकि सबकी सुनने और सब कुछ जाननेवाला तो अल्लाह ही है।

पापीयों को किस प्रकार दंड होगा

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः तॉस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः (यर्जुरवेद ४०:३) जो मनुष्य जीते हुए अपनी आत्मा का हनन करते हैं, वे मरने के पीछे अंधकारमय असुरों के लोक को जाते हैं।	• वल्लजीना क-फ-रू बिआयातिना हुम अस्हाबुल मश्अमा। अलैहिम नारूम मुअ् सदा (कुरआन ९०:१९-२०) और जिन्होंने हमारी आयतों को मानने से इनकार किया वे बाएँ बाज़ूवाले हैं, उनपर आग छाई हुई होगी।
• य आधाय चकमानाय पित्वो अन्नवान्त्सन् सफितायो पजरग्भुषे। स्थिरंमनः कृण्णुते सेवते पुरोतो चितृस मर्डितार न विन्दते।। (ऋग्वेद १०:११७:२) जो दुर्बल, अन्न के चाहने वाले, दरिद्रता से पीड़ित को, अन्न होते हुए भी सहायता नहीं देता उसको कष्ट आने पर कोई सुख नहीं मिलता।	• फ़-जालिकल्लजी यदुअ-अुल-यतीम व ला यहुज्जु अला तआमिल्-मिस्किन फवयलुल-लिल्मुसल्लीन (कुरआन ८९:१६:२०) और जब वह उसको आज़माइश में डालता है और उसकी रोज़ी उसपर तंग कर देता है तो वह कहता है मेरे रब ने मुझे अपमानित कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम अनाथ से आदर का व्यवहार नहीं करते, और मुहताज को खाना खिलाने पर एक-दूसरे को नहीं उकसाते, और मीरास का सारा माल समेटकर खा जाते हो, और धन के प्रेम में बुरी तर जकड़े हुए हो।
• ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः (ऋग्वेद ९:७३:६) सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर पाते।	• व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तकखिज़ूहु सबीलन् (कुरआन ७:१४६) मैं अपनी निशानियों से उन लोगों की निगाहें फेर दूँगा जो नाहक़ ज़मीन में बड़े बनते हैं, वे चाहे कोई निशानी देख लें कभी उसपर ईमान नहीं लाएँगे, अगर सीधा मार्ग उनके सामने आए तो उसे अपनाएँगे नहीं और अगर टेढ़ा मार्ग दिखाई दे तो उसपर चल पड़ेंगे, इसलिए कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाही करते रहे।
• केवलागो भवति केवलादी (ऋग्वेद १०:११७:६) जो अपनी कमाई अकेला खाता है वह पाप खाता है।	• लन्तनालुल्बिर्र-र ह्त्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिब्बून (कुरआन ३:९२) तुम नेकी को पहुँच नहीं सकते जब तक कि अपनी वे चीज़ें (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करो जो तुम्हें प्रिय हैं।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• माधमन्त्रं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाधो भवति केवलादी। (ऋग्वेद १०:११७:६) मूर्ख बिना परिश्रम अन्न (धन आदि) कमाता है। सत्य कहता हूं कि वह उसका विनाश ही है। न तो वह सन्तों को खिलाता है और न मित्र को। अकेला खानेवाला केवल पाप का भक्षण करता है।	• फक्कुर-क-बतिन, औइत्आमुन फी यौमिन ज़ी मस्ग़बा, यतीमन् ज़ा म मत्रबा। सुम्मा काना मिनल् लज़ीना आ-म-नू व-त-वासौ बिस्सब्री व त-वासौ बिल मर्हमा, उलाइका अस्हाबुल मै मना (कुरआन ६०:१३-१८) किसी गरदन को ग़ुलामी से छुड़ाना, या फ़ाक़े के दिन किसी निकटवर्ती अनाथ या धूल-धूसरित मुहताज को खाना खिलाना।

ईश्वर कौन हैं? (उसकी महानता का वर्णन)

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• न तस्य प्रतिमा अस्ति (यर्जुरवेद १०:७१:४) उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं हैं।	• लय-स कमिस्लिही शयउन (कुरआन ४२:११) संसार की कोई चीज़ उसके सदृश नहीं
• इंन्द्रं मित्रं वरूमग्निमाहु रथो दिव्यः स सुपर्णो गरूत्मान्। एकं सव्दिपा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। (ऋग्वेद११:११४:५) वह ईश्वर ही इन्द्र, मित्र, वरूण एवं आकाश में गुरूम्तान है वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है। विव्दान जन एक ब्रम्ह को ही अनेक नामों से पुकारते हैं।	•अल्मलिकुल्-कुद्दुसुरसलामुल-मुअमिनुल्-मुह्यमिनुल्-अजीजुल-जब्बारूल-मु-त-क कब्बिरू सुब्हानल्लाहि अम्मा युशृरिकून हुवल्लाहुल -खालिकुल-बारिउल्-मुसव्विरू लहुल अस्माउल-हुस्ना (कुरआन ५६:२४) वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनानेवाला और उसको लागू करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तसबीह (गुणगान) कर रही है, और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।
• विश्वस्य मिषतो वशी (ऋग्वेद १०:१६०:२) यह सब प्राणियों को वश में रखता हैं।	• व हुवल्काहिरू फ़ौ-क़ अ़िबादिही (कुरआन ६:१८) उसे अपने सेवकों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है
• पतिर्बभूथासमो जनानमेको विश्यवस्य भवनस्य राजा। (ऋग्वेद ०६:३६:०४) वह मणुष्यों का स्वामी है जिसके समान कोई नहीं, सब लोगों का एकमात्र शासक हैं।	• जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमू लहुल्मुल्कु ला इला-ह इल्ला हु-व (कुरआन ३७:५) वह जो ज़मीन और आसमानों का और तमाम उन चीज़ों का मालिक है जो ज़मीन और आसमान में हैं, और सारा पूर्वदिशाओं का मालिक।
• एकं सव्दिप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः। (ऋग्वेद ०१:१६४:४६) वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है, उस एक ब्रम्ह को विव्दान अनेक नामों से पुकारते हैं।	• कुलिद्उल्ला-ह अविद्उर् रह्मा-न अय्यम्-मा तद्अू फ़-लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना (कुरआन १७:११०) ऐ नबी, इनसे कहो, ''अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर, जिस नाम से भी पुकारो उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं ।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• यदंग दाशुशेत्वमग्ने भद्रं करिष्यसि त्वेत तत सत्यमंगिरः(ऋग्वेद०१:०१:०६) हे परमेश्वर आप सदाचारी को अच्छा फल देते हैं यह आपकी सद्प्रवृत्ति है।	• निअ्-म-तम्-मिन् अिन्दिना कजालि-क नन्ज़ी मन् श-कर। (कुरआन १६:६७) जो व्यक्ति भी अच्छा कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि हो वह मोमिन (ईमानवाला) उसे हम दुनिया में पवित्र जीवन-यापन कराएँगे और (परलोक में) ऐसे लोगों को उनके बदले उनके उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।
• त्वंनो अन्तम उत त्राता (ऋग्वेद०५:२४:०१) तू हमसे अत्यन्त समीप और रक्षक है।	• व नह्यु अक्-रबु इलयहि मिन् हबलिल् -वरीद (कुरआन ५०:१६) हमने इनसान को पैदा किया है और उसके दिल में उभरनेवाले वसवसों तक को हम जानते हैं। हम उसकी गरदन की रग से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं।
• यो मारयति प्राणयति यस्मान प्राणन्ति भुवानानि विश्वा। (अथर्ववेद१३:०३:०३) जो परमेश्वर मारता है और प्राण प्रदान करता है और जिस की कृपा से सभी जीव जीवित रहते हैं।	• अल्लाहुल्लजीख़-ल-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् (कुरआन ३०:४०) अल्लाह ही है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हें आजीविका दी, फिरवह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा।
• तमेव विव्दान् नबिभाया मृत्योः (अथर्ववेद.१०:८:४४) उस आत्मा ही को जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।	• अला इन्ना औलिया अल्लाहि, ला खौफुन अलैहिम वला हुम यहूजनून (कुरआन १०.६२) सुनो! जो अल्लाह के दोस्त हैं, जो ईमान लाए और जिन्होंने ख़ुदा से डरने की नीति अपनाई, उनके लिए किसी डर और रंज का अवसर नहीं है।
• अदब्धानि वरूणस्य व्रतानि (ऋग्वेद०१:२४:१०) ईश्वर के विधान नहीं बदलते। • न किरस्य प्रभिनन्ति व्रतानी (अथर्ववेद१८:०१:०५) ईश्वर के नियम कोई नहीं बदल सकता।	• ला तब्दी-ल लिकलिमातिल्लाहि (कुरआन १०:६४) अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं। • व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (कुरआन ४८:२३) यह अल्लाह की रीति (सुन्नत) है जो पहले से चली आ रही है और तुम अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन न पाओगे।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• इसे चित् तव मन्यवे वे पेते भियसा मही यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरूत्वां अवधोरर्चन्ननु स्वराज्यम।। (अथर्ववेद०१:८०:११) हे परमेश्वर ये लोक तेरे प्रताप से कांपते है। तू अपनी प्रताड़ना से दुष्कर्मी को मारता है और सत्कर्मी के लिए अपने राज्य में सत्कार करता हुआ सुख प्रदान करता हैं।	• व लिल्लाहि माफ़िस्समावाती व माफ़िलअर्ज़िलि-यज्जि-यल्लजी-न असाउ बिमा अमिलू व यज्ज़ि-यल्लजी-न अह-सनू बिल्हुस्ना (कुरआन ५३:३१) और ज़मीन और आसमानों की हर चीज़ का मालिक अल्लाहही है—ताकि अल्लाह बुराई करनेवालों को उनके कर्म का बदला दे और उन लोगों को अच्छा प्रतिदान प्रदान करे जिन्होंने अच्छी नीति अपनाई है।
• यो देवष्वधि देव एक आसीत्। (ऋग्वेद१०:१२१:०८) जो समस्त देवों का एक देव है।	• उल्लाईकल्लजी-न यद्अु-न यब्तगून इला रब्बिहिमुल-वसी-ल त। (कुरआन १७:५७) जिनको ये लोग पुकारते हैं वे तो ख़ुद अपने रब के पास पहुँच प्राप्त करने का वसीला ढूँढ रहे हैं कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।
• नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे। (ऋग्वेद१०:१०५:०८) ब्रम्ह तत्व से हीन यज्ञ तुझे (हे परमेष्वर) तनिक भी	• फवयलुलू-लिल्मुसल्लीन अललज़ीना-हुम् अन् सलातिहिम् साहून अल्लजी-न हुम् युराऊ-न। (कुरआन १०७:४,५,६) फिर तबाही है उन नमाज़ पढ़नेवालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़फ़लत बरतते हैं, जो दिखावे का काम करते हैं, और साधारण ज़रूरत की चीज़ें (लोगों को) देने से कतराते हैं।
• न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः। नोत स्ववृष्टि अस्य युध्यत एको अन्यच्च चकृषे विश्वमानुषक।। (ऋग्वेद०१:५२:१४) न पृथ्वी और आकाश उस परमेश्वर की व्यापकता की सीमा को पा सकते हैं और न अन्य ग्रह, और न आकाश से बरसने वाली वर्षा। उस एक के सिवाय कोई दूसरा इस जगत पर सामर्थ्य नहीं रखता।	• वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वलअर्ज। (कुरआन २:२५५) आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देनेवाला काम नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• स एक एक एकवृदेक एव। (अथर्ववेद०१:५२:१४) वह आप एक अकेला वर्तमान, एक ही है।	• कुल हुवल्लाहु अ-हद अल्लाहुस्समद (कुरआन ११२:१-२) "कह दो, वह अल्लाह है, यकता। अल्लाह निस्पृह एवं सर्वाधार है। "
• यस्यैमाः प्रदिशः (ऋग्वेद१०:१२१:०४) यह सब दिशाएं उसकी हैं।	• व लिल्लाहिल्-मशरिकु वलमगरिबु। (कुरआन २:११५) पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। जिस ओर भी तुम रुख़ करोगे, उसी ओर अल्लाह का रुख़ है। अल्लाह सर्वव्यापी और सब सुछ जाननेवाला है।
• तस्याम् सर्वा वक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह (ऋग्वेद१०:१२१:०४) चंद्रमा सहित यह सब नक्षत्र उसी के वश में हैं।	• व श्श्मूस वल क-म-र वन्नुजू-म मुसख़्खरातिम् -बिअम्रिही (कुरआन ७:५४) जिसने सूरज और चाँद और तारे पैदा किए, सब उसके आदेश के अधीन हैं। सावधान रहो! उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है।
• ऋग्वेद कहता है, 'ऐ विश्वास रखनेवालों! उसके सिवाय किसीकि भी उपासना मत करो। वही एकमेव ईश्वर हैं।' (ऋग्वेद ८:१:१) अथर्ववेद कहता है, 'ईश्वर एक है।' (अथर्ववेद १०:६:२६)	और बुहत-सा ग़नीमत कामाल उन्हें प्रदान कर दिया जिसे वे (जल्द ही) प्राप्त करेंगे। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है। (पवित्र कुराण ४८:१६)

ईश्वर को हर चीज़ का ज्ञान है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। (ऋग्वेद१०:८२:०३) जो हमारा पालक एवं उत्पन्न करने वाला है जो विधाता है वही जगत के सब स्थानों और लोगों को जानता है।	• अम्मय्यब्दउल्-खलक-सुम-म युईदुहू व मुय्यर्ज़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि। (कुरआन २७:६४) और वह कौन है जो प्रथम बार पैदा करता और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? और कौन तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी (इन कामों में हिस्सेदार) है? कहो कि लाओ अपना प्रमाण अगर तुम सच्चे हो। जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है। (कुरआन २:२५५) • कुल ला यअ-लमु मन् फिस्समावाति वल्अर्जिल्गयब इल्लल्लाहु। (कुरआन २७:६५) इनसे कहो, अल्लाह के सिवा आसमानों और ज़मीन में कोई ग़ैब (परीक्षा) का ज्ञान नहीं रखता।
• र्व तद् राजा वरूणो किचष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात (अथर्ववेद०४:१६:०५) जो आकाश और पृथ्वी के बीच है या जो कुछ उससे परे है उसे ईश्वर देखता है।	• यअ्-लमु मा यलिजु फ़िलअर्जि व मा यख़रूजु मिन्हा व मा यन्जिलु मिनस्समाइ व मा यअ-रूजु फ़ीहा। (कुरआन ५७:४) वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया और फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके ज्ञान में है जो कुछ ज़मीन में जाता हैऔर जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो। जो काम भी तुम करते हो उसे वह देख रहा है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्ताते सविता धरात्तात (ऋग्वेद१०:३४:१४) संसार का सृष्टा, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे सब जगह है। विशुवतशुचक्षुरूत विश्वतोमुखो (ऋग्वेद१०:८१:०३) परमेश्वर के नेत्र हर ओर हैं, उसका मुख हर तरफ है।	• फ अयनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि इन्नला-ह वासिअुन अलीम। (कुरआन २:११५) पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। जिस ओर भी तुम रुख़ करोगे, उसी ओर अल्लाह का रुख़ है। अल्लाह सर्वव्यापी और सब सुछ जाननेवाला है।
• वेद वातस्य वर्त्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः। वेक्ष ये अध्यासते।।(ऋग्वेद०१:२५:०६) यह सब ओर फैले हुए वायु के गुणवान रास्तों को जानता है ओर उन सब चीजों को जानता है जो उस वायु पर आश्रित हैं।	• व हुवल्लजी अर्स-लरीया-ह बुश्रम्-बय-न यदय रह्मतिही। (कुरआन २५:४८) और वही है जो अपनी दयालुता के आगे-आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर बेजता है।
• यो विश्वामि वि पश्यति भवना संच पश्चति। (ऋग्वेद१०:१८७:०४) वह ईश्वर सारे जगत को भली प्रकार जानता है।	• वल्लाहु यअ्-लमु मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि वल्लाहु बिकुल्लि शयइम्न् अलीम। (कुरआन ४६:१६) अल्लाह ज़मीन और आसमानों की प्रत्येक चीज़ को जानता है और हर चीज़ का ज्ञान रखता है।
• यस्तिष्ठति वरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम। व्दौ संनिष यन्मन्त्रयेते राजातद् वेद वरूणस्तृतीयः।। (अथर्ववेद ४:१६: २) जो खड़ा होता है, चलता है, जो धोखा देता है, जो छिपता फिरता है, जो दुसरे को कष्ट पहुंचाता है, जो दो मनुष्य खुफिया बात करते है, तीसरा ईश्वर इन सबको जानता है।	• यअ-लमु सिर्रकुम् व जह-रकुम् व यअ--लमु मा तक्सिबून। (कुरआन ६:३) वही एक अल्लाह आसमानों में भी है और ज़मीन में भी, तुम्हारे खुले और छिपे सब हाल जानता है और जो बुराई या भलाई तुम कमाते हो उससे ख़ूब परिचित है।
• वेद नाव समुद्रियः (अथर्ववेद १:२५:७) वह समुद्र की नौकाओं को जानता है।	• अ-लम् त-र अन्नल्फ़ुल-क तज्री फ़िल्बहरि बिनिअ-मतिल्लाहि। (कुरआन ३१:३१) क्या तुम देखते नहीं हो कि नौका समुद्र में अल्लाह के अनुग्रह से चलती है

सृष्टी का निर्माण

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• जनं मनुजातं। (ऋग्वेद १:४५:१) सब मनु की संतान हैं।	• या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़्नाकुम् मिन् ज-करिंव-व उन्सा (क़ुरआन ४६:१३) लोगो, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया।
• प्रजा पतिर्जनयति प्रजा इमाः (अथर्ववेद ७:१६:१) परमेश्वर इन सब सृष्टियों को उत्पन्न करता है।	• व ख़-ल-क़ कुल्-ल शयइन (क़ुरआन २५:२) जिसने हर चीज़ को पैदा किया
• सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा दस्कम्भने सविता द्यामदृहत्। (ऋग्वेद १०:१४४:१) परमेश्वर ने अपने यंत्रो से पृथ्वी को नियन्त्रित किया और सहारे के बिना, आकाश को अधर में स्थापित किया। (बिना आधार के आकाश स्थापित किया।)	• ख-ल-कस्समावाति बिगयरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्का फिल् अर्ज़िरवासि-य अन् तमी-द बिकुम (क़ुरआन ३१:१०) उसने आसमानों को पैदा किया बिना स्तंभों के जो तुम्हें नज़र आएँ। उसने ज़मीन में पहाड़ जमा दिए ताकि वह तुम्हें लेकर ढुलक न जाए।
• व्दिता विव्रे सनजा सनीडे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः। भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद रोदसी सुदंसाः।। (ऋग्वेद १:१६२:७) ऋषियों के द्वारा परमेश्वर ने परस्पर जुड़े हुए प्राचीन आकाश और पृथ्वी को पृथक-पृथक किया। फिर उत्तम कर्म वाले ने सुर्य के समान उन दोनों को स्थित किया।	• अ-व लम य-रल्लजी-न क-फ़रू अन्नस्-समावाति वलअर्-ज कानता रत्-कन् फ़-फ़तक़्नाहुमा (क़ुरआन २१:३०) क्या वे लोग जिन्होंने (नबी की बात मानने से) इनकार कर दिया है विचार नहीं करते कि ये सब आसमान और ज़मीन परस्पर मिले हुए थे, फिर हमने इन्हें अलग किया, और पानी से हर ज़िन्दा चीज़ पैदा की? क्या वे (हमारे इस रचनाकार्य की कुशलता को) नहीं मानते?
• ब्रम्हा भूमिर्विहिता ब्रम्ह द्यौरूत्तरा हिता। ब्रम्हे दमृर्ध्व तिर्यक् चान्तरिक्ष व्यचो हितम।। (ऋग्वेद १०:२:२५) ब्रम्ह व्दारा ही इस पृथ्वी की रचना की गई और ब्रम्ह द्वारा ही लोक (आकाश) ऊंचा धरा गया और ब्रम्ह ही ने ऊपर सब ओर विस्तृत अंतरिक्ष की रचना की है।	• वल-इन्-स-अल्तहुम् मन् ख-ल-कस्समावाति वल -अर्-ज व सख्ख-रश्शम्-स वलक-म-र ल-यकूलुन्नल्लाहु फ-अन्ना युअ-फकून (क़ुरआन २९:६१) अगर तुम इन लोगों से पूछो कि ज़मीन और आसमानों को किसने पैदा किया है और चाँद और सूरज को किसने वशीभूत कर रखा है तो ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर ये किधर से धोखा खा रहे हैं?

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• अहोरात्राणि विदघद् विश्वस्य मिषतो वशी। (ऋग्वेद १०:१९०:२) समस्त सृष्टी पर सामर्थ्य रखने वाले स्वामी ने दिन और रात का भेद स्थापित किया।	• अ-लमृत-र अन्नल्ला-ह यूलिज्रुल्लय-लफ़िन्नहारी व यूलिजुन्नहा-रफ़िल्लयलि व सखूखरश्शम्-स वल्क्-म-र कुल्लंय्यजरी इला अ-जलिम्-मुसम्मंव् (कुरआन ३१:२९) क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में? उसने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है, सब एक नियत समय तक चले जा रहे हैं, और (क्या तुम नहीं जानते कि) जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है?

मानवजाती को ईश्वर का आदेश

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• ऋतस्य पथा नमसा विवासेत (ऋग्वेद१०:३१:०२) मनुष्य सत्य के मार्ग पर विनम्रता पूर्वक चले।	• इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का न- मुख़्तालन फ़ख़ूरा (कुरआन ४:३६) यक़ीन जानो, अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डींगें मारनेवाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे।
• सुगा ऋतस्य पन्थाः (ऋग्वेद०८:३१:१३) सत्य का मार्ग आसान है।	• मा अन्ज़ल्ला अलैकल-कुरूआ-न लितश्का (कुरआन २०:२) हमने यह क़ुरआन तुमपर इसलिए अवतरित नहीं किया है कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ।
• दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्या नृते प्रजापतिः। अश्रद्धा मनृतो अदधाच्छ्द्धाँ सत्ये प्रतापतिः। (यजुर्वेद१९:७७) परमेश्वर ने सत्य और मिथ्या के रूप को अपनी ज्ञान दृष्टि से अलग अलग कर दिया और आदेश दिया कि सत्य में आस्था लाओं और मिथ्या को ठुकरा दो।	• कत्तबय्यनर्रुश्दु मिनल्गय्यि-फ-मंय्यकफ़ुर बित्तागूति व युऊमिम-बिल्लाहि फ़-कदिस्तम्-स-क बिल्-अुर्वतिल्-वुस्का (कुरआन २:२५६) दीन के मामले में कोई ज़ोर-जबरदस्ती नहीं। सही बात ग़लत विचारों से अलग छाँटकर रख दी गई है। अब जिस किसी ने बढ़े हुए फ़सादी का इनकार करके अल्लाह को माना, उसने एक ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं और अल्लाह (जिसका सहारा उसने लिया है) सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है।
• नू नव्यसे नीवयसे सूक्ताय साधया पथः। प्रत्नवद रोचया रूचः।। (ऋग्वेद९:९:८) तू दिन-प्रतिदिन नए और उससे भी नूतनंतर सुभाषित के लिए रास्ता बना और उस रास्ते को ऐसा प्रकाश का बना जैसे तुझसे पहले ऋषि बनाते आए हैं।	• वल् तकुम मिन्कुम उम्मतुन् यदऊना इलल् खैरि। वयअमुरूना बिल मअरूफि व यन हवूना अनिल मुन्करी व अूलाइका हुमुल मुफ्लिहून(कुरआन ३:१०४) तुम में कुछ लोग तो ऐसे अवश्य ही रहने चाहिएँ जो नेकी की ओर बुलाएँ, भलाई का आदेश दें, और बुराइयों से रोकते रहें। जो लोग ये काम करेंगे वही सफल होंगे।
• न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः (यजुर्वेद४:३३:११) बिना परिश्रम किए देवताओं की मैत्री नहीं मिलती।	• अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलल-जन्न-त व लम्मा यअ् लमिल्लाहुल्लजी-न जाहदू मिन्कुम व यअ-ल-मस्साबिरीन
हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।	जिनको ये लोग पकारते हैं (यानी देवी देवता) वे तो खुद अपने रब के पास पहूँच प्राप्त करने का वसीला ढुंढ रहे है कि कौन उससे अधिक निकट

सामाजीक नियम

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• मा भ्रातरं व्दिक्षन्मा स्वसारमृत स्वसा। सम्यग्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया। (अथर्ववेद३:३०:३) भाई, भाई से और बहन, बहन से व्देष न करें। एक मन और गति वाले होकर मंगलमयी बात करें।	• या आय्युहल्लजिना आमनू ला यस्खर् कवमुम्-मिन्-कवमिन् असा अंय्यकून् खयरूकुम मिन्हूम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन् असा अंय्यकून् खयरूकुम मिन्हून-न व ला तल्मिजू अन्फुस कुम व ला न तनाबजू बिल्-अल्काबि बिअ-स-लिस्मुल-फुसूक बअ-दल-ईमानि व मल्लन् यतुब फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (कुरआन ४९:११) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, न मर्द दूसरे मर्दों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छे हों, और न औरतें दूसरी औरतों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छी हों। आपस में एक दूसरे पर व्यंग्य न करो और न एक दूसरे को बुरी उपाधि से याद करो। ईमान लाने के बाद दुराचार में नाम पैदा करना बहुत बुरी बात है। जो लोग इस नीति से बाज़ न आएँ वे ज़ालिम हैं।
• अन्वार भेथामनुसरं भथामेतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते। (अथर्ववेद६:१२२:३) श्रद्धा वाले लोग परलोक का ध्यान रखते हुए सत्कर्मों को निरन्तर मिलकर करते रहें।	• अ-रज़ीतुम् बिल्-हयातिद्दुन्या मिनल् आख़िरति फ़-मा मताउल् हयातिद् दुन्या फ़िल् आख़िरति इल्ला क़लील (कुरआन ९:३८) क्या तुमने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? ऐसा है तो तुम्हें मालूम हो कि दुनिया का ज़िन्दगी की यह सब सामग्री परलोक (आख़िरत) में बहुत थोड़ी निकलेगी।
• सहृदय सांमनस्यनविव्देषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। (अथर्ववेद३:३०:१) मैं तुम्हारे लिए हार्दिक एकता, एकमनता और व्देष रहित भाव निर्धारित करता हूँ, परस्पर प्रेम रखो जैसे; गौ अपने बछड़े से प्रेम करती है।	• व-ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु इद्फअ-बिल्लती हि-य अहसनु फ-इजल्लजी बय-न-क व बयनहू अदावतून क-अन्नहु वलिय्युन हमीम (कुरआन ४१:३४) और ऐ नबी! भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम बुराई को उस नेकी से दूर करो जो बेहतरीन हो। तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसका बैर पड़ा हुआ था, वह जिगरी दोस्त बन गया है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः। अन्यौ अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनस्कृणोमि।।। (अथर्ववेद३:३०:१) तुम बड़ो का मान रखने वाले, उत्तम चित्त वाले, मित्रता पूर्वक एक जुट होकर चलते हुए छिन्न भिन्न न हो, परस्पर सुन्दर वचन कहते हुए आओ। मैं तुम्हें एक व गति वाले करता हुँ।	• व बिल वालिदैनि एह्सानन् व जिल् कुर्बा वल यतामा वल् मसाकीनि। व कूलु लिन्नासि हुस्ना (कुरआन २:८३) माँ-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों और दीन-दुखियों के साथ अच्छा व्यवहार करना, लोगों से भली बात कहना,
• समानं मन्त्रमभि मन्त्रेये वः (अथर्ववेद-१०:१६१:३) मैं तुम सबको समान मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ।	• ष-र-आ लकुम मिनद्दीन मा वस्सा बिहि नुहंव वल्लजी औहैना इलैका वमा वस्सैना बिहि इब्राहीमा व मूसा व ईसा। अन अकीमुद्दीना वला त-त-फर्रकू फीह्। (कुरआन ४२:१३) उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति नियत की है जिसका आदेश उसने नूह को दिया था और जिसे (ऐ मुहम्मद) अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (वही) के द्वारा भेजी है और जिसका आदेश हम इब्राहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद के साथ कि क़ायम करो इस दीन (धर्म) को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ।

नारीजाती को ईश्वर का आदेश

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• अनुब्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः। (अथर्ववेद-३:३०:२) पुत्र पिता का अनुगत हो और माता के साथ एक मन वाला हो।	• बिल्-वालिदयनि इहसानन् इम्मा यब्लुगन्-न अिन्दकल्-कि-ब-रअ-हदुहुमा अव किलाहुमा फला तकुल्लहुमा उफ़्फ़िंव-व ला तन्हरहुमा व कुल्लहुमा कवलन् करीमा। (कुरआन १७:२३) तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि : तुम लोग किसी की बन्दगी न करो, मगर सिर्फ़ उसकी। माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, अगर तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े होकर रहें तो उन्हें उफ़् (धिक) तक न कहो, न उन्हें झिड़ककर जवाब दो, बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो।
• जाया पत्ये मधुतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्। (अथर्ववेद-३:३०:२) पत्नि पती से मीठी मधुर वाणी बोलने वाली हो।	• व मिन् आयतिहि अन् ख-लू-लकुम मिन् अन्फुसिकुम अज्-वाजला-लतस्कुन् इलयहा व ज-अ-ल बयनकुम म-वद्-द-तंव व रह-म-तन् (कुरआन ३०:२१) और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही सहजाति से बीवियाँ बनाई ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी।
• अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर। मा ते काशप्लकौ दृशन स्त्री हि ब्रम्हा बभूविथ।। (ऋग्वेद-८:३३:१९) जब स्त्री ही पुरूष बन गई हो अर्थात जब पुरूश के समान घर से निकले तो नीचे देख उपर नहीं। दोनों पावों को समेट कर चल कि तेरे निम्रांग नजर न आएं।	• वकुल्लिल्-मुअमिनाति यग्-जुजु-न मिन् अब्सारिहीन-न व यह-फझन फुरूजहुन-न वला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन (कुरआन २४:३१) और ऐ नबा! ईमानवाली औरतों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपना बनाव-शृंगार न दिखाएँ सिवाय उसके जो ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाए और अपने सीनों (वक्षस्थलों) पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• उदीर्ष्व नार्यैभि जीवलोक गतासुमेतमुप शेष एहि। हस्त ग्रास्भस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूय। (अथर्ववेद-१८:३:२) हे विधवा नारी! जीवित समाज की ओर उठकर चल। इस मृतक के सहारे तू पड़ी है। आ अब अपना हाथ वीर्यदाता नए पति की संतान को यथावत प्राप्त हो।	• फ इजा ब-लग्-न अ-ज-लहुन-न फ-ला जुना-ह अलयकुम् फीमा फ-अल-न फी अन्फुसिहिन्-न बिल्मअरूफि (कुरआन २:२३४) तुममें से जो लोग मर जाएँ, उनके पीछे अगर उनकी पत्नियाँ ज़िन्दा हों, तो वे अपने आपको चार महीने, दस दिन रोके रखें। फिर जब उनकी अवधि (इद्दत)पूरी हो जाए, तो उन्हें अधिकार है अपने विषय में सामान्य रीति से जो चाहें, करें।
• वेदाहमेतं पुरूष महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्। (यर्जुरवेद-३१:१८) अहमद वेद ब्रम्हज्ञान है, महानतम पुरूष है सूर्यरूप दीप्तिमान, अंधकार को परास्त करने वाला है।	• व मुबश्शिरन बि रसूलिन याति मिम बअ्दी इस्महू अहमद (कुरआन ६१.६) और याद करो मरयम के बेटे ईसा की वह बात जो उसने कही थी कि ''ऐ इस्राईल के बेटो, मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, पुष्टि करनेवाला हूँ उस तौरात की जो मुझसे पहले आई हुई मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देनेवाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद होगा।'
	• या अय्युहन्नबियु इन्ना अर्सनलनाक शाहिदंव-व मुबश्शिरंव्- व नज़ीरा व दाअियन् इलल्लाही बिइज्निही व सिराजम्-मुनीरा (कुरआन ३३:४५:४६) नबी! हमने तुम्हें भेजा है गवाह बनाकर, ख़ुशख़बरी देनेवाला और डरानेवाला बनाकर, अल्लाह की अनुमति से उसकी ओर निमंत्रण देनेवाला बना कर। व युखरिजुहुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि बिइज़्निहि (कुरआन ५:१५) अल्लाह उन लोगों को जो उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं सलामती की राहें बताता है और अपनी अनुमति से उनको अंधेरों से निकालकर उजाले की ओर लाता है ।
• इदं जरा उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते। (अथर्ववेद-२०:१२७:१) नराशंस की सब लागों की ओर से प्रशंसा की जाएगी।	• व रफाना लका जिक रक। (कुरआन ६४:४) और तुम्हारे लिए तुम्हारी ध्वनि ऊंची कर दी।

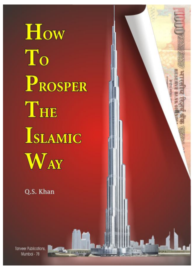
Books written by Mr. Q.S. Khan

Sr. No.	Name of Books with their links to download (free of cost)	Book Type
Management Books		
1.	**Law of Success for both the worlds** http://www.scribd.com/doc/37987436/Law-of-Success-for-both-the-Worlds-English	Printed and E-Book
2.	**Yashachi Gurukilli** (Marathi translation by Sushil S. Limay) http://www.scribd.com/doc/19486457/Yashachi-GurukilliComplete-Marathi	
3.	**Safalta ke Sutra** (Hindi Translation by Dr. Vimla Malhotra) Not uploaded yet	E-Book
4.	**How to proper Islamic way** Vol. 1:- http://www.scribd.com/doc/37932859/How-to-prosper-Islamic-Way-Vol-1 Vol. 2:- http://www.scribd.com/doc/46098862/How-to-Prosper-Islamic-Way-Vol-2	Printed and E-Book
Engineering E-Books: (Books will be re-printed in 2012)		
5.	**Vol.1-Introduction to Hydraulic Presses and press body.** http://www.scribd.com/doc/17599574/Volume1-Introduction-to-Hydraulic-Presses	E-Book
6.	**Vol.2-Design and Manufacturing of Hydraulic cylinders.** http://www.scribd.com/doc/17375627/Volume2-Design-and-Manufacturing-of-Hydraulic-Cylinders	E-Book
7.	**Vol.3-Study of Hydraulic Valves, Pumps and Accumulators.** http://www.scribd.com/doc/17527393/Volume3-Study-of-Hydraulic-Valves-Pumps-and-Accumulators	E-Book
8.	**Vol.4-Study of Hydraulic Accessories** http://www.scribd.com/doc/17599472/Volume4-Study-to-Hydraulic-Accessories	E-Book
9.	**Vol.5-Study of Hydraulic Circuit** Not uploaded yet	E-Book
10.	**Vol.6-Study of Hydraulic Seals, Fluid Conductor, and Hydraulic Oil.** http://www.scribd.com/doc/17742753/Volume6-Hydraulic-Seals-Fluid-Conductor-and-Hydraulic-Oil	E-Book
11.	**Vol.7-Essential knowledge required for Design and Manufacturing of Hydraulic Presses.** http://www.scribd.com/doc/18996385/Volume7-Essential-Knowledge-Required-for-Design-and-Manufacturing-of-Hydraulic-Presses	E-Book

Books written by Mr. Q.S. Khan		
	Name of Books with their links to download (free of cost)	Printed and E-Book
Management Books		Printed and E-Book
1.	**Law of Success for both the worlds** http://www.scribd.com/doc/37987436/Law-of-Success-for-both-the-Worlds-English	Printed and E-Book
2.	**Yashachi Gurukilli** (Marathi translation by Sushil S. Limay) http://www.scribd.com/doc/19486457/Yashachi-GurukilliComplete-Marathi	E-Book
3.	**Safalta ke Sutra** (Hindi Translation by Dr. Vimla Malhotra) Not uploaded yet	E-Book
4.	**How to proper Islamic way** Vol. 1:- http://www.scribd.com/doc/37932859/How-to-prosper-Islamic-Way-Vol-1 Vol. 2:- http://www.scribd.com/doc/46098862/How-to-Prosper-Islamic-Way-Vol-2	Printed and E-Book
Engineering E-Books: (Books will be re-printed in 2012)		Printed and E-Book
5.	**Vol.1-Introduction to Hydraulic Presses and press body.** http://www.scribd.com/doc/17599574/Volume1-Introduction-to-Hydraulic-Presses	E-Book
6.	**Vol.2-Design and Manufacturing of Hydraulic cylinders.** http://www.scribd.com/doc/17375627/Volume2-Design-and-Manufacturing-of-Hydraulic-Cylinders	E-Book
7.	**Vol.3-Study of Hydraulic Valves, Pumps and Accumulators.** http://www.scribd.com/doc/17527393/Volume3-Study-of-Hydraulic-Valves-Pumps-and-Accumulators	E-Book
8.	**Vol.4-Study of Hydraulic Accessories** http://www.scribd.com/doc/17599472/Volume4-Study-to-Hydraulic-Accessories	E-Book
9.	**Vol.5-Study of Hydraulic Circuit** Not uploaded yet	E-Book

1. E-books could be downloaded free of cost from www.scribd.com or www.freeeducation.co.in
2. Books “Law of success for both the worlds” and “Yashachi Gurukilli” are available all over India in cross world book stores at cost of Rs. 150/- and Rs. 140/- respectively.
3. Outside India “Law of success for both the worlds” could be purchased online from amazone.com at 28 U.S Dollar.
4. All the seven volumes of engineering book will be printed as single handbook with title, "Design and manufacturing of hydraulic press" and will cost Rs. 1000/- only
5. Visit **www.freeeducation.co.in** to read and free download many more books.

तरक्की के इस्लामी उसूल

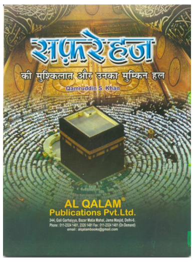


मुसलमान आर्थिक रुप से बहुत पिछड़े हुए हैं। और इस का कारण धर्म का सही ज्ञान न होना हैं। जब धर्म का सही ज्ञान नहीं होता है तो लोग बेईमानी, गुंडागर्दी, तस्कारी और काले धंदों से धन कमाने का प्रयास करता हैं। ऐसा धन तो किसी को फलते ही नही तो वह और गरीब हो जाते है।

इस पुस्तक में लेखक ने धर्म की सिमा में रहते हुए कैसे धनवान हो इस की जानकारी मुसलमानों को देने की कोशिश की है।



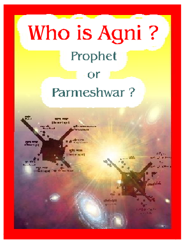
सफरे हज



हाजी की हज यात्रा ४० दिन की होती है। मगर जो हज यात्रा से पहले सही जानकारी नहीं प्राप्त करते है उन्हें इस हज यात्रा में बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। लेखक ने इस पुस्तक द्वारा हज यात्रीयों का सरल शब्दों में मार्गदर्शन किया है।

अग्नि कौन?

वेदों में ‘अग्नि’ एक रहस्य है। लेखक ने इस पुस्तक में इस रहस्य पर ज्ञान का प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

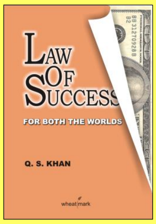


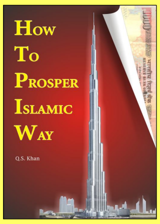


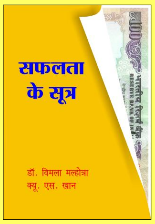
इस पुस्तक में लेखक ने समृद्ध और सफल उदयोजक बनने के लिए सभी धर्म के नौजवान विदयार्थियों को मार्गदर्शन किया है।

Books Written By Mr. Q.S. Khan

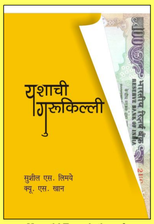
Management Books





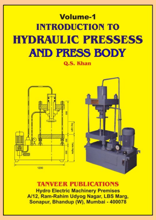


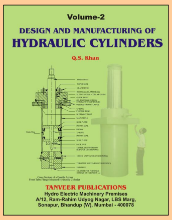
Hindi Translation of
"Law of success for both the worlds"
By Dr. Vimla Malhotra

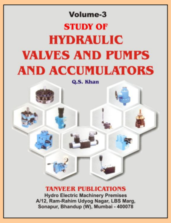


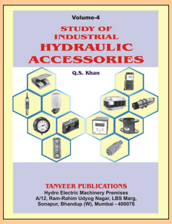
Marathi Translation of
"Law of success for both the worlds"
By Mr. Sushil S. Limye

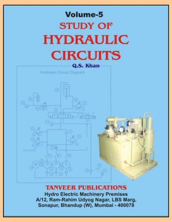
Engineering Books

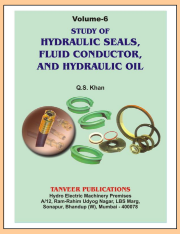


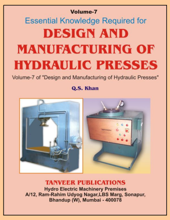




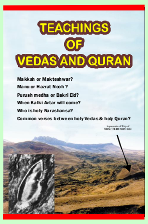


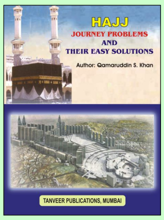


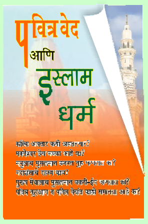


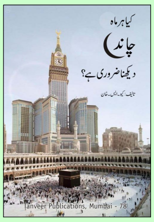


Religious Books



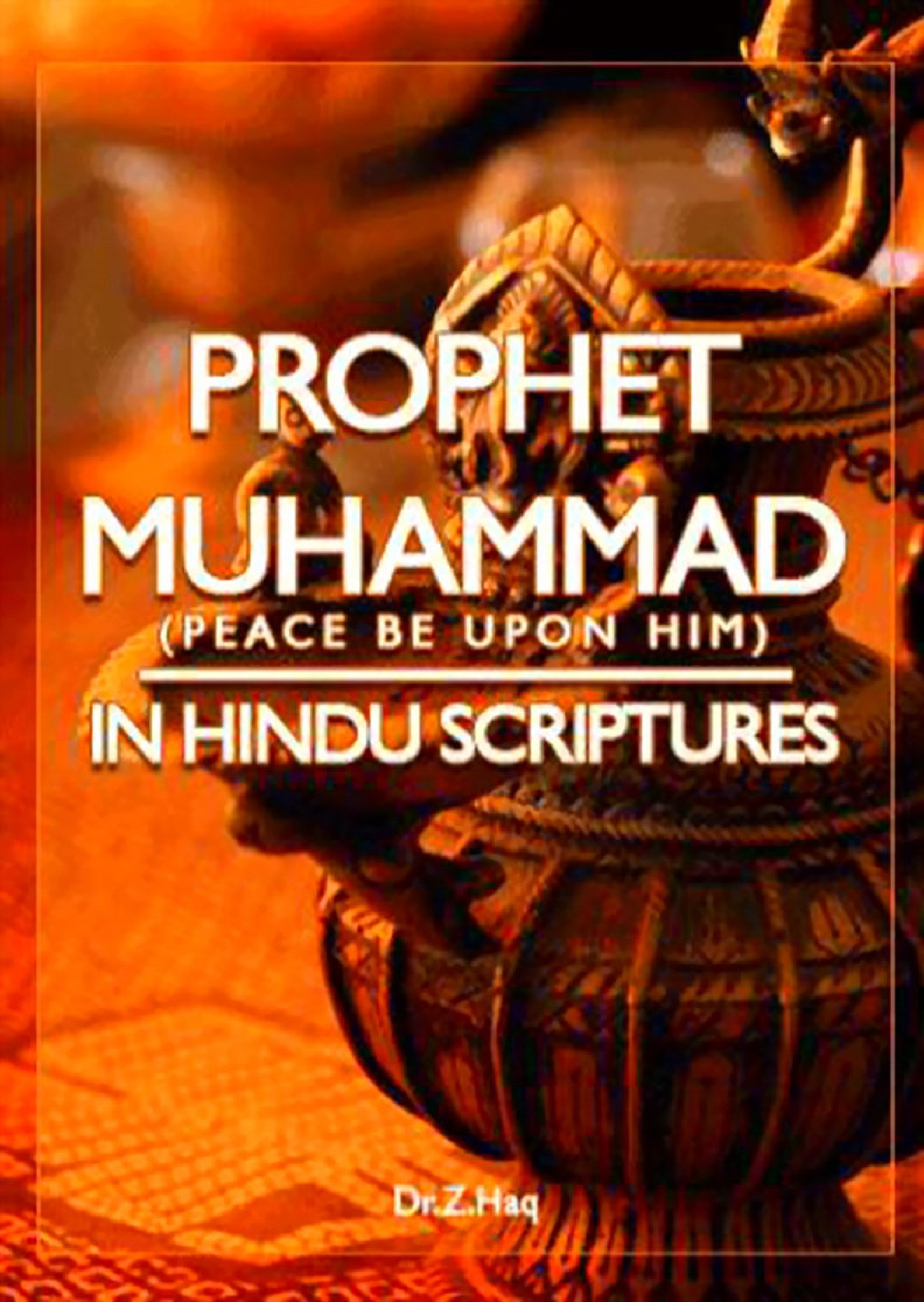






TANVEER PUBLICATION

Hydro Electric Machinery Premises, A/13, Ram-Rahim Udyog Nagar, Bus stop Lane,
L.B.S. Road,Sonapur, Bhandup (w) Mumbai - 400078.
Email: hydelect@vsnl.com / hydelect@mtnl.net.in
Website: www.tanveerpublication.com, www.freeeducation.co.in



PROPHET MUHAMMAD
(PEACE BE UPON HIM)
IN HINDU SCRIPTURES

Dr.Z.Haq

Prophet Muhammad (Peace be upon him) In Hindu Scriptures

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ

In the name of Allah, the most Beneficent, the most Merciful

All Praise is due to Allah, the Lord of the Worlds, the [One Who] Sustains the Heavens and Earths, Director of all that is created, who sent the Messengers (may the peace and blessings of Allah be upon all of them) to rational beings, to guide them and explain the religious laws to them with clear proofs and undeniable arguments. I praise Him for all of His bounties. I ask Him to increase His Grace and Generosity. I bear witness that there is none worthy of worship except Allah alone, who has no partner, the One, Who Subdues, the Generous, the Forgiving. I bear witness that our leader Muhammad is His servant and Messenger, His beloved and dear one, the best of all creation. He was honoured with the Glorious Qur'an that has been an enduring miracle throughout the years. He was also sent with his guiding Sunnah that shows the way for those who seek guidance. Our leader Muhammad has been particularised with the characteristic of eloquent and pithy speech, and simplicity and ease in the religion. May the peace and blessings of Allah be upon him, the other Prophets and Messengers, all of their families and the rest of the righteous.

PROPHET MUHAMMAD

(Peace Be Upon Him)

IN

HINDU SCRIPTURES

DR. Z. HAQ

There Never Was A People Without A Warner

Qur'an 35:24

Verily We have sent thee (Muhammad) in truth as a bearer of glad tidings and as a warner:

And **there never was a people without a warner having lived among them (in the past)**.

Qur'an 16:36

For We assuredly sent **amongst every People an apostle** (with the Command) **"Serve Allah and eshew Evil":**
Of the people were some whom Allah guided and some on whom Error became inevitably (established).
So travel through the earth and see what was the end of those who denied (the Truth).

Qur'an 4:164

And Messengers (Prophets who received revealed books) We have mentioned unto thee (Muhammad) before
And Messengers We have not mentioned unto thee;
And Allah spoke directly unto Moses.

These verses of the Holy Qur'an testify that Allah (the One True God) has sent prophets to every people. Therefore, it is not surprising to Muslims to find prophecies about the Last Prophet, Muhammad (s), in previously revealed scriptures. Moreover, Allah had taken covenant with the Prophets to believe and help future Prophets of Allah, as indicated by the verse quoted below.

Allah's Covenant with Prophets

Qur'an 3:81-82

Behold! Allah took the covenant of the Prophets saying:
"I give you a Book and Wisdom; then comes to you an Apostle confirming what is with you; do ye believe him and render him help."
Allah said: "Do ye agree and take this My Covenant as binding on you?"
They said: "We agree."
He said: "Then bear witness and I am with you among the witnesses."
If any turn back after this they are perverted transgressors.

A Brief Introduction to Hindu Scriptures

The Vedas, Upanishads, Puranas, and Brahmanas Granth are the four sacred books in Hindu religion. The last one is a commentary on the Vedas, but it is considered as a revealed book. These books are in **Sanskrit**, the sacred language of the Hindus. The **Vedas** are divided into **four books**: Rig Veda, Yajur Veda, Sam Veda and Atharva Veda. Of these, the first three books are considered the more ancient books, and the Rig Veda is the oldest of them. The Rig Veda was compiled in three long and different periods. Opinions greatly differ as to the date of compilation or revelation of the four Vedas. Swami Daya Nand, founder of the Arya Samaj, holds the opinion that the Vedas were revealed 1.3 billion years ago, while others (Hindu scholars and orientalists) hold the opinion that they are not more than four thousand years old. Analysis of the Vedas reveal differences in the accounts of the places where these books were revealed and the Rishis (Prophets) to whom these scriptures were given. Nevertheless, the Vedas are the most authentic scriptures of the Hindus.

The **Upanishads** are considered next to the Vedas in order of superiority and authenticity. However, some Pandits consider the Upanishads to be superior to the Vedas primarily from the internal evidence found in the Upanishads. Next in authenticity to the Upanishads are the Puranas. The **Puranas** are the most widely read of all Hindu Scriptures, as these are easily available (the Vedas are difficult to find). The compiler of the Puranas is **Maha Rishi Vyasa**, and he arranged the Puranas in eighteen volumes. These books contain the history of the creation of the universe, the history of the early Aryan people, and life stories of the divines and deities of the Hindus. The Puranas were either revealed simultaneously with the Vedas or some time before. The sanctity and reverence of the Puranas is admitted and recognized in all the authentic books of the Hindus.

For a long time, the Hindu Scriptures were primarily in the hands of Pandits and a small group of men who had learned Sanskrit (The majority of the Hindu population knew Hindi and could comprehend only a smattering of Sanskrit words). **Sir William Jones**, who was a Judge and founded the Asiatic Society of Bengal, learned Sanskrit in the last decade of the Eighteenth century. He was instrumental in generating interest in Sanskrit and Hindu Scriptures in Europe, and it was due to his efforts that the Hindu scriptures were translated into English.

In 1935, **Dr. Pran Nath** published an article in the Times of India that showed that the **Rig Veda** contains events of the **Babylonian and Egyptian kings** and their wars. Further, he showed that one-fifth of the Rig Veda is derived from the Babylonian Scriptures. From a Muslim perspective, it is likely that the Hindus were given a revealed book or books that contained description and struggles of Allah's Prophets sent previously to other peoples. It is also possible that commentaries written about them were incorporated later and became a part of the revealed books.

There are a number of examples of these in Hindu scriptures. The Atharva Veda is also known as 'Brahma Veda' or in its meaning as the Devine Knowledge. An Analysis of the Vedas reveal that **'Brahma'** is actually Abraham, where the initial letter A in Abraham is moved to the end making it Brahma. This analysis is accurate when one writes the two words in Arabic script, a language close to that spoken by Prophet Abraham. Similarly, Abraham's first wife **Sarah** is mentioned in the Vedas as **Saraswati**, and Prophet Nuh (Noah of The Flood) is mentioned as

Manuh or **Manu**. Some Pundits consider Atharva Veda as the Book of Abraham. Prophets Ismail (Ishmael) and Ishaq (Isaac) are named Atharva and Angira, respectively, in the Vedas.

Table 1

Brahma	Abraham
Saraswati	Sarah
Manu, Manuh	Nuh

Background to Prophecies

It is well known that the Hindus love hero worship, and it is reasonable to assume that over a long period of time the high regard and reverence for some Prophets led to some of them considered as god or God. Further, it is likely that the Book of Abraham and those of other Prophets contained prophecies about the Last Prophet, Muhammad (s). Muslim historians of India hold the opinion that **the graves of Prophets Sheesh and Ayyub (Job) are in Ayodhya**, in the province of Uttar Pradesh, India. In ancient times, Ayodhya was known as Khosla according to Shatpath Brahmanas.

Some Pundits have now begun to reject the Puranas simply because they find in them many prophecies and vivid signs of the truth of Prophet Muhammad. A case has been made that the present Puranas are not the same collection that Vedas refer to and the real books were lost. Nevertheless, this contention is not correct. It is impossible that all the Puranas which were so widely read and keenly studied, could have fallen in oblivion and totally wiped out, whereas the Vedas, which only a few could read and understand, remained intact until now.

Another argument against the prophecies is that these were added to the Puranas at a later date. Nevertheless, this argument is also without a basis. Such a well-known book, in vast circulation and read at appointed times in prayers, cannot be easily tampered with. Moreover, all the Pandits and the learned divines of the Hindus could not have conspired and secretly added these prophecies to the Puranas. The most strange thing is that the corruption is made in favor of the Prophet and against their own religion.

All major books of the Hindus prophesy about Prophet Mohammad. In addition to many of his qualities, his life events, Abraham, Ka'bah, Bakkah (Makkah) and Arabia, **the prophecies mention his name as Mahamad, Mamah, and Ahmad**. The name Mahamad appears in the Puranas, Mamah in Kuntap Sukt (in Atharva Veda) and Ahmad in Sama Veda. Many different classifications as to the degree of importance of the Vedas have been made. For example, in Shatpath it is stated

that Sama Veda is the essence of all the Vedas. At another place in Taitttriya Brahmana, it is stated that "This world was created from Brahma, the Vaishas were created from the mantras of the Rig Veda, the Kashtriyas were created from Yajur Veda and Brahmans were created from Sama Veda."

Prophecy In The Puranas

The compiler of the Puranas, **Mahrishi Vyasa**, is highly honored among the Hindus as a great rishi and learned person. He was a pious and God fearing man. He also wrote the **Gita** and the **Maha Bharat**. Among the eighteen volumes of the Puranas is one by the title **'Bhavishya Puran,'** literally meaning future events. The Hindus regard it as the Word of God. **The prophecy containing Prophet Muhammad by name is found in Prati Sarg Parv III: 3, 3, Verse 5.**

Before the English translation is presented, a note on the word **Malechha** that appears in the first part of verse 5 is in order. The word Malechha means a man belonging to a foreign country and speaking foreign language. This word is now used to degrade people meaning unclean or even worse. Its usage varies and depends on who is using it and for whom. Sir William Jones had great difficulty in recruiting a Pundit to teach him Sanskrit because he was considered unclean (Malechha). It was only after the direct intervention of Maharaja (King) Shiv Chandra that Pundit Ram Lochna agreed to teach him Sanskrit.

It is not known when this word began to be used in the derogatory sense, whether before the advent of Prophet Muhammad (s), after the conversion of Hindu King Chakrawati Farmas (of Malabar, located on the southwest coast of India) to Islam during the lifetime of the Prophet, soon after the arrival of Muslims in India (711 CE) or sometime later. Mahrishi Vyasa, the compiler of the Puranas, has **defined a wise Malechha as** "a man of good actions, sharp intellect, spiritual eminence, and showing reverence to the deity (God).

Many Sanskrit words have **borrowed** from Arabic and Hebrew with a slight change as was shown in the examples of Brahma, Saraswati and Manu, and as indicated in Table 2 below. It appears that this word is derived from the Hebrew word **Ma-Hekha** (ماحيخا), which means thy brethren (e.g., And he (Ishmael) shall dwell in the presence of all his brethren. Genesis 16:12; i.e., Ismaelites are the brethren of the Israelites). In the context of Biblical scriptures this word meant a descendant of Prophet Ismail (Ishmael), and it is well known that Muhammad (s) is a descendant of Prophet Ismail through his second son Kedar. Those who can read Arabic Script can easily see that **a mistake in separating Ma from Hekha will produce a single word 'Malhekha,'** and when adapted in another tongue like Sanskrit might sound like Malechha.

Table 2

Sanskrit	Written in Arabic Script	Arabic	Meaning
मा	ما	أم	Mother
	تك	قط	
पा	پا	اب	Father
	پاد	داب	
जल	جل	لجة , لجيه	Water
	دهو	ود	

The Sanskrit text and translation of Verse 5 of Bhavishya Puran, Prati Sarg Parv III: 3, 3 are given below. (The boxed area in the Sanskrit text identifies the word Mahamad or Mohammad).

एतस्मिन्नन्तरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः ।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखासमन्वितः ॥ ५ ॥

His name will be Mahamad:

Bhavishya Puran: Prati Sarg, Part III: 3, 3, 5

A malechha (belonging to a foreign country and speaking foreign language) spiritual teacher will appear with his companions. **His name will be Mahamad...**

The translation of Verses 5-27 (Sanskrit text **of the Puranas, Prati Sarg Parv III: 3, 3**) is presented below from the work of **Dr. Vidyarthi.**

"A malechha (belonging to a foreign country and speaking foreign language) spiritual teacher will appear with his companions. **His name will be Mahamad.** Raja (Bhoj) after giving this **Mahadev Arab** (of angelic disposition) a bath in the 'Panchgavya' and the Ganges water, (i.e. purging him of all sins) offered him the presents of his sincere devotion and showing him all reverence said, 'I make obeisance to thee.' **'O Ye! the pride of mankind, the dweller in Arabia**, Ye have collected a great force to kill the Devil and **you yourself have been protected from the malechha opponents (idol worshipers, pagans).**' 'O Ye! the image of the Most Pious God the biggest Lord, I am a slave to thee, take me as one lying on thy feet.'

“The Malechhas have spoiled the well-known **land of the Arabs. Arya Dharma is not to be found in that country**. Before also there appeared a misguided fiend whom I had killed [note: e.g., Abraha Al-Ashram, the Abyssinian viceroy of Yemen, who attacked Mecca]; he has now again appeared being sent by a powerful enemy. To show these enemies the right path and to give them guidance the well-known **Mahamad** (Mohammad), who has been given by me the epithet of Brahma is busy in bringing the Pishachas to the right path. O Raja! You need not go to the land of the foolish Pishachas, you will be purified through my kindness even where you are. At night, he of the angelic disposition, the shrewd man, in the guise of a Pishacha said to Raja Bhoj, "O Raja! Your Arya Dharma has been made to prevail over all religions, but **according to the commandments of ‘Ashwar Parmatma (God, Supreme Spirit)**, I shall enforce the strong creed of the meat-eaters. **My follower will be a man circumcised, without a tail (on his head), keeping beard, creating a revolution, announcing call for prayer and will be eating all lawful things. He will eat all sorts of animals except swine**. They will not seek purification from the holy shrubs, but will be purified through warfare. Because of their fighting the irreligious nations, they will be known as **Musalmans** (Muslims). I shall be the originator of this religion of the meat-eating nation."

More Prophecies In Hindu Scriptures

The Vedas contain many prophecies about Prophet Muhammad. Some European and Hindu translators of the Vedas have removed the name referring to the Prophet, while others have tried to explain away the mantras (verses) on his life events, Ka’bah, Makkah, Medinah, Arabia, and other events using the terminology of the Hindus, such as purification rituals, and lands and rivers in India. Some mantras containing prophecies are inter-mixed with explanatory phrases, and it may be that these were commentaries and explanatory notes on the prophecies, which later became a part of the prophecy.

Several prophecies are found in **Atharva Veda**: (1) XX: 21, Mantras 6, 7, and 9, (2) XX: 137, Mantras 7 through 9, and (3) X: 2, Mantras 26, 27, 29, 30, and 32. Similarly, in **Rig Veda**, additional prophecies are found in: (1) VII: 96, Mantras 13 through 16, and (2) I: 53, Mantras 6 and 9. Finally, a prophecy is found in **Sama Veda** III: 10, Mantra 1. These are a sample of many prophecies. The serious reader may want to refer to scholarly work of **Dr. A.H. Vidyarthi, entitled “Mohammad in World Scriptures,” 1990.** This book explains the Hindu terminology used in the Mantras and the meaning and usage of certain words and phrases from within the Vedas and other Hindu Scriptures.

No Compulsion in Religion

Qur'an 2:256
There is no compulsion in religion.
The right direction is henceforth distinct from error.

And he who rejects the false deities and believeth in Allah hath grasped a firm handhold which will never break.
Allah is Hearer, Knower.

Allah: Allah is the proper name of the One True God, creator and sustainer of the universe, who does not have a partner or associate, and He did not beget nor was He begotten. The word Allah is used by the Arab Christians and Jews for The God (Eloh-im in Hebrew; 'Allaha' in Aramaic, the mother tongue of Jesus). The word Allah does not have a plural or gender.

pbuh: Peace Be Upon Him. This expression is used for all Prophets of Allah. Abbreviations derived from Arabic words are (s) and (as).

ra: Radiallahu Anhu (May Allah be pleased with him).

References:

1. Abdul Haq **Vidyarthi**, "Muhammad in World Scriptures," Adam Publishers, 1990. (Includes chapters on Zoroastrian and Hindu Scriptures)
2. A.H.**Vidyarthi** and U. Ali, "Muhammad in Parsi, Hindu & Buddhist Scriptures," IB.